बातां री फुलवाड़ी

भाग ३

प्रकाशक :

रूपायन संस्थान

बोरुंदा

संपादक :

कोमल कोठारी

कीमत :

पन्द्रै रिपि

संस्करण :

पैलौ संस्करण २०१६

दूजौ संस्करण २०२१

तीजौ संस्करण २०२५

मुद्रक :

रूपायन प्रेस

बोरुंदा

विजयदान देथा

बातां री फुलवाड़ी

भाग ३

राजस्थांन री कदीमी लोक कथावां

रुपायन संस्थान

प्रकासकीय

देस री आजादी अर पंचायती राज रै कारण गांवां में माली विकास करण रौ मौकौ हाथ आयौ । पैला म्हांरै गांव में पीवण रै पांणी रा ई पूरा जांदा पड़ता हा, वौ आज पांणी में तिरै । ऊंडा ऊंडा बेरां सूं पैला पीवण सारू ई पांणी काढ़णौ दौरौ हौ, आज बिजळी री ताकत वां बेरां सूं अखूट पांणी काढ़ै, जांणै नहरां चालू व्ही है । पांच सौ घरां रा छोटा सा गांव में आज खेती करण सारू पचास ट्रैक्टर है, बिजळी सूं चालण वाळा अखूट पांणी रा बीस बेरा है, घर घर पांणी रा नळ अर बिजळी है । गांव में उच्चतर माध्यामिक विद्यालय, सफाखांनौ अर जच्चाघर है । पैला दूजै तीजै बरस काळ सूं बाथेड़ौ करणौ पड़तौ, जठै पैला बाजरी अर जवार रै अलावा ऊनाळू साख रौ दांणौ ई को निपजतौ नीं, आज अठै हजारूं मण गऊं, सिरसूं, राई, बिराळी, जीरौ, आलू, मिरचां, कांदा, टमाटर, साग-सब्जी अर जरदौ व्है । गांव रा विकास सूं प्रेरित होयनै भारत सरकार 'माटी बन गई सोना' रा नांव सूं म्हांरै गांव री अेक फिलम ई बणाई ।

गांव में माली हालत री तरक्की रै साथै साथै जाग्रति आई । म्है पगां माथै ऊभा व्हिया, दुनियां री ढंग-ढाळौ ओळखियौ, ग्यांन री कीमत आंकी अर विग्यांन माथै भरोसौ करचौ । सेवट गुणतां गुणतां म्हांरै आ समझ बैठी के माली विकास री सारथकता इणी बात में है के उणरै बिना मानसिक अर आध्यात्मिक विकास नीं व्है सकै । कोरौ माली विकास मिनख रै वास्तै अधूरौ विकास है; घांटी रै नीचै रौ विकास है । कला, साहित्य अर संस्क्रति रै विकास रौ अभाव म्हांनै अखरियौ । गांवां में ग्यांन विग्यांन रौ चांनणौ व्हियां ईं देस री मूढ़ता रौ अंधारौ लोपैला । गांवां में साहित्य, कला अर संस्क्रति री चेतना वापरै इण ख्याल सूं म्हांरै गांव में 'रूपायन संस्थान' री थापना करी । गांव में ईं संस्थांन रौ छापाखांनौ लगायौ । कदीमी लोक साहित्य अर आधुनिक नवा साहित्य नै प्रकासित करणौ औ संस्थांन रौ मोटौ ध्येय है । संस्थांन री तरफ सूं लोक कलावां रै प्रकासण सारू 'लोक संस्कृति' नांव रौ मासिक छापौ चालू करचौ । आज दिन तक करीब सात सौ लोक कथावां अर सात उपन्यास संस्थांन सूं प्रकासित व्हिया है । 'बातां री फुलवाड़ी' रै तीजै भाग रौ औ तीजौ संस्करण निकाळतां म्हांनै अणूंतौ हरख व्है । थोड़ै ई बरसां में इण भांत री कीमती पोथी रौ तीजौ संस्करण निकळणौ बिरली बात है । पण वगत परवांण वेगा सूं वेगा अैड़ा बीस भाग प्रकासित करण री योजना जिण दिन संपूरण व्हैला उण दिन आज रौ औ हरख पूरण रूप सूं सारथक व्हैला ।

इण संस्थांन री थापना सूं गांवां में कलात्मक चेतना पनपैला, म्हनै सोळै आंनां भरोसौ है । अेक सरपंच री हैसियत सूं म्है राजस्थांन री पंचायतां नै अरज करूं के अपां भौतिक विकास रै साथै कला अर संस्क्रति रै मारफत मानसिक विकास रौ ई ख्याल राखां तौ घणी सिरै बात व्हैला । लोक साहित्य रौ अखूट खजांनौ सेवट अपांरै उबारणा सूं ईं उबरैला ।

चंडीदांन देथा
अध्यक्ष

क्रम

क्रम



‘आठ राजकंवर’ — एक विवेचन

कोमल कोठारी

लोक कथाओं को कहने की परम्परा में शृंखला-बद्ध रूप से कथा कहने की एक विशिष्ट शैली प्रचलित है। अर्थात् कथा में से ही उपयुक्त प्रसंग एवं अवसर पर अन्य कथा का बीजांकुर स्वयंमेव हो उठता है। यह प्रासंगिक कथा अपनी अवयवी क़था से निपट स्वतंत्र अस्तित्व लिये हुए होती है। मुख्य कथा के बीच में इस प्रासंगिक कथा का प्रयोग उदाहरण के रूप में अथवा किसी कही हुई बात को पूर्णतया स्थापित करने के लिये किया जाता है। इस नवीन कथा के पात्र, घटना, देश एवं काल एकदम भिन्न होते हैं किन्तु उद्देश्य का उल्लेख कथा के बीजांकुर का कारण होता है।

कथा शैली का यह रूप जितना लोक कथा साहित्य में प्रचलित है, ठीक उतना ही शास्त्रीय साहित्य में भी प्रयुक्त किया गया है। हमारे देश के एक ओर पुराण, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद आदि ग्रंथों में और दूसरी ओर रामायण, महाभारत जैसे महा-काव्यों में यही कथात्मक शैली अपनाई गई है। एक पात्र कथा प्रारंभ करता है और अपने कथा प्रसंग में दूसरी कथा को कहने वाले का सृजन कर, कथा सूत्र को आगे बढ़ा देता है। यह दूसरा कथाकार भी एक नवीन कथाकार को सर्जित कर देता है और अणु-परमाणु के विघटन की प्रक्रिया में नित्य-नित्य कथाकारों एवं कथाओं की सृजन क्रिया विकसित होती जाती है। भारतीय कथा साहित्य के सभी ग्रंथों में यही कथात्मक शैली ग्रहण की गई है। वह ग्रंथ चाहे ज़ातक हो, बृहत्कथा हो, सिंहासन बत्तीसी हो, बैताल पच्चीसी हो, चाहे पंचतंत्र या हितोपदेश हो। इस कथात्मक शैली के वृहत् प्रयोग से एक निर्णय सहज ही लिया जा सकता है कि विभिन्न स्वतंत्र एवं निरपेक्ष लघु कथाओं अथवा विभिन्न अभिप्रायों [मोटिफ्स] के विवेकपूर्ण संकलन की कलात्मक सौन्दर्य-वृत्ति ही इनका मुख्य लक्ष्य

रहा है ।

कथा में से कथा का प्रसंग निकालते रहने की यह प्रवृत्ति लोक कथाओं को योजानाबद्ध तरीके से कलात्मक कृति बनाने का एक प्रयास भी कहा जा सकता है। क्योंकि कथाओं का चयन और उनके प्रभावशाली उद्देश्य की एकान्तिक तीव्रता ही अवयवी कथा को संबल एवं सौन्दर्य प्रदान कर सकती है ।

कथा की इसी शैली पर हजारों की संख्या में छोटी-बड़ी लोक कथाओं का आज भी मौखिक रूप सुना जा सकता है और उनके विभिन्न रूपों को लोक कथाओं में विवेचन-आलोचन का विषय बनाया जा सकता है ।

इसी जगह एक प्रेरणात्मक स्फूर्ति के संचार की बात भी उत्पन्न हो सकती है । क्या लोक कथाओं का आधुनिक संग्राहक कुछ विशिष्ट कथाओं के आत्मिक गठन की एकता को देखते हुए, उन्हें एक स्थान पर गुंफित करने का प्रयास कर सकता है ? जहां तक लोक कथाओं के आंतरिक गठन अथवा घटनाओं के क्रम अथवा पात्रों के चारित्रिक विकास का प्रश्न है, वे निपट लोक कथा के अपने ही वर्ण्य-विषय अथवा अपनी ही विषय-वस्तु बनकर कायम रहें । निश्चय है कि इस प्रेरणात्मक स्फूर्ति अथवा समस्या का प्रतिफलन दो रूपों में हो सकता है । एक प्रतिक्रिया हो सकती है: लोक कथा के सुने हुए रूप को प्रस्तुत करते समय, उसका निपट वही रूप रखा जाये जो सुना गया है ताकि कथा में विवेचन और उसकी सामाजिक ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि को समझने में सहायता मिल सके । दूसरी प्रतिक्रिया को इस रूप में व्यक्त किया जा सकता है कि स्वतंत्र कथानकों के कलेवर को ज्यों का त्यों कायम रखते हुए कथा के कलात्मक एवं साहित्यिक सौन्दर्य को अभिवृद्ध करने की दृष्टि से क्यों नहीं उन्हें शृंखलात्मक शैली के अनुकरण पर एक सुगठित रूप प्रदान कर दिया जाय । इन दोनों ही प्रतिक्रियाओं के मूल कारण वस्तुतः भिन्न हैं । पहली प्रतिक्रिया का उद्देश्य है लोक कथा की सामाजिक-ऐतिहासिक व्याख्या एवं दूसरी प्रतिक्रिया का उद्देश्य है एक कलात्मक कृति का सृजन । किन्तु, यदि हम दोनों प्रतिक्रियाओं को एक जूट करके देखें तो सहज ही ज्ञात होगा कि लोक कथा का प्रमुख प्रयोजन आत्म-विनोद अथवा सृजनात्मक तत्व के सौन्दर्य को कलापूर्ण सज्जा के साथ प्रस्फुटित करना है । उसमें सामाजिक ऐतिहासिक तत्व उस कलापूर्ण अभिव्यक्ति में भी उतने ही सशक्त एवं सजग बने रहते हैं । केवल इतना ही नियंत्रण पर्याप्त है कि सुनी हुई कथा के

रूप में नवीन अवतरण का कल्पनात्मक अंश सर्जित नहीं किया जाय। घटनावली के अन्तरंग में प्रवेश पाकर, उसके मानस को विलोड़ित नहीं किया जाय। यदि यह निरपेक्षता कायम रखी जा सके तो स्वतंत्र लोक कथाओं के गुंफन से किसी भी प्रकार का रहस्य छूट नहीं पायेगा। ऐसे कलात्मक परीक्षण के समय एक आवश्यकता को अपने सामने रखना अनिवार्य समझना चाहिये। वह आवश्यकता उस स्पष्ट स्वीकारोक्ति की है जो उन अंशों को व्यक्त कर सके जो कलापूर्ण कथात्मक लेखन में लेखक ने अपनी ओर से सर्जित कर लिये हैं। यह आवश्यकता वस्तुतः लोक कथाओं की आधुनिक अध्ययन शैली के लिये न केवल महत्वपूर्ण है, अपितु पहली शर्त है। साथ ही साथ लोक कथा के लेखन में जो भी नवीन प्रतीक, नवीन तत्व अथवा नवीन बिंब स्वयंमेव प्रस्फुटित हो उठें उनका स्वरूप, गठन और कल्पना का रूप लोक कथा के अंतरंग अथवा उसकी अभिव्यंजना की आत्मा के साथ घुलनशील बने रहें। यदि कल्पना का यह नया सर्जित रूप लोक कथात्मक स्वरूप से वैभिन्य लिये विकसित हो गया तो कथा का रूप एकदम नये स्वर को उत्पन्न कर देगा जिसे लोक कथा की पारिभाषिक शब्दावली में 'बेसुरा' ही कहना पड़ेगा।

वस्तुतः स्वर और स्वर से पृथक हो जाने का बंधन आज के लोक कथा संग्राहक एवं लेखक पर ही एक अंकुश के रूप में मान लिया गया है। इसी परम्परा के भूतपूर्व ऐतिहासिक लेखकों पर यह प्रतिबंधन नहीं था। यही कारण है कि आज बृहत्कथा, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी, पंचतंत्र या हितोपदेश के लेखकों से इस बंधन के विषय में प्रश्न नहीं किया जा सकता। किन्तु प्रश्न के अभाव में भी क्या इन कृतियों के महत्व को न्यून करके आंका जा सकता है ? संभवतया नहीं।

इसी पृष्ठभूमि में राजस्थान की लोक कथाओं के संग्राहक लेखक विजयदान के कृतित्व से एक कथा को समझने का उपक्रम करना चाहता हूं। कथा है : आठ राजकंवर। 'बातां री फुलवाड़ी' के तीसरे भाग की एक शृंखलात्मक कथा।

लोक कथाओं की मौखिक परम्परा में निरन्तर एक अभिप्राय लौट लौट कर आता है कि किसी देश का एक राजा अपनी एक रानी पर बहुत प्रसन्न था। जीवन की धारा अपनी सहज गति से चल रही थी। रानी के महल में एक आश्रय-कोने में एक चिड़े और चिड़ी ने अंडे दिये। अंडों में चहचहाते बच्चे निकले। कुछ बड़े हुए। और अचानक एक दिन उनकी मां उन्हें असार संसार में छोड़कर चल बसी।

चिड़े ने दूसरा घर बना लिया अर्थात् उसने दूसरा संपर्क साध लिया । इस सौतेली मां ने पहिला काम यह किया कि उन सभी बच्चों को तितर बितर कर विनष्ट कर दिया । रानी अपने ही महल में इस सारी घटना को पूर्ण आत्मचेतना के साथ देख रही थी । अनायास उसका माथा ठनका कि यदि वह भी कभी इस संसार से अनायास असीम शून्य में समा गई तो उसके एक, दो या तीन पुत्रों का क्या होगा। क्योंकि प्रत्येक कथा में राजकुमारों की यह संख्या बदलती रहती है । कथा के रूप के अनुसार । रानी ने उसी रात्रि को शयन कक्ष में राजा से ठीक यही प्रश्न पूछ लिया । राजा ने पूर्ण विश्वास के साथ रानी को आश्वासन दिया कि कहीं पशु-पक्षियों का व्यवहार मनुष्य अंगीकार कर सकता है ? रानी की चिन्ता व्यर्थ है । ऐसी सुन्दर, निष्कपट और सहज रानी क्या किसी अभागे राजा को मिल सकती है । क्या वह इस तरह अपनी रानी की स्नेह-गरिमा को कभी भी भुला सकता है । इन्हीं विश्वास और आश्वासन की थपथपी में उस रात्रि का काल बीत गया। लेकिन रात्रि की उस कालिमा में कुछ और ही बदा था । रानी को अपने निस्सहाय पुत्रों को छोड़कर निकट भविष्य में ही मृत्यु का आलिंगन करना था । उसके पुत्र या पुत्रों का भविष्य चिड़े-चिड़ी के बच्चों से बहुत कुछ पृथक नहीं था ।

कथा-सूत्र का प्रारंभ इसी प्रमुख अभिप्राय से होने के बाद राजकुमार या राजकुमारों की विपदाओं अथवा परीक्षाओं का क्रम प्रारंभ होता है । सामान्यतया यह लोक कथाएं एक या दो राजकुमारों को बीहड़ जंगलों, घाटियों, नदियों, शून्य नगरों, दैत्यों के निवासों में घुमाते घुमाते सफल परिणति की ओर ले आती हैं । असत् की प्रतीक सौतेली मां को अपने किये पर या तो पछताना पड़ता है अथवा प्राणों से हाथ धो लेना पड़ता है ।

इसी क्रम की विभिन्न कथाओं के राजकुमारों के संघर्ष की आठ कथाओं को 'आठ राजकुमार' में सुसंगत रूप से पिरोकर औपन्यासिक स्वरूप दिया गया है । लेकिन विजयदान ने इस कथा से उद्घोषित होने वाली एक अन्तरतम ध्वनि को कुछ अधिक अनुरणित कर, स्पष्ट उद्देश्य के उद्घोष में परिवर्तित करने का प्रयास किया है । कथा के प्रवाह को अपनी ही लोकाख्यान की भूमि पर रखते हुए सशक्त और व्यंजना पूर्ण लेखन के द्वारा कथा के अमूर्त पात्रों के जीवन और मृत्यु के प्रसंग के बीच एक नवीन डायमेन्शन का सृजन कर लिया है । लोक कथाओं की रेखाएं स्पष्टतः और साफ साफ कहती हैं कि जो अशिव है, असत् है, अपुण्यवान है, क्रूर

है, हिंसक है, उसे तो निश्चय ही पराजय का मुख देखना पड़ेगा। पराजय ही नहीं, उसे मृत्यु को अंगीकार करना होगा। ठीक इसके विपरीत जो शिव है, सत्य है, पुण्यवान है, दयालु है, अहिंसक है वह चिर-विजयी है। इस सकारात्मक पात्र के लिये लोक कथा के संपूर्ण कथात्मक हथियार, साधन और निधि के अक्षय खजाने अहर्निश खुले हैं। अच्छे कार्यों का नियामक चाहे तो अलौकिक व दिव्य सत्ताओं को अपनी सफलता के लिये प्राप्त कर सकता है, अदृष्ट और दृष्ट रहने की आत्मशक्ति ग्रहण कर सकता है, मृत को जीवित कर सकता है, पशु-पक्षियों की भाषा को समझ सकता है, विश्व के प्राणी मात्र को अपने लिये काम में ले सकता है। वह निश्चित, निडर और परिस्थितियों से निरपेक्ष रहते हुए अपने लक्ष्य की ओर तीर की तीव्र गति के समान पहुंच जाने में समर्थ है। वस्तुतः इस पात्र के लिये घटनाओं का क्रम ठीक उस पहाड़ के ढलाव की तरह है जो पानी के बहाव को अविरल निश्चित गति व मार्ग देने को बाध्य है।

विजयदान के कृतित्व में लोक कथा का यह तात्विक रूप ज्यों का त्यों अवतरित हुआ है। लेकिन एक अन्तरतम संकेत से लेखक का मन अभिभूत रहा है। यह संकेत मात्र एक प्रश्न ही नहीं, एक समस्या और उसके सुलझाव की चुनौती भी प्रदान करता है। यह जो शिव है, सत् है और जो कथा के नियामक सामाजिक तत्व के साथ संपूर्ण शक्ति के साथ गुंथा हुआ है, वह क्या कभी अपने आचार-व्यवहार अथवा कार्य में अशिव या असत् भी हो सकता है? लोक कथाओं में अशिव का विनाश है, क्या वह पात्रत्व की स्थूल काया का ही विनाश है अथवा उस स्थूल काया के द्वारा संकेतित अशिव तत्व का विनाश है जो अपने सूक्ष्मतम रूप में अवस्थित है? यदि घटना के स्थूलत्व के झीने प्रकाश में अपने मन की आंखों से देखने का उपक्रम करें तो साफ हो जायेगा कि स्थूल काया की मृत्यु तो नाटकीय है, कथा के लिये रोमांचकारी है। वस्तुतः संकेतित तो एक प्रवृत्ति का, एक सूक्ष्मतम वृति का विनाश ही है जिसे एक 'अविनाशी' तत्व अपने और समाज के सद-यथार्थ को प्रस्थापित करने हेतु विनष्ट करता है। यदि तत्वतः कथा का आन्तरिक प्रयोजन असत् वृति का विनाश है तो क्या कथा को ऐसा स्वरूप नहीं प्रदान किया जा सकता जहां काया के विनाश के स्थान पर वृत्ति का विनाश ही संकेतित किया जा सके? अथवा अविनाशी के संपर्क से, सहयोग से, पारस्परिक आदान-प्रदान से क्या अशिव को शिवत्व की ओर अग्रसर नहीं किया जा सकता? इस प्रकार के झुकाव

के साथ एक नवीन प्रयोग करना क्या असंगत होगा ?

इसी गुत्थी को सुलझाने में विजयदान ने आठ राजकुमारों को एक नवीन परिवेश प्रदान कर दिया ; उनके प्रत्येक कार्य को एक नव परिप्रेक्ष्य, एक नये आयाम की नयी सीमा तक पहुंचा दिया । सामान्य लोक कथाओं में जहां अशिव के प्रतीक नृशंस दैत्य, विषाक्त नाग, हिंसक सिंह अथवा प्रतिपल रूप बदलने वाला मृत्यु का संहारी रूप निश्चय ही नायक के हाथों आहत होता है और इह लोक लीला को समाप्त कर देता है, वहां विजयदान ने इस कथा के अपने प्रयोग में प्रयत्न किया है कि अशिव पात्र अपने कायागत स्थूलत्व को कायम रखते हुए भी शिवत्व की ओर चला आये । वस्तुतः अकल्याण के क्षेत्र से कल्याण के क्षेत्र में प्रवेश से ही उसकी 'मृत्यु' है । लेकिन उस क्षणिक मृत्यु के ठीक दूसरे ही क्षण वह एक नवीन जन्म ले लेता है । नायक द्वारा अशिव का यह पराभव ही लोक कथा का प्रयोजन भी तो है । लेकिन कथा के एक अंश के छोटे से मुड़ाव से कथा की रूपरेखा मानो चरमरा जाती है और लेखक पर एक नहीं, अनेक बंधन लगाना शुरू कर देती है । यह सुविधा तब भी सहज होती यदि एक ही राजकुमार को अपने अतुष्ट राजा को तुष्ट करने के लिये निकल जाना पड़ता ; किन्तु यहां तो आठ राजकुमार हैं और आठों ही आठ प्रकार की घटनावलियों के नियामक बनने वाले हैं । क्या सभी के सामने ऐसी ही वस्तुस्थितियां या पात्र आयेंगे जो कथा के विवेकपूर्ण विकास में परिवर्तन के परिवेश को एक तत्व रूप में स्वीकार कर लेंगे । कहीं यह परिवर्तन लेखक के मनोवेग का मात्र आरोपण तो नहीं बन जायेगा ? निश्चय है कि ऐसे प्रयोग में लेखक को बंधी बंधाई घटनाओं में कुछ ऐसे विवेकपूर्ण तत्वों को समाहित करना पड़ेगा जो एक तर्कबद्ध रूप में स्थूलकाय दैत्य की काया में वांछित परिवर्तन की भूमिका का निर्माण कर सके ।

आठ राजकुमारों की कथा में विजयदान ने अपने मानवतापूर्ण दृष्टिकोण को व्यक्त करने में अद्भुत सफलता प्राप्त की है । वस्तुतः कथाओं को पढ़ते समय अथवा सुनते समय यह क्षण के लिये कहीं अनुभव नहीं हो पाता कि लेखक ने लोक कथा के किसी रूप में परिवर्तन करके, कुछ नवीनता देने का प्रयास किया है । कथा की सहज गति, उसका अपना सहज विवेक, उसका सहज उद्देश्य सभी तो अपनी जगह कायम है केवल वार्तालाप व पात्र के वे अचेतन कार्य ही अत्यंत स्वाभाविक रूप से एक ऐसी नियंत्रित मानसिक दशा का सृजन करते हैं तो स्थूल को शनैः शनैः

सूक्ष्म बनाते हुए, अचानक मृत्यु के स्थान पर जीवन का संदेश देने लगते हैं। जीवन में साफ साफ दो विपरीत दिखाई देने वाले रंग, अपनी अत्यधिक गहराई में पहुंचते पहुंचते एक ही रंग की आभा को मानो आत्मसात करते जा रहे हैं। इसमें जय विजय की भावना नहीं और पराजय की हीनता भी नहीं अपितु दो बे-मिले स्वरों का समुज्जवल समाधान है।

पांचवे राजकुमार की कथा में धन के एक निस्पृह लोभी दैत्य का चित्रण हुआ है। वह हीरे मोती एकत्रित करना चाहता है, असंख्य, अनगिनत। संसार की मानो संपूर्ण माया को वह दैत्य लोक में परिग्रहीत करके, किसी अनजाने सुख की परिकल्पना में डूबा हुआ है। उसे यदि भय है तो केवल सांसों की गिनती का। कब और किस दिन उसका आना-जाना स्थगित हो जाये। किन्तु उसकी मौत भी सहज नहीं, यह भी एक फार्मूले में बंधी हुई है। विशेष वस्तुओं के संयोग से निर्मित तलवार ही उसकी जीवन लीला को समाप्त कर सकती है। उसे अनुमान ही नहीं, विश्वास है कि यह जीवन लीला का फार्मूला कभी कोई जान नहीं पायेगा। लेकिन हमारा पांचवां राजकुमार चकवे-चकवी के वार्तालाप में उस गुप्त रहस्य को भी जान लेता है। यह लोभी और परिग्रहशील दैत्य आसानी से धन संग्रह नहीं कर लेता। उसके लिये उसे सात भाइयों की एकाकी बहिन को ठीक विवाह के मंडप से उड़ाकर पाताल लोक में लाकर उसके सिर को धड़ से अलग करना पड़ता है। उसके सिर से झरने वाली एक एक बूंद से एक हीरा बनता है। वह ऐसे ही हीरों का संग्रह करता है। निस्पृह वह इसलिये है कि अपने संग्रह से कभी किसी प्रकार का व्यय नहीं करता, न होने देता है। स्वयं कठोर से कठोर यंत्रणा भुगतने को तैयार रहता है। ऐसे दैत्य की स्थिर मान्यता के बीच में राजकुमार को निस्पृह धन संग्रह की लालच-वृत्ति को बदल देना है। उसे मार देना तो आसान है, लेकिन बदल देना शायद कुछ कठिन है। दैत्य अपने आप में टूट सकता है लेकिन वह समझौते की किसी शर्त के सामने झुक जायेगा यह संभव नहीं प्रतीत होता। किंतु जिस प्रकार विष की औषधि विष है, ठीक उसी प्रकार लालच की औषधि भी लालच में निहित है। लालच की सीमा को बढ़ाते जाओ, विस्तीर्ण और असीम गगन के समान अथवा आशा व अभिलाषा की तरह ओर-छोर हीन। यदि लालच और लोभ के साथ विश्वास की मात्रा को गहरा किया जा सके तो निश्चय ही लालची मन अपनी ही कुटिलता में घिर भी जायेगा।

मनोवृत्ति की इन्हीं दशाओं में वैविध्य पूर्ण वर्णों की छाया-प्रतिच्छाया के साथ विभेद होता जायेगा। लेखक ने इन मानवीय भाव-प्रक्रियाओं को कलात्मक सूझ के साथ पकड़ने का प्रयास किया है। राजकुमार एक ओर लोभ को भयभीत भी करता है और दूसरी ओर जीवन की लिप्सा के साथ अखूट हीरे मोतियों की लालसा के उलझे हुए जाल में भी उसे फंसा लेता है। दैत्य रूपी लोभ एक अजीब और विकट संकट की परिस्थिति में स्वयं को उलझा हुआ पाता है। राजकुमार का यह प्रश्न उसे समझ में नहीं आता कि अन्ततः वह इतने धन संचय का करेगा क्या? वह अपनी ही उधेड़ बुन में अत्यंत सहजतम रूप से अबोध राजकुमार को कहने लगता है:

'तू पूछ रहा है कि मैं इतनी माया का क्या करूंगा? लेकिन मेरे सवाल का जवाब दे कि माया से क्या कुछ नहीं होता। माया जुड़ने के बाद ही दुनिया के सभी काम संभव हैं; तू जानना चाहता है तो मैं तुझे बताऊं कि मैं माया से क्या क्या कर लेना चाहता हूं। अपनी माया के जोर से मैं तीनों लोक को अपने कब्जे में करना चाहता हूं। इसी माया से मैं तीनों लोक का रूप और सौन्दर्य खरी-दना चाहता हूं! मुझ से सुन्दर मैं अन्य किसी को नहीं देखना चाहता। इस माया से मैं तीनों लोकों की संपूर्ण आशाओं एवं सपनों को खरीदना चाहता हूं! दुनिया की सारी हंसी खरीदना चाहता हूं! मुझे किसी का हंसना नहीं सुहाता। सब बालकों का खेलना खरीदना चाहता हूं! मुझे खेल से नफरत है। मैं सब माताओं की जनन शक्ति को खरीदना चाहता हूं! सारी दुनिया के सभी उगते हुए अंकुर-किस-लयों को खरीदना चाहता हूं! मुझे नये जन्म पर झुंझलाहट होती है। मौत को मैं निर्द्वन्द्व घूमने देना चाहता हूं! सब लोगों के दिमाग में गोबर भर कर, उनकी सारी पीढ़ियों के ज्ञान को खरीदना चाहता हूं! सभी मनुष्यों के कलेजों को खरीद कर उनकी जगह हिंसक शेर के कलेजे डाल देना चाहता हूं! ताकि उनके हृदय में समायी हुई ममता, उमंग, दया, वीरता और छलकता प्रेम, स्नेह और साहस सदा के लिये सो जाये। इस माया के जोर से आकाश के चांद, गगन के नौ लाख तारे और तेजस्वी सूर्य को खरीद लेना चाहता हूं। लोग अंधेरे में भटकें तो मुझे असीम आनन्द मिलता है। सारी दुनिया के हाथों से उनका हुनर और उनकी करामात को खरीदना चाहता हूं। मैं इस सारी दुनिया का सारा दूध, सारी हरियाली, बादल, बिजली और वर्षा की बूंद बूंद को खरीद लेना चाहता हूं। इस

दुनिया में जितनी अच्छी और ऊंची चीजें हैं, उन सभी को मैं खरीद कर अपने कब्जे में ले लेना चाहता हूं। इसके बाद तीनों लोक में कौन मेरा मुकाबला कर सकता है। अब तुझे मालूम हुआ कि माया के जोर से क्या क्या बातें हो सकती हैं।'

अपार धन, अपार लालच और अपार लोभ की मायावी और अखूट लालसा की ज्योति को मन में संजोये हुए मानस का यह एक चित्र है। धन की निर्द्वन्द्व-गति के पीछे अंततः कौनसी शक्ति है जो मनुष्य को संकेत ही संकेत की भाषा में चलते रहने की प्रेरणा देती रहती है। यदि माया के परिग्रह की भावना को थोड़ी ही कुरेद कर देखा जा सके तो वह दैत्य की ही भांति चिंघाड़ उठेगी कि मैं सर्व शक्तिशाली और सर्वेसर्वा किस प्रकार बन जाऊं। मेरी योग्यता का परिमाण मेरी माया हो। मुझ में क्रय की शक्ति हो और वह क्रय की शक्ति इतनी अधिक हो, इतनी प्रबल हो कि संसार की स्वप्नवत लालसा भी उसके लिये सहज बन जाये। यदि धन के संग्रह की भावना को अन्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य से अलग अलग करते चलें तो दैत्य की आकांक्षाओं का बीज स्वयं हमें अपने अन्तरतम में दिखाई देने लगेगा। मैं मायावी माया के संग्रह का पिपासु इसीलिये तो हूं कि मैं सुखी हो सकूं लेकिन उस सुख का सीमा-विस्तार कितनी मानवीय इकाइयों के सुख को सीमित कर देगा, इसे तो मैंने दैत्य की ही भांति क्षण भर के लिये भी नहीं सोचा। लिप्सा और भोग की इस आत्म-प्रवंचना को जब अभिव्यक्ति मिल जाये तो मानस स्वयं संकीर्ण होने लगता है। मैंने जिस संग्रह का श्री गणेश किया है क्या उसकी इति यह भी हो सकती है ? यह प्रश्न भी उठता तभी है जब आत्म-मुक्त होकर अपने मन के गह्वर में दमित भावना उत्कट आवेग-संवेग के साथ अभिव्यक्त हो जाये।

यही उस दैत्य का हुआ। उसका सुषुप्त और रहस्यमय मानस जाग्रत हो गया तो उसकी संभावना का प्रश्न गौण और असंभावना का ओर-छोर असीम बन गया। राजकुमार ने तब उसी असंभावना के आंचल को पकड़ कर दैत्य को परिग्रह से अपरिग्रह की ओर लाने का निर्णय लिया। यहीं दैत्य की मानसिक मृत्यु हो गई। फिर जो दैत्य शेष रहा वह तो उसका नया अवतार था, नया जन्म था। विजयदान ने अपने पात्रों को इसी सामञ्जस्य की समतल भूमि पर ला खड़ा किया। सामान्य कथा में यही बात नायक के विक्रम एवं साहस को व्यक्त करते हुए दैत्य की मृत्यु की टेक पर समाप्त हो जाती है।

हृदय परिवर्तन का यही दृश्य हमें प्रत्येक राजकुमार की कथा में प्राप्त होता है। विषपूर्ण नागराज और कुटिल दूती के मानस प्रथम राजकुमार के हृदय की उज्जवल स्पर्शमणि को छूकर विभक्त हो जाते हैं। दूसरा राजकुमार हिंसक सिंह के पांवों से कांटा निकाल कर उसे अपना चिर ऋणी बना लेता है। तीसरा राजकुमार शिकारी के विष बुझे तीरों से तीतर के राजा और धीवर के प्राणनाशी जाल से मछलियों की रानी को बचा लेता है। उसके स्नेहपूर्ण व्यवहार द्वारा हिंसापूर्ण व्यवहार की क्रिया में निश्चय ही अन्तर आ जाता है। चौथा राजकुमार नर-भक्षी दैत्य के सामने एक अजीब विरोधाभास उत्पन्न कर देता है। इस दैत्य के पास अमृत की मंजूषा भी है और क्षुधा को मिटाने के लिये नर-नारी को खा जाने का हिंस्र कार्य भी है, सृजन और विनाश की दोनों सत्ताएं हैं। चौथे राजकुमार का सहज प्रश्न है: हे दैत्य राज! तुम सौभाग्य शाली हो कि तुम्हें प्राणी जगत के जीवन और मृत्यु पर एकाधिकार मिला हुआ है। लेकिन क्या कभी गलती से तुमने जीवन-दान देने का भी कार्य किया है? अथवा केवल संहार ही संहार किया है। दैत्य के लिये यह प्रश्न सहज नहीं था। मानो वह अमृत की सुफल शक्ति को तो भूल ही गया था। इसे तो उसने कभी प्रयोग में लिया ही नहीं। बस, इसी सीमा तक पहुंचाने के बाद चौथा राजकुमार अपनी सफलता को सिद्ध मान लेता है। सकारात्मक दृष्टि का उदय ही नकारात्मक कार्यों के अंधियारे का नाशक है। इस तरह चौथा राजकुमार नर-भक्षी दैत्य में हिंस्र-मानस का संहार कर लेता है। पांचवे राजकुमार का निवारण पहिले दिया ही जा चुका है। छठा राजकुमार ठगों के गांव में जा पहुंचता है। ठग ने अपने संपर्क में आये सभी प्राणियों को ठगाई के मिठास का कलुषित स्वाद लगा दिया। संपूर्ण शिक्षा-दीक्षा ही ठगने की, धूर्तता की, धोखे की बोली में मीठी शिक्षा लेकिन करतूतों में काली प्रक्रिया। राजकुमार ऐसे ही गांव में स्वयं को ठगाने के लिये जा पहुंचता है। ठगों के सरदार के लिये यही आश्चर्य की बात है कि ऐसा कौन मूर्ख हो सकता है जो जानते-बूझते ठगाये जाने के लिये तत्पर है? लेकिन राजकुमार की चतुराई और विश्वास के आश्वासन के बीच उसे पराजय स्वीकार करनी ही पड़ती है। सातवां राजकुमार स्वयं मृत्यु के नियामक यमराज से जा मिलता है। उसे किसी के हृदय परिवर्तन करवाने की जरूरत तो नहीं पड़ती लेकिन वह जीवन और मृत्यु के लेखे-जोखे और उसके परस्पर संबंध की गहराई को अवश्य व्यक्त करवा लेता है। आठवां राज-

कुमार देवाधिपति इन्द्र से जा मिलता है। मृत्यलोक और इन्द्रलोक की तुलना के सुन्दर विवेचन में कथा अपने निखार तक पहुंच चुकी है।

इस प्रकार आठ राजकुमार आठ विभिन्न व्यक्ति होते हुए भी वस्तुत: एक चारित्रिक गठन, एक मानवीय वृत्ति और एक ही सांचे में ढले हुए व्यक्ति हैं। कोई भी राजकुमार कौनसा भी राजकुमार हो सकता है; एक दूसरे के स्थान पर पहुंच जाने पर घटना व कार्यों की पद्धति में अथवा सिद्धि तक पहुंचने में कहीं कोई अन्तर नहीं आता। वस्तुतः एकत्व लेखक की सूझ-बूझ नहीं है। यह तो लोक-कथाओं की ही एक अभिप्रायात्मक शक्ति है जो इन आठ राजकुमारों तक ही सीमित न होकर असंख्य-असंख्य लोक-कथाओं के पात्रों पर ज्यों की त्यों लागू होगी। ऐसे पात्रों का निरन्तर पुनरावर्तन और पुनर्कथन न जाने क्यों हृदय पर हर बार नये आनन्द और नये ही अनुभव का चित्र अंकित कर देता है। ऐसा क्यों है — यह तो समझ में नहीं आता लेकिन पात्रों की यह विकट समरसता भी सहृदय श्रोता या पाठक को चिरन्तन आनन्द देने की क्षमता रखती है — यह अनुभूति अवश्य हुई है। घटनात्मक ऊहापोह में संभवतया सहज आनन्द का रहस्य छिपा हो अथवा पात्र के सकारात्मक एवं सफल कार्य के बीच में हमारी सफलता की मनोकामना का बीज ही शायद इसे ग्रहण करना चाहता है। जो भी हो, कथा का सत्य यही है कि आठों राजकुमार कथा के लिये भले ही आठ हों, अपने चारित्रिक गठन में एक हैं और यही कथा संभवतया एक राजकुमार की आठ विक्रम कथाओं का रूप भी ले सकती है। ठीक उसी प्रकार जैसे सिंहासन बत्तीसी की कथाओं ने राजा विक्रमादित्य के इर्द-गिर्द अपना घटनापूर्ण चक्र निर्मित किया है। हर कथा मुख्य पात्र से विच्छिन्न भी है और उसके साथ जुड़ी हुई भी है। विक्रमादित्य अपने नाम पते सहित वहां हो तो भी अच्छी बात है और न हो तो भी सामान्य जाति वाचक राजा या राजकुमार भी उसका 'अभिनय' अदा कर सकता है। आठ राजकुमारों को अलग अलग रखने के कारण एक ही रंग को आठ बार देने का अवसर मिल गया और रंग खूब गहरा बन गया, यही कथा के सौन्दर्य एवं कलात्मक सृजन के लिये ग्राह्य भी था।

आठ राजकुमारों की कहानी को लिखने में विजयदान ने निरन्तर एक अन्य तत्व को भी ठोक ठोक कर सामने रखने का प्रयास किया है। यह तत्व है मनुष्य एवं उसके संसर्ग में आने वाली सष्टि के बीच तुलनाओं का क्रम। यह जो सृष्टि

है, उसके संचालन के जो स्वयंसिद्ध सिद्धान्त या नियमोपनियम हैं, उसकी गति में जो विवेक है अथवा एक संतुलन एवं सामञ्जस्यपूर्ण एकता का विराट दर्शन है—वह सभी कुछ मनुष्य की अनाधिकार नकारात्मक चेष्टाओं से आकुल-व्याकुल हो उठता है। मनुष्य सृष्टि का अंश अवश्य है लेकिन अपने तथाकथित संस्कृति और सभ्यता के कुटिल जाल-जंजाल की कृत्रिमता में वह उसकी गति में बराबर व्यतिक्रम उपस्थित करता है और फिर नये संतुलन के अन्वेषण में अपने को डुबा देता है। जहां तक सृष्टि के सकारात्मक पक्ष का प्रश्न है, वह तो कभी असंतुलन उत्पन्न नहीं होने देता लेकिन ज्यों ही नकारात्मक सत्ताओं का आविर्भाव होने लगता है संपूर्ण सृष्टि का रंग ही बदलने लगता है। इस नकारात्मकता को उत्पन्न करने की क्षमता सृष्टि में केवल मनुष्य को मिली है। जहां सृष्टि और मनुष्य का संसर्ग आया, वहीं सृष्टि की सहजता के साथ मनुष्य खिलवाड़ भी करने लगता है। यदि यह खेल सृष्टि के शाश्वत नियमों के साथ संगतिपूर्ण है तब तो विकास के चरण सृजन का सौन्दर्य और सृष्टि के चार चांद लगाने की बात है और यदि उसमें असंगति है तो धुरी को उल्टी फिराने का व्यर्थ परिश्रम ही है।

छठा राजकुमार ठगों के सिखाये-पढ़ाये तोते से कहता है: 'सर्व जीव एक समान होते हुए भी, हम मनुष्य अपने आचरण में [अन्य प्राणियों से] अधिक हीन और अधम हैं। तुम्हारा स्वभाव तो प्रकृति से बना वही है। तुम छल, कपट, ढोंग और जालसाजी तो नहीं करते। हम मनुष्य तुम से होड़ किस तरह कर सकते हैं।'

लेकिन तोते के सृष्टिगत स्वभाव में ठग नामक मानवीय प्रयत्न ने अपनी करामात का दखल कर लिया है। अतः तोता कह उठता है: 'मैं ठगों के सरदार का पालतू तोता हूं। उसी ने मुझे बोलना और मनुष्य के साथ छल करने का नया ज्ञान कराया है।............मनुष्य की इस बोली और मनुष्य के इस ज्ञान को सीखने के लिये क्या क्या कष्ट उठाने पड़े यदि उसको याद भी करता हूं तो कलेजा कांप उठता है। सरदार का भय मुझमें इतना गहरा बैठा हुआ है कि मैं इस समय खुला और आजाद होने के बाद भी किसी दूसरे आकाश में नहीं उड़ सकता। दुनिया के किसी कोने में वह मुझे छोड़ेगा नहीं। तुम मनुष्यों ने अपने स्वार्थ की खातिर भोले पंछियों को पथभ्रष्ट कर दिया है।.............तुम मनुष्यों में कौन तो अच्छा और कौन बुरा! तुम खुद एक दूसरे के साथ घात करने में नहीं चूकते तब तुम्हें दूसरा कौन समझा सकता है। तुम्हारा तो सारा धर्म, ज्ञान और

सभी कार्य पथ-भ्रष्ट हैं। अब तुमने पंछियों को भी अपने ही सांचे में ढालना शुरू कर दिया है।'

यही प्रतिक्रिया विभिन्न रूपकों में खरगोश, हिरण और कबूतर की भी है। अर्थात् मनुष्य के मन में अवस्थित नकारात्मक सत्ताएं, विनाश, संहार, प्रतिहिंसा, असत्य, शोषण, हत्या, हिंसा, ईर्ष्या, कलुषित वासना, निर्द्वंद पाप, अधर्म और अन्याय, किस प्रकार छाई हुई हैं, उसका अनुमान या गणना भी संभव नहीं है। विजयदान को आठों राजकुमारों के कार्यों में जहां मौका मिला है अथवा मनुष्य के सृष्टि-संसर्ग के बीच विरोध का आभास मिला है, वहीं यह मानवीय धारणा और भावना अपने तिक्ततम रूप में अभिव्यक्त हुई है। लगता है कि लेखक के मन में एक उमड़ता-घुमड़ता रोष है, क्रोध है जो मनुष्य को अपने मनुष्यत्व से गिरते हुए देखकर पूर्ण वेग से बिखर जाता है। आवेश के साथ उसकी चिनगारियां और स्फुलिंग विचारों की गति के साथ बिखर जाते हैं। ऐसे किसी स्थल पर न लोक कथा ही मनुष्यत्व को क्षमा करती है और न विजयदान ने ही बक्षने का प्रयास किया है। जो कुछ शिव है, सत्य है अथवा मानवीय प्रयास के लिये सद् है, वही लेखक की एकान्तिक दुर्बलता है। उस अंश पर आघात मानो बरदाश्त ही नहीं हो सकता। ऐसे मानसिक परिवेश वाले लेखक के लिये लोक कथाएं सहज सामान्य भी शेष नहीं रहती क्योंकि उनकी ज्योति में आधुनिक मनुष्य का क्षुद्रत्व इतना विराट होकर दिखाई देने लगता है कि मन कहीं भी वैज्ञानिक औचित्य की चिन्ता ही नहीं करना चाहता। विजयदान ने लोक कथाओं के शिवत्व की कल्पना में वस्तुतः एक सजग, सक्रिय, सकारपूर्ण और सशक्त मनुष्य को ढूंढ़ने का डायमेन्शन अलग से पैदा कर दिया है। ऐसे मनुष्य को ढूंढ़ने के लिये लेखक की कलम अप्रतिहत गति के साथ बह जाने में अनायास समर्थ हो उठती है।

इसी तात्विक मनोभावना को व्यक्त करने का दूसरा मौका विजयदान को स्वर्ग नरक अथवा मर्त्यलोक की तुलना में मिला। यदि मनुष्य अपने ही मर्त्यलोक की सृष्टि के बीच में स्वार्थी है, क्षुद्र है, नीच है, दुर्बल है, निकम्मा है तो पारलौकिक स्वर्ग और नरक के सामने अथवा वहां के निवासियों के सामने वह निस्वार्थी है, श्रेष्ठ है, सबल है और सुकर्मों का नियामक है। मनुष्यत्व हर हालत में देवत्व की परिकल्पना से श्रेष्ठ है, श्रेयस् है। मनुष्य की दुर्बलता को कितने ही दोष क्यों नहीं देदें, इस तथ्य से इन्कार करना कब संभव है कि उसके सद् प्रयत्न, उसके इति-

ह्रास, उसके ज्ञान की गरिमा और सोद्देश्य जीवन की सार्थकता के प्रयास अपने आप में कम नहीं है। मनुष्य निष्क्रिय द्रष्टा नहीं है। असंभाव्य वरदानों की शक्ति उसमें चाहे नहीं हो, लेकिन जगत की सर्वांगीण उन्नति के हेतु उसकी सकारात्मक क्रियाएं कितनी बृहत् हैं ? उसके अन्वेषण, उसकी संस्कृति, उसकी सभ्यता, उसकी शिक्षा-दीक्षा और निरन्तर चलते रहने की काव्यात्मक क्षमता कितनी है। कहीं उसका माप है, तोल है या गणना है ? देवलोक में यह संघर्ष कहां है ? वह तो निष्क्रिय है, स्थिर है, स्थित है, जड़ है और विकास की संभावना से शून्य है। विजयदान केवल देवलोक या मनुष्य के इतरलोक की दिव्यता से, ऐश्वर्य से, तथा-कथित सुख-संपन्नता से, विलास से, आनन्द की असीम परिकल्पना से अभिभूत नहीं है। केवल इतना ही नहीं, विजयदान ने लोक-कथाओं से ही एक ऐसे अचेतन सृजन तत्व को पहिचान कर अपने लेखन-अस्तित्व का अंश बना लिया है कि उससे उपरोक्त सभी मान्यताएं नवीन लगते हुए भी अपने उत्स में लोक कथात्मक मानस के साथ संपृक्त बनी रहती हैं। यह तत्व है प्रत्येक लोक कथा में मानवता की विजय। इस मानव की जय यात्रा में चाहे सुरलोक आये, असुर लोक आये, पाताल लोक आये, स्वर्ग लोक आये, नरक आये, समुद्र आये, सूर्य आये, तारे आयें चाहे ब्रह्मांड की कोई भी शक्ति आये, अन्ततः सबका समाहर मनुष्य की विजय में ही होता है। यह विजयाभिषेक तो मनुष्य के भाल पर ही होना होता है। लोक कथाएं वस्तुतः मानवता के विजय उद्‌घोष का चिर निनादित तूर्य है। यदि लोक कथाओं का यही मर्म है, यही तत्व है, यही विवेक है और यही अर्थ एवं इति है तो उसके पुनर्लेखन में उस कंजूसी की कहां आवश्यकता है जहां देवलोक, दिव्यलोक या भयप्रद लोक, भयंकर लोक या नरक जैसे कष्टप्रद लोक की कल्पना से भयभीत हुआ जाये। लोक कथाएं अपनी आन्तरिक सृजनक्रिया में सामूहिक जन-मानस की इसी सशक्त अनुभूति की उर्मियां हैं तब तो और भी निश्चित और उन्मुक्त मनुष्य की विरुदावली को गाया जा सकता है।

बस, इसी तत्व की पहिचान ने विजयदान को निश्चित कर दिया और उसके कथा पात्र एक नयी सी लगने वाली भाषा में मुखरित हो उठे। इस बात को समझने के लिये विजयदान के काल के देवता यमराज और देवताओं के अधिपति इन्द्र से मिलना पड़ेगा। दोनों ही मनुष्य के अस्तित्व के दो सत्य हैं—एक जीवन के साथ है और अन्य मृत्यु के साथ।

सातवां राजकुमार यमराज के एक दूत के विकट कार्यकलापों की शृंखलाबद्ध घटनाओं को अपनी आंखों से देखता है । चूहे से सर्प, सर्प से ऊंट, ऊंट से बैल, बैल से हिरण, हिरण से सिंह, सिंह से सुन्दर अप्सरा, सुन्दर अप्सरा से सूअर, सूअर से भैंसे के रूप में परिवर्तित होते हुए प्रत्येक स्वरूप में वह किसी न किसी मनुष्य के प्राणों को अपनी देह से मुक्त कर दे रहा था । राजकुमार के लिये यह घटनावली निश्चय ही विस्मयपूर्ण थी किन्तु वह घटनाओं के आन्तरिक कारण तक पहुंचने के लिये निरन्तर रूप-परिवर्तनशील मृत्यु के दूत का पीछा करता जा रहा था। भैंसे के रूप में जब वह पहुंचा तो राजकुमार उसके काफी निकट पहुंच गया था । भैंसे ने बताया कि वह यमराज का दूत है और इसीलिये जिस प्राणी की जैसी मृत्यु लिखी थी उसी के अनुसार वह संहार करता चला आ रहा था। भैंसे ने यमराज की यह इच्छा भी जाहिर की कि वे किसी जीवित मनुष्य से मिलना चाहते हैं ? क्या राजकुमार चलने को तत्पर है ? अंधे को क्या चाहिये ? दो आंखें ही तो । राजकुमार यमलोक जा पहुंचा। यहां पहुंचने पर यमराज और उनकी पुत्री द्वारा मानव-लोक की शिकायतें सुनते सुनते राजकुमार के कान ही मानो पक गये । यमराज ने बताया।

'शुरुआत में मर्त्यलोक, स्वर्गलोक और यम लोक अलग अलग थे । पारस्परिक मदद व भाईचारे का संबंध था ।......हमारे ज्ञान-विज्ञान का ओर-छोर नहीं था, इसलिए निर्बल मनुष्य को अपने पांवों पर खड़ा करने के लिये हमने खूब खुशी खुशी सब तरह से उसकी मदद की ।'

किन्तु यमराज के अनुसार मनुष्य ने इस मदद का प्रतिदान ठीक नहीं दिया । न उसने इस आशा को ही पूर्ण किया कि संपन्न होने के बाद 'मनुष्य इस धरती को कुछ का कुछ बना देगा और सब प्राणियों की रक्षा करेगा ।' इसके विपरीत यमराज स्वीकार करते हैं कि 'हम मानते हैं कि वह हमसे कहीं अधिक सामर्थ्यवान हो गया है, हमसे बहुत अधिक बढ़ा चढ़ा है लेकिन हाथ की अंगुली कितनी ही सूज जाये वह मन्दिर का स्तंभ तो नहीं ही बन सकती है । अब भी जब थोड़ा सा कष्ट मिलने लगता है तो वह कराह उठता है । सहायता के लिये दौड़ा चला आता है ।'

यमराज की पुत्री के शब्दों में स्वर्ग लोक और यम लोक भी मनुष्य की ही कृतियां हैं और वह इस विराट सृष्टि की रचना के तत्वों के विषय में कहती है:

'पहिले मर्त्यलोक के साथ यमलोक व स्वर्गलोक को मदद देने के अलावा कोई संबंध नहीं था। लेकिन एक दिन मनुष्य ने हाथ जोड़कर कहा कि अब भगवान का निर्माण किये बिना उसका काम नहीं चल सकता। उसकी बात मान कर भगवान का ठाटबाट बनाया गया। उसने अपनी बात को समझा कर कही कि भगवान के बिना दुनिया का विकास ही संभव नहीं होगा। सब मनुष्य एक जैसे नहीं है। उसने समझाया कि अनेक मनुष्य पशुओं से भी हीन और अधम हैं। उन्हें गुलाम बनाकर काम लिये बिना दुनिया का कामकाज ही ठप्प हो जायेगा। सिर्फ भगवान के अंकुश से ही उन्हें काबू किया जा सकता है, अन्यथा वे कभी हमें नहीं धारेंगे। हमने उसके कहने पर पूरा भरोसा किया। हम दोनों लोक के वासियों ने वर्षों तक सोच विचार कर भगवान की स्थापना की। हमने मनुष्य को समझाया कि अब भगवान का आव-आदर और श्रद्धा तुम्हारे हाथ है। कभी ऐसा न हो जाय कि भगवान की ही खिल्ली उड़ने लगे। एक बार बना दिये जाने के बाद इनकी गद्दी कभी खाली नहीं रहेगी। इनकी पूजा और सम्मान की अब जिम्मेदारी तुम्हारी। मनुष्य ने विश्वास तो दिलाया ही और उसी के अनुसार ऐसा दिव्य ठाट जमाया कि हम लोगों का दिमाग ही चक्कर खा गया। इस विषय के भेद को अत्यंत गुप्त रखने के वचन भी लिये-दिये जा चुके थे। हमने आज तक उस वचन को भंग नहीं किया। उधर मर्त्य लोक में भगवान के भेद को जानने की वह लौ लगी कि अभी तक उसकी गहराई का पता नहीं लग सका। इस गहराई को कभी कोई माप भी नहीं सकेगा। कुछ वर्षों बाद उसने फिर फरियाद की कि केवल एक भगवान से उसका काम चलना मुश्किल है। भगवान के साथ ही अनेक देवताओं को भी बनाना पड़ेगा। उसने अपनी बात को अच्छी तरह समझाया तो हम दोनों लोक के वासियों ने विचार किया और मनुष्य के कहने के अनुसार देवताओं की स्थापना की। उसने जैसा चाहा और कहा उसी के अनुसार स्वर्गलोक व यमलोक में भी हेराफेरी की गई। हमने उसके कहने पर कभी भी अविश्वास नहीं किया। लेकिन जब भगवान और देवताओं के नाम लेकर मर्त्यलोक में तनातनी हुई तो हमने मनुष्य को उसका कारण पूछा। उसने जवाब दिया कि दुनिया के विकास के लिये यह तनातनी जरूरी है, इसके बिना काम आगे नहीं बढ़ सकता। इसी तनातनी के साथ कर्म, आत्मा, और मुक्ति का जाल बिछाना भी जरूरी है। पुनः मनुष्य ने हमें स्वर्ग और नरक का पूरा पूरा नक्शा समझाया। कर्म, आत्मा, मुक्ति, नरक और स्वर्ग के विषय

में उनके नये विचार सुनकर हमारे आश्चर्य का पार नहीं रहा । मनुष्य की समझ और ज्ञान पर हमें भी गर्व उत्पन्न हुआ । असंख्य वर्षों तक मनुष्य की समझ के अनुसार हमने सृष्टि के रूप को संवारा । आपस में निरन्तर वचन होते रहे कि कोई किसी के साथ छल नहीं करेगा और न किसी के सामने इस भेद को प्रकट होने देंगे । इस प्रकार सब चीजों की स्थापना करके उन्हें भूलने की चेष्टा करने लगे । सब लोगों ने मिलकर जो स्थापनाएं कीं उनका एक दूसरे ने दायित्व संभाला । विष्णु स्वर्ग का काम काज देखेंगे और धर्मराज यमलोक का काम काज देखेंगे । मनुष्य मर्त्यलोक की मर्यादा के बाहर नहीं निकलेगा ! वह जीवित रूप में कभी भी यमलोक या स्वर्गलोक में प्रवेश नहीं पा सकेगा । मनुष्य के कहने से ही यह जंजाल हमने अपने सिर पर लिया लेकिन मनुष्य ने प्रपंच संभलाये बाद वापस इधर मुंह करके भी नहीं देखा । हम तो आज भी प्रपंच में उलझे हुए हैं और उधर मनुष्य ने प्रपंच के नाम पर मर्त्यलोक में ऐसे अकर्म प्रारंभ कर दिये । सो लाख मना करने बाद भी नहीं माने । अपने मतलब के लिये तो हमारी पूजा करता किन्तु काम अपनी मर्जी के मुताबिक करता । उसके कहने के अनुसार ही हम उसके कर्मों का लेखा जोखा रखते हैं, नरक-स्वर्ग का फैसला करते हैं लेकिन उसने हमारे सारे काम को बिखेर डाला है । उस दिन भगवान विष्णु के सामने स्पष्ट तय हुआ था कि मनुष्य जन्म और मरण के काम में किसी भांति की पंचायती नहीं करेगा । वह सिर्फ अपने काम से काम रखेगा । कर्मों के हिसाब से सारा लेखा जोखा हम करेंगे लेकिन उसने इस निर्णय की पाबंदी नहीं रखी ।'

यमराज की पुत्री आगे कहती है—'लेकिन मनुष्य ने मारने का काम खुद के हाथ में ले लिया । इसके पहिले मौत का एक माप था, समय था और उसका एक संदेश था। लेकिन मनुष्य ने तो अपने ही बीच में युद्धों का प्रबंध कर लाखों मनुष्यों को मारना शुरू कर दिया । कर्मों के लेखे-जोखे किसी काम के नहीं रहे। ......यमदूतों के बिना ही मनुष्य ने स्वयं मनुष्य को मारना शुरू कर दिया, जिसमें पूरे समाचार भी हमें नहीं मिले ...... हिसाब-किताब में इतना घोटाला हो गया कि जिसको संभाले नहीं संभाल सकते ।' राजकुमारी ने बताया कि पहिले तो विष्णु भगवान निश्चित रहे किन्तु जब मनुष्य ने जन्म में भी दखल देना प्रारंभ किया तो वे चेते । लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। इधर यमराज ने भी बेहिसाब अकाल मौतें बढ़ा दीं । यदि ऐसी अकाल मौतें नहीं करते तो मनुष्य कभी का यमलोक पर

अधिकार जमा लेता ।

इस समस्या का निदान फिर विष्णु भगवान और धर्मराज ने किया। यमराज की पुत्री के शब्दों में उनका निर्णय था ।

'कि मनुष्य कभी भी उनकी अटकल को समझ न सके और कभी भी अपने जंजाल से न छूटे । वह अटकल है मनुष्यों को अपने आप में लड़ाने की । मनुष्य मनुष्य एक दूसरे को अपने समान न माने। अपने आप में छोटा-मोटा जानकर झगड़ता रहे। न कभी उनका यह झगड़ा समाप्त होगा और न उन्हें समय मिलेगा कि यमलोक या स्वर्ग पर अधिकार करने की बात को सोच सकें । वे स्वयं एक दूसरे पर राज्य जमाने ओर एक दूसरे को गुलाम बनाने की युक्तियों में जीवन भर उलझे रहेंगे ।'

अन्ततः इसी तरकीब ने अपना काम कर दिखाया । लेकिन इन शब्दों के परे यदि यथार्थ को देखने का उपक्रम करते हैं तो मनुष्य के अदम्य साहस का चित्र आलोकित हो उठता है । अलौकिक सत्ताओं की शक्ति के मूल में भी मनुष्य का दिव्य मानस कुंडली मारे बैठा है । उस कुंडली के रहस्य को जानना ही मनुष्य के श्रेष्ठत्व को अपने अंतरतम रूप में समझ लेने का प्रयास कहा जा सकता है। सातवां राजकुमार अपने विक्रम और साहस की घटना के द्वारा यही असूल्य अनुभव का एक हीरा लेकर यमलोक से लौटता है । वह निश्चित है कि मनुष्य केवल यदि अपनी शिवत्व की कल्पना से संपृक्त रह कर, जीवनयापन कर सके तो वह स्वर्गलोक से भी श्रेष्टतर है, अलौकिक है, अगम्य है, असीम है और सत्-चित्-आनन्द का प्रतिरूप है ।

इसी क्रम में आठवां राजकुमार इन्द्रलोक जा पहुंचता है। इन्द्रलोक अपनी दिव्यता, ऐश्वर्य, विलास, आनन्द और चिर-उन्मत्त हर्ष के सौ-सौ सूर्यों के आलोक से ज्योतिर्मय हो रहा है । किन्तु यह संपूर्ण आनन्दोल्लास अपनी चिरन्तनता के कारण एक मानसिक थकावट का कारण बन गया है। चिर सूर्यलोक, नव अनुभवहीन चिर जीवन, चिर यौवन और चिर विलास में जीवन की संघर्षमय अनुभूति कहां है ? कुछ प्राप्त करने का संवेदन व उससे प्राप्त सुख कहां है ? आठवें राजकुमार को इन्द्र गहरे असंतोष के साथ पहिले तो शिकायत करते हैं कि मनुष्य ने हमसे मिलजुल कर एक त्रिलोकी व्यवस्था बनाई फिर अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना लिया । इतना ही नहीं उसने हमारे देवलोक का भी अपने स्वार्थ के लिये प्रयोग करना प्रारंभ

कर दिया । अबूझ मनुष्यों को परलोक का भ्रम एवं भय बता बताकर उन्हें त्रस्त करने लगा है । लेकिन इन्द्र की आत्मवेदना का मुख्य कारण, उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है ।

'स्वयं ने [मनुष्य ने] मौत का वरदान लेकर हमको अमरता का अभिशाप सौंप दिया । मौत से सुन्दर वस्तु तो तीनों लोकों में कुछ है ही नहीं । आप लोग मृर्त्यलोक में तो मरने का आनन्द लेते हो और हम अमरता की अग्नि में झुलस रहे हैं ! .... केवल तुम्हारे कहने में आकर हमने अमरता जैसी अधम एवं हीन बात को कबूल किया था लेकिन तुम तो फिर उसके निकट होकर भी नहीं निकले । यहां हीरे, मोती, सोने, चांदी की दरिद्रता का साम्राज्य बना कर स्वयं पत्थर, कंकर और धूल जैसी अमूल्य वस्तुओं के बीच आनन्द कर रहे हो । हमें भ्रम में डालने के लिये तुमने बुढ़ापे की खूब बुराई की और अब स्वयं बुढ़ापे का आनन्द उठा रहे हो ।'

इन्द्र का आत्मवेदन इन्द्रलोक की जड़ता, स्थिरता, यथास्थित्यात्मक परि-स्थिति के कारण है । अपरिवर्तनशील, द्वंद्वहीन, संघर्षहीन जीवन प्रणाली को जीने में उन्हें कष्ट है । मनुष्य इन सभी जीवन के आनन्दों को प्राप्त करने में सफल हुआ है । कथा में इन्द्रलोक को राजकुमार मृत्यु-लोक का संदेश पहुंचाता है कि 'यदि तुम सुखी होना चाहते हो तो प्रण करलो कि हाथ से कमाये बिना किसी वस्तु का भोग नहीं करोगे !............ अपनी छली प्रवृत्ति को भूल जाओ और अपने योग्य नये कार्य ढूंढ़ो, नयी युक्तियों की रचना करो और नये नये करतब करो ।' इसके बाद राजकुमार पूछता है कि आपने अपने लोक में विकीस शील परिवर्तन लाने के लिये कुछ प्रयत्न किया है । निश्चय है कि स्वर्ग-लोक ऐसे प्रयत्नों के प्रति जड़वत् ही बना रहा । युग-युगों से वह जहां है, ठीक वहीं स्थिर रह गया है ।

विजयदान ने लोक कथा के इन्हीं तत्वों में कुछ तिक्त रंग भरने की दिशा में कार्य किया है । परम्परा से प्राप्त कथाओं के अपने कलेवर में विचारों का रंग मौजूद अवश्य था किन्तु वह घटना की अलौकिकता के बीच में साफ छिपा रह जाता था । सफल लेखक एवं सृजनात्मक हृदय ने कथा के इन विभिन्न सुन्दर अंकुरों को पहिचान कर, अपनी कल्पना से उन्हें सींचने का प्रयास किया है । यही कारण है कि कथा में एक नया डायमेन्शन, आधुनिकता का भाव-बोध और देश-काल की प्रतिभाजन्य छाया अनायास उत्पन्न हो गई है ।

संपूर्ण कथानक में ऐसे अनेक सूक्ष्म विचार भी आये हैं जो लोक कथा के घटनात्मक ताने बाने के बीच में सुन्दरतम भाव सूत्रों के साथ नवीन बिंबों का सृजन भी कर सके हैं। कथा की पारम्परिकता के बीच में मार्मिक स्थल प्राण-वान और जीवन उद्देश्य की प्रक्रिया से ओत-प्रोत हैं।

अन्त में, विजयदान के भाषा प्रयोग के विषय में कहना आवश्यक होगा। आधुनिक राजस्थानी के गद्यात्मक विकास में जिस भाव-पूर्ण, संकेत-पूर्ण और सशक्त अभिव्यक्ति-पूर्ण भाषात्मक गठन का प्रयोग विजयदान की कलम से हो रहा है, वही रूप वस्तुतः राजस्थानी के लालित्य और सौन्दर्यपूर्ण शक्ति की ओर अना-यास मन को आकर्षित करने की क्षमता रखता है। लोक कथा साहित्य के लेखन में प्राण प्रतिष्ठा होने का मुख्य कारण ही आकर्षक शब्दावली, सूक्ष्म कल्पना और निपट धूल से लिपटी हुई वाणी का प्रयोग ही बन पाया है। भाषा के सौन्दर्या-त्मक गठन के उदाहरण के रूप में 'फुलवाड़ी' का यह संपूर्ण भाग पाठकों के हाथों में है और उसे पढ़ कर, आत्मसात करने के बाद ही राजस्थानी के एकां-तिक एवं स्वतंत्र अस्तित्व की कहानी समझ में आयेगी! अस्तु।

तीसरे संस्करण की भूमिका
— नवम्बर १९६८

बातां री फुलवाड़ी

बाड़ा री मरजादा

अेक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा, फबता नागौरी बळदां रौ अणूंतौ कोड हौ । फगत कांम में परोटण रा लोभ री खातर नीं, वांरी अंवेर करण रौ चाव उण में अंत इज घणौ हौ । बळदां नै आपरै जाया अर भायां सूं ई वत्ता जांणतौ । बळदां नै इण भांत अपटां चरावतौ के पाखती रा चौखळा में उण चौधरी री मिसालां लागती । घणकरा लोग उणनै सुणायनै कैवता के आगला जलम में राजी-खुसी बळद जमारौ अंगेजलां जे बाबा री बाड़ौ हाथ लागै तौ । अबारूं ई जे खोळियौ पलटीजतौ व्है तौ इणी सायत त्यार व्है जावां ।

बळदां सारू पक्की गडाळां, पक्का ठांण अर पांणी पीवण सारू न्यारी न्यारी कूंडियां । तीजै चौथै दिन बैठण सारू उडांण री मई मुलमुल पलटीजती । ठांणां में ठेलवौ पराळू चीपटौ, दोनूं टंक तिल बाजरी रौ वांटौ, चौमासै हळोतिया रै मूंडै चार पखवाड़ां तांई गावा घी री धपाऊ नाळां, ऊनाळै नित संपाड़ौ—बळद बीजळियां रै उनमांन पळकता ।

बळदां रौ सिणगार ई उणरौ अणूंतौ हौ । पिचरंगा सूत री नाथां अर पिचरंगा भळेवड़ा, रेसमी फूंदियां, सूत री राह-ड़ियां, मूंडा रै मोहरा अर माथै चांदी रा घूघरां वाळा छड़ा, गळा में रेसमी गळकोड़, नागौरी घूघरमाळ, सींगड़ा चौप-ड़ियोड़ा, अणियां माथै चांदी रा कळसिया, कटाव री झूलां, पगां रै गुळी रा डोरा, ढेरवाळ सुथराई सूं फूंदीपाड़ कतरि-

योड़ा ।

बळदां रा फेरणा में ई कोई नैड़ौ-आगौ चौधरी जैड़ौ सागड़ी नीं हौ । उणरै फेरियोड़ा बळद हळां में हंस हालै ज्यूं हालता हा । पैला वौ जोड़ै गांथै देयनै ढाण सिखावतौ, पछै डांडै फेरतौ । चौधरी रा बळद मिनखां नै देख्यां दूणै जोस चढ़ता । चौधरी रै हाथां फेरियोड़ा बळद जाजम रै माथा कर निकळ जावता तौ ई सळ नीं पड़ता ।

बळदां री खोड़ां अर वांरा गुण सीखण सारू मुलकां रा वोपारी चौधरी रै पाखती आवता । उणरी खासी-भली लटापोरियां करता जद वौ ठीमर बणनै कैवतौ— डील माथै जित्ता रूंगता व्है, उत्ती ई बळदां में खोड़ां व्है, कोई पारखू व्हैणौ चाहीजै ।

पछै वौ आंगळियां रा पैरवां माथै अंगूठा सूं गिणतौ नीची धूण करियां खोड़ां गिणावतौ ई जावतौ— खुरफाड़ी फाटै, अेक खुरी आगै बध आवै, अेडी में मस, मुरचां कमजोर, फींचां बारूंती फाटै, फींचां पाधरी, वेवणा पगां, टंटां में पोटियां, चूळियौ बैठोड़ौ, पूठा माथै भंवरौ, पूठौ तीखौ, पूठौ ढाळू, गौ पूंछौ, लांबौ पूंछ, ढाकणियौ, टाचणियौ, बीछूड़ौ, बांडियौ, कड़तोड़ौ, बूंदी, स्यारौ, सपणियौ, ढील अंगौ, जाडौ चांमड़ौ, लांठी रूंवाळी, लांठी तारां, बांड पासळियौ, लांठौ पेट, लांबौ मूतणौ, सांमलौ, आगूं सेवौ, घूबलौ, गाय अंगी थुई रौ, ओछी गाबड़ रौ, खांधा रौ काटलौ, लांठी कांबळ रौ, लांठा कांनड़ा, मोटा माथा रौ, भेळी मथुंडी रौ, कोल्या सींगड़ा, टोरणियौ, दुग्घियौ, बेड़ा फोड़, फुरकण, केरी,

कायरौ, चकरियौ, भूरा भोपणा, धोळ जीभौ, सातळियौ, मोटी दंतराय, रसीलौ, जाड़ल, नेवरियौ, छिटकियौ, बांमलौ, सेंकोळियौ, कबलौ, हंसलौ, काळियौ, फूलियौ, साङू, माठौ, तावड़ियौ ....!

ग्रेक सास में इत्ती खोड़ां गिणायनै वौ कैवतौ — पेरवां माथै कित्तीक खोड़ां गिणावूं । मौका माथै निजरां देख्यां ध्यांन आवै ।

पण वौपारियां नै तौ इत्ती खोड़ां ई याद को रैवती नीं । पछै वै कैवता — वा बाबौजी खोड़ां तौ इत्ती ई घणी, अबै कीं गुणां रौ ग्यांन करावौ ।

चौधरी बळदां रै सांम्ही जोयनै कैवतौ — थांरै गुण-खोड़ां लारै म्हारा सूं आंरी सावळ ग्रवेर ई नीं व्हे । ग्रेक ग्रेक जणा नै म्हैं कठा तक बतावतौ जावूं । सगळा ग्रेक दिन ग्रेकण सागै आयनै सगळी बातां घोखतौ । पछै वौ आपै ई गुण बतावण लाग जावतौ — चारूं धड़ां सरीखौ, लांबै वेलै, काठौ डील, छोटी तारां, पतळी चांम, मई रूंवाळी, पगां माथै डीगौ, अगर चौड़ौ, पतळो कांबळ रौ, तीखी अर डावी थुई रौ, भंवरा सुध, कांनां छोटौ, मूंनाळ छोटी, रंग रौ सफेद, कूंडळी सींगाड़ी, ओछी अर पतळी पूंछ, छोटौ मूतणौ, चौड़ी माकड़ी, खुल्ला क्यारां रौ, जीभ री अणी माथै ग्रौळी चाटौ, नवदंतौ, चारू, छोटी खुरफाड़ी ....!

के अचांणक चौधरी बळदां रा गुण गिणावतौ ठमतौ अर आपरा बळदां सांम्ही सांनी करनै कैवतौ — भला आदमियां, म्हैं ई कैड़ौ बावळौ व्हियौ अर नीं थांनै ई कीं चेतौ रह्यौ ।

सिवजी रा नांदिया नै ई मात करै जैड़ा बळद सांप्रत निजरां ऊभा अर थें म्हनै गुणां रौ लेखौ पूछौ । अै सगळा बळद गुणां री परतख खांन ज्यूं ऊभा । आं में है जका सगळा गुण अर बाकी री सगळी खोड़ां । सावळ निरांत सूं आंनै देखलौ अर गुण पिछांणलौ ।

गिणगोरियां माथै चौधरी अणूंतौ कोडायौ होयनै अेकण सागै सात तांगा दौड़ावतौ । आखती-पाखती रै गांवां रा लोग अवस करनै औ मेळौ जोवण आवता ।

चौधरी-बाबौ कदैई गुमेज में ठाकरसा नै कैवतौ — आप हुकम फरमावौ तौ रावळा ऊंट-घोड़ां नै म्हारै बळदां सूं लारै राख दूं ।

ठाकरसा मिसखरी करता जबाब देवता — चौधरी घणौ गुमेज आछौ कोनीं । भगवांन नाक री डांडी माथै बैठौ है, कदैई हाथौहाथ परचौ बताय दियौ तौ सगळी आंट उतर जावैला ।

सेवट ठाकरसा रा बोल फळिया । अेकर चौधरी आपरा ब्याही रै अठै रातीजगा में झिलग्यौ । वौ आपरा बळदां नै छोड, नीं कठै ई आवतौ अर नीं कोई जावतौ । रात रा नींद ई सावळ को लेवतौ नीं । घड़ी घड़ी सूं ऊठनै वांरी अंवेर करतौ । ब्याही घणौ हठ झेल्यौ तौ सेवट उणनै नमणौ पड़ियौ । तौ ई वौ अेक गळी काढ़ी के उणरै मोटी संगत गिणौ तौ आं बळदां री ई है । घड़ी घड़ी सूं बाड़ा में आयनै आपरै बळदां री खुद संभाळ करैला । ब्याही नै उणरी बात मांनणी पड़ी ।

केई बरसां सूं चोरां रै औ ताखौ सजियौ हौ । वै ठीक

मौकौ देखनै चौधरी रै बाड़ा सूं चार जोड़ियां उचकाई । उणरा इज तांगा जोतनै उठा सूं ताचकिया । कौल परवांण चौधरी संगत सूं घड़ी रै उपरांत पाछौ आयनै संभाळ करी तौ चार जोड़ियां अर चार तांगा ठौड़ माथै निगै नीं आया । चोरां रा खोज बाड़ा में सुभट दीखता हा । चौधरी री आंख्यां सांम्ही तौ जांणै बीजळियां चिमकण लागी । बळद जावण रौ जित्तौ सोच नीं उत्तौ गवाड़ी री पत जावण रौ सोच लागौ । चौधरी तौ सीधौ दौड़तौ दौड़तौ ठाकरसा रै कोट पूगौ । हळफळियौ हांफतौ हांफतौ हाथ जोड़नै कैवण लागौ — अंदाता, गजब व्हैगा ! ब्याही रै हठ करणा सूं म्हैं संगत में बळियौ जित्तै चोर मौकौ देखनै चार जोड़ियां, तांगा जोतनै ले भाग्या । म्हारी गवाड़ी अर ठिकांणा दोनां री पेठ उड जावैला । लारै वार चढ़णी है । चोरां रै खोजां खोजां घोड़ा अर ऊंट दाबणा है । बापजी, फुरती करौ ।

इण वगत ई ठाकरसा मोसौ मारता बोल्या — थूं ई कांई विलळी बातां करै ! रावळा घोड़ा अर रावळा ऊंटां सूं आगै दौड़ण वाळा बळदां नै अबै कीकर न्हावड़ सकां । थूं केई वार मोदीजतौ खुद आपरा मूंडा सूं आ बात करी । अबै तौ सबूरी झेलणी ई सावळ ।

चौधरी पगां पड़तौ कह्यौ — म्हारा धणी ! औ मिसखरी रौ मौकौ नीं है । आपनै वार चढ़णी ई पड़सी । नींतर म्हैं तड़कै ई इण ठिकांणा सूं उछाळौ कर जावूंला ।

ठाकरसा नै अेकर खिखरां करणी ही जकौ करली । पछै तौ वार चढ़णौ ई हौ । नाचणा रा टोळा रा सात नांमी

टाळका ऊंट अर तीन पीरां रै ताजण थराद री टाळकी घोड़ियां चोरां रै लारै दाबी । ठाकरसा अर चौधरी दोनूं ऊंटां माथै चढ़िया । तांगां रै चहिलां ऊंट दाबिया जकौ तीनेक कोस माथै चोरां नै जा न्हावड़िया । ठाकर अर चौधरी रा ऊंट अड़ौअड़ लारौ करता हा । चोरां नै बख में आया जांण ठाकरसा चौधरी सूं फेर मिसखरी करी — अबै तौ थूं वद वदनै मती बोलजै । थारा रिगदियां नै हांकरता दाब लिया ।

ठाकरसा रौ इत्तौ कैणौ व्हियौ अर चौधरी रा कांनां में तौ जांणै तोप दागी । उणरै काळजै तौ जांणै झाळां ऊठण लागी । मन में सोचण लागौ — के आज गवाड़ी री मरजादा रैवैला के बाड़ा री मरजादा । म्हनै तौ इण वगत बाड़ा री मरजादा राखणी है । मोहरी रौ तणकारौ देयनै ऊंट रै ग्रेडी लगाई तौ वौ ठाकरसा नै थोड़ा लारै राखनै चोरां रै पाखती पूगग्यौ । जोर सूं हाकौ करनै बोल्यौ — बेलियां देखौ कांई हौ, राहड़ियां खांचनै छिछकारी दौ — छिछकारी । म्हारै ग्रै बळद इण विध ई फेरियोड़ा है । खांचौ, खांचौ, छिछकारी दौ । म्हारै बाड़ा री मरजादा जावै । पकड़ीजग्या तौ थांरी गत बिगड़ैला अर म्हारौ बाड़ौ लाजैला ।

चोरां चौधरी री भुळावण सुभट सुणली । पछै कांई जेज । राहड़ियां खांचनै छिछकारी देवतां ईं बळद तौ पवन रै उनमांन भरणाटै उडिया । देखतां देखतां छेती पड़गी । अर छेती पड़ती ई गी ।

अबै जावतां चौधरी रा जीव में जीव आयौ के अबै किणी री मां अजमौ नीं खायौ के म्हारा बळदां नै पकड़ सकै ।

ठाकरसा पाखती आयनै बोल्या — भोळौ सैण दुस्मण री गरज साजै । बावळा ठेट आवतां आ कांई कोगत करी । हाथां आयोड़ा चोर भाग छूटा ।

चौधरी मोद सूं कैवण लागौ — म्हारै बाड़ै पळियोड़ा अर म्हारै हाथां फेरियोड़ा बळद यूं हाथ आय जावै तौ म्हारौ मरण व्है । बळद अर तांगा गिया जिणरी परवा नीं, आज म्हारै बाड़ा री मरजादा रैगी । जीवतौ रह्यौ तौ चार री ठौड़ बीस जोड़ियां वळै वपराय लेवूंला । पण श्रेकर गियोड़ी लाज पाछी कीकर बावड़ती । म्हारा धणी, म्हैं वद वदनै बोलतौ जकौ यूं ई बोलतौ हौ कांई ! आपनै फोड़ा घाल्या पण म्हारौ तौ मन अणूंतौ राजी है । आप ई अबै लारौ करण री मन में मत राखजौ ।

ठाकरसा थोड़ा मोळा पड़नै कह्यौ — अबै तौ भवै ई मन में रैगी । थूं मोसा देवै जित्ता ई थनै छाजै ।

तिणकलियै घर बोयौ

अेक जाट रौ गायां माथै ई गुजरांण हौ। करसण वास्तै जमीं री चांम ई नीं ही। बिना चरणोई रै घणौ वित्त धारणौ ई बस री बात नीं ही, नोळी रौ जोर चाहीजतौ। गिणतो रा ध्राव हा। कीं तौ सालौसाल टोगड़िया अर नारकियां री बटत व्है जाती अर बाकी सगळौ खरच-खातौ घी बेचणा सूं सर जातौ।

माथै निंगळियोड़ी पारियां उखणनै चौधरी पाखती रा नगर में घी बेच आवतौ। सावळ मजा में घर रौ चेपौ-चापौ व्हैतौ हौ। चौधरण ई सुथराई सूं धोणौ-धापौ अंवेरती अर घर नै सावळ केवटती ही।

अेकर भाग सूं अैड़ौ जोग सजियौ के घर रौ पासौ ई पलटग्यौ। अेक दिन सिंझ्या रा पारियां में दूध ठारियोड़ौ हौ। ठारियां नै खासी ताळ व्हैगी। सगळी पारियां माथै जाडी थरकण आयोड़ी ही। बायरा रौ खासौ-भलौ रूळियौ बाजण लागगौ हौ। कठै ई फूस-फांटा सूं पारियां नीं पथरीज जावै, औ मतौ करनै चौधरण पारियां में जावण देवण सारू आई। पारियां नै जाळी रा कोठलिया में धरियां पछै वा निरांत सूं दूजै हल्लै लागैला।

पण जावण देवती वगत उणनै पारी री थरकण में अेक तिणकलौ रळतळियोड़ौ निगै आयौ। वा तिणकला नै बारै काढ़नै फेंकण रौ मतौ करियौ के अणछक उणरौ मन डुळियौ — थरकण लाग्योड़ा तिणका नै चाटनै पछै वगावूं तौ कांई हरजौ।

आ बात मन में आवतां ईं आधौ मुड़ियोड़ौ हाथ मतै ई उणरा मूंडा सांम्ही आयग्यौ । तिणकलौ सावळ चाट परौ नै वगायौ, पण थरकण रौ साव तौ मूंडा रौ मूंडा में इज रैग्यौ । थरकण रौ अैड़ौ स्वाद व्हिया करै कांईं, आज पैली तौ उणनै इण बात री ठा नीं पड़ी । चौधरण जीव री काठी ही । खुद तौ आज दिन तक दूध रौ पळौ ई नीं चाखियौ, धणी अर टाबरां नै आधौ दूध अर आधौ पांणी घालनै सलटाय देती । इत्तौ धीणौ व्हैतां थकां ईं छाछ सूं आगै उणरी जोरावरी नीं ही । चौधरण मुराडी ही पण तिण-कला रौ स्वाद तौ उणरी काया पलट दी । पछै तौ वा भली सोची नीं कोई भूंडी, लपोलप सगळी पारियां री थरकण उता-रनै खायगी ।

उण दिन सूं पछै तौ वा सगळी थरकण उतारनै खावण रौ नेम ई कर लियौ । कांसी री तासळी में सगळी पारियां सूं थरकण भेळी करनै वा छांनै री छांनै गटकाय जाती । थर-कण उतारियां पछै उत्तौ घी कठै । वा घणी ई झाटां देवती पण पैली सूं आधौ ई घी नीं आवतौ ।

चौधरी गायां वास्तै कचर अर कपासियां रौ बांटौ ई चालू करियौ, पण घी तौ उतरतौ ई गियौ । दूध री गोवणियां में खांमी कोनीं, बांटा में कोताई कोनीं, पछै घी कम क्यूं उतरै ।

बांटा रै कारण बांणिया रौ खातौ तौ बधतौ ई गियौ, पण चौधरी रै बटत रौ पाछौ ताखौ नीं सजियौ जकौ नीं सजियौ । वौ तौ दिन दिन बांणिया रै खाता हेटै दबतौ ई

गियौ । अेक दिन वौ घरवाळी नै कह्यौ — आ बात कांई है, गायां रै चारा बांटा अर दूध में कीं कमी कोनीं, पण घी दिन दिन घटतौ जावै। कठै ई कोई कांमणगारी स्यारी माखण नै स्यारै तौ नीं है । म्हैं तौ ले'णा में काठौ कळग्यौ हूं । थोड़ा दिनां में खातौ नीं वळियौ तौ बोहरौ अपांरौ सगळौ वित्त आईवाळै मांड लेवैला, अर पछै उणनै आईवाळा सूं ई रकम नीं पटती दीखी तौ पछै वरड़ा सूं ई लारौ नीं छूटैला । म्हैं तौ सोच सोच में आधौ व्हैगौ, भली आदमण थोड़ौ-घणौ सोच तौ थूं ई राख्या कर, थूं तौ दिनौदिन रांमजांणै कीकर माचै है ।

चौधरण मोळी पड़ी, होळै सूं बोली — फगत सोच करियां कांई सांधौ लागै । म्हनै तौ सगळी कुचमाद किणी स्यारी री लखावै ।

चौधरी आपरै बख पूगतां दो तीन झाड़ागर बुलाया, केई टूणा-टोटका कराया पण कीं गरज सरी नीं, अमलदार अमल री बंधांणी व्है ज्यूं चौधरण तौ थरकण री बंधांणी व्हैगी । थरकण वास्तै उणरी नाड़ां तूटती, आंतां कुरळावती । घणौ ई गाढ़ राखण रौ विचार करती, पण मन काबू में नीं रह्यौ।

सेवट चौधरी कह्यौ जकी ई बात व्ही । बोहरा रौ खातौ उणरौ सगळौ वित्त डकारग्यौ । पछै वरड़ौ करियां ई नीठ लारौ छूटौ । उण दिन पछै दोनूं धणी लुगाई खलकां रै वड़िया जावण लागा । चौधरण नै तौ थरकण रा भटका आवता हा । जीभ रै थरकण रौ स्वाद अैड़ौ लागौ के उणनै तौ पछै रोटी-पांणी कीं आछौ लागतौ नीं, जांणै खात मूंडा में घालियौ। क्यूं तौ उण रूळिया में वौ तिणकलौ पारो में पड़ै, अर क्यूं उणनै

श्रै दिन देखणा पड़ै । तिणकलौ तौ सगळा घर नै बूडांणै मेल दियौ । वा तौ थोड़ा दिनां में सूई खायोड़ी व्हे ज्यूं व्हैगी । सेवट काठी आंती आयनै वा आपरा धणी नै कह्यौ — भूंडौ नीं मांनौ तौ श्रेक बात बतावूं । अपांरा साज-सरीखा घर नै म्हैं इज हेमाळै मैल्यौ हूं । श्रेक नाकुछ तिणकलौ घर नै बोयनै मैल दियौ, घर रौ घरकूलियौ कर न्हाकियौ ।

सगळी बात मांडनै बतायां पछै वा डुस्किया भरती कह्यौ — अबै थें म्हारी बोटी बोटी छूंन न्हाकौ तौ ई म्हारौ अकरम नीं धुपै । अबै कदैई दूध रौ छांटौ ई मूंडा में घालूं तौ थांरौ रगत पीवूं । थें कीकर ई करनै पाछौ वित्त मोलावौ, म्हैं सगळी बातां सार लेवूंला । वौ तिणकलौ तौ म्हारी मती ई भिस्ट करदी । म्हारी आंख्यां अबै उघड़ी । व्हैणी व्हे सौ व्हियां ई सरै । श्रेकर पाछौ म्हारौ तूमार तौ जोवौ । थांरै पगां पड़ूं, म्हारौ इतौ कैणौ मांनौ । लोगां री वड़ौ सूं अबै अपांरौ फंद कटावौ ।

चौधरी खरौ हुंकारौ भरियौ जद उणरा जीव में नेहचौ व्हियौ । चौधरी ई आपरा मन में विचार करण लागौ के माटौ तिणकलौ तौ जबरी करी ।

काजीजी आळी कुत्ती

इण दुनियां रौ चाळौ अजब व्हिया करै। जीवै जितै तौ मिनख नै इणरी सोय नीं व्है अर मरियां पछै सोय करण रौ कोई मारग ई नीं। लोगां रै आव-आदर पूजा-सनमांन अर मोह-परीत में स्वारथ री भावना कित्ती है इणरौ आसांनी सूं कूंतौ नीं कियौ जा सकै।

अेक काजीजी रा चौखळा में भाटा तिरता हा। लोग वांरी हाजरी में अेक पग रै पांण ऊभा रैवता। वांरी निजर रै समचै लोगां रा कांम पटता हा। राजा-पातसा वांरी कदर करता, पछै रैयत रौ तौ कैणौ ई कांई। सगळा चौखळा में वांरौ रुतबौ छायोड़ौ हौ। वै ठाट-बाट में राजावां री खोड़ खुड़ावता। लोगां नै वांरी केई बातां अखरती पण वै दरसावता कोनीं, क्यूंके गांव में कांम तौ काजीजी सूं ईं पड़तौ। वै मन करता जिणरौ आदर आकासां जड़ाय देता अर मन करता जिणरौ मांन धूळ में मिळाय देता। करड़ावण अर आंट में वै राजा नै ई भलौ कैवाड़ता, पण लोग डर रै कारण मन री बात परगट नीं करता।

वां काजीजी रै अेक पाळौकड़ कुत्ती ही। सिंध री नांमी टणकेल कुत्ती। काजीजी सूं डरता घणकरा लोग उण कुत्ती रौ ई अणूंतौ कायदौ राखता। उणरी साळ संभाळ करता। पण अेक दिन कुजोग अैड़ौ ठयौ के कुत्ती नै हिड़कियौ ऊठयौ अर वा फोत खेलगी। चौखळा रा लोग बैठण नै आया। लोग अड़वड़िया तौ वै अड़वड़िया के काजीजी री हवेली आगै जांणै मेळौ मचग्यौ। काजीजी नै ई आपरै आदर रौ इत्तौ

भरोसौ नीं हौ । औ मेळौ देखनै वांनै अणूंतौ मोद अर अंजस व्हियौ । वै मन में सोचण लागा के वांरी कुत्ती मरियां औ हाल है तौ वांरै खुद रै मरियां तौ सगळी दुनियां ईं उलट पड़ैला । गिगन रै तारां री गिणती व्है सकै तौ वांरै मरियां पछै बैठणियां री गिणती व्है सकैला ।

पण काजीजी मरियां तौ बैठणियां रा नांव माथै कुत्तौ ई नीं आयौ । मरियां पछै वांरा सूं कांईं गरज ! बात सुणी जकौ ई अणसुणी करदी ।

म्हैं गळौ वढ़ावैं

सोमगरा भाटा री कारीगरी में सबसूं सिरै अर बेजोड़ । सगळा भारत में खुद ई बिरळा बसै, छिड़ाबिछड़्या लाधैं अर वांरा हुनर री जोड़ रा तौ बिरळा ई कठै ! भाटा घड़ै कांई मूंडै बोलावैं ! केई बरसां पैली री बात है के अेक सोमगरौ आपरी जात में सगळां सूं ऊंचौ खांमची हौ । अैड़ी पूतळियां अर मूरतां घड़तौ के साचैली लखावती । लोग घणा ई खपता तौ ई सनागत नीं कर सकता के वा पूतळी है के कोई परतख जीवतौ उणियारौ है ।

अेकर वौ हूबौहूब आपरै ई उणियारै री बीस मूरतां बणाई । आपरा रंग सूं मिळता भाटा री मूरतां जिण दिन बणायनै संपूरण करी तद वौ खुद आपरी कारीगरी माथै अंज-सियौ । उणनै आपरा हुनर माथै अणूंतौ मोद व्हियौ । मूर-तियां रै भेळौ भिळ जातौ तौ लोग किणी भाव सनागत नीं कर सकता के वांरै मांय कारीगर कुण ? वौ नित घणी ताळ तांई मूरतां रै भेळौ ई जमियौ रैवतौ । अळगा अळगा देसां रा लोग आ कारीगरी जोवण नै आवता अर अणूंता अचंभा सूं पाछा जावता । अैड़ौ कारीगर तौ आज पैली सुणियौ नीं कोई सांभळियौ ।

सेवट जीवण रा दिन पूरा व्हियां जम रा दूत उणनै लेवण सारू आया । पण पूतळियां रै बीच उणनै पिछांणै तौ हाथ घालै ! वै तौ सगळा गताघम में पड़ग्या । घणौ माथौ लड़ायौ पण वै कीं सनागत नीं कर सकिया । हार मांननै सगळा

जमराज कनै पूगा । जायनै सगळी बात बताई । ग्रेकर तौ जमराज ई सोच में पड़ग्या । वगत आयां ग्रेक पलक री ई जेज कीकर व्है सकै ! थोड़ी ताळ विचार करयां वांनै अेक उपाव सूझियौ । कह्यौ— मिनख री तौ जिनांत ई कांई, खुद भगवांन ई आपरी कीरत रौ कोडायौ व्है । कीरत री लाळसा मिनख रा रगत में घुळियोड़ी व्है । थें तुरत पाछा उठै जावौ । उणनै सुणावतां कैजौ— दुनियां थपियां पछै ई आज दिन तक ग्रैड़ौ कारीगर नीं देख्यौ । कांई पूतळियां बणाई ! खुद बिरमाजी नै ई ठा नीं पड़ै के ग्रै पूतळियां भाटा री है के सांप्रत जीवती । आंनै बणावणिया कारीगर रा दरसण करलां तौ जमारौ सुधरै । थांरी आ बात सुणियां वौ तुरत कैवैला के ग्रै मूरतां म्हैं घड़ी । दीखणा में कित्ती ई सजीवण लागै, पण मूरतां तौ बोलणा सूं री । इण बात में आंख्यां धोखौ खा सकै, पण कांन धोखौ नीं खावैला । अबै जावौ थें फुरती करौ ।

जमराज रै कैतां ई दूत तौ दूजै ई पलक उण सोमगरा रै उठै पूगग्या । पूतळियां रै पाखती ऊभनै कैवण लागा— घड़णवाळौ कांई पूतळियां घड़ी । खुद बिरमाजी सनागत नीं कर सकै के ग्रै साचैली है के भाटा री । कारीगर रा दरसण व्है जावै तौ जमारौ सुफळ मांनां । के तौ भगवांन जांणै के वौ कारीगर ई जांणै के आं पूतळियां नै कुण घड़ी ।

वांरी बात सुणियां जमदूतां नै ग्रेक पूतळी मुळकती निगै आई । मुळकणा रै समचै ई वा बोली— ग्रै सगळी पूतळियां म्हैं घड़ी । म्हैं ई वौ कारीगर हूं ।

तद जमदूत हंसनै कह्यौ—औ 'म्हैं' ईं तौ मिनख नैं मारै—आप आं मूरंतियां नै घड़ी तौ घणौ चोखौ कांम करियौ। पण अबै आपरा दिन खूटग्या, म्हांरै साथै अबै जमलोक पधारौ। आपरौ म्हैंपणौ परगट व्हियां ईं म्है थांनै ओळखिया। चालौ, म्हे सगळा थांनै लेवण सारू आया हां।

भांबी री वेगार

वेठ-वेगार, लाग-बाग, हासल, खरड़ा अर भूंपी इत्याद लेवणा में ठाकर-ठेठरां रौ जुलम तौ हौ जकौ हौ इज, पण इण जुलम नै बरदास्त करण वाळी रया रौ निबळापणौ ई कम नीं हौ। जुलम करणौ अर जुलम झेलणौ दोनूं ई ढाळमढ़ाळ।

अेक गांव रा किणी मोट्यार भांबी नै नित री अै वेठ-वेगारां खटी कोनीं। उणरौ जीव वेगार काढ़तां घणौ घणौ कळपतौ। ठाकर रै सांम्ही मूंडैमूंड ना देवणौ अर बस पूगतां उणसूं लड़णौ अर पाछौ अोड़ौ देवणौ उणरै बस री बात नीं ही।

सेवट नित री वेगारां सूं आंती आयनै वौ बेरौ बावड़ी करण री विचारी। अैड़ा जीवणा बिचै तौ मरणौ सावळ। वौ तौ घरवाळां सूं सला-सूत करियां बिना ई अेक बेरा में धेंग देदी। पांणी में धमीड़ौ सुणतां ई अेक मींडकौ फुदकनै खोखाल सूं मूंडौ काढ़ियौ। रौब जमावतौ वौ पूछ्यौ— कुण है रे!

कीं तौ पांणी माथै बीस हाथ ऊपर सूं कूदणा रै कारण भांबी हावगाव अर डाफाचूक व्हैगौ अर कीं मींडका रौ सवाल सुणतां ई उणरा तौ हौस खत्ता व्हैगा। थर थर धूजतौ बोल्यौ: बापजी औ तौ म्हैं रावळौ भांबी हूं।

भांबी रौ नांव सुणतां ई मींडकौ दूणा गुमेज में धाकल करी—भांबी होयनै म्हनै काची नींद सूं उठांण दियौ, कांई

बाजरी बाड़ी लागै दीसै । खैर कीं बात नीं, म्हैं किणी हाजरिया री बाट जोवतौ ई हौ । ठीक मौका माथै आयौ । पांणी माथै अंवाळ घणा आयग्या, झट फुरती करनै साफ करदै । पांणी रै तळै कादौ ई अणमाप जमग्यौ, सावळ नितारनै कमोद व्है जैड़ौ पांणी करदै । साव नितरियोड़ौ निरमळ पांणी पियां बिना म्हनै रंगत नीं व्है । अबै टसकणौ छोड अर फुरती सूं म्हैं कह्या जका कांम पूरा कर ।

भांबी ई मन में सोच्यौ के वेगार री मार सूं कायौ होयनै बेरा में धेंग दी, पण अठै ई वेगार सूं लारौ नीं छूटौ । आप आपरा करम ।

बाजरी लेसी के ग्राटौ

ग्रेक जाट ग्रैदी अर माठौ ग्रंत इज घणौ हौ। उणरी लुगाई उणनै घणौ घोदती तौ वौ कीं न कीं आळिया-टोळिया करतौ ई रैवतौ।

ग्रेक दिन वा काठी कायी होयनै उणनै समझावण लागी—रात दिन घोदावूं, पण थांरी तौ आंख्यां ई नीं उघड़ै। थोड़ौ घणौ तौ विचार करौ के आ कोकळ कीकर पळैला। के तौ थांरा हाथां सूं सगळा टाबर-टूबरां नै साठीका बेरा में पटकदौ, जिणसूं पाछौ बुड़कौ ई नीं ऊठै। के म्हनै टूंपौ देयनै मार न्हाकौ। पछै नेगम मछरां करज्यौ। ग्रैड़ी ई पौच रा धणी हा तौ चंवरी क्यूं चढ़्या। म्हैं कांई कसूर करियौ जकौ म्हांनै इण विध्र तळौ। थांरै ग्रैदीपणा रै कारण म्हां सगळां नै क्यूं नरक-वाड़ौ भुगतावौ। क्यूं भूखां मारौ। जांणणवाळा तौ थांनै ग्रेक ग्रांगळ ई जमीं जोतण सारू सूंपै कोनीं। कालै ई हळोतिया जोगी बिरखा व्हैगी। पण थांरौ आळस भागै तौ ! जे अबै ई थें हल्लै नीं लागा तौ म्हैं कालै ई टाबरां नै लेयनै पीयर जावूंला परी, पछै अठै थांरी मरजी व्है तौ दस मांचां माथै पोढ़जौ अर मछरां करज्यौ। म्हैं तौ अबै थांरा सूं काठी धापगी।

चौधरी होळै सूं पूछ्यौ—वड़ियौ तौ म्हैं किणी रै मरियां ई नीं जावूं। जमीं म्हारै कनै ग्रेक आंगळ ई कोनीं। पछै हळ जोतूं तौ कांई म्हारा काळजा माथै जोतूं।

चौधरण कह्यौ—दो बरस सूं जोड़ियां ऊभी चरै, जिण-

री ई थांनै परवा कोनीं । औ धीणौ म्हैं सावळ नीं केवटती तौ थांरौ सगळौ वट निकळ जातौ । कालै ई सगळा डांगरां नै तग्गड़ देवूंला, अबै तौ म्हैं गळा तक धापगी । बैठा सूं वेगार भली, जायनै मसांणां री भोमका में ई हळ जोतौ पण ज़ोतौ । थुड़णौ कदैई अकारथ नीं जावै ।

चौधरी ई मन में जांणग्यौ के ओ़ोपणा रौ काठौ मथारौ आयग्यौ, अबै हाथ-पग नीं हिलाया तौ सूखनै खेलरा व्है जावांला ।

तड़कै ऊठियां पैली चौधरण कचोळौ भरनै दही अर चार सदळा सदळा खाखरा लायनै घोदायौ । बोली—लौ अबै कलेवौ करलौ अर ठाडै ठाडै कांम निवेड़ियावौ ।

चौधरी आळस मरोड़नै ऊभौ व्हियौ । हाथ मूंडा धोयां पछै आज राजी राजी कलेवौ करियौ । पछै हळ जोतनै भखा-वटै भखावटै ई वहीर व्हैगौ ।

सीधौ मसांण भोमका में पूगौ । उण भोमका में अण-गिण भूतां रा डेरा हा । चारेक हळायां भरी जिण में ई किणी री आंतड़ियां, किणी री पासळियां, किणी रा माथा रगदोळीजण लागा । भूत थोड़ी ताळ तौ सेंठा रह्या—जांणै अबै ढबै, अबै ढबै । पण चौधरी तौ हळ बगडायां ई गियौ । भूतां में कूका-रोळौ मचियौ तौ वौ मचियौ । अेक बडेरौ कह्यौ—जायनै चौधरी नै पालूं, नींतर औ तौ अठा सूं अपांरौ मुळगौ पापौ ई काट न्हाकैला ।

दूजोड़ा भूत डाडता कह्यौ—थांरै ज्यूं दाय पड़ै त्यूं करौ । म्हे तौ थांरै लारै हां ।

तौ वौ अगवांणी बणनै चौधरी रै पाखती आयौ । पूछ्यौ: चौधरी आज औ कांई रुळियारौ मचायौ । थनै आ कांई ऊंधी सूझी ।

चौधरी कह्यौ — ऊमर में पैली वार कांम संभायौ अर थनै वौ रुळियारौ ई निगै आयौ । आज सदियै सदियै सगळी भोमका दोय वार खड़ न्हाकूंला । पण थारै कांई अड़चल व्ही जकौ म्हनै बता ।

भूत मन में सोच्यौ के दोय वार में तौ औ सगळी बस्ती रौ खूंटौ ई उखेल देवैला । अबै इण मूढ़ नै समझावां तौ समझावां ई कीकर । औ आङू डरायां सूं ई मांनैला नीं, सांम्ही जिद चढ़ग्यौ तौ पछै सगळी बात ई परवार जावैला । वौ चौधरी नै नरमाई सूं पूछ्यौ — पण थारी अठै कांई हेमांणी गडियोड़ी । सगळा गांव री कांकड़ छोडनै थूं अठै ऊमरा काढ़ण नै क्यूं आयौ, अठै थनै कांई इदकाई दीसी । थूं चावै जकौ थनै यूं ई पूरौ करदां, पछै तौ हळ जोततौ ढबैला ।

चौधरी ग्रैदी व्हैतां थकां ई कुबदी हौ । जांण्यौ इत्ता ऊमरां सूं ई इत्ती बात सधै तौ पछै सावळ मसांण खड़ियां तौ जांणै कांई व्हैला । पूछ्यौ — थूं कुण है ? कीकर म्हारी चावना पूरैला, पैला म्हनै इणरौ सावळ म्यांनौ दै, पछै म्हैं हळायां लावतौ ढबूं ।

भूत डरावण रा मिस सूं कह्यौ — म्हैं भूत हूं । इण मसांण भोमका में केई बरसां सूं म्हांरा डेरा है । थूं हळ जोत नै म्हांनै खिळविखळ कर दिया । बता थारै कित्ता मण धांन निपजैला ।

चौधरी जांण्यौ के डरियां तौ बातड़ी परवार जावैला। पगां सेंठौ रह्यौ तौ भूतां कना सूं ई कीं न कीं धराय लूंला। कह्यौ — अठै हळकै हाथ म्हारै सौ कळसी बाजरी व्हैला।

भूत कह्यौ — बिना जोत्यां थारै घरै बैठां सौ कळसी बाजरी पुगाय देवूं तौ थूं अठै जमीं फाड़तौ ढबै !

चौधरी कह्यौ — म्हारा सूं सावळ वात्रा करै तौ क्यूं नीं ढबूं। पूरौ कौल कर के म्हनै कद तक सौ कळसी बाजरी पुगावैला।

भूत कह्यौ — आगलै पखवाड़ै थारै घरै सौ कळसी बाजरी पूगती कर देवूंला, थूं अबै हळबांणी सूं म्हांरी आंतड़ियां वाढ़णी तौ माठ कर।

चौधरी कह्यौ — अबारूं तौ थारै कैणा सूं ढबूं हूं, पण कौल पूरौ नीं व्हियौ तौ पछै बीस हळबाणियां री हळ जोतूंला, थें थांरी सावळ विचार लीजौ।

भूत काठौ वचना बंधग्यौ। माठौ बळद बुचकारा रै हेवा। आज तौ नांमी भरै पड़ी। वौ तौ आयौ वां इज पगां पाछौ घरै गियौ परौ।

चौधरण उणनै आवतां देख्यौ तौ बड़का-तड़का करण लागी, सांम्ही जायनै उणरौ माजनौ पाड़ती बोली — डाई रै हाथ लगायनै पाछा बळग्या। मणाबंद परसेवौ व्है जद दांणा हाथ लागै। अबै थें थांरै मतै अर म्हैं म्हारै मतै। थांनै समझावण में कीं सार नीं।

चौधरी कह्यौ — भली आदमण पूरी बात सुणियां पैली क्यूं थूक उछाळै। म्हारौ करसण न्यारी भांत रौ है। आगलै

पखवाड़ै सौ कळसी बाजरी सूं आपै ई भखारियां भरीज जावैला। जित्तै थोड़ौ घणौ नेहचौ तौ राख ।

पछै वौ मांडनै सगळी बात बताई । चौधरण नै आधौ विस्वास व्हियौ अर आधौ नीं व्हियौ । माडांणी ग्रेक पखवाड़ा तांई चुप रैणौ ई पड़ैला ।

अर उठीनै भूतां रै डेरे खळवळ माची तौ वा माची। सौ कळसी बाजरी सारू वै मार कळभळ करण लागा । जोग री बात के उण पखवाड़ा रै बिचाळै चौखळा रा सगळा भूतां री उण भोमका में लांठी न्यात व्ही । दूजा भूत वांरी आ कळभळ देखी तौ पूछयौ — बात कांई है , म्हांनै बतावौ तौ खरी , थां सगळां रै कैणी हींगापाई लागी ।

निरांत सूं सगळी बात सुणियां पछै न्यात रौ ग्रेक मुखियौ किड़कनै बोल्यौ — आछा भूत व्हिया । म्हांरौ ई नांव लजायौ । ग्रेक नाकुछ मिनख सूं हार मांनग्या । उठै ई घांटी मरोड़ देवता तौ उण सूं टें ई नीं व्हैती । म्हैं जावूं अर थांरौ औ फंद कटायनै आवूं । थोड़ौ घणौ तौ आपरौ बळ पिछांणौ। आज रात रा ई औ रांभौ सलटाय देवूंला ।

अठीनै भूत आ सला विचारता हा अर उठीनै चौधरी ग्रेक नवा ई कळाप में लाग्योड़ौ हौ । चार पांच दिनां सूं घर में ग्रेक म्याळमिन्नौ ग्रैड़ौ हिलियौ के वौ दही री जावणियां तौ देख्योड़ी ई नीं छोडतौ । जाब्तौ राखता थकां ई म्हाटौ मिनकौ तौ नित जावणियां चाट जावै । चौधरण उणरी टोय में साळ रै बारै ऊभी ही अर चौधरी साळ रै मांय बैठौ म्याळमिन्ना रै आवण री बाट उडीकतौ हौ । वौ हाथ में

जाडी राहड़ी री सरकपासी लियां तक्योड़ौ बैठौ हौ । आधीक ढळियां भूतां रौ मुखियौ ताक रै मांय कर मूंडौ काढ़ियौ । चौधरी तौ लप सरकपासी गळा में घालनै जोर सूं भटकौ दियौ । टूंपौ लागतां ई भूत री आंख्यां बारै आवण लागी । जोर सूं बोबाड़ौ करियौ — औ तौ म्हैं हूं भूत, थारै कांम ई आयौ हूं ।

चौधरी फंदौ कीं ढीलौ करियौ । कह्यौ — अठै कांई खावण नै बळियौ ।

फंदौ कीं ढीलौ व्हियौ तौ भूत रा जीव में कीं जीव आयौ । डाफाचूक होयनै वौ गळगळ कैवण लागौ — म्हैं तौ थनै पूछण सारू आयौ के सौ कळसी बाजरी लेसी के आटौ ।

चौधरी मुळकतौ थकौ बोल्यौ — यूं सावळ बोलै नीं । आज म्हारा हाथ सूं थारी मौत ही । बारै ऊभनै हेलौ नीं मारीजै, यूं छांनै ताक मांयकर मूंडौ काढ़ियौ तौ बिना मौत मारियौ जावैला ।

पछै वौ सोच विचार करनै कह्यौ — बाजरी रौ आटौ तौ चार दिन वासी रै जावै तौ बाड़ौ पड़ जावै । थूं यूं कर के सगळी बाजरी लायनै म्हारी भखारियां में भर दै ! पछै म्हैं कैवूं जित्तै नित धांन पीस दिया कर । पक्कौ हुंकारौ भरै तौ फंदौ ढीलौ करूं ।

भूत धूजतौ थकौ कैवण लागौ — म्हैं बात करूं जकी पक्की ई करूं, थें किणी बात रौ सोच मत करौ ।

भूत तौ सरकपासी खोलतां ई ततैया मनाया । सगळी न्यात उणरै आवण री बाट न्हाळती ही । आतां ई पूछ्यौ —

बाजरी सूं पिंड छुडाय लियौ कांई ।

तद वौ नीची धूण करनै होळै सूं बोल्यौ — म्हैं तौ श्रेक वत्ती गळा में ले आयौ । बाजरी तौ देवणी है इज, पण वौ कैवैला जित्तौ आटौ रोजीना पीसनै देवणौ पड़ैला ।

बात सुणतां ई सगळी न्यात रौ मूंडौ उतरग्यौ । तद श्रेक टणकेल मुखियौ कैवण लागौ — भला नाजोगा जलमिया रे, थें तौ भूतां री जात ई लजाय दी । यूं निबळा मिनखां रै भरोसै व्हैगा तौ अगांरौ जीवणौ कीकर व्हैला । म्हैं खुदौ-खुद जायनै अबारूं औ रांफौ सलटाय नै आवूं । चौधरी नै माछर री गळाई मसळ देवूंला ।

आ बात कैयनै वौ भूत पूंन रै उनमांन उठा सूं उडियौ । अर अठीनै चौधरी म्याळमिन्नी नै पकड़ण सारू उणी भांत सावचेत होयनै ऊभौ हौ । साळ रै मांय वड़ण सारू उण ताक रै सिवाय कोई दूजौ चारौ नीं हौ । टणकेल मुखियौ होळै सूं मूंडौ घालियौ के घांटी तौ फिलनी इज निगै आई । जोर रौ हचीड़ लगातां ई सरकपासी तणीजी अर भूत रा डोळा बारै आवता इज निगै आया । जोर सूं अरड़ायौ — छोड़, छोड़ थारी मिंडकी गाय हूं । म्हैं तौ भूतां रै डेरा सूं थारै कांम ई आयौ हूं ।

चौधरी कीं फंदौ ढीलौ करियौ । भूत रा डील में तौ धूजणी वड़गी । धूजतौ धूजतौ बोल्यौ — म्हैं तौ आ पूछणनै आयौ के सोगरा पोयदां तौ कीकर रैवै, इण खातर आपरी दवायती लेवण सारू आयौ ।

चौधरी कह्यौ — इण में दवायती री कांई जरूरत । सोगरा

पोवणा तौ ठीक इज है । अबै फुरती सूं वचन पाळौ जकौ बात करौ, घणा दपूचा मत लेवौ । नींतर बीस हळवांणियां वाळौ हळ लेयनै आवूं ।

भूत तौ फंदौ छूटतां ई उठा सूं सोकड़ मनाई। वौ तौ मसांण भोमका में जातां ई तड़ाच खायनै हेटै पड़्यौ । राहड़ी रौ हचीड़ भूंडौ घणौ लागौ हौ । थोड़ी ताळ पछै वौ बड़-बड़ायौ — म्हैं तौ सोगरा पोवण री फेर वती गळा में लेयनै आयौ हूं । औ चौधरी तौ कावळ आदमी है ।

भूतां री सांन रा तौ टका व्हैगा । दो वळा माजनौ गमायौ । अबकी न्यात रौ सबसूं ऊंचौ मुखियौ तड़कनै बोल्यौ — अबकी म्हैं जावूं । देखूं बापड़ा रौ करार ! औ लागां अपांनै पोसावै कोनीं । इणो भांत दबता रह्या तौ कालै माखी ई अपां सूं नीं डरैला ।

मसांण भोमका वाळा भूत कह्यौ — अबै आप क्यूं तक-लीफ करौ । म्हैं म्हांरी खांचांला नै ओढ़ांला । थें फेर कीं इदकी करनै आवौला ।

मुखियौ रीस में भळभट्ट होयनै कैवण लागौ — थांरी म्हांरी कांई न्यारी बात है । औ सगळी न्यात रौ सवाल है। इण में सगळी न्यात रौ पोचौ लागै । म्हैं अबारूं हाथौहाथ फैसलौ निवेड़नै आवूं । आ कैयनै वौ तौ उठा सूं गोळी रै वेग उडियौ ।

चौधरी नै उण दिन कीकर ई करनै म्याळमिन्नौ पकड़णौ हौ । सगळी रात जागणौ कबूल पण आज तौ इण मिनका री भारणी उतारणी । वौ ताक रै पसवाड़ै ऊभौ हौ ।

रात दो तीन घड़ी बाकी ही के उणनै ताक रै मांय कीं वड़तौ निगै आयौ। वौ तौ अजेज फुरती सूं सरकागांठी गळा में घालनै दोनूं हाथां सूं खांचण लागौ । सिरै मुखियौ जांणियौ के आज तौ मरणा में घाटौ नीं । बरजतां बरजतां म्हैं क्यूं औ डाळौ गळा में लियौ । जोर सूं बोबाड़ौ करनै बोल्यौ — मरूं मरूं, फंदौ कीं खोळौ कर । म्हैं तौ थारा फायदा सारू ई आयौ ।

मांय खांचनै चौधरी फंदौ कीं खोळौ करियौ । बोल्यौ — घड़ी घड़ी औ कांई फायदौ । म्हनै तौ काठौ कायौ कर दियौ । बोल बोल, जल्दी कर । थारा बाप नै तौ हाल पकड़णौ बाकी इज है।

भूतां रौ सिरै अगवांणी हाथ जोड़नै गळगळा कंठ सूं कैवण लागौ — म्हारा बाप रौ तौ आप नांव ई मत लेजौ। म्हैं थांरै अणूतौ फायदौ करूंला । नित सोगरां रौ गळगव चूरमौ अर वौ ई सालौसाल वास्तै — आ बात कैड़ीक रैवैला। आपरा हुकम रौ जेज, आयै साल सौ कळसी बाजरी रौ आटौ, नित सोगरा अर घी रौ झरझरतौ चूरमौ ।

चौधरी बीच में ईं बोल्यौ — भूतां में अकल रौ तौ लवलेस ई नीं व्है । इण में पूछण री कांई बात । थें जांणता के म्हैं इण सारू ना देवूंला । अबै बातां बणावणी तौ छोड़ौ नींतर श्रैड़ा झटका मारूंला के याद राखौला ।

आ कैयनै वौ जोर सूं हचीड़ दियौ । सिरै मुखिया नै तौ डाचकौ आयग्यौ । उणरै पगां पड़तौ डाडियौ — बगसौ बगसौ, अबै कदैई पूछण नै नीं आवांला । आपरै हुकम री तामील

कालै ई व्है जावैला ।

मसांण भोमका में सगळा भूत कोडाया होयनै सिरै अगवांणी रै आवण री बाट जोवता हा । कित्ता वेगा आवै अर कित्ती वेगी खुस खबरी सुणावै । वै अवस चौधरी रौ पापौ काटनै आवैला । के इत्ता में सिग्याहीण व्हियोड़ौ अगवांणी मूंडौ ढेरियोड़ौ उठै आयौ । वौ तौ कीं बोल्यौ नीं कोई चाल्यौ । माथा रै हाथ देयनै जरड़ देती रौ हेटै बैठग्यौ । उणरौ विलखौ अर उतरियोड़ौ मूंडौ देखनै सगळा समझग्या के कीं नवी गळा में लेयनै आया दीसै ।

किणी री पूछण री ई हीमत नीं व्ही । तद थोड़ी ताळ में अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकतां वौ बोल्यौ — औ चौधरी तौ कावळ है कोई कावळ ! रोजीना रौ गळगच चूरमौ अर आयै साल सौ कळसी बाजरी रौ हुंकारौ भरियौ जद जायनै वौ म्हारौ लारौ छोडियौ । आज तौ करमां रौ बचग्यौ नींतर मौत ही । अबै तौ भायां नवौ कौल करियौ जकौ सोरौ दोरौ पार घालणौ ई पड़सी

सपट सधी रे आंधला

अेक बाणियौ बाळूंडा रै टांणै बहू नै तेड़वा सारू आपरै सासरै गियौ। सासरा वाळा घणी ई सर-बरा करी अर घणा ई उच्छब मनाया। पछै घणा कोड सूं जंवाई नै सीख दीवी। दोहिता रै जरी री आडण टोपियां, गळा में सोना री हांयली अर पगां में सोना रा जांभरिया घड़ाया। बेटी नै ई मोकळौ सोना-गैणौ दियौ अर खीनखाब रा नांमी वेस कराया। जंवाई नै सीख में पांच मोहरां दी।

पण होणी रा हाथ लांबा अर अदीठ व्हिया करै। आदमी कांई चीतै अर कांई बीतै। तांगौ जोतनै गांव रै गोरवै ढळिया के धाड़ायती वांरै लारै व्हैगा। अंधारी रातां ही। धाड़ायती दसेक खेतड़ा आंतरै खोसण री जुगत विचारता ऊंटां माथै चालता रह्या अर बांणियौ सुख-सांयत सूं आपरै घरै पूगण रा मंसूबा बांधतौ रह्यौ।

आथेटा री घाटी ढळतां ई धाड़ायती ऊंटां रै अेडी लगाई। तांगा रै आडा फिरनै सागड़ी माथै धाकल करी। बळद चिम-कनै ऊभा ठमग्या। सगळौ माल राजीखुसी सूंपण री कह्यौ जद सागड़ी अर बांणियौ दोनूं आडा-अंवळा बोल्या। वै कोई अधबेरड़ा हा। बिणियांणी घणी कूकी पण वांरौ हीयौ नीं पसीजियौ। सागड़ी अर बांणिया नै मारनै वै तीब री तीब खोसनै लेयग्या। उण अंधारी रात में मां-बेटा नै आपरै तांई छोडनै वै तौ लांबा ई गिया। उण सून्याड़ निंदरोही में बापड़ी अभ्यागत बिणियांणी भूं भूं रोवण मांडियौ। भगवांन सुणण

जोगौ व्हैतौ तौ आ अणचींती पटकी पड़ती ई क्यूं ।

बिणियांणी आपरा करमां नै रोवती ही के भाग रौ अेक आंधौ भटकतौ भटकतौ उठै आय पूगौ । रोवणा री सोय करतौ करतौ वौ गाडी रै पाखती आयनै पूछ्यौ — इण निदरोही में औ कुण रोवै ? कांईं बात व्ही ?

बिणियांणी डुस्किया भरती उणनै आपरी विपदा सुणाई । तठा उपरांत सूरदास उणनै समभावतां कह्यौ — अबै वाल्हा बोली रै । थूं ईं सोच, थारै रोवणा सूं कांईं कारी लागैला । सांम्ही औ बाळ पित्रियौ चिमकैला । अबै बणी सौ भाग री । मरिया लारै मरीजै कोनीं । मांनै, तौ म्हारी अेक सला । इकलापी आंधौ आदमी हूं । संपत म्हारै कनै अपारै जोगी है । रोटी करण रा फोड़ा पड़ै । थूं अबै कठै जावैला । धणी मरियां सासरा में कुण पूछैला ! अबै पीवरियां नै ई क्यूं कळपावै । म्हारै साथै चाल । लारली बातां नै झुरियां कीं सांधौ लागै नीं । म्हारौ ई घर मंड जासी अर थारौ विखौ ई टळ जासी । व्हैगी जकौ तौ व्हैगी ।

बिणियांणी तौ कीं सोच विचार करण री हालत में ईं नीं ही । सूरदास कह्यौ ज्यूं मांनगी ।

सूरदास रौ औ अणचींत्यौ घर मंड्यौ देखनै गांव रा लोग उणसूं खिखरां करता कैवता :

सपट सधी रै निपट आंधला
आछी आई आडी
बेटा सूधी लाडी आई
बळदां सूधी गाडी

सूतां री पाडा जिणै

धीणौ तौ भेंस रौ, बाकी सै कळाप । श्रेकली भूरी झोट दो गोवणियां भरै । दूध चीकणौ अर जाडौ राबड़ौ व्है ज्यूं । खड़पा - पाड़ दही जमै । दही पारी सूं निकाळनै हथाळी में लियां फिरै तौ ई बिखरै कोनीं । माखण रौ लूंदौ इण भांत बंधै जांणै मकरांणा रौ भाटौ घड़ियोड़ौ पड़ियौ । रवा पढ़तौ घी । जाडी छाछ । घर में धीणौ धारणौ तौ भैंस रौ इज । आ सला विचारनै दोय जणा भंवातड़ा सूं दो नांमी टाळकी घण - दूधाळ भैंस्यां लावण वहीर व्हिया । खूंटै भैंस अर वा ई भंवातड़ा री, पछै कांई पूछणौ।

खासी भली जांच - पड़ताळ करी तौ वांरै श्रेक ई धणी रै अठै दो उम्दा भैंस्यां हाथ आयगी । दोनूं ई दूज्यांण झोटियां । श्रेकण सागै धन भिळियोड़ी । पांचां सातां ब्यावण वाळी । सावळ सौदौ पटग्यौ तौ वै दोनूं जणा झोटियां नै टोळता आपरै गांव वहीर व्हिया ।

हालतां हालतां गांव पांचेक कोस आंतरै रह्यौ तौ रात पड़गी । भैंस्यां उणी रात ब्यावणूं ही । पछै आगै टोळणी ई सावळ कोनीं । दोनूं जणा कांकड़ में ई वासौ लियौ ।

श्रेक जणौ कह्यौ — आज म्हारी सरधा कोनीं । हाडका तूटै अर डील भारी लखावै । थनै रात भर जागतौ रैणौ पड़सी । श्रैड़ी नीं व्है के भैंस्यां ब्याय जावै अर थनै ऊंघ आय जावै । पाडियां नै जिनावर खाय जावैला । पूरौ जाब्तौ राखजै । म्हारी सरधा व्हैती तौ म्हैं थनै फोड़ा ई नीं घालतौ

आपै ई सगळी रात संभाळ कर लेतौ ।

आ बात कही जकौ नींद रौ काचौ अंत इज घणौ हौ । वौ तौ दूजोड़ा साथी नै सावळ भुळावण देयनै लांबी तांणी । आधीक रै लगै-टगै दोनूं भोटियां ब्याई । जागण वाळा री भैंस पाडौ लाई अर दूजोड़ी भेंस पाडी । उणरा मन में कुट-ळाई चेती । वौ पाडियां नै अदळ-बदळ कर लिया । भेंस्यां तौ सांम्ही देख्यौ जका माथै ई हेजगी अर उणनै चाटण लागगी । जागण वाळौ तौ सूतोड़ा नै जगावण री बात ई नीं करी ।

दिनूंगा उठ्यौ तौ वौ आपरा साथी री अणूंतो सरा करी । उणनै सगळी रात सुवाणियौ अर खुद आंख में कस ई नीं लियौ । पछै भेंस्यां रा दोनूं पाडिया देख्या । उणरी भेंस हेज तौ पाडा सूं करती ही पण उणियारौ पाडी सूं मिळतौ हौ । दोनां रा लिलाड़ माथै धोळा टीका जांणै अेक ई संचै ढळिया । वौ दूजोड़ा नै कह्यौ — अबै तौ म्हनै पाडौ ई अंगे-जणौ पड़ैला । रात भर सुवै जकांरै अैड़ी इज बरगत व्है । म्हनै आज ठा पड़ी के सूतां री भेंस पाडा कीकर जिणै । पण इणरौ कसूरवार तौ म्हैं इज हूं । क्यूं तौ मिस करनै सोवूं अर क्यूं पाडौ गळै बंधै ।

वा ताल कोनीं सजी

परायो सुख अर आपरो दुख घणो लखाया करै। इण मुद्दा रो खुलासो करण सारू आ अेक छोटी सी वात है। अेक गांव में अेक सूरदास रैवतो हो। उणरी आंख्यां ब्याव रै दस बरस पछै गी अर लुगाई मरियां पछै उणनै वैराग सो ऊग्यो। बाप-बेटा दो जणा हा। लोगां में खासी भली बोरगत बिखरियोड़ी ही। ब्याज-बट्टा सूं दोनां रो मजा में गुजरांण व्है जातो।

सूरदास रो सुभाव बड़ो बिकट हो। गांव में लोगां री खुसियां रै टांणै दुमनो रैवतो अर कोई मरतो जद पगां रै घूघरा बांधनै नाचतो। लोगां नै समझावतो — औ संसार तो सपना री गळाई। सुख री बातां माथै हरख मनावणो अर दुख री बातां माथै रोवणो-रींकणो आ तो निपट मूढ़ता। म्हारै तो समझ नीं पड़ै के जलम अर ब्याव री क्यूं तो लोग खुसियां मनावै अर मरणा रो क्यूं कूकारोळो मचावै। म्हैं तो जांणूं के मरग्यो जको मुगत व्हियो। जलमियो जको जेळ फंसियो। जेळ सूं छूटणा री तो लोगां नै अणूंती खुसी व्हैणी चाहीजै। पण ऊंधा माथा रा लोग मरणा सूं डरै। मरियां छातो माथा कूटै अर अरड़ावै।

सूरदास री बातां सुणनै लोग पाछा दपूचा लेवता — सूरदासजी! कैणो सोरो पण करणो दोरो। बेटो व्हियां थें ई छांनै छांनै खुसियां मनाई ही।

सूरदास फीं अटकतो अटकतो जबाब देवतो — वां दिनां

म्हैं ई थोड़ौ घणौ माया-जाळ में फंसियोड़ौ हौ । औ ग्यांन तौ म्हांमें अबै आयौ है ।

लोग कैवता — देखां थारै इण ग्यांन रौ गाढ़ कित्तौक है ।

जलम अर ब्याव रै टांणै जद वौ मूंडौ ढेरनै दुमनौ दुमनौ बैठौ रैवतौ तद लोग घणौ भूंडौ नीं मांनता । पण मरण रै मौकै जद वौ घूघरा बांधनै नाचतौ तद लोग अणूंता बेराजी व्हैता । उणरौ मीठौ माजनौ ई पाड़ता । पण तौ ई वौ आपरौ औ ग्यांन छोडियौ कोनीं ।

भगवांन तौ नाक री डांडी माथै बैठौ । सूरदास नै हाथौ-हाथ परचो बताय दियौ । सूरदास रौ बेटौ मांदौ पड़ियौ । ज्यूं ज्यूं ओखद कराया त्यूं त्यूं मांदगी बधती गी । लोग मोसा मारता अर ठिळोकड़ियां करता — सूरदासजी, ओखद करायां तौ मुगती में रांभौ पड़ै । थें दवा-दारू क्यूं करावौ ।

पण दवा-दारू करायां सूं ई कीं सांधौ लागौ नीं । निकाळौ उथलियौ जकौ बेटा नै मुगत करनै ई पिंड छोडियौ । सूरदास घूघरा बांधनै लोग दिखाऊ नाचियौ पण पैला वाळी बात नीं बणी ।

लोगां कह्यौ — सूरदास नाच भलांई, हमेसां वाळी ताल नीं सजी । पगां में तौ जांणै वां'ण वैगौ व्है ज्यूं । मूंडा माथै हमेसां वाळी हंसी-खुसी कोनीं । बेटौ मरतां ई थारै ग्यांन री माठ आयगी ।

साचांणी लोगां रौ कैवणौ साव साचौ हौ । सूरदास रात रा छांनै छांनै डुस्किया भर भरनै रोवतौ ।

रावळौ तेल पल्ला में लीजै

ठिकांणा रा गावां में रैयत नै वेठ वेगार, लाग-बाग, हासल, खरड़, भूंपी अर फड़का इत्याद केई भार ढोवणा पड़ता तौ कैवण वास्तै नांव-मातर सारू ठिकांणा में दिखावा रूपी रकीनां रा सांग रचिया जावता हा। मिसाल री तौर माथै खरखर रै टांणै धोबौ धोबौ विरियां, लास रै टांणै खीच अर पळौ तेल, होळी माथै गीतेरणियां नै गुळ अर दीवाळी रै टांणै मीठौ तेल। इण भांत री नाकुछ रकीनां री लींगटी कूटी जावती ही।

अेक ठिकांणा में दीवाळी रा त्यूंहार माथै पांच पांच पळा मीठा तेल री रकीन ही। कणवारियौ घर दीठ पांच पांच पळा मीठौ तेल घाल देवतौ। अेक भांबण उण गांव में नवी बसी ही। उणनै इण रकीन री ठा नीं ही। जद वा कोट में लोग लुगायां री भीड़ देखी तौ उणनै इणरी ठा पड़ी। उण वगत उण गोडै तेल लेवण सारू कोई ठांव नीं हौ। जे अबकी तेल उणरै हाथ आयग्यौ तौ आगला बरसां वास्तै ई आ रकीन चालू रैय जावैला। अर औ टांणौ चूकगी तौ पछै उण वास्तै आ रकीन बंद व्है जावैला। आ सोचनै वा कणवारिया सांम्ही तेल लेवण सारू आपरा ओरणा रौ पल्लौ मांड दियौ — रावळौ तेल पल्ला में लीजै। ओरणौ खराब व्है जावै जिणरी बात नीं, सगळौ तेल आंगणै ढुळ जावै जिणरी बात नीं, पण आइंदा रकीन तौ चालू रैवणी जाहीजै।

चरू बोलै

अेक भांबण नित रावळा कोट में मोटी हांडी लेयनै छाछ लेवण सारू जावती । हमेस डोढ़ी रै आळा रै अड़ौअड़ बिलोवणौ व्हैतौ जित्तै बैठी रैती । ठकरांणीसा री उण माथै मया ही । वै उणसूं केई घर-खानगी अर अठी-उठी री बातां करता रैवता । ठाकरसा तौ घणकरा नोहरा में ई बिराजता हा । रावळै खुद अमल रा बंधांणी हा , तिणसूं नोहरा में अमलिया सिरदारां रौ जमघट बणियौ रैवतौ । अमल री मनवारां रै सागै आखै दिन बातां रा फटकारा लागता रैवता पण ठकरांणीसा आपरै मन री आगळ फगत उण भांबण रै सांम्ही ई खोलता हा ।

अेक दिन ठकरांणीसा उण भांबण नै कैवण लागा ठाकर-सा तौ अबै ऊंचलै पगोतिये पूगगा । वांनै नीं तौ आपरै डील री सिग्या है अर नीं रावळा रौ दूजौ ई कीं चेतौ है । वांरी घाल्यां अबै म्हैं करूं तौ कांई करूं । आजकालै तौ रात रा सूती नै सावळ नींद ई को आवै नीं । मोटोड़ी बाई नै औ जेठ उत-रियां बीसवौ बरस लागैला । पण ठाकरसा तौ कांनां में जांणै तेल घाल्यां बैठा । म्हैं तौ समझाय समझाय हार थाकी पण वांनै तौ अमल रै आगै कीं सूझै ई नीं । म्हारी तौ रात रा अेकर आंख खुलियां पछै पलक ई नीं झपै । हाथै व्है तौ कालै सनमत करदूं । बाई नै देखूं तौ म्हारा काळजा में सळीका ऊठै ।

उण ठौड़ बैठ्यां पछै भांबण नै लखायौ के वा आपरा

आपा में नीं है। अरळ-विरळ बोलण लागी — आपनै बाईजी-लाल वास्तै इत्ती चिंता करण री कांई जरूरत। म्हारौ मोटोड़ौ बेटौ कांन्हूड़ौ जांणै सांप्रत किसन भगवांन रौ अवतार। फूठरौ, फबतौ मोटचार काटी, जिणरै सांम्ही चांद ई कोजौ लागै। म्हारै कांन्हूड़ा रै थकां आप बाईजीलाल वास्तै दूजा वर हेरौ ई क्यूं! आ तौ आपरी धापनै भूल है।

भांबण री आ बात सुणनै ठकरांणीसा री आंख्यां ऊंची लिलाड़ में चढ़गी। मन में आंण्यौ के भांबण कठै ई सीत में तौ नीं आयगी। पछै विचार करियौ के बापड़ी भोळी जात है, इणनै कांई ओड़ौ देवूं। बात करनै ई राजी व्है तौ होवण दो, अपांरौ इण में कांई कुरब घटै!

पण वा भांबण तौ नित आ इज बात करण लागगी। पछै ठकरांणीसा ई उणरी काली बातां री मुळगी ई तिथ छोड दी। तौ ई अेक दिन वांरा मन में बात खटी कोनीं तौ वै ठाकरसा नै कह्यौ — आज आपनै अेक अजब बात सुणावूं। सुणियां म्हनै तौ अणूंती हंसी आई, जे आप खीझ नीं करौ तौ आपनै कैवण री हीमत करूं।

ठाकरसा कह्यौ — म्हैं आज पैली कदैई थांरी बात माथै खीझ करी।

ठकरांणीसा बोल्या — बात म्हारी नीं, कांनिया री मां री है। म्हैं पैला मांनती ई नीं हो, आ बात सुणियां तौ म्हनै पूरौ विस्वास व्हैगौ के भांबियां री जात साव भोळी व्हिया करै। बापड़ी भोळप में कैड़ो विलळी बात करी। म्हैं उणनै बाई रै सनमन री बात करी जद वा कह्यौ के उणरा कांन्हूड़ा

रै साथै बाईजीलाल रौ ब्याव करदूं । वौ तौ सांप्रत किसन भगवांन रौ अवतार । अैड़ी जोड़ कठैई नीं लाधैला ।

ठकरांणीसा नै औ जांणनै बड़ौ इचरज व्हियौ के ठाकरसा नै अैड़ी अजोगती बात सुणनै ई रीस नीं आई । वै तौ इण माथै विचार करण लागा । अमल रा बंधांणी व्हैतां थकां ई ठाकरसा थोड़ा घणा चात्रंग अर हुंस्यार हा । थोड़ी ताळ विचार करनै वैं ठकरांणीसा नै पूछ्यौ म्हनै — अेक बात तौ बतावौ के वा भांबण बैठै कठै ?

ठकरांणीसा पड़ूत्तर दियौ — बैठै फेर कठै । बारली डोढ़ी में विलोवणौ व्है जित्तै नित उठै ई बैठी रैवै ।

ठाकरसा कह्यौ — ऊं हूं । यूं बात नीं बणै । म्हनै चालनै बैठण रौ खास ठायौ बतावौ । बापड़ी भांबण री कांई जिनात के वा सपना में ई अैड़ी बात वेल सकै । उण ठौड़ हेटै अवस धन गडियोड़ौ । उण गडियोड़ा धन रा नसा में वा आपरा चेता रै उपरांत आ बात करी । धन रा आधण बिना किणी रौ माथौ अैड़ौ नीं सूज सकै । म्हैं वा ठौड़ खुदावणी चावूं ।

ठकरांणीसा ई आ बात आछी तरै जांणता हा के अेकर जचियां पछै खुद ब्रिरमाजी ठाकरसा नै बात सूं डिगा नीं सकै । वै कह्यौ — आ तौ रावळी मरजी, म्हैं कद पालूं । आप सगळौ कोट खुदावौ तौ ई म्हैं बरजण वाळी कुण व्हूं ।

ठाकरसा तौ पाछौ हां ना ई नीं दियौ । तौ पांच सातेक हाजरिया कनासूं डोढ़ी री वा ठौड़ खुदावणी चालू करदी । अर खुदोखुद पाखती ऊभा रह्या ।

सेवट ठाकरसा कह्यौ जकी बात सात्र साची निकळी । झाड़ साही मोहरां रा सात चरू काठा भरियोड़ा निकळिया । सुणियौ जका ई अचूंभा में पड़ग्या । पण खुद ठाकरसा नैं हरख अर इचरज री ठौड़ गुमेज घणौ व्हियौ । गुमेज इण बात सूं के वांरी बात सोळै आंना साची निकळी । लोग वांनै अंगां भोळा अर नादांन जांणता हा । अकल तौ वां में उबरती पड़ी ही । जे अमल रा नसा में नीं झिलता तौ आज किणी देस रौ राज संभाळता ।

सातूं चरवां नै खुद आपरा हाथ सूं ठांणै करायनै वै पाछौ उण ठौड़ नै संवी करायदी। पछै ठकरांणीसा नै कह्यौ— म्हैं तौ थांनै पैला ई कह्यौ हौ के भांबण रा मूंडा सूं धन बोलतौ हौ । जे इण बात रौ पतियारौ ई लेवणौ चावौ तौ कालै थें खुद चलायनै पैला उणसूं आ बात करजौ । थांनै आप ई ठा पड़ जावैला ।

दूजै दिन भांबण आयनै उणी ठौड़ बैठी । ठकरांणीसा ई पूरौ पतियारौ लेवणौ चावता हा । वै थोड़ी ताळ तौ अठी उठी री आडी-डोढ़ी बातां करता रह्या । पछै कैवण लागा — भांबणजी, म्हैं अर ठाकरसा दोनूं निरांत मन सूं थांरी बात माथै विचार करचौ । मोटोड़ी बाई वास्तै थांरौ बेटौ कांन्हूड़ौ ई इक्कीस आंना जोग वर है । अैड़ौ रूपाळौ मोटचार छोडनै म्हैं कठै मुलकां में रोवता फिरां । रोवता फिरां तौ ई कांई व्है । अैड़ा टाबर पड़िया कठै ।

भांबण डर सूं थर थर धूजती कह्यौ — बापजी, आप आज औ कांई फरमावौ ! म्हनै अैड़ौ सपनौ ई नोज आवै अर जे

आवै तौ ठाकरसा धांणी में पिलायनै मार न्हाकै । म्हनै कांईं आज आप मरावण री तेवड़ी हौ ।

ठकरांणीसा इण आगै फेर कांईं बात बधावता । आज ऊमर में पैली वार वै ठाकरसा री अकल आपरा मन में बखांणी । रात रा ठाकरसा रोटी जीमण नै घरै आया तौ ठकरांणीसा कह्यौ—आज तौ आप परतख सैंदेवजी वाळी ई बात करी । म्हैं बात करी तौ भांबण म्हारा पग पकड़ण लागी । बात सुणतां ईं थर थर धूजण लागी । पछै डुस्किया भरती थर थर धूजती ई री, जांणै बापड़ी रौ रांम निकळग्यौ हौ ।

ठाकरसा कह्यौ—बावड़ो रौ रांम निकळियौ कोनीं, सांम्ही उणमें रांम वड़ग्यौ हौ । म्हैं तौ थांनै वद वदनै कैवतौ के वा भांबण नीं बोली वै सात चरू बोल्या हा । भांबण बोलै तौ अबै बोलै । आं सात चरुवां री आंच सूं तौ मुड़दा ई मूंडै बोलण लाग जावै ।

पछै ठाकरसा मिसखरी करता थका कैवण लागा—थें तौ म्हनै साव गाफल अर अंगां भोळौ ई जांणता हा । सूतां बैठां सात चरुवां नै तपास कर लिया । सात पीढ़ी खुणचिया भर भरनै अमल पीवै तौ ई को खूटै नीं ।

ठकरांणीसा कह्यौ—थांरै कांईं आंकस ? थां तौ आं मोहरां रौ अमल करनै पी जावौला । अकल तौ आप में उबरती पड़ी । पछै थोड़ी घणी उठीनै ई कांम में लिरावौ ।

जीभ रौ रस झरै

अेक चौधरी जबांन रौ बेड़ौ अर फूड़ अंत इज घणौ हौ। मूंडा सूं बोल काढ़तौ जका ई अंवळा अर कावळ। गांव रा लोग तौ होळै होळै उणसूं बात करणा में ई कांनाटाळौ करता हा। कदैई कोई पूछ लेवतौ के चौधरी ऊभौ है!

तौ वौ जबाब देवतौ — थारी सरधा व्है तौ पटक दै।

कदैई कोई पूछतौ — चौधरी बैठौ है कांई!

तौ वौ जबाब देवतौ — थनै नीं सुहायौ व्है तौ गुड़ाय दै।

कदैई कोई पूछतौ — चौधरी सूतौ है कांई!

तौ वौ जबाब देवतौ — दिनमांन अर सासा बाकी है जित्तै तौ यूं ई सूतौ रैवूंला, थांरै किणी रै मारचां ई नीं मरूं।

अेकर उणरी लुगाई यूं ई पूछ लियौ — बैठा हौ कांई!

तद वौ मुळकनै जबाब दियौ — म्हैं बैठौ हूं जित्तै ई अै केसरिया कसूंबल ओढ़ै, नींतर रंडापौ भुगतणौ पड़तौ।

कदैई कोई पर-गांव रौ पूछतौ — चौधरी कांई वायौ?

"भाटौ।"

"व्हियौ कांई?"

"गूमड़ौ।"

"निपजियौ कांई?"

"लोई अर राद।"

रांम जांणै उणरा मगज में कांई आंट अर कांई टणकाई ही। लोग कैवता के वौ तौ बोलै कांई बोवै है।

अेकर वौ बळदां री जोड़ी खरीदण सारू मेळै जावतौ हौ। माथै बाजरी री पोट उखणियोड़ी ही। मारग रा अेक गांव में वौ सिरावण करण सारू ढबियौ। अेक चौधरण रै भूंपै जायनै वौ थोड़ौ घणौ नरमाई सूं बोल्यौ—म्हारै जोगी बाजरी देवूं। म्हनै खीच रांधनै घाल दै तौ म्हारै गांव आयां म्हैं पाछी अैड़ी ई हाजरी साज देवूंला।

चौधरण सालस अर भली ही। कह्यौ—म्हारा गनायत हौ, इण में म्हनै कांई जोर पड़ै। बाजरी नीं व्हैती तौ ई किणी मारगू नै भूखौ थोड़ौ ई काढ़चौ जावै।

वा खीच रौ आधण चाढ़ दियौ। पछै धम्मड़ धम्मड़ खीच कूटनै हांडी में उराय दियौ। खीच थोड़ौ सौ खदबदै आयौ जणा चौधरी गडाळ में बाधोड़ी अेक भैंस देखी। भैंस रा सींगड़ा अणूंता फाडा अर लांबा हा। चौधरी नीठ इत्ती ताळ स्यांणौ स्यांणौ बैठौ रह्यौ। भैंस नै देखतां ईं उणरा मगज में जांणै कीड़ौ कळबळियौ। बोल्यौ—हे औ माजी! औ फाडसींगौ खोरौ जे इण गडाळ में मरग्यौ तौ इणनै बारै कीकर काढ़ौला।

चौधरण कह्यौ—भला आदमी, थूक थारा मूंडा सूं, परभात री पौर क्यूं अैड़ी कुबांण काढ़ै। थनै औ खोरौ दीसै। इग्यारा सेर दूध री गोवणी भरै।

चौधरी कह्यौ—थनै कदास औ खोरौ बेचणौ दीसै, पण म्हैं अैड़ौ बावळौ लेवाळ नीं हूं। थूं तौ इग्यारा सेर दूध री बात करै, इण खोरा नै चीरनै लोई काढ़ै तौ वौ ई धड़ी नीं व्है।

चौधरण जांण्यौ इण अधगैला सूं कुण माथौ पचावै । वा आपारा कांम में लागगी ।

थोड़ी ताळ पछै उण चौधरण री बेटी आई । हाथां में पुणचां तांईं मूठियौ अर खवांखांच चूड़ौ देखनै बोल्यौ — हाथां में धोळा धोळा औ हाडक क्यूं पळेटिया है ।

चौधरण नै आ बात सुणियां थोड़ी रीस आयगी । तड़-कनै बोली — थारी जीभ डांमूं, असली हाथी दांत रौ चूड़ौ थनै हाडक ई निगै आयौ । पूरा तीन बीसी रिपिया रोकड़ दिया हूं ।

चौधरी कह्यौ — रांम, रांम, औ तीन बीसी रिपिया पांणी में क्यूं न्हाकिया । जे इणरौ मोटचार मरगौ तौ औ चूड़ौ कांईं कांम आवैला ।

बात किणी रै ई भरै जैड़ी नीं ही । बेटी रा बारा में आ बात सुणतां ईं चौधरण रै तौ जांणै भाळ ऊठगी । गाळियां काढ़ती कह्यौ — लखण तौ औड़ा है के मूंडा में बळ-बळता खोरा ठूंस दूं ।

पछै वा हांडा नै ओरणा रा पल्लां सूं भालनै उणरै पाखती आई । बोली — लेणौ व्है तौ वौ अधसीजियौ खीच खेसला में ले लै, नींतर म्हैं आंगणै ऊंधावूं ।

चौधरी कह्यौ — आंगणै ऊंधावै जकौ थूं म्हारै भेळी खेती में थुड़ी कोनीं । खेसला री पोट बांध्योड़ी है दीखै कोनीं ! म्हारी धोती में घाल दै, फेर कोई दूजी गवाड़ी देखूंला ।

चौधरण तौ बड़का तड़का करती, वौ सगळौ अधसीजियौ खीच उगरी धोती में ऊंधाय दियौ । कह्यौ अबै अठा सूं

थारौ काळौ मूंडौ करै जकी बात कर ।

चौधरी तौ माथै बाजरी री पोट अर अेक हाथ में अधसीजिया खीच री पोटळी लेयनै उठा सूं वहीर व्हियौ । पोटळी सूं अधसीजिया खीच रौ पांणी झरतौ हौ । मारग में लोग मिळिया जकौ पूछ्यौ — अरे ! चौधरी थारी इण पोटळी सूं कांई झरै ?

चौधरी कह्यौ — झरै म्हारी जीभ रौ रस ! चाटण री मंसा व्है तौ संकौ मत राखजौ ।

सोनल बाई

अेक गांव में अेक करसौ रैवतौ हौ। उणरै अेक घण रूपाळी इदक सरूप बेटी ही । जिणरौ नांव सोनल बाई । सोनल रै माथा रा केस सोना रा हा । सोनल री मां बेटी रै अमोलक केसां रौ पूरौ पूरौ ध्यांन राखती । केसां री अणूंती साळ-संभाळ अर अणूंतौ जाब्तौ राखती । आपरी साथणियां रै सागै जद सोनल नाडी माथै झीलण जावती तौ उणरी मां नित-हमेस उणरा केस गिणती । संपाड़ौ करनै सोनल पाछी आवती जणा ई केस गिणती ।

अेकर सोनल नाडी सूं संपाड़ौ करनै पाछी आई तौ उणरी मां ध्यांन सूं केस गिणण बैठी—अेक केस कम व्हियौ । मां नै इण बात री अणूंती चिंता व्ही । वा तुरत पाछा सगळा केस गिणिया । केस कम हौ जकौ कम ई रह्यौ । सौ वळा गिणती करै तौ कांई व्है । जे यूं नित रा केस कम होवण लागा तौ औ घाटौ कीकर झेल्यौ जाय सकै । मां नै सोनल माथै अणूंती रीस आई । उणनै भोळप अर टाबर-पणा वास्तै खासी-भली आडै हाथां ली । फटकारती कह्यौ—सोनल, अबै थूं टाबर तौ है कोनीं, पण थारौ हाल टाबरपणौ को मिटियौ नीं । सेवट समझ तौ थारी खुद री कांम आवैला । म्हैं कळझळ करूं पण थूं तौ चेतौ ई नीं करै । लाख रिपियां रौ केस गमायनै आयगी । अबै घणी ई खोटी-खरी सुणावूं तौ वौ पाछौ लाधै कोनीं । आइंदा ध्यांन राखजै । जे अबै

कदैई केस गमाय दियौ तौ थूं थारी जांणै । पछै म्हारै जैड़ी भूंडी नीं है ।

सोनल अणूंता कंवळा सुभाव री ही । मां रै चिड़तां ईं वा हुचक, हुचक रोवण लागी । मां रा बोल उणरै काळजै चुभग्या । घर सूं उणरौ मन फाटग्यौ । वा छांनै घर सूं बारै निकळगी । उणरा घर सूं थोड़ौ आंतरै मारग रै माथै श्रेक चन्नण रौ रूंख हौ । वा उणरै माथै चढ़नै श्रेक डाळा माथै बैठगी । अर रोवती रोवती ई दुखी कंठ सूं बोली:

चढ़ चढ़ रे चनणिया रूंख, ऊंचै रौ चढ़,

उणरी पलकां सूं ढळकनै आंसू डाळा माथै पड़िया । उणरै कैवणा रै समचै अर आंसू पड़तां ईं वौ चन्नण रौ रूंख ऊंचौ बधण ढूकौ, जकौ ऊंचौ बधतौ ई गियौ ।

सोनल नै घर में नीं देखी तौ उणरा सगळा घर वाळा उणनै जोवता जोवता चन्नण रा रूंख रै हेटै आया । सोनल तौ आ डाळ माथै बैठी है । अर रूंख ऊंचौ बधतौ ई जावै है । वै सगळा ई नसां तांण तांणनै ऊंचा भाळता रह्या, अर रूंख तौ ऊंचौ बधतौ ई गियौ—वांरी पौंच अर अटकळ सूं बारै । सोनल नै पाछी उतारणी दूभर व्हैगी । उणरा घरवाळा चन्नण रा गोड नै झालनै ऊभग्या । सोनल री साथणियां सगळी पाखती आयनै ऊभगी । वै आपरा अंतस सूं रूंख रै नीचौ ढळणा री कांमना करण लागी । पण वौ रूंख तौ राई जित्तौ ई नीचै नीं ढळियौ । उणरी मां तौ थर थर धूजण लागी । छबरां छबरां रोवण लागी । मां नै इण भांत कळपतां देखनै उणरी साथणियां घूमर लेवती गावण लागी:

ढोल बाजै, ढमाका बाजै
रूपल सिरखी सैयां नाचै
सोनल बाई नीचा पधारौ — ओ — नीचा पधारौ

साथणियां घणा ई नेवरा करिया पण वादीली सोनल नीं मांनी जकौ नीं इज मांनी । फेर ढोल नगारा घुरिया, घणा ई हे सूं घुरिया । साथणियां फेर नाची, घणी ई नाची । हाथ जोड़नै नेवरा करिया पण सोनल तौ कांन ई नीं दियौ । वा तौ अपूठो चन्नण रा रूंख नै घड़ी घड़ी कैवण लागी :

चढ़ चढ़ रे चनणिया रूंख, ऊंचै रौ चढ़
रे ऊंचै रौ चढ़

अर वौ चन्नण रौ रूंख ऊंचौ आभा में बधतौ ई गियौ । डाळ माथै बैठी सोनल अेक ढूळो जित्तो दीखण लागी । अबकी उणरी मां डुस्किया भरती बोली :

ढोल बाजै, ढमाका बाजै
धीवड़ थारी मायड़ नाचै
सोनल बाई नीचा पधारौ — ओ — नीचा पधारौ

पण वादीली सोनल मां रै कैणा उपरांत ई नीं मांनी । वा तौ फेर अणूंतौ आंमनौ करियौ । रोवतो रोवती फेर कह्यौ :

चढ़ चढ़ रे चनणिया रूंख, ऊंचै रौ चढ़
ऊंचै रौ चढ़

जिण भांत सूरज री किरण आभा सूं हेटै धरती माथै उतरै उण भांत आंख्यां री दीठ रै समचै वौ चन्नण रौ रूंख तौ उंचौ बधतौ ई गियौ । अबै सोनल अेक चिरमी जित्ती

ई दीखण लागी । उणरी मां तड़ाच खायनै नीचै पड़गी। अबको उणरौ बाप कह्यौ :

ढोल बाजै, ढमाका बाजै
जळहर जांमी बाबल नाचै
सोनल बाई नीचा पधारौ — ओ — नीचा पधारौ

पण वादीली सोनल तौ बाप रै कैणा री ई कीं गिनरत करी नीं । वा तौ अपूठी चन्नण रा रूंख नै फेर कह्यौ :

चढ़ चढ़ रे चनणिया रूंख, ऊंचै रौ चढ़
रे ऊंचै रौ चढ़

अर चन्नण रौ रूंख तौ ऊंचौ चढ़तौ ई गियौ ।

डाळ माथै बैठी सोनल अबै तौ दीखणी मुळगी ई बंद व्हैगी । उणरौ बाप तौ सोनल रा नांव री बांग मेलनै तड़ाच देती रौ नीचै पड़ग्यौ । सोनल रौ काळजौ नीं पसीजियौ जको नीं पसीजियौ । वा डाळ माथै बैठी सब देखती ही, सब सुणती ही ।

सोनल रौ भतीजौ ई उठै ऊभौ हौ । वौ आ सगळी रचना देखी तौ वौ मतै ई नकल उतारण लागौ । ताळी बजाय बजायनै नाचणौ चालू करियौ । तोतली बोली में गावण लागौ :

ढोल बाजै, ढमाका बाजै
चांदा रौ उणियारौ नाचै
सोनल बाई नीचा पधारौ — ओ — नीचा पधारौ

सूरज चांदा रै उणियार आपरा भतीजा रौ सोनल अणूंतौ लाड राखती ही । उणनै ताळी बजावतां नाचतौ देखियौ तौ उणरौ मन पसीजग्यौ । इण अबूझ बाळक री वीणती नै

वा किणी विध टाळ नीं सकी । वा तुरत चन्नण रा रूंख नै कह्यौ :

ढळ-ढळ रे थूं चनणिया रूंख
नीचै रौ ढळ रे नीचै रौ ढळ

सोनल रौ औ कैणौ व्हियौ अर वौ चन्नण रौ रूंख नीचौ ढळण लागौ । जांणै गिगन सूं कोई तारौ तूटौ । वौ हांक-रतां जमीं थाळै आयग्यौ । उणरा घरवाळा घणा ई राजी व्हिया । बेचेतै व्हियोड़ी मां ई झट ऊभी व्ही । आंख्यां पूंछती कैवण लागी — म्हारी लाडली सोनल अबै थनै कदैई ओड़ी नीं दूं । म्हनै सो ई गुना माफ कर। पण सोनल रौ मन घरवाळा सूं पूरौ फाटग्यौ हौ। वा तौ किणी दूजी बात माथै ध्यांन ई नीं दियौ । जमीं थाळै आतां ई वा तौ आपरा भतीजा नै फट गोद में ले लियौ । अर बोली :

चढ़ चढ़ रे चनणिया रूंख, ऊंचै रौ चढ़
रे ऊंचै रौ चढ़

सोनल नै कैतां जेज लागी पण चन्नण रा रूंख नै गिगन में ऊंचौ चढ़तां कीं जेज लागी नीं । वै तौ दोनूं भूवा-भतीजा ऊंचा आभा में चढ़ग्या । देखण वाळां री दीठ सूं ई घणा ऊंचा । अबै कांई उपाव करियौ जाय । घरवाळा घणा ई हाथा-जोड़ी करी अर घणा ई नेवरा करिया पण सोनल तौ नीं मांनी जकौ नीं इज मांनी । दोनूं जणा उठै रूंख माथै ई रैवण लागा। सोनल री भोजाई नित-हमेस टंकौ-टंक सोना रा कचोळा में चूरमौ अर सोना री झारी में पांणी लेयनै आवती । सोनल नै सिरावण करण सारू मीठा नेवरा करती ।

सोनल किणी भांत भोजाई रौ कैणौ टाळ नीं सकी । वा भोजाई रै रूंख तळै आतां ईं चन्नण नै नीचै ढळण रौ कैवती । रूंख देखतां देखतां जमीं थाळै आय जातौ । चूरमौ अर पांणी झालनै वा पाछौ उणनै ऊंचौ बधण रौ कैवती अर चन्नण रौ रूंख निजर री दीठ रै वेग ऊंचौ आभा में चढ़ जातौ । सोनल डाळ माथै बैठी ई पैला कोड अर लाड सूं भतीजा नै चूरमौ खवाड़ती, पछै आप खुद खावती ।

यूं करतां करतां केई दिन बीतग्या । पण इण बिचाळै जोग री बात अैड़ी बणी के उण रूंख रै तळै अेकर अेक राजकंवर री जांन बिसाई खावण सारू थोड़ी ताळ वास्तै ढबी । जांन रा सगळा जांनिया भूखा अर तिरसा हा । सोनल वांरै कटाई आयोड़ा होठां नै अर उतरियोड़ा मूंडा नै देखिया तौ उणनै दया आयगी । उणरौ काळजौ पसीजग्यौ । वा आपरै कटोरा सूं चूरमा रौ अेक भोरौ नीचै न्हाक दियौ । पण वौ भोरौ नीचै पड़तां ईं इत्तौ लांठौ बधग्यौ के सगळा जांनिया धाप धापनै खायौ तौ ई को खूटौ नीं । पछै वा झारी सूं पांणी रौ अेक छांटौ नीचै न्हाकियौ । वौ छांटौ ई नीचै पड़तां पांण मीठा पांणी री अेक नाडी रौ रूप धारण कर लियौ । सगळा जांनिया धाप धापनै निरमळ ठाडौ पांणी पीयौ । भूख अर तिरस मिटियां पछै राजकंवर अर सगळा जांनिया इण माया - जाळ माथै विचार करियौ तौ वांनै अणूंतौ इचरज व्हियौ । निजरां सांम्ही ओ कांई रासौ व्हियौ ? राजकंवर रा मन में आ बात माई कोनीं । इण रासा रौ पतौ लगावण सारू वौ आपरा चाकरां नै आदेस करियौ के वै तुरत रूंख माथै चढ़नै इण

तोतक री सावळ जांच करै के औ कांई व्हियौ। राजकंवर रौ आदेस मिळतां ई सगळा चाकर उण चन्नण रा रूंख रै ठेट मथारै चढ़िया तौ ई वांनै कीं निगै नीं आयौ। वे सगळी डाळियां अर छिंवरा हेरिया, पण कठै ई कीं नीं दीस्यौ। सेवट सगळा चाकरां रै हारयां पछै खुद राजकंवर उण रूंख माथै चढ़ियौ। वौ अेक अेक पांनड़ा में तपास करी। तपास करतां करतां सेवट मथारै रा छिंवरा रै दो पांनां बिचाळै उणनै सोनल अर उणरौ भतीजौ बैठा निगै आया।

सोना रा बाळां वाळी उण डावड़ी नै देख राजकंवर नै अणूंतौ इचरज व्हियौ। वौ मन में थोड़ौ-घणौ डरियौ ई। वौ सोनल नै पूछ्यौ—वाल्हा, थूं कुण है ? इंदर री परी, सुरग री अपछरा के कोई डाकण-स्यारी ?

सोनल ई नरमाई सूं जबाब दियौ—नीं म्हैं इंदर री परी हूं, नीं म्हैं सुरग री अपछरा हूं, अर नीं म्हैं कोई डाकण-स्यारी हूं। म्हैं तौ इण धरती री मांनवा देह हूं। म्हारी मां सूं रिसाणौ करनै अठै लुक्योड़ी बैठी हूं। साथै औ म्हारौ भतीजो है।

सोनल रौ रूप-रंग देखनै उणरी मीठी वांणी सुणनै अर उणरा सोना रा पळापळ करता केस देखनै राजकंवर तौ उणी पलक बावळौ व्हैगौ। आपरी सुध-बुध पांतरग्यौ। रूंख रा पांन पांन में उणनै तौ सोनल री ई छिब्र दीखण लागी। वौ उणरा केस आपरा हाथ में लेयनै कह्यौ—म्हैं थनै म्हारी रांणी बणावणी चावूं, थारी मरजी व्है तौ इणी पलक म्हारै साथै चाल। नींतर थनै छोडनै म्हैं अबै म्हारा राज में पाछौ मरियां ई नीं जावूंला। अठै इण रूंख माथै थारै सरणै ई दिन काढूंला।

थारै बिना म्हैं अबै अेक पलक ई नीं जीव सकूं ।

राजकंवर री बात सुणनै सोनल लाज सूं माथौ नीचौ कर लियौ । होळै सूं बोली—म्हारा इण भतीजा बिना म्हैं खुद नीं जीव सकूं, जे आप इणनै हरदम म्हारै साथै रैवण री मया देवौ तौ म्हैं आप री बात कबूल कर सकूं ।

राजकंवर तौ कैतां पांण सोनल री बात मांनग्यौ । अर सोनल राजकंवर री बात मांनली । वा रांणी बणनै सोना री पालकी में बैठी । खोळा में आपरा भतीजा नै बिठांण लियौ । हाथ जोड़ अर माथौ निंवायनै चन्नण रा उण रूंख सूं सीख ली ।

राजकंवर रौ राज उठा सूं घणौ अळगौ हौ । सोनल रा भतीजा नै मारग में अणूंती तिरस लागी । उणरौ गळौ अर होठ सूखण लागा । मारग में निरमळ पांणी रौ अेक लांठौ सरवर आयौ । सोनल डावड़ियां नै पांणी लावण रौ कह्यौ । डावड़ियां जबाब दियौ के इण सरवर रौ पांणी पीवणा सूं तौ मिनख कागलौ बण जावै । आपरौ हुकम व्है तौ ले आवां ।

सगळी बात जांण्यां पछै सोनल औ आदेस कीकर करती । भतीजा रौ लाड करनै उणनै समझायौ के औ पांणी तौ खारौ आक है । आगै इमरत व्है जैड़ौ ठाडौ अर मीठौ पांणी है, उठै पीजै ।

आगै फेर दूजौ सरवर आयौ । सोनल डावड़ियां नै पांणी लावण रौ कह्यौ तौ वै बोली—इण नाडी रौ पांणी पीवणा सूं मिनख गिडक बण जावै । आपरौ हुकम व्है तौ अबारूं ले आवां ।

भलां आ बात जांणियां पछै सोनल कीकर पांणी लावण रौ आदेस करती । भतीजा रा तिरस रै कारण प्रांण निकळता

हा, पण जोर कांईं करै । वा आंसू ढळकावती भतीजा रा गालां माथै वाल्हा दिया । बोली — म्हारा लाडल चांद थोड़ो सो सेंठो रै, इण नाडी रो पांणी तौ बासै । आगली नाडी रो जळ दूध रै उनमांन मीठो है । पछै वा राजकंवर नै रथ खाथो हंकावण वास्तै कह्यौ तौ रथ दूणा वेग सूं चालण लागो । मारग में तीजौ सरवर आयो, हबाहब भरियो हिब्रोळा खावतो । सोनल आखती पड़नै डावड़ियां नै कह्यो — अबै तौ दौड़ो फुरती करो ।

सोनल री खथावळ सुणनै ई डावड़ियां ऊठी कोनीं । कह्यो — पांणी लावतां म्हांरा किसा पग घसीजै । आपरो हुकम व्है तो म्हांनै कांईं ढील । पण इण सरवर रो पांणी पीवणा सूं मिनख सरप बण जावै । अबै आपरो हुकम व्है ज्यूं करां ।

भलां सोनल श्रौ हुकम कीकर देवती । सरप तो हाडा अर गिडक बिचै घणो भूंडो । आगली नाडी नै नैड़ी लेत्रणी सावळ है । अबकी राजकंवर सोनल रै कह्यां बिना ई रथ फेर खाथो हांकण सारू कह्यो । रथ अणूंतो खाथो व्हैगो । हांकरतां चोथो सरवर आयो ।

सोनल रोवणकाळी होयनै बोली — जावो, लिछमियां अबै तो ढील मत करो ।

पण डावड़ियां तौ आपरी ठौड़ सूं चुळी ई कोनीं । मूंडो उतारनै बोली — अबै आप हुकम फरमावो ज्यूं करां । इण सरवर रो पांणी पीवणा सूं मिनख मोर बण जावै । आपरो हुकम मिळणो चाहीजै, पतियारो नीं व्है तो म्हे खुद पांणी पीयनै बतावां ।

सोनल नै पतियारौ तौ पूरौ हौ, पण अबै इणरौ उपाव करै तौ कांई करै। भतीजा नै तौ कायली आयगी ही, आंख्यां रा डोळा फिरण लागा हा। अबै प्रांण निकळै, अबै प्रांण निकळै। सोनल दुविधा में पड़गी। जे पांणी पावै तौ वौ मोर बण जावै अर पांणी नीं पावै तौ मरियां सरै। अबै पांचवैं सरवर पूगणौ दोरौ है। मरणां बिचै तौ मोर बणणौ सावळ। जीवतौ रह्यौ तौ कदेई मोर पाछौ भतीजा रौ रूप धारण कर सकै। पण मरियां उपरांत तौ कीं सारौ नीं। सोनल रौ सासरौ हाल घणौ आंतरै हौ। भतीजौ पूरण बेचेतै व्हैगौ हौ। अबै तौ गिणतो रा सांस बाकी हा। सोनल तौ छबरां छबरां रोवती आदेस कर ई दियौ—कोई बात नीं। मोर बणै तौ छो बणतौ। थें दौड़नै पांणी लावौ जकी बात करौ।

सै डावड़ियां अेकण सागै न्हाटी। तुरत पांणी लेयनै हाजर व्ही। बेचेतै व्हियोड़ा भतीजा नै पांणी री घूंट पातां ईं वौ तौ सुरंगौ मोरियौ बणग्यौ। घांटी नीची करनै दो तीन टहूका दिया। सोनल उणनै हाथां में लेयनै अरड़ां अरड़ां रोई। आपरी भुवा नै इण विध रोवतां देखी तौ मोरियौ ई ठळाक ठळाक आंसू ढळकावण लागौ। दोनूं जणा गळबत्थां भरनै घणा ई रोया। रोवता रोवता थाकग्या तौ राजकंवर सोनल नै समझाई पण वा तौ नाडी छोडनै आगै उणरै साथै जावण वास्तै किणी भांत त्यार नीं व्ही। उठीनै राजकंवर ई आ तेवड़ली के वौ सोनल नै साथै लियां बिना अेक पावंडौ ई आगै नीं बधैला। बात तणी पण तणी। सेवट सोनल इण बात वास्तै त्यार व्हैगी के जे राजकंवर नित हमेस उणनै इण नाडी माथै आपरा भतीजा

नै खवाड़णनै अर पांणी पावण नै आत्रण दे तौ वा साथै चाल सकै । राजकंवर तुरत उणरी बात मांनग्यौ । सोनल बाथां भर भरनै आपरा भतीजा सूं गळै मिळी । उणसूं अळगी व्हैती वगत डुस्किया भर भरनै रोई । वौ मोरियौ ई उणरा रथ रै साथै साथै कोड सूं चालण लागौ । सोनल रथ में बैठी घणी ई कूकी । रोवतां रोवतां बेचेतै व्हैगी । सेवट लाचार होयनै नाडी रा मोरियां रै बिचाळै आपरा भतीजा नै छोड वा राज-कंवर रा खोळा में गुड़गी ।

सोनल नित-हमेस आपरा सासरा सूं चूरमा रौ कटोरौ अर गंगाजळ री झारी लेयनै उण नाडी माथै आवती । नींब रै डाळै टिरियोड़ा छींका में न्यारौ न्यारौ चूरमौ अर पांणी घाल देवती । पाखती ऊभनै सावळ जाब्ता सूं उणनै जीमावती । अळगा सूं देखतां ई वौ मोर उडनै सोनल रै सांम्ही आवतौ । उणरा पगां में लुटतौ । चूरमौ खायां पछै वौ चोळजोसां व्हियोड़ौ रमतौ, छतर तांणतौ, निरत करतौ अर टहूका देवतौ । सोनल निरी ताळ तांई उणसूं वंतळ करती । उणरौ लाड करती । खुद उणरै साथै नाचती, रमती अर निरत करती । पण पाछी आपरै राजमैल में जावती आंसू ढळकावती अर नोठ माडांणी उणसूं विदा लेवती ।

इण भांत केई दिन बीतग्या । सोनल री सोक उणसूं अणूंतौ ईसकौ राखती । उणरा रूप अर उणरै सोनल केसां माथै खीझती । सोनल माथै रींझ्योड़ौ राजकंवर उणनै दत्राग दे राख्यौ हौ । वौ तौ आठ-पोर बत्तीस घड़ी सोनल रा नसा में गैळीजियोड़ौ रैवतौ । सोनल री सोक केई दिनां सूं आंट काढ़णी

चावतो ही । पण हाल तक कोई मोकौ हाथ नीं लागौ हो । अेक दिन वा सोनल सूं बदळौ लेवण री जुगत विचारी । उणरा अंतस में कीं थावस व्हियौ के बात पार पड़ जावैला । वा खुद चलायनै सोनल रै मैल गी । गुळ सूं ई मीठी वांणी में कैवण लागी—म्हारी घण हेताळू बैन, थूं रोजीना नाडी माथै जावण री तकलीफ करै, अेक दिन म्हनै ई तौ थारै भतीजा री सेवा करण रौ मोकौ दै । थारा रूपाळा भतीजा नै देखणा रौ म्हनै अणूंतौ कोड है । केई दिनां सूं म्हारा मन में आ बात ही, पण म्हैं थनै मन री बात दरसा नीं सकी । मया देवै तौ आज म्हैं खुद नाडी माथै चूरमौ अर गंगाजळ लेयनै जावूंला ।

सोनल सोक री मीठी बातां नै मीठो ई समझी । वा तौ तुरत उणरौ कह्यौ मांन लियौ । बोली—म्हारा बडभाग के आप इत्ता दिनां सूं अठै पधारिया तौ खरी । म्हारा सूं आप चोज क्यूं राखियौ । म्हारौ भतीजौ सौ आपरौ भतीजौ । भलां इण नाकुछ कांम वास्तै म्हैं आपनै कीकर ओड़ौ दे सकूं । आपरी ज्यूं इंछा व्है ज्यूं करौ ।

सोनल उणनै सगळी बात सावळ समझाय दी के उणरै भतीजा री पिछांण कांई है, नाडी किण दिस में है अर छींकौ कठै टिरियोड़ौ है । सोक ऊपरला मन सूं हां हूं करती री, पण उणरा मन में तौ विस भरियोड़ौ हौ । वा तौ सोनल रै हुंकारौ भरियां पछै अणजेज नाडी माथै पूगी । सोनल री भांत उणरौ भोळौ-डाळौ भतीजौ हेलौ सुणतां पांण उण सांम्ही दौड़ियौ । उमंग में छतर तांणनै उणरै पाखती आयनै निरत करण लागौ । पण सोक रा मन में कुटळाई ही । वा तौ भली सोची नीं कोई भूंडी,

रीस में खमखरी खायनै वा मोरिया री घांटी दोनूं मूठियां में पकड़नै मरोड़ न्हाकी। घांटी मरोड़तां ई छतरी तणियोड़ी पांखां भेळी व्हैगी अर मोरियौ उठै ई ढिगली व्हैगौ। बिना हाथ धोयां ई सोक उणरौ चूरमौ खुद खायौ, अर गट गट सगळौ गंगाजळ आपरै कंठां उतार लियौ। पछै मन में अणूंतौ हरख मनावती गुमेज में आपरै मैलां आयगी।

दूजै दिन सोनल नाडी माथै आपरा भतीजा सारू सिरावण लेयनै गी। वा मारग में अंतावळ सूं खाथी खाथी दौड़ण लागी, जांणै भतीजा सूं मिळियां केई बरस बीतग्या व्है ज्यूं। नाडी रै पाखती पूगतां ई वा जोर सूं हेलौ मारियौ। सोनल रौ हेलौ सुणतां ई नाडी रा सगळा मोरिया कुरळावण लागा। वा चारूं कांनी आकळ-बाकळ दीठ सूं जोयौ, पण कठैई उणनै आपरौ भतीजौ निगै नीं आयौ। वा फेर जोर सूं हेलौ मारियौ। पडूत्तर में नाडी रा मोरिया फेर जोर सूं कुरळाया। उणरौ मन अणचींती आसंका सूं कांप उठ्यौ। वा बावळी सी अेक अेक रूंख हेटै जावती, आपरा भतीजा नै भाळती अर हेलौ पाड़ती। सेवट हेरतां हेरतां अेक रूंख रै तळै उणनै आपरै भतीजा री लास लाधी। घांटी वट खायोड़ी, अर पांखां खिरयोड़ी। सगळा मोर उठै आयनै भेळा व्हैगा। सोनल रै मूंडा सांम्ही विकळ दीठ सूं देखता कुरळावण लागा।

सोनल भतीजा री लास माथै बावळी होयनै लपकी। उठायनै आपरी छाती सूं लगायौ। भतीजा री अणचींती मौत री उणनै अैड़ौ सदमौ बैठौ के रोवतां विलखतां उणरा प्रांण छूटग्या। पाखती ऊभा मोर घणा ई कुरळाया। हवा अर

आभौ खुद रोवण लागा ।

नाडी रा मोर सगळा मिळ परा नै सोनल अर उणरा भतीजा नै दाग दियौ । वां दोनां रा विजोग में वै सगळा ई दांणौ-पांणी छोड दियौ । वै सगळै दिन अर सगळी रात कुरळावता अर आंसू ढळकावता । थोड़ा ई दिनां में वां सगळां रा प्रांण छूटग्या । नाडी रौ सगळौ पांणी खूटग्यौ । सगळा झाड़-बांटका अर रूंख सूखग्या ।

सोनल अर उणरा भतीजा नै जठै दाग दियौ उठै चन्नण रा दो घेर-घुमेर रूंखड़ा केई जुगां सूं हाल उणी भांत ई ऊभा है । सोनल अर उणरा भतीजा नै ऊभा ऊभा झुरै, रोवै अर विलखै ।

आठ राजकंवर

चिड़ी रा बिचिया

बात कैवूं साची, नंदिया री बहू नाची। नंदियै बजाई थाळी, नंदियै री मरगी छाळी। नंदियै वायौ खोळियौ, वाळै में जायर बोलियौ। वाळै वाई रेत, भोम्यां रा भरग्या खेत। भोम्यां वाई डांग, खाती री तूटी टांग। खाती वायौ रंदौ, बाबाजी रौ तूट्यौ कंधौ। बाबै वाई तूंबी, मिंदर में जायर लूंबी। मिंदर वाई जड़ी, चीता सूं जायर लड़ी। तौ रांमजी भला दिन दे ढगळ पांनड़ौ उडतौ जाय, हुंकारियौ गुळ खातौ जाय। घणा दिनां पैली री बात है। अेक हो राजा नै अेक ही रांणी। राजा न्याई, धरमी अर सीलवांन हौ। आपरी सगळी रैयत नै बेटा री ठौड़ मांनतौ। सिंघ बकरी अेक घाट पांणी पीवता। चोरी-चकारी, लूट-खसोट अर झूठ-फरेब रा विचार ई लोगां नै को आवता नीं। सगळी नगरी में सरब आणंद अर सरब थाट हा। राजा रै प्रमांण ई रांणी घण रूपाळी इदक सरूप गुणवंती ही।

राजा रांणी रै गुण, सील अर रूप रै उनमांन ई वांरै आठ राजकंवर हा, सूरज री जोत अर चांद रै टुकड़ां जैड़ा। रूपवांन, गुणवांन अर इग्याकारी। राजा नै आपरै बेटां रौ घणौ ई गुमेज हौ। रांणी नै आपरै कूख रै जायां री घणौ ई अंजस अर घणौ ई मोद हौ।

अेकर जोग री बात अैड़ी बणी के रांणी आपरा सीस मैल में सूती ही के लगौलग अेक चिड़ी री चीं चीं री आवाज सुणनै उणरी नींद उचटगी। वा झिझकनै पिलंग माथै बैठी

व्हो । सोना रा पिलंग रै चारूं पागा कनै ऊभी चारूं डाव-ड़ियां हाथ जोड़नै अरज करी — हुकम फरमावौ !

रांणी रा कांनां में डावड़ियां री अरज अर चिड़ी री चीं चीं साथै ई सुणीजी। रांणी आपरी आंख्यां देख्यौ के अेक चिड़-कली रोसनदांन रा काच माथै मार टूंचां मारै है। चिड़ी सीस मैल रै मांय आवण सारू खपती ही। चिड़ी नै इण भांत आफळतां देख रांणी अेक डावड़ी सांम्ही देखनै कह्यौ — आ चिड़ी ईंडा देवैला, म्हारै सीस मैल रौ रोसनदांन उघाड़ दे। आज सूं ईं इण चिड़ी रो साळ-संभाळ म्हैं म्हारा हाथां सूं करूंला। थूं म्हनै वगत माथै चुग्गौ पांणी लायनै देती रैजे।

डावड़ी कैतां पांण रोसनदांन उघाड़ दियौ। चिड़ी चीं चीं करती रांणी रा मैल में फड़फड़ाती वड़गी। चारूं कांनी चार पांच चकारा दिया। पछै निरांत सूं अेक ऊंचा ताक में बैठनै हरख सूं चीं चीं करण लागी। थोड़ी ताळ में चिड़ौ ई आयनै चिड़ी री सोय करली। वा तौ रांणी रा मैल में ठायै सूं बिराजी ही। रांणी चिड़ी नै कह्यौ — नेन्ही चिड़कल आज सूं थूं म्हारी धरम बैन है। म्हारा कमरा में थारी मरजी व्हे जठै ईंडा दे। म्हैं थारी साळ-संभाळ करूंला। म्हारा हाथ सूं थनै मोत्यां रौ चूण चुगाऊंला, थनै गंगाजळ पाऊंला।

रांणी री बात सुणनै चिड़ी हरख सूं पांखां फड़फड़ाई। पछै चिड़ौ उडियौ जकौ देखतां देखतां आपरी टूंच में अेक अेक तिणकौ लायनै चिड़ी वास्तै अेक ठावकौ आळौ ठाय दियौ। रांणी अर चिड़ी जित्तै माहोमाह वंतळ करी। दोनां रै गाढ़ौ मेळ व्हैगौ। चिड़ी कह्यौ — रांणी आपरै जैड़ी रूपाळी, गुणवंती अर

समझवांन रांणी म्हनै सगळी दुनियां में ई निगै नीं आई। रांणी कह्यौ — म्हनै थारै जैड़ी सुहावणी भली चिड़कल हाल तक कठैई देखणा में नीं आई।

उण दिन सिझ्या रा चिड़ी आठ धोळा-धोळा मोत्यां रै उनमांन फूठरा ईंडा दिया। रांणी सगळा नगर में हरख अर उच्छब मनायौ। आपरी धरम बैन वास्तै जच्चा रा गीत गवा-ड़िया, खुसियां मनाई, हजारूं रिपियां री निछरावळां करी। रांणी नित चिड़ी नै आपरा हाथ सूं मोतियां रौ चूण चुगावै। सोना रा कचोळा में गंगाजळ पावै। चिड़ौ अर चिड़ी उठै घणौ ई सुख पायौ, वै घणी ई मछरां करी। चिड़ी अथाग हरख सूं आपरा ईंडां नै सेवै, रांणी सूं मीठी मुहांणी वंतळ करै। दिन लाग्यां वां मोतियां रै उनमांन फूठरा ईंडां सूं गुलाब री कळियां जैड़ा आठ कंवळा कंवळा बिचिया नीसरिया। रांणी फेर हरख अर उच्छब मनायौ। हजारूं रिपियां री निछरावळां करी। चिड़ी, चिड़ा अर रांणी रै आंणद रौ छेह नीं हौ।

आं हरख अर उच्छब रै दिनां में ई कुजोग री बात के चिड़ी मांदी पड़गी। घणा ई ओखद कराया पण चिड़ी री तौ मांदगी बधती ई गी। चिड़ी री मांदगी सूं रांणी हरदम दुमनी रैवै। इणसूं आगै जोर कांई करै। आखा नगर में गळी गळी आ डूंडी पिटाय दी के जकौ इण चिड़ी री मांदगी सावळ करैला उणनै राज रा खजांना सूं अेक हजार मोहरां अर अेक हजार गायां इनांम मिळैला। डूंडी पिटावणी रांणी रै हाथ ही, पण चिड़ी नै सावळ करणौ उणरै हाथ नीं हौ।

ओखद करतां करतां ईं चिड़ी तौ काठी तजगी । अबै उणनै सोळै आंना भरोसौ व्हैगौ के कीं करियां ईं वा बचै नीं । वा मरियां पैली रांणी रा घणा ई गुण बखांणिया, रांणी नै आसीर-वचन कह्या । अर चिड़ा नै मरती वगत आंख्यां सूं आंसू ढाळनै कह्यौ — म्हारै आठूं बिचियां री साळ-संभाळ अबै थारै माथै है । वगत माथै चुग्गौ पांणी देजै । मरियां ईं दूजौ ब्याव मत करजै । नवी दुमात म्हारा बिचियां नै घणा फोड़ा भुगतावैला । म्हैं मरियां ईं जीवत बराबर हूं के जे थूं दूजी चिड़ी नीं लावै । चिड़ौ उणनै वाचा दिया के वौ मरियां ईं दूजी चिड़ी नीं लावैला ।

चिड़ा रै वाचा देतां ईं चिड़ी तौ प्रांण मुगत व्हैगी । चिड़ौ घणौ ई रोयौ-रींक्यौ पण होणी नै कुण मेट सकै । रांणी ई घणा डुस्किया भर भरनै रोई । पण कांईं सांधौ लागै ! चिड़ी तौ आपरा आठूं बिचियां, चिड़ौ अर आपरी धरम बैन रांणी — आं सगळां नै कळपतां छोड सुरग सिधायगी ।

रांणी चिड़ी रै मरियां पछै ई उणरा बिचिया अर चिड़ा री वैड़ी ई साळ-संभाळ करती । ढळतां दिनां रै साथै-साथै चिड़ा रै मन सूं चिड़ी रौ विछोह ई ढळतौ गियौ । आठूं बिचिया बापड़ा अवस मां रा नांव माथै छबरां-छबरां रोवता । पण मां री ममता तौ मां रै साथै ई सिधायगी ।

रांणी चिड़ा री घणी ई साळ-संभाळ करती तौ ई लुगाई बिना उणनै घणी अटपटाई आवती । लुगाई बिना कुण पग चांपै, कुण माथौ दबावै अर कुण कड़ियां खूंदै ! सोळै सिण-गार करनै कुण सिझ्या रा उडीकै । चिड़ा रै खायां बिना

चिड़ी चुग्गौ पांणी ई नीं करती । अबै तौ वै बातां सपना री आळ-जंजाळ व्हैगी । जोड़ायत बिना नीं तौ उणनै चांद चांदणी आछी लागती अर नीं जगमग जगमग करता तारा चोखा लागता, वै तौ उणरी आंख्यां में तिणगां ज्यूं बळता । नीं सूरज ऊगतौ आछौ लागतौ अर नीं आथमतौ । नीं रात आछी लागती अर नीं दिन रौ उजास उणनै रुचतौ । सगळै दिन गुमघांम व्हियोड़ौ विलखौ विलखौ बैठौ रैवतौ ।

रांणी चिड़ा रै मन री बात लखगी । वा उणनै लाड सूं कह्यौ—बावळा, म्हैं देखूं के आजकालै थारा मन में घणा घणा गोटा ऊठै । थारा मांमूली सा आरांम वास्तै, कठैई आ नीं व्है के थूं बापड़ा बिचियां नै हेमाळै मेल दे । हाल बिचिया कंवळा है । खांवण कमावण जोगा व्हियां पैली जे थूं दुमात लायनै घरै बैठांण दी तौ टाबरां री कांई गत बिगड़ैला, इगरौ थनै कीं अंदाज है ।

चिड़ौ मोळौ पड़तौ थकौ कह्यौ—म्हनै तौ म्हारा बिखा रै पार कीं सूझै ई नीं । म्हैं तौ म्हारै मरतां, टाबरां रै विखा रौ राव-रत्ती ई अंदाज नीं लगा सकूं । रांणी-मां म्हनै थें भूंडौ कौ चाहै भलौ, म्हारै तौ लुगाई बिना अेक पलक ई नीं सरै ।

रांणी उणनै घणौ ई समझायौ पण चिड़ौ तौ नीं मांन्यौ जकौ नीं इज मांन्यौ । सिंझ्या रा दिन बधियां पछै रांणी भोजन करनै सीस मैल में पाछी आई तौ वौ आपरा आळा में दूजी चिड़ी लायनै बैठांण दी ही । गुलाब री कळियां रै उनमांन कंवळा कंवळा आठूं बिचिया गलीचा माथै पड़िया चूं चूं

अर तड़फड़ तड़फड़ करता हा । रांणी देख्यौ तौ देखती ई री। थोड़ी ताळ पछै चिड़ा सूं दवायती लेयनै चिड़ी आळा सूं हेटै उतरी । बिचियां नै टूंचां मार मार अर पांखां सूं फंफेड़नै, रांणी हळफळती उठै पूगी जित्तै तौ वा सगळां नै मार न्हा-किया ।

कुम्हळायोड़ी कळियां रै ज्यूं सगळा बिचिया मरचोड़ा पड़चा हा । औ रासौ देखनै रांणी रौ सगळौ डील थर थर धूजण लागौ । चिड़ी बिचियां नै मारनै पाछी आळा में उडगी । चिड़ी रा इण अकरम नै देखनै चिड़ौ कीं नीं कह्यौ । चमगूंगा री गळाई आळा में दावड़ियोड़ौ बैठौ रह्यौ । छतै बाप री आंख्यां सांम्ही औ तोतक व्है तौ रांणी कांई कर सकै । रांणी जळजळी आंख्यां सूं ई मरियोड़ा बिचियां नै गिणिया । वै आठ हा ।

आठ रौ आंकड़ौ गिणतां ई रांणी रौ माथौ ठणकियौ । उणरी कूख सूं ई चांद सूरज रै उणियार आठ राजकंवर जल-मिया ! जे इण भांत म्हैं संसार में नीं रैवूं अर म्हारै बेटां में दुमात रै आयां आ इज रचना व्ही तौ......... ।

रांणी तौ इण विचार सूं ई बावळी व्हैगी । लड़थड़ती पिलंग माथै आयनै बैठी, भाटा री पूतली रै उनमांन ! उणरी आंख्यां सूं आंसुवां रा धारौला ओसरण लागा । इत्ता बरसां में ई रांणी री आंख्यां सूं आंसुवां रौ आज पैली वार मेळ व्हियौ । पण आज पैली वार में ई जांणै हिवड़ा रौ बांध ओटै व्हैग्यौ व्है । रांणी री आंख्यां में सांवण भादरवा री झड़ी मचगी ।

रांणी रौ औ ढंग-ढाळौ देखनै डावड़ियां तौ सगळी हाकी-

बाकी व्हैगी । वै रांणी नै राजी करण वास्तै उण चिड़ा अर चिड़ी नै सीस मैल सूं बारै उडावण सारू चेस्टा करी तौ रांणी माथौ हिलायनै ना कर दियौ । पछै वै मरियोड़ा बिचिया नै बारै फेंकण री कोसीस करी तौ रांणी थोड़ा सा होठ उघाड़नै होळै सूं कह्यौ — ऊं हूं । पछै वांनै हाथ री सांनी करी के अठा सूं सगळी बारै जावौ परी । डावड़ियां बारै जायनै सला-सूत विचारी । सेवट वै राजा नै इण बात री अरदास करी ।

राजा आ बात सुणतां ई राज दरबार छोड़नै हलफळियोड़ौ सीस मैल में आयौ । कांई देखै के रांणी तौ भाटा री मूरत ज्यूं बैठी छबरां छबरां आंसू ढळकावै । बोलै नीं कोई चालै । राजा तौ गताघम में पड़ग्यौ । उणरै कीं समझ बैठी नीं । वौ रांणी नै पूछ्यौ — रांणी, थूं रोवै अर म्हैं ऊभौ ऊभौ जोवूं, आ बात म्हारा सूं सहन नीं व्है । बता, कांई बात व्ही ? थनै कांई कळेस है ? म्हैं छिण में उणनै मेटण रौ उपाव करूं ।

रांणी मूंडा सूं कोई बोल नीं काढ़ियौ पण हाथ सूं वां मरियोड़ा बिचियां सांम्ही सांनी करी । राजा सांनी रै समचै मुड़नै उण ठौड़ गियौ । गुलाब री कळियां जैड़ा आठ कंवळा कंवळा चिड़ी रा बिचिया मरियोड़ा देख्या । तौ ई राजा रै पूरी बात समझ में नीं आई । वौ उठा सूं आयनै रांणी रै पाखती बैठग्यौ ।

राजा आपरा हाथ सूं रांणी रा आंसू पूंछ्या । होळै सूं कह्यौ — आ बात कांई व्ही ? सवार तांई तौ बिचिया साव साजा-सूरा हा ।

रांणी री आंख्यां फेर डबडब भरीजगी । बोली — चिड़ौ

दूजौ घर मांडियौ । दुमात आतां ईं बिचियां री आ दुरगत व्ही ।

पछै राजा नै वा सगली बात बताय कह्यौ—म्हैं मरगी तौ म्हारै आठूं राजकंवरां रौ औ ई दीन व्हैला ।

आगै उणसूं बोलीजियौ ई कोनीं । गळौ रुंधग्यौ । पछै तौ वा राजा री गोद में आपरौ माथौ धरनै डुसक्या भर भरनै रोवण लागी । रोवती रोवती ई कैवण लागी—म्हैं मरगी तौ म्हारा कंवरां रौ औ इज ढाळौ व्हैला । म्हनै वाचा दो के म्हैं मर जावूं तौ आप दूजौ ब्याव भवै ई नीं करौला ।

राजा रांणी रै मोरां माथै हाथ फेरतौ बोल्यौ—मरै दुख-दाई भूत-पलीत । थूं नोज मरै ! म्हारै अर कंवरां रै भाग री थारी हजारी ऊमर व्है । थूं अैड़ी ऊंधी बातां मन में ई क्यूं लावै ।

रांणी तौ हठ झेल्यौ पण झेल्यौ । बोली—चिड़ी रै बिचियां वाळी आ रचना देखनै म्हारै तौ पूरी जचगी के म्हारै कंवरां में ईं आ बात बीतैला । म्हैं तौ वाचा लिया बिना अंजळ ईं मूंडा में नीं लूं । सेवट राजा रांणी नै कह्यौ—थूं तौ इण जलम रा ई वाचा मांगै, पण म्हैं तौ अठा लग कौल करूं के मरियां पछै आगला जलम में ईं म्हैं थारै बिना ब्याव नीं करूं ! थारै जैड़ी गुणवंती लुगायां इण धरती माथै जलमी ई कित्ती है !

पण राजा रै वाचा उपरांत ई रांणी रा मन में थावस नीं व्हियौ । उणनै उणी वगत चिड़ी नै दियोड़ा चिड़ा रा वचन याद आया । वा रोवती रोवती ई कह्यौ—इण भांत चिड़ौ ई चिड़ी नै वाचा दिया हा , पण वौ तौ चिड़ी रै

मरतां ई सगळी बातां बिसरग्यौ । थां मरदां री जात ई निकांमी व्है । आपरा स्वारथ में आंधौ वौ चिड़ौ इण गत आपरा बिचियां नै आपरी आंख्यां सांम्ही मरतां देखनै ई नीं कीं कह्यौ अर नीं कीं करचौ । काठ रा रमतिया री गळाई फगत आळा में लुक्योड़ौ रह्यौ । पछै म्हनै आपरै वाचा रौ कीकर पतियारौ व्है !

रांणी तौ रोवती ढबी ई नीं । सेवट कायौ होयनै राजा कह्यौ — रांणी, थनै थारै कंवरां रौ इत्तौ डर है अर थूं म्हारी बात रौ पतियारौ ई नीं करै तौ वचन राखण सारू म्हैं पैला ई मर जावूं । नीं तौ म्हैं जीवतो रैवूंला अर नीं राजकंवरां रै वास्तै दुमात रौ जोखौ व्हैला । थूं नीं मांनै तौ पछै कांई करूं ।

राजा रा मूंडा सूं आ बात सुणनै रांणी गोद सूं आपरौ माथौ ऊंचौ करचौ । बोली — अैड़ी बात आपरा मूंडा सूं नोज काढ़ौ । आप सूं वत्ता म्हनै कंवर थोड़ा ई लागै, पण रांम जांणै चिड़ी रै बिचियां री आ गत देखनै म्हारौ तौ माथौ ई भंवग्यौ । म्हारा मन में तौ पल पल आ इज बात ऊठै के म्हारै मरियां राजकंवरां में अणूंतौ विखौ पड़ैला ।

रांणी मन नै घणौ ई काठौ राख्यौ । पण आंख्यां माथै उणरौ जोर नीं चाल्यौ । वा तौ सगळै दिन अर सगळी रात ई रोवती री । राजा वाचा देय देयनै हार थाक्यौ, पण रांणी नै पतियारौ नीं व्हियौ सो नीं व्हियौ ।

रांणी रौ इंतकाळ

उग दिन सूं ई रांणी री आंख्यां तौ रोवण रै हेवा इज पड़गी। उणरा मन में वेम पड़्यौ पण पड़ियौ ! नीं जागतां चैन, नीं सूतां चैन। उण दिन सूं ई अैड़ी कुथाल पड़ी के वेम रै कारण उणरी भूख ई मरगी। नींद में बिना मापा रा आळ-जंजाळ आवता। झिझकनै ऊठती अर आपरै कंवरां रौ सोच करती। राजा घणौ ई समझायौ — हाथां करनै क्यूं मौत निंवतै। अणूंता सोच में थारी कंचन वरणी काया तौ काठी तजगी। सूरज आथूंण में ऊगै तौ म्हैं म्हारा वचन सूं टळूं। पण मां बिना थारै कंवरां नै कित्तौ दुख व्हैला, थारै बिना म्हनै कित्तौ दरद व्हैला। आ बात कदैई थारा सोचणा में नीं आई। भोळौ सैण दुस्मण री गरज सारै। थूं हाथां करनै म्हां सगळां में फोड़ा पटकैला।

रांणी कैणा में तौ कै दियौ के अबै फालतू सोच नीं करूं, पण सोच नीं करणौ उणरै बस री बात नीं ही। राजा रै देखतां तौ वा विलखणौ बंद कर दियौ, पण मांय री मांय उण सोच में सिळगती री के उणरै मरियां पछै आठूं राजकंवरां में चिड़ी रै बिचियां वाळी ई बीतैला। जांणै उणनै अगम भावी बात सांप्रत आपरी निजरां दीखै।

उण दिन सूं ई अैड़ौ संजोग बणियौ के रांणी रौ सरीर तौ तरतर छीजतौ ई गियौ। इत्ता सोच सूं तौ हाथी ई ढोळै बैठ जावै, पछै रांणी री फूलां जैड़ी कंवळी काया छीजतां कांई

वगत लागै ! वा तौ सूखनै खंखर व्हैगी । आंख्यां में सांस आयग्यौ । राजा मन में आछी तरै जांण लियौ के अबै रांणी भवै ई बचै नीं । वौ आठ पौर बत्तीस घड़ी रांणी रै पाखती बैठौ रैवतौ ।

रांणी रै आ बात सोळै आंना हीयै ढूकगी के अबै घड़ी पलकां री बात है । हाथां करनै काळ नै हेलौ मारयौ । मरती वगत वा चिड़ी जिण भांत चिड़ा नै भुळावण दी, उणी भांत वा राजा नै कैवण लागी — म्हैं तौ अबै घड़ी पलकां री पांवणी हूं । म्हारै कंवरां री घणी भुळावण कांई देवूं ! म्हैं तौ लारला दिनां सूं फगत आ इज आंकड़ी झेल राखी हूं । भगवांन नै आ ई अरदास करूं के म्हनै आप जैड़ौ ई भरतार मिळै । जीवतां म्हारी कोई बात नीं टाळी तौ अबै मरियां पछै ई मत टाळजौ । म्हारी ठौड़ इण मैल में कोई दूजी रांणी मत लाजौ । म्हारा भोळा कंवर दुमात रा कस्ट झेल नीं सकैला । कठै ई आ नीं व्है के...... ।

रांणी सूं आगै बोलीजियौ ई कोनीं । उणरी आंख्यां सांम्ही झांवळा आयग्या । उण दिन रौ चित्रांम उणरी आंख्यां सांम्ही सुभट तिरण लागौ के चिड़ी रा आठूं कंवळा कंवळा बिचिया आळा सूं नीचै पड़्या तड़फड़ तड़फड़ करै । दुमात चिड़ी टूंचां मार मारनै पांखां री झड़पां सूं वांनै अेक ई पलक में मार दिया । आठूं राजकंवरां रै माथा माथै बारी बारी सूं हाथ फेरनै रांणी तौ सांस छोड दियौ । राजकंवर अरड़ां अरड़ां रोया । राजा री आंख्यां में ई आंसू आयग्या । अैड़ी रूपाळी अर गुणवंती रांणी धरती थपियां पछै ई नीं तौ जलमी अर नीं

जलमैला। राजकंवर अर राजा नै छोडनै सेत्रट रांणो तौ आपरै मारग चाली ।

रांणी रै मरतां ई राजा तौ बेचेतै व्हैगौ । तीन दिनां सूं आंख्यां खोली । अठी-उठी जोयनै होळै सूं पूछचौ — रांणी कठै ?

जबाब में आठूं ई राजकंवर ठळाक ठळाक रोवण लागा। कांई जबाब देवै । होस में आयां पछै राजा नित कंवरां री साळ-संभाळ करतौ । हरदम वांरौ ध्यांन राखतौ ।

रात ढळी दिन ऊग्यौ, दिन ढळियौ अर रात आई, यूं करतां करतां रांणी नै मरियां चाळीस दिन बीतग्या। राजकंवर तौ मां री याद में नित कायर मोर ज्यूं आंसू ढळकावता । सगळा अेक दूजा नै समझावता के अबै रोयां कांई सांधौ लागै, उण ठायै गियोड़ी मां तौ इण जलम में पाछी नीं बावड़ैला। पण सगळा खुद आपरै मतै रोवता रैवता। सबसूं छोटकिया राज-कंवर नै तौ मां री हर अगूंती ई आवती । वौ तौ रांणी रै मरियां पछै अेक वार ई नीं मुळकियौ। हरदम दुमनौ ई रैवतौ।

मरणा री मार दुनियां में सबसूं तीखी अर खारी लागै, पण दिनां रौ मलम वगत लाग्यां उण मार रौ घाव ई मिळाय दे । राजा नै सरुआत में रांणी रै मरणा रौ दुख ई घणौ व्हियौ, पण अबै उणरी कमी अखरण लागी । अबै वौ उणनै याद कर करनै झुरण लागौ। रांणी रा गुणां बिचै उणरा रूप री उणनै घणी याद आवण लागी ।

अबै राजा रौ राजकाज में पैला जैड़ौ मन लागै नीं । उणरै मन री सगळी खुसियां लोप व्हैगी । चांद री चांदणी

उगनै आछी लागै नीं, जगामग करता तारा उणनै आछा लागै नीं। सुरंगा फूल अर कोयल री मधरी वांणी उणनै आछी लागै नीं। पळापळ करती बीज, सांवण भादवा री काळी कळायण, बादळां री गाज आछी लागै नीं। सूरज रौ ऊगणौ अर आथमणौ सुहावै नीं। अै सगळी बातां रांणी री रूपाळी देह रै साथै ई बिलमाय गी।

रांणी रै बिना उणनै मुखमल री फूलाळी सेज कांटां रै उनमांन अळखावणी लागती। चांद री ठाडी चांदणी उणरा डील में भाळ रै ज्यूं लखावती। रांणी रै अभाव में राजा रा सरब सुख वैभव दुखदाई बणग्या।

राजा रौ औ दुख उणरा मंत्री तुरत ताड़ग्या। वै सगळा भेळा होयनै राजा रै सांम्ही हाजर व्हिया। हाथ जोड़नै अरदास करी—आपरा दुख सूं सारी परजा दुखी। इण दुख रै सिवाय आपरी परजा नै कीं दूजौ दुख अर कळेस कोनीं। आप सुखी व्हे जावौ तौ सगळी नगरी में आणंद रा थाट व्है जावै।

राजा होळै सूं सवाल करचौ—पग म्हारौ दुख अबै कीकर मिटै ?

सगळा मंत्री अेकण सागै कह्यौ—आपरी इंछया व्है तौ औ दुख तौ अेक पलक में लोप व्है। पाखती देसां रा सगळा राजा आपरी रूपाळी किन्यावां आपनै देवण सारू ताखड़ा तोड़ै। पण आपनै कैवण री वांरी हीमत नीं पड़ै। अैड़ा नेकनांमी, न्याई राजा नै कुण आपरी बेटी नीं देवणी चावै।

राजा संका करी—पण म्हारी आ ऊमर दूजौ व्याव करण री है कांई ?

मंत्री मुळकनै कह्यौ—हाल अंदाता री ऊमर ई कांई व्ही ! पच्चीस बरसां रा भर मोट्यार तौ आपरै सांम्ही फीका लागै ।

रांणी नै दियोड़ा वचन याद करनै राजा रौ मन डिग्गूं पिच्छूं होवण लागौ के उणी वगत पाखती रा बाग में कोयल रा मीठा टहूका सुणीज्या । कोयल रा वै मीठा टहूका सुणनै राजा आपरा वचन नै तुरत पांतरग्यौ ।

मंत्री अंतावळी करता पूछ्यौ—अंदाता कीं पाछौ हुकम को दिरायौ नीं ।

राजा मुळकनै होळै सूं कह्यौ—म्हैं कांई हुकम दूं, थांनै कोयल रौ हुकम सुणीजै कोनीं कांई ।

नवी रांणी

जिण धूमधांम सूं लारली रांणी री दाह-क्रिया करी ही, उणसूं चौगणी धूमधांम सूं राजा नवी रांणी परणीजनै लायौ। नवी रांणी में गुण तौ नैड़ा-अळगा ई नीं हा, पण वा रूप री तौ सागर इज ही। नवी रांणी रौ सीस जांणै वागड़ियौ नारेळ, वेणी वासक नाग, भूंह जांणै इंद्र धनख। मिरग सा नैत्र, मीन जिसा चपळ। रतनाळा लोचण। नाक सूवा री चांच। दाड़िम कुळी सा दांत। बसंत कोकिला सरीखी मधरी वांणी। आरीसा सरीखा कपोल। मुख पुनम रै चांद ज्यूं, सोळै कळा संपूरण। ग्रीवा मोर सी, जांणै खेराद उतारी। बांह जांणै कंवळनाळ अर चंपा री डाळ। चंवळाफळी सी आंगळियां। उरस्थल कुंभात सरीखौ। कुच जांणै पाकी नारंगियां, सोपारी सा कठोर। पांन सरीखौ पेट। केसर लंकी। नाभि जांणै गुलाब रौ फूल। पासा जांणै माखण री लोथ। नितंब कटोरा सा। नख लाल ममोल्या, हीरा सा दमकता। नवी रांणी तौ जांणै आभै री बीज। भादवा री अकास परी, मोतियां सरी। सोना री कांब। किरत्यां रौ झूमकौ। इंदर लोक री अपछरा। रूप री रंभा। चित्रांम री पूतळी।

राजा रांणी रौ औ रूप देखनै गैळीजग्यौ। उणनै तौ अैड़ौ लखायौ जांणै सोळै चांद अेकण सागै रांणी रा मूंडा माथै ऊगिया। उणरी तौ आंख्यां ई चूंधीजगी। नवी रांणी रै रूप री बीजळी राजा रै मन माथै अैड़ी कड़की के पुरांणी रांणी

री याद जड़ांमूळ सूं बळगी । वौ उण रांणी री मांदगी में उणसूं कौल करचौ हौ के वौ दूजा जलम में ई दूजी रांणी नीं लावैला । उण कौल री याद तक राजा नै नीं री । राज-कंवरां नै निजरां देखतौ तौ उणनै इण बात रौ चेतौ व्हैतौ के वौ पैला किणी रांणी सूं परणीजियौ हौ । अै तौ वगत-वगत री बातां है ।

रांणी जित्ती रूपाळी ही उणसूं सवाय ओछी अर हीण सुभाव री ही । अेक सांचै ढळिया रूपाळा राजकंवर देखतां ई उणनै इण भांत लागा जांणै वासदी री आठ तिणगां उणरी आंख्यां में उछळनै पड़गी व्है । वांनै देखतां ई उणरा ओछा मन में सबसूं पैली बात उपजी के आं सगळां रै जीवतां तौ म्हारी कूख सूं जलमिया कंवर तौ हमेसां ई अभागिया रैवैला । अै जीवैला जित्तै तौ म्हारा जाया गादी रा हकदार ई नीं बण सकै । म्हैं तौ रांणी होयनै ई म्हारा बेटां वास्तै तौ मरियां समांन ई हूं । वा मन में सोच्यौ — म्हारौ औ रूप-खजांनौ फेर कद कांम आवैला !

नवी रांणी नै वै आंठू ई राजकंवर देख्या ई नीं सुहावता । जठा लग आंरौ पापौ नीं कटै, उणनै तौ रात रा नींद में ई चैन नीं पड़ै । वा हरदम बिलखी, दुमनी अर थोड़ी-घणी रिसायोड़ी रैवती । राजा नै मन रौ भेद परगट करण सारू उणरी हीमत तौ नीं व्ही । राजा पूछ्यौ—रांणी थनै अठै कांई दुख है, थूं बिलखी बिलखी क्यूं रैवै ? म्हनै बतावै तौ कीं जांच पड़ै । कांई कमी है ? थूं कैवै तौ थारै वास्तै आकास सूं सूरज नै तोड़ लावूं

रांणी नवी नवी आई ही । उगनै हाल राजा रै सुभाव रौ पूरौ पतौ नीं पड़्यौ के वौ म्हारी बात मांनैला के नीं। राजा म्हनै घणी चावै के वौ आपरा कंवरां सूं घणौ नेह करै । जे म्हारै कैणा सूं वौ नाराज व्हैगौ तौ पछै कीं उपाव कोनीं । इण ख्याल सूं वा उणनै बिना पतवांणियां छेड़णी नीं चावती । आपरै मन री पीड़ मन में ईं दबायोड़ी राखी । वा भांत भांत री अटकळां सूं राजा रै मन रौ थाग लेवणी चावती ।

सीस मैल में राजा आयौ तौ उणनै रांणी घणी विलखी दीसी । उणनै पूछ्यौ — रांणी, थनै इण भांत दुमनी देख्यां म्हारै काळजा में सळीका ऊठै । म्हारै सब सुखां माथै पांणी फिर जावै । म्हारै चांद रै टुकड़ां जैड़ा आठ राज-कंवर है, थारै जैड़ी रूपाळी अपछरा है, राज रौ अखूट खजांनौ है, म्हारी प्रजा म्हनै बाप री ठौड़ आदरै, राज में विद्वांन मंत्री है, पाखती रा सगळा राजा म्हारौ मांन राखै, म्हैं इंदर राजा सूं ई घणौ सुखी हूं पण थनै दुमनी देखनै म्हारौ सगळौ सुख कुमळाय जावै । थूं म्हारा सूं आपरै मन री बात लुकावै !

राजा रै मूंडा सूं आ बात सुणनै रांणी रा मन में तुरत अेक अटकल सूझी । वा होळै गळगळा कंठ सूं बोली — म्हनै म्हारै मां-बाप अर साथणियां री हर घणी आवै । म्हनै सीख देवतां तौ मां बेचेतै व्हैगी ही । रांम जांणै उणरौ कांई हाल व्हियौ व्हैला ? म्हारै बिना दोनां रौ अेक पलक ई जीव नीं लागतौ व्हैला । कालै म्हैं पीवर जावणी चावूं ।

म्हारौ मन मां री याद करनै हर छिण कळपै । आपसूं कीं कैवण री म्हारी हीमत नीं व्ही । आज आप घणौ पूछ्यौ तौ म्हनै मन रौ दरद दरसावणो पड़्यौ । नींतर म्हैं म्हारी पीड़ आप ई लियां बैठी ही ।

रांणी रै बिछोव री बात सुणतां ई राजा माथै तौ जांणै बीजळी पड़गी । उणरौ मूंडौ अेकदम उतरग्यौ । बोल्यौ — रांणी, थारै जावण री बात सुणणा सूं ई म्हारौ जीव ऊंचौ चढ़ग्यौ, साचांणी जावण सूं तौ म्हनै कदास दूजौ सांस ई नीं आवैला । थारा सूं अळगौ होवण री बात तौ म्हैं सपना में ई सहन नीं कर सकूं ।

राजा रा मूंडा सूं औ पड़ूत्तर सुणनै रांणी री ओछाई रै तौ जांणै नवी पांण लागी । मुळकती थकी बोली — जद सात दिनां री मुलाकात सूं ई आप म्हारौ विछोह अेक पलक वास्तै ई सहन नीं कर सकौ, तौ थोड़ौ निरांत सूं सोचौ के जका माईत म्हनै बीस बरसां तक आपरी गोद में पाळ-पोसनै मोटी करी, बेटौ गिणौ चाहे बेटी गिणौ, वांरै वास्तै तौ सेंग म्हैं इज हूं, पछै कीकर म्हारै बिना वांनै चैन पड़ती व्हैला । अर बीस बरसां तक ज्यांरी गोद में म्हैं रमी, इत्ती लांठी व्ही, म्हनै ई वांरै बिना कीकर आवड़तौ व्हैला । आप इणरौ कीं अंदाज लगा सकौ ! आप थोड़ी ताळ वास्तै आपरै माथै ई लिरावौ, जद म्हारै जावणां सूं आप इण गत बैचेत व्हौ अर ज्यूं आप फरमावौ के म्हारै परतख जांणा सूं तौ आपनै दूजौ सांस ई नीं आवैला, तद आं दिनां म्हारी मां रा कांई हाल व्हिया व्हैला ।

राजा इण बात रौ कांई जबाब देवतौ ! बात रांणी री साव साची ही । होळै सूं कह्यौ — म्हैं तौ फगत म्हारी बात जांणूं के पांणी बिना माछळी जीवती रै सकै तौ म्हैं थारै बिना जीवतौ रै सकूं । म्हैं थारै माईतां री बेचैनी रौ बड़ी आसांनी सूं कूंतौ कर सकूं । पण जका इत्ता दिन बेचैन व्हैता थकां ई जीवता रैगा, वै दिन लाग्यां तरतर सावळ व्है जावैला । म्हैं तौ थारै बिना दूजौ सांस ई नीं ले सकूं, थूं तूमार जोयलै ।

रांणी कूड़ौ मूंडौ उतारनै बोली — म्हैं अैड़ौ तूमार नोज देखूं । भगवांन करै आप हजार बरसां लग जीवौ । म्हैं तौ आपरै पग री जूती हूं, मन करौ जद खोलौ अर मन करौ जद पैरौ । म्हारी कांई जिनांत के म्हैं म्हारी खातर आपनै दुखी करूं । म्हैं अबै कदेई जावण रौ नांव नीं लूं ।

राजा रांणी री बात सूं बेहद राजी व्हियौ । रूप सूं घणौ उणरा गुणां माथै रींझियौ । मोद भरनै कह्यौ — थारै जैड़ी रूपाळी अर गुणवंती रांणी धरती थपियां पछै ई नीं जलमी व्हैला

आज रांणी नै राजा रै मन री थोड़ी घणी सोय लाधी । वा मन में जांण्यौ इण आंधा अर अबूझ राजा सूं तौ म्हैं मन जांण्यौ कांम कराय सकूं । राजा री गोद में आपरौ माथौ धरनै कह्यौ — म्हनै जद म्हारै पीहर री हर आसी तौ म्हैं म्हारा मां-बाप अर म्हारी साथणियां नै अठै ई बुलाय लेस्यूं । सगळां रौ कोड पूरौ होय जावैला ।

राजा कह्यौ — रांणी थूं कित्ती भली अर समझदार है !

रांणी मन में सोच्यौ के औ राजा कित्तौ बावळौ अर मूढ़ है ।

उण दिन सूं ई रांणी राजा नै बस में करण री सगळी चेस्टावां करण लागी । राजा रै खायां बिना वा नीं तौ भोजन करै अर नीं पांणी पीवै । राजा सीस मैल में आवै तौ हरदम उणनै ऊभी ई उडीकती देखै । राजा तौ रांणी रा गुणां माथै पूरौ बावळौ व्हैगौ । सपना में कह्योड़ी बात ई वौ रांणी री भवै ई नीं टाळै । बस में व्हियौ पण व्हियौ ।

रांणी राजा रै सुभाव री नित नवी थाग लेवण री चेस्टावां करती । अेक दिन वा पेट दूखण रौ मिस करयौ । जांण-बूझनै पिलंग माथै पसवाड़ा पलटती री । राजवेद सगळा औखद दे थाका पण दरद व्है तौ मिटै । इत्ती किणी री हीमत कोनीं के कै सकै रांणी मिस करै । राजा सगळी रात रांणी रै सिरांतियै बैठौ रह्यौ, आंख्यां री पलकां ई नीं झपाई । रांणी अर राजा दोनूं सैंग रात अेक दूजा री आंख्यां में जोवता रह्या । रांणी री पीड़ रौ तौ किणी नै पतौ नीं लागौ पण राजा रै सुभाव रौ रांणी नै आज सोळै आंना पतौ पड़ग्यौ ।

ढळती रात दोनां री थोड़ी सी आंख लागी । रांणी रै मन रा दबियोड़ा कळाप उणनै सपना में परतख दीखण लागा । वा सपना में देख्यौ के उणरै राजकंवर जलमियौ । आठूं राजकंवर उणनै मारण सारू तकै । रांणी उणनै सात ताळां री तिजोरी में बंद कर दियौ, तौ ई वां आठूं भाइयां नै भख नीं पड़ी । वै उणनै मारण रा नवा नवा उपाव सोचण लागा । रांणी देख्यौ के आं भाइयां रा जाळ सूं बेटा नै

बचावणौ दौरौ है । बेटौ जीवतौ रह्यौ तौ सगळी बातां सावळ व्हैला । वा तौ भली सोची नीं कोई भूंडी । आपरा बेटा नै मेहतरांणी रै हवालै कर दियौ ; कह्यौ — आज सूं थूं इणरी साळ-संभाळ कर, म्हैं थनै नित तड़कै पांच मोहरां देवूंला । किणी नै पतौ नीं पड़ै के औ म्हारौ बेटौ है ।

नींद में सूती रांणी रौ सपनौ चालतौ ई गियौ । वा देख्यौ के उणरौ बेटौ लांठौ होयनै भंगी रौ कांम करण लागौ । सेवट खपतां खपतां वै आठूं भाई रांणी रै बेटा री तपास करली । वै राजा नै सिखायनै उण भंगी वास्तै फांसी रौ फरमांण कढ़वाय दियौ । जद वौ फांसी माथै चढ़ण सारू जावण लागौ तौ रांणी बेटौ बेटौ करती उणरै लारै दौड़ी । राजा रांणी नै पकड़ण सारू हुकम दियौ । सिपाही रांणी नै पकड़ण सारू खपै अर रांणी छुडावण सारू झांपळियां भरै । इण झड़पाझड़प में रांणी री नींद खुलगी — कठै बेटौ, कठै भंगी अर कठै सिपाही ! वा तौ सीस मैल में राजा रै पसवाड़ै सूती ही । रांणी नै इण भांत रौ औ कांई सपनौ आयौ ! रांणी री हाल तांई कूख नीं मंडी तौ ई वा सपना नै साचौ जांणनै उण माथै विस्वास कर लियौ ।

राजा रांणी रै पसवाड़ै नेगम सूतौ हौ । रांणी मन में गोटीजण लागी । राजा नै आपरै पेटा री बात कीकर दरसावै ! सीधा तरीका सूं कैवणौ आछौ कोनीं लागै । राजा रा मन में उणरै वास्तै अर राजकंवरां वास्तै कित्ती प्रीत ही, वा उणनै सावळ कूंतली । राजा रांणी नै घणौ चावतौ हौ । राजकंवरां री राजा कीं परवा नीं करतौ । वौ रांणी माथै संपू-

रण रूप सूं पागल हौ ।

रांणी आं राजकंवरां रौ कीकर अर कित्तौ वैगौ पापौ काटै । उणरा मगज में तौ औ ई फितूर भरचौ हौ । आज रौ सपनौ देख्यां पछै तौ रांणी नै अबै अेक पलक री ई झख नीं पड़ै ।

रांणी रै डील माथै रूप घणौ छायोड़ौ हौ के उणरा काळजा में तीखी छुरियां घणी बिखरियोड़ी ही, इणरौ अंदाज रांणी रा उणियारा सूं राव-रत्ती ई नीं लागतौ । रांणी रा उणियारा माथै तौ अणूंती भोळप निगै आवती ।

राजा री अचांणचक आंख खुली तौ देख्यौ के रांणी पिलंग माथै बैठी कीं सोचै । राजा पूछचौ—कांई बात व्ही ? पलक झपियां नै तौ आध घड़ी ई नीं व्ही, अबारूं जागी कीकर ? कांई पाछौ दरद तौ नीं व्हियौ ।

रांणी होळै सूं बोली — पेट तौ पाछौ नीं दूख्यौ, पण म्हनै अबारूं सपनौ भूंडौ घणौ आयौ । जिणसूं म्हारौ जीव फड़कां चढ़ग्यौ । राजा थावस देवतौ थकौ बोल्यौ — सपना रौ आछौ सोच करचौ ! अै आळ-जंजाळ तौ साव कूड़ा व्है । सपनौ सांम्ही कावळ आयोड़ौ चोखौ । । सपना में भुगतियोड़ौ दुख, सुख रा आसार बतावै अर सपना रौ सुख, दुख पावण वास्तै सावधांन करै । थनै कांई सपनौ आयौ ? बोल, म्हैं उणरौ अरथ बतावूं ।

रांणी कह्यौ — म्हैं सपना में म्हारी मां री बैकूंठी निकळती देखी । म्हनै म्हारी मां अबै भवै ई बचती नीं दीसै । म्हारौ विछोह उणरा प्रांण लियां छोडैला । आप हुकम फरमावौ

तौ म्हैं थोड़ा दिनां वास्तै पीवर जायनै मां सूं मिळ आवूं ।

राजा ऊठनै बैठौ व्हियौ । कह्यौ — रांणी, थूं म्हनै छोडनै जावण रौ नांव ई मत लेजै । थनै जावणौ है तौ म्हैं थारै साथै चालूंला । भलांई आज ई वहीर व्है जावां ।

बणावटी लाज री हळकी सी गुलाबी झांई रांणी रा मूंडा माथै पळकी । वा कह्यौ — भलां, लोग कांई कंवैला । लोक-लाज रौ थोड़ौ घणौ तौ विचार करणौ ई पड़ै । सगळा नगरवासी मन में जांणैला के नवी रांणी राजा माथै कांमण कर दियौ, जिणसूं वै अेक दिन ई अळगा नीं रै सकै । लोकीक सूं डरती म्हैं तौ आ बात घणी सांतरी व्हैतां थकांई नीं करूं । आपरी आ इज इंछ्या व्है तौ म्हैं आज सूं कदैई पीवर जावण रौ नांव ई नीं लेवूंला । अबै इण मैल सूं ऊभी आई नै पाछी आडी ई जावूंला !

रांणी छळगारी

रांणी राजा नै तौ आपरै पेटा री बात नीं दरसाई पण आपरै माजना री अेक डावड़ी नै सगळी बात बतायनै कह्यौ — जे थूं म्हारौ औ कांम कर दियौ तौ म्हैं थनै गळा रौ नवलखौ हार बगसीस करूंला । मोत्यां रौ पळपळाट करतौ हार देखनै डावड़ी रौ मन तुरत डुळग्यौ । तौ ई वा ऊपरला मन सूं कह्यौ — आपरै खजांना रौ ई सगळौ पुन्नपरताप है । म्हनै तौ आप ज्यूं हुकम फरमावौ त्यूं करणौ पड़सी । किणी नै इण बात री कांनौकांन भणक ई नीं पड़ण दूं ।

रांणी नै डावड़ी रै कैणा माथै पूरौ भरोसौ व्हैगौ । दूजै दिन राजा सीस मैल में आयौ तौ कांई देखै के रांणी केस छितरायोड़ी, आटी-पाटी लियां हेटै सूती । राजा खुद हळ-फळियौ नीचै ई उणरै पाखती बैठग्यौ । पूछचौ — रांणी, कांई बात व्ही ? थूं औ भेस कीकर धारण करचौ । म्हनै तुरत बता, थारी कांई मंसा ? अजेज पूरण करूं ।

रांणी कीं पडूत्तर नीं दियौ । वा मूंडौ फेरनै दूजै कांनी सूयगी । राजा फेर खथावळ में पूछचौ — रांणी, औ रिसांणौ किण माथै ? कांई म्हारा सूं कीं भूल व्ही । म्हनै अजेज बतावै जकी बात कर । म्हारा सूं अबै नेहचौ नीं व्है ।

रांणी तौ फेर जबाब नीं दियौ । फगत आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू ढळकावण लागी । वा डावड़ी पाखती ई ऊभी ही । राजा सांम्ही देखनै पूछचौ — थनै कीं जाच व्है तौ बता ।

बिना सुणियां म्हनै चैन नीं व्है ।

डावड़ी नीची धूण करनै बोली — जाच व्हैतां थकां ई बात बतावै जैड़ी कोनीं । रांणीजी रौ सुभट ना दियोड़ौ । अबै आप हुकम फरमावौ ज्यूं करूं । राजा खथावळी में ऊभौ व्हियौ । डावड़ी रौ हाथ पकड़नै बारै अेकांयत में लेजायनै पूछ्यौ — थूं जांणती व्है तौ तुरत बता । थनै बतावणौ पड़सी । रांणी किण माथै रिसायोड़ी ? उण दुस्मी रौ नांव तौ बता । घांणी में पिलायदूं ।

डावड़ी पैला तौ संकौ करचौ । पछै नीचौ माथौ करनै होळै सूं बोली — आठूं रा आठूं राजकंवार रांणी माथै माड़ी निजर राखै । रांणीजी, निरी वार सगळां नै सावळ घर में समझाया - बुझाया, तौ ई वांरौ भूत नीं उतरचौ । रांणीजी, अैड़ी अजोगती बात आपनै बतावणी वाजिब को समझी नीं । लाज अर लोकीक रै डर सूं वै आपरै कांनां ई इणरी भणक नीं पड़ण दी । पण जद रांणीजी नै इण जाळसाजी रौ पतौ लागौ के आठूं राजकंवर घात करनै आपनै मारणी चावै । पछै रांणीजी साथै मनमांनी करैला, इण डर सूं वै औ भेख धारण करचौ । म्हनै तौ इण बात रौ इचरज व्है के उण रांणी री कूख सूं अैड़ा कंवर कीकर जलमिया !

बात सुणतां ई राजा नै अैड़ौ लखायौ के जांणै आकास सूं सूरज तूटनै उणरै पगां तळै आयनै पड़ग्यौ व्है । झाळ झाळ ऊठगी । माथौ फुड़कली रै उनमांन घरणाटी चढ़ग्यौ । उणरै पगां हेटा सूं धरती खिसकगी । सांस रै साथै जांणै वतूळिया ऊठण लागा । उणरी आंख्यां जगमगता खीरां रै प्रमांण जगा -

मग करण लागी। वौ बावळौ व्हियोड़ौ आंधी रै वेग ज्यूं पाछौ रांणी रै गोडै आयौ। राजा रौ औ रूप देखनै डावड़ी तौ थर थर कांपण लागी।

राजा रांणी रै पसवाड़ै बैठनै उणरौ हाथ झंझेड़तौ थकौ बोल्यौ—रांणी, इत्ता दिन थूं म्हारा सूं चोज क्यूं राख्यौ ? अैड़ी बात जाणतां थकां ई थूं म्हारा सूं लुका-छिपी करी, आ थारी जबरदस्त भूल व्ही। म्हैं आं कुत्तां रा माथा घांणी में पिलाय देतौ। थूं औ कांई संकौ करचौ !

रांणी राजा रौ हाथ पकड़नै बैठी व्ही। डुस्किया भरती थकी ई बोली—म्हैं जांण्यौ लोग कांई कैवैला। दुमात आतां ई राजा नै बस में कर लियौ। छळ-छंद रचनै राजकंवरां री आ दुरगत करी। साची बात रौ कुण पतौ लगा सकै ! सगळी रैयत में चक-चक मच्च जावैला। म्हैं म्हारै बस पूगतां आठूं राजकंवरां नै घणा ई समझाया, पण वांरौ तौ माथौ ई भंवग्यौ। वां सगळां नै आ कांई भूंडी सूझी।

राजा रीस में भळभट्ट व्हियोड़ौ बीच में ई बोल्यौ—अबै नीं तौ वांरा माथा ई रैवैला अर नीं वां सगळां नै ऊंधी ई सूझैला। म्हैं आज ई वां दुस्टियां रौ पापौ कटाय न्हा-कूंला। अै आपरी मां नै भूंडी निजर सूं जोवै अर आपरा बाप साथै घात करणी चावै ! आं सरपणी रा जायां नै छाती सूं चेप-चेप नै लांठा इण वास्तै करचा के मौकौ लाग्यां अै म्हनै ई डसै ! इत्ता दिन म्हारी समझ माथै ई भाटौ पड़-चोड़ौ हौ। कित्ता भोळा दीसै ! पण म्हनै आज ठा पड़ी के आं सगळां रा डील में लोई री ठौड़ विस भरियोड़ौ है।

रांणी आंख्यां पूंछती बोली — आप रीस रै पांण अंतावळी में अैड़ौ हुकम मत फरमावौ । आछी तरै खुद आपरी निजरां सूं इण बात री छांण-बीण तौ कर लिरावौ । पछै आपरै ज्यूं दाय पड़ै त्यूं करज्यौ । सास्तरां में लिखियोड़ौ है के लुगाई री बात माथै कदेई भरोसौ नीं करणौ । इत्ता दिन लोकलाज रा डर सूं म्हैं मूंडौ बंद करयां मांय री मांय गोटीजती री । पण आपरै साथै घात करण री जाळ-साजी रौ पतौ पड़्यां पछै तौ म्हारा सूं को रैईज्यौ नीं ।

रांणी अणूंती चात्रंग अर छळगारी ही । राजा रा मन में ऊठण वाळी संकावां रौ वा पैला ई खुलासौ कर दियौ । मंत्री आठूं राजकंवरां माथै जीव देवता हा । रांणी इण बात नै आछी तरै जांणती ही के राजा रौ हुकम सुणतां पांण वै राजा नै समझावण री कोसीस करैला । जे राजा मांनग्यौ तौ ! आं सगळी रुकावटां रौ आगम समाधान सोचनै, वा पैला सूं ई वैड़ी बातां करणी ठीक समझी । नवी रांणी रूप री खांन रै साथै कपट अर छळ-छंद री ई खांन ही ।

रांणी री बातां सुणनै राजा उणरा गुण अर उणरी समझ माथै घणौ ई राजी व्हियौ । कह्यौ — रांणी, थारी बात माथै अभरोसौ करनै म्हैं पुरांणा सास्तरां अर लोगां री बातां माथै भरोसौ करूंला, थूं म्हनै इत्तौ नासमझ जांणै है कांई !

राजा नै जित्तौ रांणी री समझ अर उणरै गुणां माथै भरोसौ हौ, रांणी नै उत्तौ ई राजा री नासमझी अर उणरी मूढ़ता रौ भरोसौ हौ । वा पाटक अंत इज घणी ही । उणनै अजेज अकल री बात सूझी । होळै नेठाव सूं बोली — आ

कोई मांमूली बात नीं है । सगळी रैयत में चक-चक मच जावेला । आपरी बदनांमी व्हैला । कंवरां माथै सगळी रैयत झुरै । कठैई आ नीं व्है के लोग उलट पड़ै । आप पैला राज-मंत्रियां सूं सला-सूत तौ कर लिरावौ ।

रांणी री आ बात सुणनै राजा रै अेडी सूं चोटी लग झाळ-झाळ ऊठगी । उणरा भंवारा तणग्या । कह्यौ—म्हारौ हुकम सांप्रत भगवांन ई नीं टाळ सकै । बापड़ा मंत्रियां री कांई जिनांत के म्हैं वांरां सूं सला विचारूं । म्हारै जचगी जकौ लोह री लीक । साची बात रै आगै म्हैं बदनांमी री परवा नीं करूं । म्हारा बेटा व्हिया तौ कांई, राजा रौ न्याव सगळां सारू अेक ई सरीसौ व्है । रांणी, म्हारी अरज है के इण बात वास्तै थूं बोल ई मती । इत्ता दिन लुकाछिपी राखी जकौ ई घणी ।

रांणी री तौ मनजांणी व्ही । राजा रै खरायां पछै वा क्यूं बात आगै खांचै । फगत राजा नै उकसावण वास्तै वा कह्यौ—दुमात होवण सूं नगरी रा लोग म्हारै वास्तै हजारूं बातां करैला, म्हैं वांरी परवा तौ नीं करूं, पण म्हारी कूख सूं जायोड़ा नीं व्हैतां थकां ई अै आपरा तौ बेटा है; थोड़ी घणी ममता विचारौ अर आंनै मारण रौ हुकम मत दिरावौ, फगत देस निकाळौ देयनै ई मोटी विचारौ ।

राजा कह्यौ—राणी थूं इण बाबत तौ कीं बोल ई मती । म्हैं कीं सोच समझनै, मन काठौ करनै ई औ हुकम देवूं हूं । अैड़ा दुस्टियां री तौ छींयां भेटणा सूं ई पाप लागै । दुनियां में अैड़ा अकरमियां रौ अंस ई बाकी नीं रैवणौ

चाहीजै । जका आपरी मां माथै ई कुदिस्टी राखै, वांरी छींयां ईं इण धरती माथै नीं पड़णी चाहीजै । जे म्हैं इण जुलम नै बगसूं तौ म्हनै ई इणरौ घोर पाप लागैला । अैड़ा अकर-मियां नै राज दरबार में खुलै आंम सगळी रैयत रै देखतां घांणी में पिलावणौ सावळ है ।

पण आठूं राजकंवरां री चाल-चलगत रांणी आछी तरै जांणती ही । आपसूं छोटी नै मां-जाई बैन अर मोटी नै आपरी मां करनै मांनता । सगळी परजा वांरै वास्तै तरजन तरजन करती ही । वै किणी री आंख में घाल्योड़ा ई नीं खटकता । अर नीं वांनै किणी बात रौ राजमद हौ, नीं किणी भांत री करड़ावण । दया-माया अंत इज घणी ही । वगत माथै हर किणी रै कांम आवता । रांणी जांणती के राजकंवरां नै मारण रौ हुकम सुणतां ई सगळी नगरी में हाकौ फूट जावैला । लोग आंधा होयनै उलट पड़ैला । राजा नै राज-काज चलावणौ मुस्किल व्है जावैला । राजा तौ उणरा रूप माथै बावळौ व्हियोड़ौ हौ । उणनै तौ आगली लारली कीं नीं सूझती । रांणी नै चोड़ै खुलै-आंम मारणा सूं तौ कीं मतलब नीं हौ । वा तौ बालै बालै ई आपरौ कांम करा-वणी चावती । सांप ई मर जावै अर गेडी नीं भागै । वा तौ राजा री दवायती लेयनै उण डावड़ी सूं ई सगळौ कांम सारणी चावती ।

आ बात मन में सावळ विचारनै वा कह्यौ — राजा, म्हैं घणा दिनां तांई इण मरम नै मन में छिपायां राख्यौ । पैला जद कदैई आप म्हनै विलखी देखी अर आपरै बार

बार पूछणा सूं ई म्हैं आ केयनै टाळ देती के म्हनै पीवर री याद घणी आवै । म्हैं तौ फगत आं राजकंवरां रै डर सूं पीवर जावण रौ नांव लेवती । मां-बापां री हर तौ अवस आवती, पण म्हारै दुख रौ खास कारण औ इज हौ । म्हैं डरती आपनै कह्यौ कोनीं ! दुमात होवणा रै कारण म्हनै पचासूं बातां सोचणी पड़ै । दुमात रै केई धया व्है । लोग तौ हमेसां दुमात में ई खोड़ां काढ़ै, सावका बेटां री गलतियां सगळा अणदेखी करै । जे दुमात सावका बेटां नै सगा बेटां री ठौड़ नीं मांनै तौ सावका बेटा किसा दुमात नै मां री ठौड़ मांनै । पण म्हैं तौ हाल तांई आं सगळा राजकंवरां नै सगा बेटां रै बिरौबर ई गिणिया, इण कारण विघन रा डर सूं आपनै पेटा री साची बात बताई कोनीं । अबै सेवट काठी आंती आयनै म्हनै भेद परगट करणौ पड़्यौ ।

राजा चुपचाप रांणी री सगळी बातां सुणतौ रह्यौ ।

रांणी फेर आगै कैवण लागी — इण नगरी रा लोग आं आठूं राजकंवरां माथै अणूंता भुरै । अेक बार लोग उखड़ गिया तौ पछै बस में करणा दौरा है । राज-काज संभाळण में हरदम खुड़कौ बगियौ रैवैला । आज दिन तक आपरा राज में किणी तरै रौ कोई रोळौ-दंगौ नीं व्हियौ । आ घणी नांमी उम्दा बात है । अबै म्हारै वास्तै आपरै जीव में किणी तरै रौ घांदौ नीं व्हैणौ चाहीजै । आपनै तौ कांम सूं मतलब, रोळा-दंगा सूं कांई करणौ । जे रैयत अेक बार ई बेकाबू व्हैगी तौ पछै उण माथै लगांम राखणी भार पड़ जावैला । आपनै आपरा हुकम में थोड़ी नरमाई बरतणी

पड़ैला । म्हैं आज आपनै चोखी लागूं, पण सेवट हूं तौ पर घर री अर आठूं राजकंवर आज आपनै खारा लागै, आपरा अंस है । मौकौ पड़्यां विखा में कांम आवैला । म्हारै माथै दया विचारनै आप सगळा नै देस निकाळौ दे दौ, फांसी रौ हुकम माफ करणौ पड़सी ।

राजा री रीस में जांणै अेक फेर उफांण आयौ । आंख्यां रातीचोळ करनै बोल्यौ — जका अकरमी म्हारै मारण री घात तकै, वै मौकौ आयां म्हारै विखा में कांई कांम आवैला । अबै तौ अेक दिन री ढील करणी वाजिब कोनीं । म्हनै धोखा सूं अै किणी वगत मार न्हाकै तौ आ दया कांई कांम आवै । आंरा लखण तौ अैड़ा है के मरियां पछै आंरा नांव लेवणिया रौ ई पापौ काट न्हाकूं । नगरी रा लोग चाहे उल्टै, चाहे रोळा-दंगा करै, म्हैं आं दुस्टियां साथै कोई रियायत नीं करूंला । इण बात वास्तै तौ म्हनै थनै ई ओड़ौ देवणौ पड़सी । इत्ता दिन धोखा में रैगौ जकौ ई घणौ । थूं धापनै भूल करी जकौ म्हारा सूं चोज राख्यौ । भेद परगट करणौ थारै सारै हौ, पण अबै उण माथै सोच विचारनै फैसलौ देणौ म्हारै हाथ है । म्हैं तौ सूरज ऊगियां पैला आंनै अगत भेजणी चावूं ।

रांणी मन रा हरख नै दबावण री चेस्टा करती थकी कैवण लागी — आप थोड़ा धीमा दिमाग सूं विचार तौ करौ के इणमें म्हारी कित्ती धूळ उडैला । म्हारी कित्ती बदनांमी व्हैला । आप तौ अबारूं रीस में आंधा व्हियोड़ा हौ, इणसूं म्हारी बद-नांमी रौ कूंतौ नीं कर सकौ । जे आपनै इण हुकम माथै

ई डिढ़ रैवणौ है तौ पछै आं आठां रै साथै म्हनै ई मारण रौ हुकम फरमाय दिरावौ । के म्हैं आपनै ठाडा दिमाग सूं नेक सला दूं उण माथै राज अमल करावै तौ सांप रौ ई कादौ निकळ जासी अर लाठी रौ ई कीं नीं बिगड़ै । पछै रावळी मरजी व्हे ज्यूं करौ । राज में हुकम तौ आपरौ चालै म्हारै लिक-लिक करणा सूं कांई व्है ।

राजा नै रांणी री आ बात थोड़ी सीक खटकी । वौ रांणी नै लाड सूं कह्यौ — रैयत माथै तौ हुकम राजा रौ चालै, पण राजा माथै हुकम रांणी रौ चालै । पछै किणरौ हुकम वत्तौ व्हियौ । अबै थूं कैवैला जकी बात इज व्हैला ।

राजा फेर कीं आगै कैवणी चावतौ के रोसनदांन रा काच में अेक चिड़ी अर अेक चिड़ौ मार टूंचां मारनै टच टच करता निगै आया । राजा नै उणी वगत पुरांणी रांणी री बात याद आयगी के वा कीकर उण पैलकी चिड़ी नै ईंडा देवण सारू सीस मैल में आसरौ दियौ । कीकर वा आपरा हाथ सूं साळ-संभाळ करती । पैलकी चिड़ी रै मरियां पछै जद चिड़ौ दूजी चिड़ी लायौ अर उणरै आतां ई कीकर आठूं बिचियां री दुरगत व्ही, जिणनै देखनै रांणी तौ उण दिन सूं ई ढोळै बैठगी, पाछी संभी ई कोनीं । रांणी मरती वगत म्हनै राजकंवरां री कित्ती भुळावण दी ही । म्हैं उणसूं कांई वचन करचा हा । अै सगळी बातां राजा मांडनै रांणी नै बताई । रांणी चुपचाप ध्यांन सूं सुणती री । सगळी बात सुणियां पछै वा होळै सूं कह्यौ — रांणी खराय खरायनै जित्ता

आप सूं वचन कराया, जे इणी भांत वा आपरै बेटां नै ई वचनां में बांध लेती के वै किणी भाव मरियां ई राजा रै साथै धोखौ नीं करै तौ आज आ नौबत नीं आवती । पण रांणी तौ मरती वगत आप सूं ई कौल करवायौ, आपरै बेटां नै नीं तौ वा कीं नसीयत दी अर नीं वांरां सूं किणी बात रा कौल-वाचा लिया । कदास आ ई बात व्है सकै के रांणी आपरै बेटां रै कांनां आपरै साथै घात करनै राज खोसण री भुरकी न्हाकी व्है । किणी रा जीव में तौ कुण जीव घाल सकै !

चिड़ौ अर चिड़ी उणी भांत फड़फड़ाटा करता, रोसनदांन रै काच में टूंचा मारता, मांय आवण सारू खपता हा । राजा रांणी दोनां नै इण बात री अणूंती अळखावण अर जूंझळ छूटी । वै डावड़ी नै हेलौ मारनै कह्यौ — आं चंचळ चिड़ियां नै अठा सूं उडाय दै । अै कणाकली माथौ पचावै ।

डावड़ी अेक लांठी छड़ी लेयनै वां चिड़ा चिड़ी नै उडावण सारू खपी । चिड़ौ डावड़ी नै कह्यौ — रांणी-मां नै अरज करौ के म्हारी नवी चिड़ी नै ईंडा देवण सारू मांय सीस मैल में आवण दै । वा हठ झेल राख्यौ है । मोटोड़ा राणी-मां पैलकै म्हारी पैली चिड़ी नै घणा लाड-कोड सूं मांय आळा में बिसाणनै उणरी घणी साळ-संभाळ करी । नवोड़ी चिड़ी आ सगळी बात जांणै । वा कद सूं ई हठ झाल राख्यौ के म्हैं ई सीस मैल में ईंडा देवूंला । म्हारी तरफ सूं नवी रांणी-मां नै अरदास तौ कर । जे वै नीं मांनै तौ म्हांरौ किसौ जोर चालै । म्है यूं ई उड जास्यां । म्हांनै उडावण सारू तक-

लोफ करण री कीं जरूरत कोनीं ।

डावड़ी जायनै रांणी नै चिड़ा री वीणती सुणाई । पण मोटोड़ी रांणी री गळाई इणरै दया - मया कोनीं ही । वा डावड़ी नै कह्यौ — जा, चिड़ा नै कै दै के अठै फालतू चक-चक करनै मगजमारी करण री कीं जरूरत कोनीं । जंगळ में रूंखां रै डाळै सगळा पंछी ईंडा देवै, इण में नवी अर अजोगती कीं बात नीं । चिड़ियां नै रांणियां रा मैल में ईंडा देवणा फबै कोनीं । माजना सूं पाछा उड जावौ नींतर म्हैं अबारूं माथै सिकरौ छुडावूंला ।

डावड़ी रा मूंडा सूं कुलळा समंचार सुणनै चिड़ा नै रीस तौ घणी आई, पण जोर कांईं करै ! तौ ई वौ हीमत करनै खुद रांणी कनै गियौ । हाथ जोड़नै फेर घणी घणी वीणती करी — रांणी - मां, थोड़ी घणी दया विचारौ । म्है आपरौ कीं बिगाड़ नीं करांला । म्है घणौ मोद करनै अठै आया ।

रांणी कह्यौ — म्हैं पुरांणी रांणी जैड़ी मूढ़ अर फूहड़ कोनीं । वा गरीब घर री, छांन में रह्योड़ी राज मैलां री कांईं कदर को जांणती नीं । वा तौ खुद फूस अर वाइदा सूं रंजियोड़ी ही । म्हनै अै बातां परायै घर ई को सुहावै नीं । अठा सूं तुरत उडै जकी बात कर, नींतर अबारूं भूंडा हवाल व्हैला ।

रांणी री आ बात सुणनै चिड़ा नै ई रीस आयगी । वौ कह्यौ — मरचां पछै औ सीस मैल छाती माथै को चालैला नीं । थनै फूस वाइदौ परायै घर नीं सुहावै, पण मरियां थारी इण कंचन काया री वांनी व्हैला, जद वा कीकर

सुहावैला ।

बारूद रा कोठार में जांणै तिणग पड़ी । रांणी उचकनै चिड़ा नैं मारण सारू झपटी । पण चिड़ौ तौ फुर करती रौ उडग्यौ ! उडतौ उडतौ ई चिड़ी नै कह्यौ—भाटा सूं कद तेल निकळै ! दया री मूरत मोटोड़ी रांणी तौ सुरग सिधाई । आ रांणी तौ अणूंती चात्रंग अर पाटक है ।

चिड़ी उणरै लारै री लारै उडी । दोनूं ई उडता उडता राजकंवरां रै मैलां जायनै सरण ली ।

चिड़ा रै उडियां पछै रांणी विचार करचौ तौ उणनै इण बात रौ पिछतावौ व्हियौ के वा बिना बात चिड़ा नै नाराज क्यूं करचौ ? राजा मन में जांणैला के रांणी जीव री बोदी है, उणरै हीयै दया-माया कोनीं । जे चिड़ा नै आसरौ देय देती तौ राजा अवस मन में म्हारी सरा करतौ के रांणी ममता वाळी है । पण अबै कांई व्है ! चिड़ौ अर चिड़ी तौ नाराज होयनै उडग्या ।

राजा रै सांम्हौ बात नै संवारण री चेस्टा करती थकी कैवण लागी—म्हनै उण वगत चिड़ा री चक चक सूं रीस आयगी ही । इण कारण बापड़ा नै झिड़क दियौ । पण अबै म्हारौ पेट बळै, बापड़ी चिड़ी कठै कठै रोवती फिरैला । अबै पाछा आय जावै तौ में वांरी पूरी पूरी साळ-संभाळ करूं । म्हारौ मन साव काचौ है, किणी रौ ई दुख म्हनै झरै कोनीं ।

पण राजा तौ नीं चिड़ा चिड़ी रै उडणा री गिनरत करी, नीं रांणी रै काचा मन री बात नै ई पूरा ध्यांन सूं सुणी । रांणी रै मूंडा सूं कंवरां री बात सुणियां पछै उणरा

मगज में तौ जांणै हजारूं बुग वड़ग्या व्है । माथौ गणण गणण करण लागौ । डील री नसां में जांणै बाळोड़ी कीड़ियां चेंटगी व्है । औ तौ आठूं कंवरां नै आपरी आंख्यां सांम्ही मरता देखणी चावतौ हौ । औ कांम व्हियां बिना उणनै तौ झख ई नीं पड़ैला । रात रा सूता री पलक ई नीं झपैला । पण रांणी रा अै बोल ई उणरा काळजा में खटकता हा के हुकम दिरांणौ तौ आपरै हाथ है, वा तौ फालतू लिक-लिक करै । रांणी रै मन री बात टाळणी उणरै बस में नीं ही । वौ जांणणी चावतौ के रांणी री कांई मंसा है । वौ रांणी नै लाड सूं पूछ्यौ—आ चिड़ी तौ अबै ईंडा देवैला, पछै वां ईंडां सूं रांम जांणै कद बिचिया निकळैला, थनै तौ वांरौ सोच लागौ है, पण म्हैं तौ म्हारै जलमियोड़ा आठूं बिचियां रौ पापौ काटण रा सोच में हूं । औ सोच मिटियां ईं म्हनै चैन पड़ैला । थूं अबार कह्यौ के सांप ई मर जावैला अर लाठी रौ ई कीं नीं बिगड़ैला, वौ कांई उपाव है सौ म्हनै तुरत बता ।

रांणी राजा रा मन में चम चाळनै खुद पाछी सिरकणी चावती ही, इण खयाल सूं के राजा आपरा निस्चै में ढीलाई नीं करै । वा खुद नरम बणनै राजा नै अणूंतौ काठौ करणी चावती । जिणसूं मन चायौ कांम ई व्है जावै अर उणरौ दोसण ई आपरै माथै नीं लागै । वा पाप करनै ई राजा री निजर में निकळंक रैवणी चावती । मकड़ी जिण भांत अेक माखी नै आपरा जाळ में फांदै, उणी भांत वा राजा नै आपरा कपट-झाळ में फांद लियौ । अर उण अबूझ राजा नै

इण बात रौ चेतौ नीं व्हियौ । रांणी कैवण लागी — आप तौ मांनौ नीं हौ, पण म्हनै काच में दीसै ज्यूं साफ दीसै के कंवरां नै मारण रौ हुकम सुणतां ई सगळी नगरी में लाय लाग जावैला । उण उखड़ियोड़ी रैयत माथै काबू पावणौ दूभर कांम है । पैला आप रैयत रौ धीजौ पतियारण सारू कंवरां रै देस-निकाळा रौ ई हुकम फरमावौ, जे औ हुकम सुणनै नगरी रा लोग उखड़ै कोनीं, तौ पछै वांनै मारण रौ ई हुकम फरमाय दिरावौ । पण म्हारै मन में तौ सोळै आंना बात जचियोड़ी है के आप कंवरां नै दीखतौ हुकम फगत देस निकाळा रौ ई दिरावौ । पण म्हारै अेक विस्वास री डावड़ी है । उणनै मरदांनौ भेख कराय कंवरां रै सागै मैल दां । साथै कटोरदांन में विस रै लाडुवां री संभाळ घालदां । वा आपरै हाथ सूं इण राज री सींव रै बारै वांनै अै लाडू खवाड़ देवैला । खातां ई कंवरां रौ फूंकां सांस निकळ जावैला । पछै वा आपरै हाथां सूं आठूं राजकंवरां नै खाडा-बूच करनै पाछी आय जावैला । इण भांत नगरी में रोळौ-दंगौ ई नीं व्हैला अर आपरी मन चाही व्है जावैला । मांनौ तौ म्हारी आ सला है, पछै राज री मरजी व्है ज्यूं हुकम दिरावै ।

रांणी री आ सला राजा रै पूरी पूरी हीयै ढूकगी । कह्यौ — थारी बात नीं मांनूं पछै किणरी मांनूं । रांणी रौ हुकम सिर आंख्यां माथै । तड़कै ई आं दुस्टियां रौ इण राज सूं काळौ मूंडौ होय जावैला । पण थूं उण डावड़ी नै पूरी खरायनै भुळावण दीजै । अैड़ी नीं व्है के अै दुस्टी छळ करनै बच जावै । जीवता रह्या तौ हमेसां म्हारा जीव में

खुड़को रैवैला । लाडुवां में विस अैड़ौ मिळावाड़जै के होठां लागतां ई प्रांण मुगत व्है जावै ।

रांणी विलखौ मूंडौ करनै होळै सूं बोली — म्हारौ तौ अग्रारूं ई पेट बळै, जीव्र अणूंतौ काचौ है, पण आपरौ हुकम तौ म्हनै बजावणौ ई पड़सी ।

राजा कह्यौ — समंदर रौ थाग लागै तौ म्हारी गुण-वंती रांणी री समझदारी रौ थाग लागै । लारला जलम री पुन्याई सूं म्हनै थारै जैड़ी रांणी मिळी ।

देस निकाळौ

दूजै दिन तड़कै राजकंवरां रै देस-निकाळा री बात सुणतां ई सगळी नगरी माथै जांणै पाळौ पड़ग्यौ । रैयत री सगळी खुसियां लोप व्हैगी । लुगायां, टाबर अर बूढ़ा ठाडा सुणियौ जका रौ ई माथौ अर डील सुन्न व्हैगौ, जांणै वांरै माथाकर वांण वैगौ व्है ज्यूं । वै बैरा अर बगना व्हियोड़ा राज दरबार में उमड़ पड़्या । जांणै समंदर पगां हालियौ । मंत्री औ चाळौ देख्यौ तौ वै राजा कनै दौड़्या । कह्यौ — अंदाता औ कांई हुकम फरमायौ ! अेकर म्हांरा सूं सला तौ विचार लेता । आठूं राजकंवर तौ किणी री आंख में घालि-योड़ा ई नीं खटकै, अैड़ा साळस अर दूध जैड़ा निरमळ राजकंवर तौ जलमतां जेज लागै । सगळी नगरी रा लोग दरबार सांम्ही आयनै भेळा व्हिया है । वै आप सूं फरियाद करणी चावै के आं कंवरां साथै वांनै ई देस निकाळा रौ हुकम मिळ जावै । सगळा लोग सुणतां पांण सीधा अठै दौड़ता आया । लारै चिड़ी रौ जायौ ई नीं बच्यौ । म्हांरै तौ कीं समझ बैठी नीं के औ कांई व्हियौ, कीकर व्हियौ ।

राजा नै मंत्रियां री बात सुणनै अैड़ी रीस आई के जांणै सोर रा कोठार में तूळी लागी व्है । उणरी आंख्यां रातीचोळ व्हैगी । फुरणियां अर होठ फरूकण लागा । भंवारा तणग्या । दांत किटकिटावतौ बोल्यौ — इण राज में हुकम म्हारौ चालैला के थां लोगां रौ चालैला । म्हैं घणा दिन भोळप में रह्यौ । थें सगळा ई जाळसाजी में कंवरां रै भेळा

हौ । थां लोगां रै भिड़कावणा सूं ई अै लोग अठै अड़वड़िया है । पण अबै थें म्हनै धोखौ नीं दे सकौ । म्हारी आंख्यां खुलगी है । आं दुस्टियां रौ मूंडौ तक नीं देखणी चावूं । अै वैगा सूं वैगा इण राज बारै निकळै जकी बात करौ, पछै म्हारा सूं सला विचारण री मन में लावौ, पैला म्हैं अेक सबद ई नीं सुणणी चावूं । जावौ फुरती करौ ।

मंत्री कांई पडूत्तर देता । वै सगळा हाक्या-बाक्या होयनै आंख्यां फाड़ता राजा रै सांम्ही जोवण लागा । वांनै तौ सपना में ई ठा कोनीं के कैड़ी जाळ-साजी ! राजा कंवरां रौ मूंडौ क्यूं नीं देखणी चावै । सगळा गताधम में पड़ग्या ।

राजा इण भांत मंत्रियां नै अबोला देख्या तौ उणरौ वेम पक्कौ व्हैगौ । पग पटकतौ बोल्यौ — धणी नै जाच नीं पड़ै पण चोर रौ तौ मन जागै । थां सगळां रा मूंडा थाप क्यूं खायग्या ? जबांन सूं बोल क्यूं नीं निकळै ? जे थें सोना री जात खरा व्हैता तौ थांनै कांई डर ? पण भूठ रा पग काचा व्है ।

मंत्री हाथ जोड़नै कैवण लागा — आपनै कीं वेम व्है तौ म्हांनै आपरा हाथ सूं विस दे दिरावौ, पण अैड़ौ कळंक मत लगावौ । म्है तौ सगळा आपनै भगवांन अर बाप री ठौड़ मांनां, इण में आपनै कांई फरक निगै आयौ ? म्है सपना में ई आपरै साथै दगौ करण रौ विचार करचौ व्हां तौ म्हांनै नरक में ई ठौड़ नीं मिळै । सगळी रैयत आपरी पूजा करै । म्हांनै बात व्है जकी खुलासै फरमावौ ।

राजा तौ ई नीं पतीजियौ । रांणी सूं वत्तौ वौ किण माथै

भरोसौ करै ? उणनै मंत्रियां री साची बात में ई छळ निजर आवतौ । उणनै चारूं कांनी आपरै साथै जाळसाजी रा ई आसार निजर आवता । वौ थोड़ौ सौ धीमौ पड़नै कह्यौ—जे थें सपना में ई जाळसाजी नीं विचारी व्है तौ सबसूं पैला आं कंवरां नै इणी सायत देस निकळौ दौ । सगळी रैयत नै समझावौ । बात बतावै जैड़ी कोनीं, थांरौ पूछणौ बिरथा है । जे म्हनै भगवांन अर बाप री ठौड़ मांनौ तौ म्हैं कैवूं ज्यूं करौ । नींतर म्हैं जांणूंला के थांरै पेटै पाप है ।

मंत्री अेक दूजा रौ मूंडौ जोवण लागा । राजा री इण उगती रौ कांई जबाब देवै ! अैड़ा देव रूपी राजा रौ औ कांई ढाळौ व्हियौ ! वांनै सुभट लखायौ के नवी रांणी राजा नै काठौ मंतर लियौ । राजा माथै रांणी रौ नसौ छायोड़ौ है । कैड़ी ई सांची बात राजा रै हीयै नीं ढूकैला । पण दीखती आंख्यां औ अन्याव कीकर सहन करै ? जीवती माखी कीकर गिटै ? नवी रांणी तौ आवतां ई कैड़ा कबाड़ा करचा ! वै अेकर फेर हीमत करनै कह्यौ—म्हांरै पेटै पाप है के नीं वौ म्हांरा सूं छांनौ कोनीं । पण अबै म्हांरै हीयै ई साफ बैठगी के आपरै नवी रांणी रौ रंग लागौ है । औ रंग इण राज में घणा रंग लावैला । भूंड रौ औ ठीकरौ म्हांरै गळै बंधियौ जकौ तौ ठीक है, पण अबै आ चाकरी म्हांरा सूं बण नीं आवै । कंवरां रै साथै आप म्हांनै ई देस निकळौ समझो ।

राजा घणौ ई भिमरियौ । पण मंत्री तौ अेक ई टेक राखी । वै आपरै आपै अवचळ रह्या । राजा नै चढ़ै अर

उतरै ! वौ रीस में जोर सूं पग पटकतौ बोल्यौ—रांणी रंग लावैला के नीं लावैला, आ तौ आगै री बात है । पण थें सगळा तौ आपरा लखण दरसाय ई दिया । आ नवी रांणी म्हारी आंख्यां रौ जाळौ काटचौ । म्हैं तौ सगळां नै ई धोळौ धोळौ दूध जांणतौ हौ पण म्हनै आज ठा पड़ी के म्हैं सांपां नै दूध पायौ, जकौ वै ई वगत माथै म्हनै डसण री चालां करै । आ रांणी व्है अर म्हारी आंख्यां खुलै । म्हनै इक्कीस आंना पतियारौ व्हैगौ के थें सगळा म्हनै मारण री जाळसाजी में भेळा हा ।

मंत्री इण बात रौ कांई पडूतर देवता ! धणी रौ धणी कुण ? बात साव निपग्गी व्हैतां थकां ई राजा नै कांई ओड़ौ देवै, वांरै कीं समझ बैठी नीं । हाथ जोड़नै होळै सूं अरदास करी—वगत आयां आपनै सगळी जाच पड़ैला के आज रै दिन आपरी आंख्यां खुली कोनीं, रांणी रै रूप रौ जाळौ आंख्यां री जोत नै बंद करदी है । पण आज इणी सायत तौ आपनै म्है भवै ई सूझता नीं कर सकां । इण खातर वेम री निपग्गी बातां रौ जबाब देवणौ बिरथा है ।

राजा रौ कोप बीजळी ज्यूं कड़कण वाळौ हौ के जोग री बात आठूं ई राजकंवर अचांणचक आवता दीस्या ।

राजा रीस में उफणतौ बोल्यौ—म्हैं आं दुस्टियां री छीयां तक नीं भेटणी चावूं, आंरौ मूंडौ तक नीं देखणी चावूं । देस निकाळा रौ फरमांण निकळियां पछै अै राजमैल में आवण री हीमत कीकर करी ।

राजकंवर राजा अर रांणी नै दंडवत प्रणांम करचौ,

वांरे पगां में माथौ निवायौ । हाथ जोड़नै नरमाई सूं अरदास करी — आप म्हांरौ मूंडौ नीं देखणी चावौ औ तौ सावळ है, पण म्हैं बिना दरसण कर्‌यां जावां तौ म्हांनै सपना में ई चैन नीं पड़ैला । इण खातर आवण री गुस्ताखी करी जकौ माफी चावां ।

मंत्री आखता पड़नै कैवण लागा — म्हांरी गुस्ताखी नै ई राज माफी बगसावै । आज सूं आठूं राजकंवरां रौ अर म्हांरौ अंजल भेळौ व्हैला ।

राजकंवर सगळा मंत्रियां नै बरजता थका कैवण लागा: आप सगळा समझदार हौ, म्हांरा वडेरा हौ । आपनै ओड़ौ देतां म्हांरै मूंडै फबै • कोनीं । इत्ती ताळ सगळी रैयत नै ई नीठ समझाई । आपनै समझावण रौ म्हांरौ बूतौ कोनीं । माईतां रौ हुकम मांनणौ ई टाबरां रै वास्तै सरब सुख है । माईत सदा टाबरां रौ भलौ ई चींत्या करै । म्हांनै तौ इण हुकम रौ कीं दुराजौ कोनीं । किणी नै म्हांरै पखै बंधण री जरूरत कोनीं । माईतां रौ हुकम अर वांरी पगथ्ळ माथा माथै। टाबरां री माया-संपत आ इज है । भगवांन सूं नित म्हांरी तौ आ इज अरदास है के म्हांनै सदा इण जोगा राखै के म्है माईतां रौ हुकम राख सकां, म्हांरै वास्तै वांरौ हुकम ही राज है, वांरौ हुकम ई म्हांरौ देस है । माईतां रा हुकम में ई म्हांरै वास्तै सरब आणंद बसै । इण हुकम में रांझौ पटकणवाळा म्हांरै सारू दुखदाई है । म्हैं तौ म्हांरा भाव दरसाया । समझदारां नै समझावतां म्है कोजा लागां ।

मंत्री कांईं जबाब देवता ! वांनै नीं तौ राजा री बात समझ आई, नीं कंवरां री बात हीयै ढूकी । करै तौ कांईं करै ! राजकंवर तौ उठा सूं वहीर व्हैगा । मंत्री पूतळियां रै उनमांन उठै ई ऊभा रह्या । कंवरां रै अदीठ व्हियां राजा डग डग हंसियौ । खिखरां करतौ कैवण लागौ — मीठी बोली री चासणी सूं आंरा खोटा करम खरा नीं व्है सकै ! मोरियौ घणौ ई मीठौ बोलै पण काळिंदर नै गिट जावै । दुस्टी बातां तौ कैड़ी मीठी मीठी करै, पण मांय रा मांय बाप नै मारण रा करतब रचै ! अबै म्हैं इण मीठी बोली सूं भरमीजूं कोनीं ।

पछै वौ मंत्रियां नै कह्यौ — यूं भड़भोल्यां ज्यूं मूंडौ टेरचां ऊभा कांईं हौ ? जावौ आं दुस्टां नै काळौ भेख करायनै काळा घोड़ा माथै बिठायनै, लीला पग अर काळौ मूंडौ करनै अठा सूं भूखा तिरसा वहीर करौ । नीं करौ जित्तै म्हारौ काळजौ ठाडौ नीं व्है । फुरती सूं पाछा आयनै म्हनै अै सुभ समंचार देवौ तौ पछै म्हैं पांणी पीवूंला ।

मंत्री घणा दौरा पग उठावता उठा सूं वहीर व्हिया । के तौ वांरा पग हेटै चिपग्या व्है के पगां रै मणां बंद बोझ आयनै टिरग्यौ व्है ।

रांणी राजा नै होळै सूं मूंडौ मस्कोर नै कह्यौ — आंरै पगां सांम्ही देखनै आप आंरै मन री बात नीं जांण सकौ ! कंवरां रै बोल अर मंत्रियां रै पगां में कित्तौ मेळ है !

राजा कह्यौ — म्हैं सब बातां समझूं हूं, म्हनै समझावण री जरूरत कोनीं । थूं म्हारी आंख्यां रौ जाळौ काट दियौ ।

अबै सब सुभट दीसै, दिखावण री जरूरत कोनीं ।

रांणी मूंडौ उतारनै कह्यौ — म्हारी बदनांमी रौ तौ अबै नीं कोई छेह है नीं कोई पार ! नित नवी बातां उडैला । वांरौ बोझौ म्हारा सूं तो झेलणौ दोरौ । मर जावूं तौ अै बदनांमी रा फंद कटै ।

राजा उणरी पूठ सहळावतौ बोल्यौ — भली मांगस, जूवां रै डर सूं कठै ई धावळियो फेंकीजै ! हाथी नै चाहीजै के वौ आपरी मस्ताई में चालतौ रैवै, भुसतोड़ा कुत्तां री गिनरत नीं करै ।

अठीनै राजा रौ औ कैणौ व्हियौ अर उठीनै राज दरबार रै सांम्ही अड़वड़तौ अणगिणत मांनखौ अेकण सागै जोर सूं हौकार भरी — राजाजी सूं सांप्रत मिळियां बिना राजकंवर अेक तिल जित्ता ई आगै नीं बध सकैला । राजकंवरां रै साथै आज सूं दरबार म्हां सगळी रैयत रौ ई उछाळौ समझै ।

औ हाकौ सुणनै राजा रौ मन कीं मोळौ पड़्यौ । वौ उठै जावण सारू मतौ करयौ । रांणी कह्यौ—अबारूं तौ आप फरमावता के हाथी नै कुत्ता रै भुसणा री गिनरत नीं करनै मस्ताई सूं आपरी चाल चालतौ रैणौ चाहीजै, तौ आप अबै खुदौखुद इण भुसणा री परवा क्यूं करौ ।

राजा पडूत्तर दियौ — म्हनै अेकर इण हाका रौ जबाब तौ देवणौ पड़सी । म्हैं रैयत रौ औ तोतक म्हारी निजरां देखणी चावूं । थूं मन में किणी बात रौ संकौ मत आंणै, म्हारौ फरमांण मरियां ई पाछौ नीं फिरैला ।

चात्रंग रांणी तुरंत जबाब दियौ— म्हैं मन में संकौ लावूं,

आप आ किसी बात कही ? म्हारा तौ जीव में हाल आ ई जचै के आप मोटी विचारौ अर कंवरां नै डराय धमकायनै सुपंथ माथै ले आवौ। आ इज बात आपरै वास्तै सावळ रैवैला। जाब्तौ राखतां थकां कंवरां नै समभाय-बुभायनै सीधा-सणक कर दिरावौ । रैयत काबू में आवणी दौरी है । आपरा जीव नै घणौ धयौ व्हैला ।

राजा कह्यौ—रैयत नै काबू राखणौ ई राजा रौ कांम है। अै सगळी जुगतां म्हनै आवै, थूं नेठाव राख। इणी सायत धांदौ निपटायनै पाछौ आवूं ।

राजा रांणी नै तौ नेठाव राखण रौ कह्यौ, पण खुद रौ जीव जागा छोडण लागौ । अैड़ौ अळूभाड़ उणरा जीव में औ पैलौ ई आयौ हौ । राजा मन में आगौ-लारौ सोचतौ रैयत सांम्ही जावण नै वहीर व्हियौ। मंत्रियां रै गळाई उणरा पग ई जांणै हेटै भिलग्या व्है । पण तौ ई राजा ऊपर सूं रौब जतळावतौ पूरण अकड़ाई रै साथै रैयत रै सांम्ही गोखड़ा में ऊभौ व्हियौ । रैयत राजा नै देखतां पांण इण गत हाकौ करचौ जांणै समंदर जोर सूं गरजियौ । राजा नै मीट लग मांनखौ ई मांनखौ निजर आवतौ। राजा आपरा जीवण में थाळी तिरायां तिरै जैड़ी अर तिल उछाळियां हेटै नीं पड़ै वैड़ी भीड़ आज आपरी आंख्यां सूं देखी । कांनां सुणी जकी बात सांप्रत निगै आई । राजा री कांई बिसात के इण उमड़ियोड़ा समंदर माथै काबू पा सकै । राजा तौ खुद ई आपरा काबू में नीं रह्यौ। राजा घणौ ई नेगम रैवण री चेस्टा करी, पण उणरी जीभ, ऊणरौ मगज अर उणरौ काळजौ उणरा बस में ई नीं रह्यौ।

वौ रैयत नै कड़कती वांणी में डाट-डपट कड़णी चावतौ के फेर कदैई वा इण भांत भेळी नीं व्है । अेकला न्यारा आदमी नै धमकावणौ अर उणनै डरावणौ कित्तौ सैल कांम है, पण रैयत रा इण उमड़ियोड़ा संमदर माथै काबू पावणौ कित्तौ दूभर हौ । काबू पावणौ तौ अळगौ, राजा तौ इण उछाळा मारता समंदर नै देख डरण लागौ ।

राजा रमेकड़ा रै उनमांन अठी-उठी घांटी हिलाई तौ उणरी निजर कंवरां माथै पड़ी । काळा गाभा पैरयोड़ा आठूं राजकंवर काळा घोड़ां री लगांमां पकड़ियोड़ा ऊभा हा । वै रैयत नै समझावण री चेस्टा करता हा पण वा तौ बेताब व्हियोड़ी ही ।

राजा सांम्ही देखनै रैयत फेर जोर सूं हाकौ करयौ । जांणै अेक लांठी छौळ उण छोर सूं इण छोर तक गरजती पार व्हैगी । अेक सुर में हुंकार करी—राजकंवरां रै देस निकाळा रौ कारण कांई ? औ फरमांण पाछौ लौ, नींतर म्हांरौ ई उछाळौ समझौ ।

राजा नै अैड़ौ लखायौ जांणै उणनै अलेखूं सिंघ चौतरफ सूं घेर लियौ व्है । उणरा लिलाड़ माथै परसेवा री बूंदां झळकण लागी । काळजौ अर होठ फड़कण लागा । गळा में जांणै डूंजौ बंधग्यौ व्है । आंख्यां सांम्ही झांवळा आयग्या । वौ अेक मंत्री नै हाथ री सांनी करनै आपरै पाखती बुलायौ । उणनै डरतौ डरतौ होळै सूं कह्यौ—पूछौ आं लोगां नै के अठै भेळा क्यूं व्हिया ? देस निकाळा रौ फरमांण काढ़यौ तौ म्हैं काढ़यौ । राजा रा फरमांण माथै इण भांत भेळा होयनै पुकार

करणी बेकायदै है । म्हनै अैड़ी बातां सुहावै कोनीं । साफ डूंडी पिटायदौ के आज तौ मतै मतै अड़वड़नै भेळा व्हिया जकौ तौ माफ करूं पण फेर कदैई आ रंगत व्ही तौ जांणै जैड़ी करूंला ।

मंत्री तौ मन ई मन राजी व्हियौ । वौ ऊपरला मन सूं मूंडौ उतारनै पूछ्यौ—आइंदा तौ राज री मरजी व्है ज्यूं करजौ, पण आज कांई उपाव करां जकौ फरमावौ, म्हारै तौ कीं समझ नीं बैठै ।

राजा अटकतौ अटकतौ बोल्यौ—इत्ती बात ई समझ नीं बैठै तौ पछै मंत्री क्यूं बण्या ? म्हैं तौ राजा हूं । देस रौ धणी हूं । राज चलावणौ थांरौ कांम है के म्हारौ । इण भीड़ नै फुरती सूं आप आपरै ठिकांणै वहीर करौ । आं अलेखूं जिना-वरां री कोजी मिचळांद सूं म्हारौ तौ माथौ चढ़ग्यौ । जे अै अठै आया तौ न्हाय-धोयनै क्यूं नीं आया ? राजदरबार में सुथराई सूं हाजर होवणौ चाहीजै । यूं गळीच री गळाई लर-ड़ियां रै उनमांन भेळा होयनै में में करणौ मिनखां रौ कांम नीं है । इण मिचळांद सूं म्हैं बेचेतै व्हैगौ तौ आ जोखम कुण ओढ़ैला, पैला वौ धणी म्हारै सांम्ही आवै । म्हनै तौ लखावै के म्हारा प्रांण निकळ जावैला ।

राजा सोच्यौ इण मिचळांद रा डर सूं रैयत चुपचाप आपरौ मारग लेय लेवैला । राजा रै बेचेतै री बात सुणतां ई रैयत नै चेतौ होय जावैला । कित्ती सैल बात है, पण तौ ई मंत्रियां नै को सूझी नीं ।

मंत्री सोच्यौ वगत माथै ई अकल री जाच पड़ै । राजा कैड़ी कुलळी बात करी, अैड़ी बात तौ अबूझ बाळक ई नीं

सोच सकै । पण वौ मन में अणूंतौ राजी व्हियौ के जे आ डूंडी पिटवाय दूं तौ मन जांणी व्हे । रांणी रै रूप में आंधा व्हियोड़ा राजा री अेक पलक में आंख्यां खुल जावै । राजा नै हाथौहाथ इणरौ परचौ मिळ जावैला । वै तौ राजा नै दूजी वार पूछ्यौ ई कोनीं । झट डूंडी वाळा नै पाखती बुलायनै राजा कही जकी बात समझाय दी ।

डूंडी वाळौ जोर सूं डूंडी ठपकारनै हाकौ करयौ — सुणौ रे नगर-वासियां सुणौ, थें राज दरबार में विना न्हायां-धोयां भेळा क्यूं व्हिया ? थांरी भूंडी मिचळांद सूं राजाजी रौ माथौ चढ़ग्यौ । हवा रै समचै थें अठा सूं उड जावौ, नींतर थांरी खैर कोनीं । जिनावरां री गळाई बिना सोच्यां विचारयां भेळा क्यूं व्हिया ? राजाजी रौ हुकम है, दौड़ता ई निगै आवौ, दौड़ता ई ।

डूंडी वाळा रौ औ कैणौ व्हियौ अर रैयत में खळबळ माची, जांणै समंदर में तूफांन आयौ ! रैयत कह्यौ — जिण राजा नै रैयत री मिचळांद आवै, उणरा राज में ई म्हांनै नीं रैवणौ । म्है तौ राजकंवरां रै साथै इज औ राज छोड देवांला । राजा-रांणी पछै अेक दूजा री सौरम लेता रैजौ ।

हालौ, हालौ री हाक माथै हाक ऊठी । हालौ, कंवरां रै साथै हालौ । राजा री आंख्यां सांम्ही अंधारी आयगी । कांनां रा पड़दा फूटण लागा । बेचेतै होयनै पड़णवाळौ हौ के मौका माथै रांणी उणनै झाल लियौ । थावस देवती बोली — यूं डरपियां कांम नीं चालै, थोड़ौ गाढ़ राखौ ।

राजा हळफळतौ कह्यौ — डरै कुण, आं लरड़ियां सूं कुण

डरै ! फगत आंरी कोजी मिचळांद सूं म्हारौ माथौ गरणाटी खावै, मांय रौ मांय उछळै ।

चात्रंग रांणी राजा री समभ्र माथै तरस खावती बोली: खैर, छोड़ौ इण बात नै । अबै आं कंवरां रै बिना खुद भगवांन ई इण रैयत माथै काबू नीं पा सकै । वै चावै तौ इण भीड़ नै समभ्राय सकै । कंवरां नै हुकम फरमावौ, नींतर राज रौ पाटियौ पलट जावैला ।

रांणी नै तौ पैला ई काच में दीसै ज्यूं दीसतौ हौ । राजा में इत्ती अकल तौ ही के वौ कैतां पांण रांणी री बात समभ्र्यौ । सांनी करनै कंवरां नै पाखती बुलाया । इग्याकारी कंवर हाथ जोड़नै राजा रै सांम्ही हाजर व्हिया ।

रैयत री सगळी रीस राजा कंवरां माथै भ्राड़ी । रीस में कड़कतौ बोल्यौ — दुस्टियां म्हारा सूं लारला भौ रौ कांई आंटौ साभ्रौ । थें म्हारी रैयत नै म्हारै खिलाफ ई सिळगाई । बेटा होयनै थें म्हनै औ परचौ दियौ ! आपरै हाथां सिळगायोड़ी लाय नै अबै थें ई बुभ्रावौ । म्हैं कीं नीं जांणूं । रैयत नै भेजियां पछै थें ई थांरौ काळौ मूंडौ करौ तौ म्हनै सुख री सांस आवै । म्हारौ मूंडौ कांई जोवौ, फुरती करौ ।

कंवर राजा री इण बात रौ कांई जबाब देवता ! हाथ जोड़नै कह्यौ — म्हैं किणी बात रौ ओड़ौ नीं देवणी चावां । आप जकौ फरमावौ सौ साच । आपरी बात नै मांनण रै सिवाय म्हांनै कीं दपूचा नीं लेवणा । मरती वगत मां म्हांनै आ अेक ई भुळावण दी ही । म्है तौ मरचां ई उणरी बात नीं टाळां । आप करौ जकौ न्याव अर आप फरमावौ सौ

साच है ।

राजा री रीस में भळै छमको लागौ । कह्यौ — म्हनै अबै मीठी बातां सूं भरमावण री चालां मत करौ । म्हैं थांरै मन रा भावां नै सै समझूं । म्हारौ कैणौ नीं टाळौ तौ अबै फुरती सूं इण रैयत नै ठिकांणै सर लगावौ ।

राजा रै कैतां ई सबसूं लांठोड़ौ कंवर रैयत सांम्ही मूंडौ करनै कैवण लागौ — बेलियां, आप सगळा म्हांरै मंगळ अर म्हांरी भलाई री खातर भेळा व्हिया, इणरौ म्हांनै घणौ मौद है । पण दरअसल आपरै सोचणा में जकी भलाई अर मंगळ री बात है, वा म्हांरै सोचणा में दुख अर कळेस री बात है । म्हांरी मां म्हांनै मरती वेळा आ इज सीख दीवी के बाप माथौ उतार लेवै तौ ई ओड़ौ नीं देणौ । बाप रौ हुकम मांनणा में ई बेटां रै सरब सुख अर सरब आणंद है ! जे म्हांरी दिवगंता मां री आतमा नै आप सांयत पौंचांणी चावौ तौ म्हांरी फगत आ इज अरज है के आप सगळा आप आपरै घरै पधारौ । इण वास्तै म्हांनै आप सूं दूजी वार अरज नीं करणी पड़ै, म्हांरी आ इज वीणती है ।

मोबी राजकंवर री वीणती रौ अैड़ौ जादू व्हियौ के कंवर नै कैतां जेज लागी अर सगळी रैयत नेठाव सूं बिना कीं कह्यां सुण्यां उठा सूं वहीर व्हैगी ।

रांणी राजा रै कांन में होळै सूं कह्यौ — कंवर रै भिड़-कायोड़ी रैयत कैतां पांण मांनगी । म्हैं तौ पैला ई लखगी ही ।

राजा माथौ हिलाय हुंकारौ भरचौ — हुं ! रैयत रै अदीठ

व्हैतां ई राजा नै पूरौ चेतौ व्हियौ । उणरौ आपौ संभळियौ । दरबार में अबै फगत राजा, रांणी, मंत्री, आठ काळा घोड़ा, नै काळौ भेख धारयां आठ राजकंवर अर रांणी री मरजीदांन डावड़ी मरदांनौ भेख धारयां आपरै घोड़ा समेत ऊभी ही ।

राजा रांणी रै रूप में इत्तौ बावळौ अर गरक व्हियोड़ौ हौ के उणरा मगज में आ ई बात नीं बैठी के जे कंवरां रै मन में राव-रत्ती ई छळ-कपट व्हैतौ तौ जाळसाजी करण रौ इण सूं फेर वत्तौ कांई मौकौ हाथ लागतौ ! कंवर थोड़ी सी सांनी कर देता तौ रैयत रौ औ समंदर सगळा राज नै गिट जावतौ । राजा रांणी रौ कीं जोर नीं चालतौ । अेक पलक में ज्यूं राजकंवर चावता ज्यूं होवणौ पड़तौ । खुद भगवांन ई उण होवणा नै टाळ नीं सकतौ । सगळा राज रौ खाकौ ई पलट जावतौ । अेक अबूझ टाबर री समझ में आवण वाळी बात ई राजा रै ध्यांन में नीं आई । रांणी री बात सूं उणरा उफांण में इदकी आंच लागी । वौ मंत्रियां नै कह्यौ— वैगा सूं वैगा आं सरपां रा मूंडा काळा करौ । इण राज री सींव लग अै सगळा भूखा तिरसा ई जावैला ।

पछै डावड़ी सांम्ही सांनी करनै कह्यौ—औ हाजरियौ खुदोखुद आंनै सींव रै बारै काढ़ैला । साथै री संभाळ नै अै राज रै बारै खाय सकै, पैला नीं ।

औ फरमांण देयनै राजा रांणी तौ आपरै मैलां दाखल व्हिया । सगळा मंत्री छबरां छबरां आंसू ढळकावता आठूं कंवरां नै वहीर करया । मंत्रियां नै अैड़ौ लखायौ के वांरौ जीव देह सूं बारै उछळै । पण जोर कांई करता । सगळा

कंवर वांनै आ ई सीख दीवी ही ।

आठूं ई राजकंवर काळा घोड़ां माथै असवार होयनै उण डावड़ी रै धकै धकै वहीर व्हिया, राजी-खुसी अर मुळकता थका । वांरा मूंडा माथै रंज रौ नांव-निसांण तक नीं हौ ।

नगर रा परला फिळा माथै सगळा नगरवासी कंवरां सूं मिळण सारू उठै ऊभा हा । वांनै देखतां ई ठळाक ठळाक रोवण लागा, जांणै सांवण री काळी कळायण बरसी व्है । उण देवी री कूख सूं जायोड़ा कंवरां रा आज अै हवाल ! काळौ भेख, काळा घोड़ा अर औ देस निकाळौ ! आं कंवळां फूलां री परदेस में कांई गत व्हैला ।

कंवर सगळी रैयत सूं गळै मिळनै वहीर होवणौ चावता, पण वा निकांमी डावड़ी कह्यौ — म्हनै राजा रौ हुकम कोनीं, फुरती सूं चालौ, फालतू रा आं ढपलां में कांई सार ! सेवट पैंडौ तौ हालियां कटैला । कूड़ा छिपलां में कीं आंणी जांणी नीं ।

राजकंवर उणरै कैतां ई बोला बोला वहीर व्हैगा । सगळी रैयत डुस्किया भर भरनै रोई ।

इत्ता में कांई रासौ व्हियौ के वै दोनूं चिड़ौ अर चिड़ी आपरी टूंचां में आळौ झालियां कंवरां रै पाखती उडता उडता आया । छोटकियौ राजकंवर आपरा हाथ में आळा नै थांमियौ । चिड़ौ कह्यौ — जद आप ई मैल छोडनै जावौ तौ पछै म्है किणरै भरोसै रैवां । म्है दोनूं ईंडां समेत आपरै साथै चालस्यां । राजकंवर उणरी वीणती मांनली ।

रैयत मन में जांणियौ के उणरै बिचै तौ अै चिड़ा चिड़ी

सभागिया है जको कंवरां रै साथै जावै । पण कंवरां रै बरजियां पछै फेर हठ झेलण री हीमत नीं व्ही ।

सगळी रैयत निरी ताळ तक घोड़ां री टापां सूं उडती खेह रै बिचाळै कंवरां नै भर भर मीट निरखती री । उडती खेह रै बिचाळै काळा घोड़ां माथै बैठा राजकंवर अैड़ा लागता जांणै आंधी रा आसण माथै काळा बादळा इण नगर सूं अळगा ई अळगा जावैं ।

देखतां देखतां वै बादळां रा टुकड़ा मगरा री ढळांत में अदीठ व्हैगा । फगत झीणी झीणी खेह उडती ही । डुस्कियां भर भरनै सगळा नगरवासी विलखा होयनै आपरै ठायै ठिकांणै बोला बोला गुमघांम वहीर व्हिया ।

सुगन चिड़ी

छोटकिया राजकंवर रै काळा फेंटा में चिड़ी रै ईंडा रौ आळौ सुथराई सूं धरचोड़ौ हौ। घोड़ां रै फरगटै चालतां थकां ई वां ईंडां नै अैल ई नीं आवती ही। चिड़ौ अर चिड़ी राजकंवरां रै माथै उडता जावता हा। डावड़ी रौ घोड़ौ सबसूं लारै दौड़तौ हौ। आपरी जलम भोम अर बाप रौ राज छोडनै राजकंवर असेंधै दिसावरां री सोय में मन करै जठीनै ई घोड़ा बगडावता जावै हा। वांनै तौ फगत आपरै राज री सींव लांघणी ही। इण सींव में तौ वांनै खावण पीवण री ई मनाई ही।

इण भांत दौड़तां दौड़तां तीन दिन व्हैगा। हर घड़ी अर हर पल, नौ ई घोड़ां रा असवार दौड़ता जावता। दिन ऊग्यौ अर रात ढळी, रात ढळी अर दिन ऊग्यौ, राजकंवर तौ आंधी रै उनमांन दौड़ता ई रह्या। हर छिण रै सागै जलम भोम अळगी सिरकती री। यूं दौड़तां दौड़ता सेवट राज री सींव लांघणी आई। अबै तौ हांकरतां नवा राज री कांकड़ आवण वाळी ही के मारग में भाड़ माथै डावै कांनी सुगन चिड़ी सूण माड़ा कर दिया। सगळा घोड़ा उणी ठौड़ ठमग्या। सुगन चिड़ी रै सुगन दियां बिना घोड़ा तौ आगै सिरकै ई नीं। राजकंवर घणी ई मांनतावां बोलो पण सुगन चिड़ी तौ आपरी जागा छोडी ई नीं। घरै आवतां डावी अर दिसावर सिधावतां सुगन चिड़ी जीमणी धकै तौ मन जांण्या आछा सुगन व्हे। पण पारवती रो अवतार आ सुगन चिड़ी तौ परदेसां जावतां डावै

माल्है है, पछै कीकर आगै बधणी आवै ।

सगळा घोड़ा अर सगळा असवार भाटा री पूतळियां ज्यूं सागै ठौड़ ऊभग्या । कंवरां रा भूखा-तिसायां प्रांण नीसरता हा । कंवरां रै देखा-देखी चिड़ौ अर चिड़ी ई चुग्गौ पांणी नीं करचौ । मरदांनौ भेख करचां अेकली डावड़ी पड़ूदी रा लाडू गटकावती ही अर दीवड़ी में भरचोड़ौ ठाडौ पांणी पीवती ही । डावड़ी कनै दो कटोरदांन हा । अेक में तौ आठ राजकंवरां सारू आठ विस भरचौड़ा लाडू हा अर दूजा में उणरै खावण सारू पड़ूदी रा लाडू हा । दीखणा में साव अेक जैड़ा, कोई सनागत नीं कर सकै के आं दोनां में किणी भांत रौ फरक है । जोग री बात के डावड़ी रा कटोरदांन में खावतां खावतां अवै फगत आठ इज लाडू बच्या हा । डावड़ी रौ कटोरदांन रूपा रौ अर राजकंवरां रौ कटोरदांन सोना रौ हौ । रांणी जांण करनै कंवरां सारू औ अमोलक कटोरदांन डावड़ी नैं सूंप्यौ हौ, जिणसूं मन में किणी भांत रौ अभरोसौ नीं व्है । कंवरां नै तौ माटी री पारी खातर ई वेम को उपजतौ नीं । पण चिड़ा नै सगळी बात री जाब हो इण वास्तै ई वौ कंवरां रै सागै आवण रौ मतो करचो हौ । मारग में वौ नीं तौ किणी नै चरचा करी अर नीं डावड़ी नै ई इण बात रौ खुड़कौ होवण दियौ के चिड़ौ सगळौ जाळसाजी जांणै ।

सुगन चिड़ी जिण भाड़ माथै बैठी ही, उण छेड़ै थोड़ी भांय माथै ई अेक नाडी सांम्ही दीसती ही । हबाहब हिबोळा भरतौ ठाडौ अर निरमळ पांणी ! पाळ माथै बड़लां री जाडी छीयां !

परसेवा में लथौबथ डावड़ी संपाड़ौ करनै बिसाई खावणी चावती ही। नाडी रै परलै तीर नवा राज री सींव ही। अबै उणरा मन में खाथाई तड़फा तोड़ण ढूकी ही। सगळा कंवरां रौ खातमौ करनै इनांम इकरार पावण सारू वा नवी रांणी रै पाखती अजेज पूगणी चावती ही। अेक छिण रौ मोड़ौ ई उणनै खटतौ नीं हौ।

डावड़ी खथावळ दरसावतो राजकंवरां नै कैवण लागी — भला मिनखां, थोड़ौ घणौ तौ विचार करौ के थें देस निकाळै जावता अबै किसा सुगन मनावौ! सुगन अर करम तौ धापनै माड़ा हा जद ई बाप रौ राज छोडणौ पड़्यौ। अै मूढ़तां री बातां छोडौ अर धकै चालौ। थांरै साथै म्हनै ई क्यूं देस निकाळौ भुगतावौ।

चिड़ौ तुरत सुगनचिड़ी रा सुगन विचार लिया के अै सुगन तौ डावड़ी सारू माड़ा है। राजकंवरां वास्तै तौ आज री घड़ी फेर कांई बिगड़ै। वौ उकरास लगायनै लाडुवां री अदळ-बदळ करनै डावड़ी नै विस रा लाडू खवाड़णी चावतौ हौ। पण मारग में वत्ता घड़ता होवणा सूं चिड़ा री तजबीज पार नीं पड़ी अर वौ मारग चालतां डावड़ी नै सावचेत ई नीं करणी चावतौ हौ। आज दोनूं लाडुवां री गिणती बिरौबर ही। चिड़ौ आं सुगना री बात फट लखग्यौ। डावड़ी रै साथै वौ खुद ई चालण री खथावळ करी। साळस राजकंवर कैतां पांण दोनां री बात मांनग्या।

सुगनचिड़ी रै माड़ा सुगनां रै उपरांत ई सगळा इण राज री सींव नै लांघनै परला राज री सींव में वड़ग्या। अेक घेर

घुमेर पींपळी री जाडी छींयां में बिसाई खावण बैठा । डावड़ी पसीना में घांणमथांण व्हियोड़ी ही । उणरौ जीव बिखरतौ हौ। मरदांनौ भेख धारण करचौ तौ कांई, ही तौ लुगाई री जात ई। संपाड़ौ करचां बिना उणरा प्रांण नीसरता हा । पण सगळां रै सांम्ही खुला में न्हावै तौ भेद परगट होवण रौ डर ।

वा मिस बणावती कह्यौ—अठै चौड़ा में हवा घणी बाजै, नाडी री आड में अबारूं खंखोळी खायनै आवूं । चिड़ौ तौ आ ई बाट जोवण सारू ताखड़ा तोड़तौ हौ । आठूं राजकंवर ई हाथ पग धोवण सारू खोजा टांकनै नाडी में वड़ग्या । डावड़ी आड री ओट में अेकांत झीलण सारू आपरै मतै अेकली ई वहीर व्हैगी ।

चिड़ौ तौ लियां दियां बैठौ हौ । सांतरौ मौकौ देखनै वौ फुरती सूं फटाफट कटोरदांनां रा लाडू अदळ-बदळ कर दिया । औ खिलकौ रचियां पछै वौ नेठाव सूं नाडी में पांणी पीवण सारू उडियौ । धापनै पांणी पीयौ । पाखां फड़फड़ायनै च्यार-पांच झिकोळा खाया ई ।

डावड़ी खंखोळी खायनै तुरता-फुरत पाछी वळी । संपाड़ौ करचां पछै भूख रै कारण उणरा आंतरड़ा कुळण लागा । वा तौ किणी री मांन-मनवार नीं करी । रूपा रा कटोरदांन सूं आधौ लाडू तोड़नै झट मूंडा में धरचौ । लाडू धरतां ई वा तौ पाछौ चुस्कारौ ई नीं करचौ । ज्यूं बैठी त्यूं ई फोत खेलगी । देखतां-देखतां डील लीलौ-चम पड़ग्यौ, आंख्यां रा डोळा बारै आयग्या । ठौड़ ठौड़ दापड़ उपड़ग्या । थोड़ी ताळ तौ वा वैकूंठी व्है ज्यूं बैठी री, पण हवा रौ अेक जोर सूं

झोलौ आयौ अर वा जमीं माथै गुड़गी ।

राजकंवर सगळा दौड़नै उणरै पाखती आया । अकचकिया होयनै वै अेक दूजा रौ मूंडौ जोयौ । चिड़ा नै पूछ्यौ—अचांणचक आ कांई अजोगती बात व्ही ?

चिड़ौ कह्यौ—इण में अजोगती कीं नीं, साव फबती अर चोखी बात व्ही । मरद रा भेख में आ नवी रांणी री खास डावड़ी ही । आप सगळां नै छळ सूं विस रा लाडू खवा-ड़णी चावती । पण इणनै हाथौहाथ आपरै करमां रौ फळ मिळग्यौ । वा भूल सूं थांरै लाडुवां री संभाळ गटकायगी । इणनै तौ अठै ई पूरौ इनांम-इकरार मिळग्यौ ।

पछै चिड़ौ अर चिड़ी वै विस भरचा लाडू धूळ में पटक दिया, पांखां फड़फड़ायनै वांनै धूळ में रगदोळ दिया । राजकंवर कह्यौ—आ तौ आपरी करणी मुजब भुगत लियौ । पण अपांनै तौ इण मिनखा देह रौ किरियाकरम करणौ ई पड़सी ।

आठूं राजकंवर आपरै हाथां सूं लकड़ियां भेळी करी अर डावड़ी नै दाग दियौ । पछै संपाड़ौ करनै सूरज भगवांन नै पांणी चढ़ायौ । तठा उपरांत तीन दिनां रा भूखा अेक अेक लाडू खायौ । चिड़ा चिड़ी नै ई चूंण चुगायौ ।

चिड़ै कह्यौ—सुगन चिड़ी इण डावड़ी री खातर अपांनै सुगन को दिया हा नीं । इण अेकली री खातर अपां सगळां रा अपसूंण व्हिया । पण डावड़ी रा मन में गुमेज हौ के इणरौ कुण कांई बिगाड़ सकै ! आपरै हाथां आक बोयौ जिणरौ फळ उणनै तुरत मिळग्यौ । अपांरै नगर सूं ई म्हनै इत्ती बात री

सोय ही । इण खातर म्हैं दोनूं आपरै सागै आया । नवी रांणी रै आयां आपरै राज अर आपरी रैयत रा दिनमांन खराब आयग्या । आप लोगां रै जांणा सूं तौ सगळा राज में रुळि-यारौ मच जावैला । आप लोग जठै जावौला, फतै रा डंका घुरैला । आ अेक बीचली घाटी ही, जकौ आप लांघग्या । अबै कांई डर कोनीं । दिन आयां सगळी बातां सिरै हौ जासी । पण औ विखौ तौ ज्यूं त्यूं काटणौ पड़सी । पुरांणी रांणी री पुन्याई रौ गिणिया दिनां सूं आपनै फळ मिळैला । अबै म्है दोनूं जणा अठै ई जंगळ में रैवास करस्यां । अैड़ी सुथरी ठौड़ म्हांनै हाथ नीं आवैला । औ हरचौ वन, औ इमरत पांणी, अै फळ-फूलां सूं लदयोड़ा रूंख अर आ सुहाणी कुदरत ! म्है तौ अठै ई सांतरै रूंख रा डाळा में आळौ घालनै ईंडा सेवांला । म्हांरी तौ आपनै आ अेक ई सीख है के साच अर न्याव रौ पंथ मत छोडजौ । कित्तौ ई विखौ अर संकट पड़ै तौ ई इण पंथ सूं डिगजौ मती, सै बातां भली व्हैला । आज दिन तक जिण सुमारग ऊपरां चालता रह्या, वौ ई मारग आपरै वास्तै सिरै । आपनै अधरम अर कूड़ रा राज सूं देस-निकाळौ व्हियौ है । साच ई आपरौ घर है अर न्याव ई आपरौ देस है ।

राजकंवर कह्यौ—म्हां हर सांस रै समचै थारी सीख नै याद राखस्यां । थूं म्हांरै साथै जकौ गुण करचौ उणनै ऊमर भर नीं पांतरां । अबै म्हे म्हांरौ मारग लां ।

आ कैयनै सगळा राजकंवर आपरौ भेख पलटियौ । काळा घोड़ां नै आया उण दिस सांम्ही पाछा तगड़ दिया । खुद पाळा ई

उठा सूं वहीर व्हिया । चिड़ा चिड़ी सूं विदा लेतां वांरी आंख्यां जळजळी व्हैगी ।

आठूं भाई साच अर न्याव री संपत साथै लेयनै दूजा राज री सींव में वहीर व्हिया । सांझ रौ तिग्गूं-मिग्गूं उजास हौ । पंखेरू चुग्गौ पांणी करनै आप आपरै माळै हरख सूं चैंचाट करता पाछा वळता हा । मूंन तपसी ज्यूं वन रा रूंख जांणै सिझ्या वांधता व्है । अंधारौ चोर री गळाई लुकतौ छिपतौ जमीं माथै घेरौ घालण सारू चापळतौ हौ । अर तीतर रखवाळां री भांत बोल बोलनै सावचेती दरसावता जांणै आपरौ फरज निभावता हा । हाडां री जांन क्रांव क्रांव करती पांखां पसारती वन रै सरणै इण भांत उडती जावती जांणै वांरै लारै कोई वार आवती व्है ।

इत्ता में सबसूं मोटी राजकंवर सूंन तोड़नै दोनूं छोटकिया राजकंवरां सांम्ही देखनै कह्यौ—थें दोनूं हाल नैन्हा हौ । फोड़ा विखा नै थांरौ कंवळौ डील झेल नीं सकै । थांनै नांनेरै सावळ पौंचायनै म्है पछै निरांत सूं इण लांबी चौड़ी दुनियां में रम जावां । थें म्हांरै साथै कसालौ काढ़ौला, घणा दुख पावौला । दो तीन साल नांनेरै रह्यां पछै म्हैं थांनै पाछा संभाळ लेवांला । म्हारौ कैणौ मांनौ तौ नांनेरै आरांम पावौला ।

छोटकियौ कंवर बीच में ई बोल्यौ—औ आपरौ बडपण अर माईत पणौ है । सौ बरसां पछै ई म्है तौ आप सूं सदा छोटा ई रैवांला । विखौ, फोड़ौ अर संकट अबै तौ साथै ई भुगतांला अर साथै ई टाळांला । आपसूं न्यारा होयनै म्हांनै किसौ अमर होवणौ है । अबै जीवांला तौ साथै अर मरांला

तौ साथै । आप म्हांरी अंगै ई चिंता छोड दौ । आपरै साथै ई म्हांरा सरव सुख-आणंद है ।

मोबी राजकंवर कह्यौ — मरती वेळा मां म्हनै थां दोनां री घणी घणी भुळावण दी ही । जिणसूं मां रा बोल म्हनै अबारूं याद आयग्या ।

छोटकियौ राजकंवर बोल्यौ — नवी मां नै अपां सगी मां सूं ई सवाय में जांणी, कदैई उणरी बात नीं टाळी । उणरी खुद री छींयां रै प्रमांण हरदम हाजरी में ऊभा रह्या, उणरी सांनी माथै प्रांण देवता, तौ ई वा अपां सूं औ कांई बदळौ लियौ । अपां उणरौ कांई बिगाड़ियौ । सगी मां रौ कह्यौ टाळ देत्रता, उणनै केई वार ओड़ौ देवता, पण नवी मां वास्तै तौ सपना में दरसायोड़ी बात ई नीं टाळी । आपरा कपटजाळ सूं सगळी रैयत नै वा दुखी करदी, राजा नै काठौ भरमाय लियौ । इणसूं उणरै कांई हाथ आयौ ! फगत बदनांमी रौ ठीकरौ अर रैयत री रीस ।

मोबी राजकंवर लाड सूं समझावतां कह्यौ — माईतां रा कांम में खोड़ अर चूक काढ़णौ टाबरां रौ कांम नीं है । अपांनै तौ हमेसां औ ई सोचतौ रैवणौ चाहीजै के वांरा सूं कदैई ऊंधौ कांम नीं व्है ।

सगळा भाई इण गत लारली बातां रौ सूत उळझावता सुळझावता जावता हा के मारग में वांनै अेक जंगी बड़ला रै हेटै उदई रौ धड़बौ निगै आयौ । मथारै थोड़ी सी जटा बारै निकळियोड़ी ही । वै सगळा उणी सांयत समझग्या के कोई तपसी तापतौ हौ, वौ आपरै ध्यांन में मगन हौ के उणनै

उदई घेर लियौ । तपसी तौ फगत आपरा तप में डूबोड़ौ हौ, उणनै काया रौ कीं चेतौ नीं रह्यौ । सगळा डील माथै चारूं कांनी उदई लागगी । तपसी तौ हिलियौ नीं कोई डुलियौ ।

राजकंवर होळै होळै उदई नै खेरी । नाडी रौ निरमळ पांणी लायनै तपसी री काया नै संपाड़ौ करायौ । सात दिन तक निरणा तिरसा रैयनै वै तपसी रा पग दबावता रह्या ।

आठवैं दिन तपसी पलकां उघाड़ी । जठीनै जोयौ उठीनै सूखा ब्रच्छ हरा व्हैगा । नवी कूंपळा, नवा फूल अर नवा फळां सूं सगळा रूंख अर बांटका संवरग्या । सूखा झरणा खळ खळ नीर रळकावता बहण लागा । बरसां सूं रड़वड़ती हाडकियां माथै निजर पड़तां ई वै पूरण देह रै साथै जीवती जागती व्हैगी । कठीनै ई हाडकां रा हाथी बणग्या, कठीनै कड़कोड़ां रा ऊंट बणग्या, कठीनै हंस अर बुगला बणग्या । देखतां-देखतां केई अजगर, केई सांप, केई सूवा, तीतर, कबूड़ा, कागला, गिरजड़ा, चीता, सूअर, सिंघ, स्याळ, छाळीनारिया, बळद, गायां अर घोड़ा इत्याद भांत-भांत रै जिनावरां रौ मेळौ मचग्यौ । हाथी तपसी नै सूंड सूं प्रमांण करचौ, नवौ जीव बावड़िया सिंघ तपसी रै पगां लुट्या । सरप अर अजगर तपसी नै सीस निंवाया । तपसी री दीठ रौ औ अजब नजारौ राजकंवरां नै सांप्रत दीसियौ । राजकंवर तौ इण नजारा सूं चकन-बकन व्हैगा ।

तपसी रौ आदेस

आठूं राजकंवर हाथ जोड़्यां तपसी रै सांम्ही ऊभा हा । तपसी तौ मूंडौ देखतां ई वांरी सगळी बातां समझग्यौ । आंख्यां रातीचोळ करतौ बोल्यौ — उण रांणी री कूख सूं जायोड़ां री नवी रांणी आ दुरगत करी ! अर मूढ़ राजा उणरी बातां में बिलमा-यग्यौ । थां सरीखा दूध रै धोयौड़ा राजकंवर आज औ विखौ भुगतै ! थें कैवौ तौ अबारूं वांनै अेक दीठ में भसम करदूं ।

तपसी फेर ई कीं आगै कैवतौ हौ के आठूं राजकंवर उणरै पगां पड़ता बोल्या — बापजी, उण पैला तौ आप म्हांनै भसम करदौ । बेटां रै कारण माईत भसम व्है, आ बात सुणतां ई म्हांरौ तौ मरण व्है । माईतां रौ हुकम ई म्हांरै वास्तै राज अर सुख है ।

राजकंवरां री बात सुणियां तपसी अणूंतौ राजी व्हियौ । वांरै माथै हाथ फेरतां कह्यौ — बारै बरसां तांई म्हैं इण विध तपियौ । डील माथै सगळै उदई जमगी जका रौ ई म्हनै चेतौ नीं रह्यौ । बिना खायां, पीयां अर सोयां म्हैं भगवांन नै सिंवरतौ रह्यौ तौ ई बारै बरसां में म्हैं म्हारी रीस नै काबू नीं कर सक्यौ अर राजा रै घरै जलम लेयनै ई थें रीस माथै फतै करली; थें तौ लारला जलम रा कोई लांठा रिसी-मुनि दीसौ । आज सूं म्हैं थांनै म्हारा गरू थरपूं ।

राजकंवर फेर तपसी रै पगां में माथौ निवायनै कैवण लागा — आपरा स्री मुख सूं आप औ कांई फरमावौ । कीड़ियां

कदै ई मणां बंद बोझ झेल सकै । म्है तौ आपरै पगां री धूळ हां । आप जैड़ा गरू री सेवा रौ मौकौ हाथ लागै तौ जलम सुधरै। आपरी सेवा माथै दुनियां रा राज नै वार फेंकां। हाथ जोड़नै आपनै म्हांरी आ इज अरदास है के म्हां जड़मतियां रा मन में ग्यांन री जोत जगावौ । म्है आज सूं आठूं भाई आपरै सरणै हां ।

तपसी उदार मन सूं कैवण लागौ — कठै ई भगवांन म्हारै तप रा वरदांन में थांनै ई तौ नीं भेज्या ? थांरै हाथ रा परस सूं म्हारी भगती सुफळ व्ही । किणी कुमांणां सूं पांनौ पड़ जातौ तौ सगळौ तप अकारथ जावतौ । भला, नेक अर साळस मिनखां सारू सगळी दुनियां घर रै उनमांन है । थांरौ तौ जावौ उठै ई घर है, पछै कैड़ौ देस निकाळौ ! थांरै वास्तै नीं तौ कोई देस है अर नीं कोई परदेस ! थें कैवौ तौ थांरै वास्तै अठै ई सोना रा आठ मैल चुणाय दूं । हीरा-मोत्यां सूं भंवारा भराय दूं, फगत म्हारै ध्यांन करनै चींतण री जेज है । ठौड़ ठौड़ क्यूं भटकता फिरौ ।

राजकंवर कह्यौ — आप तौ म्हांरा गरू हौ, आपरै बोलां नै म्है लोप नीं सकां। मिनख रौ सुख हीरा-मोती अर सोना में नीं बसै । दुख, विखौ, फोड़ा अर कसाला बिना मिनख री कंचन-काया निखरै कोनीं । मिनख रौ सुख नित रा जूंझण में रळियोड़ौ । बिना कळाप रै सोना रौ भाखर हाथ लागै तौ इण में कांई सुख ! जे हीरा-मोत्यां रौ नांव ई सुख है तौ पछै मोत्यां रा खजांना भेळौ संखियौ खायनै मरजांणौ ई सिरै । मरयां मिनख रा कांम धंधा बंद व्है ! अर जे कांम, धंधा

अर कळाप नीं करणा रौ नांव ई सुख है तौ इणरौ पूरण आणंद मरणा सूं तुरत मिळै । जकौ मिनख जीवतां ईं कांम करणौ बंद करनै मौज मनावणी चावै, वौ तौ मरचा समांन । कांम में हरदम थुड़णा रौ नांव ई जीवण है ।

तपसी मुळकनै कह्यौ — बारै बरसां लग तपियौ तौ म्हैं, अर उणरौ ग्यांन थांरै हाथै लागौ । म्हनै बातां करणी चाहीजै जकौ थें करौ । म्हैं तौ हाल निपट ठोट रैगौ । फगत करा-मातां रा हुनर हाथ लागा । साचैलौ ग्यांन नीं मिळियौ । चावूं जकी चावनां पूरण कर सकूं । वेमाता रा लिखिया लेख मेट सकूं । अणहोणी बातां कर सकूं । थांरै अेक बरस वास्तै अणूंतौ विखौ लिख्योड़ौ है । थैं चावौ तौ सगळौ विखौ मेट दूं अर चकवौ राज सूंप दूं, नींतर करमां रै हिसाब सूं थांमें पूरा फोड़ा पड़सी । म्हैं थांरी सेवा बंदगी सूं घणौ राजी हूं ।

मोटोड़ौ राजकंवर कह्यौ — म्है किणी लाळसा सूं आपरी सेवा नीं करी । म्है तौ फगत म्हांरौ फरज निभायौ । आप तौ म्हांनै फगत औ आसीरवाद दौ के म्है सुपंथ चालता नीं डिगां नीं डरां, साच अर धरम माथै हमेसां डिढ़ रैवां, कूड़, अधरम सूं मरचां ईं पल्लौ नीं भेटां, लोभ अर मद रै गळाकर नीं नीसरां, कर सकां तौ किणी री भलाई इज करां । किणी नै संतावणा बिचै तौ मरणौ सावळ ।

तपसी कह्यौ — पूरौ पतियारौ अर विस्वास व्हैतां थकां ई म्हैं थांरी सावळ परख करणी चावतौ हौ । सोना में खोट व्है सकै पण थांरै मिनखीचारा में कीं खांमी कोनीं । म्हनै तौ

इचरज व्है के राजघरांणा में पळियोड़ा कंवरां रा मन में अै विचार कठा सूं आया । औ सगळौ पुरांणी रांणी री कूख रौ परताप । थांनै कीं आदेस करण रौ म्हैं गरब नीं करूं, पण तौ ई मौका माथै मन में कमजोरी नीं वापर जावै, म्हारी बात याद राखजौ । दुनियां में आणंद फगत साच अर सुपंथ में ई है । म्हैं तौ बारै बरसां रा तप में आ इज बात जांणी हूं । थें बिना भगती अर तप रै ई म्हारा सूं वत्ती बातां जांणौ । म्हैं जांण्यां पछै आंरै माथै अमल करूंला पण थें जांणौ ई हौ अर वांरै माथै अमल ई करौ हौ । पण मन री गत हमेसा सरीसी नीं रैवै । उणरी चंचळता अर लाळसा सूं आपौ डिगमिगै । उण वगत म्हारी याद राखजौ के उदई खायोड़ौ अेक तपसी, समाध उघड़ियां कीं सीख री बातां बताई ही ।

आठूं राजकंवर हाथ जोड़ता थका कह्यौ — आपरौ आदेस म्है हमेसां याद राखांला । सुतोड़ा, सपना में ई नीं पांतरां । म्है हाल अबूझ बाळक हां, आप जैड़ा गुरुवां सूं म्हांनै घणी घणी बातां सीखणी है ।

इत्ती वंतळ करयां तपसी आळस मोड़तौ ऊभौ व्हियौ । दो अेक उबासियां खायां पछै बोल्यौ — बेटां, बारै बरसां सूं म्हैं भूखौ अर तिरसौ हूं । थें म्हनै आज धापनै सिंघणियां रौ दूध पावौ ।

सगळा राजकंवर हुकम मिळतां ई सिंघणियां री सोय में वहीर व्हिया । अर थोड़ी ताळ में आठूं ई भाई आठ सिंघ-णियां लायनै तपसी रै सांम्ही हाजर करदी । तपसी धापनै

दूध पोयौ। थोड़ी ताळ तांई सोच विचार करनै कैवण लागौ— बारै बरसां लग इण दुनियां सूं अळगौ रह्यां पछै आ दुनियां घणी सुहावणी लागै। दुनियां रै जंजाळ सूं मुगती पावण सारू बारै बरस तप करचौ, पण इण उपरांत आ दुनियां तौ सांम्ही धणौ मन मोयौ। म्हनै तौ इण अखंड मूंन समाध में फगत आ अेक बात समझ में आई के जप-तप, ध्यांन, भगती इत्याद अै सगळी बातां इण दुनियां रै लारै ई आछी लागै। जीवणा सूं वत्तौ सुख अर आणंद इण संसार में दूजौ कीं नीं। कुत्ता री जूंण जीवणौ ई मरियां पछै सुरग अर देवलोक रा आणंद सूं घणौ वत्तौ। मिनख रा जीवणा में ई सगळा धरम-करम भगती अर ग्यांन है। जीवणा जीवणा में फरक व्है सकै, आ बात म्हैं मांनूं। सगळा संसार रै ग्यांन री सार बात म्हनै तौ आ इज निगै आई के कीकर ई करनै मिनख रौ जीवणौ सुधरै। सुरग, नरक, भगवांन, देवी-देवता, धरम-करम, पाप अर पुन्न सगळा इण दुनियां में ई है। मिनख री करामातां रौ छेह नीं है। वौ चावै तौ गिगन में अेक सूरज री ठौड़ दस सूरज बणा सकै, अेक चांद री ठौड़ दस चांद बणा सकै, चावै तौ अेक पलक में दुनियां नै मार न्हाकै अर चावै तौ सगळा संसार नै अमर बणाय देवै। मिनख ई इण दुनियां रौ बिरमा, विस्णूं अर महेस है। वौ ई इण दुनियां रौ परमेसर है अर वौ ई इणरौ विणास करण वाळौ राकस है। बारै बरसां सूं म्हैं जिण जीव री मुगती करणी चावतौ, म्हारै फगत वौ इज हाथ लागौ। आ सगळी माया अर औ सगळौ परताप इण जीव रौ ई है।

थोड़ी ताळ रुकनै तपसी फेर कैवण लागौ — थां लोगां नै म्हारी आ दूजी सीख फेर है के थें हमेसां आप जैड़ी पराय गिणजौ । थांरा जीव री खातर किणी दूजा रा जीव नै मत संताजौ । जिण बात सूं थांरा जीव नै दुख उपजै वौ दुख कदैई किणी नै मत दीजौ । जका हित्यारा जीवां नै संतावै वांरा सूं हमेसां सांमनौ करजौ । तीजी बात थें खुद भली भांत जांणौ हौ तौ ई थांनै बतावूं । थें कह्यौ जकी बात सोळै आंना साच है के इण दुनियां में कळाप करणा अर दुख उठावणा रौ नांव ई सुख है । जूंझणौ मिटग्यौ उण दिन समझलौ के जीवणौ ई मिटग्यौ । थें आज सूं ई न्यारा न्यारा फंट जावौ । न्यारा न्यारा जूंझौ अर न्यारा न्यारा ई कळाप करौ । पूरौ अेक बरस बीत्यां म्हारै कनै आज रै दिन पाछा इणी ठौड़ आजौ । आठूं दिसावां में मन करै उठीनै जावौ परा । सब आप आपरै आपै जूंझौ । किणी रा भरोसा माथै जीवण बितावणौ निबळापणौ है ।

सबसूं छोटकियौ राजकंवर कह्यौ — आप तौ सांप्रत म्हारै मन री बात बांचली । म्हें खुद अबारूं आपनै आ ई अरदास करणी चावतौ ।

मोटोड़ौ राजकंवर कह्यौ — म्हांनै सोच नांव छोटोड़ा भाइयां रौ ई हौ । मां आंरी घणी घणी भुळावण दी ही । पण जद अै आपरै आपै जूंझण सारू तैयार है तौ म्हांनै इणरौ घणौ मोद । आपरा सगळा ई आदेस म्हांरी सिर आंख्यां माथै ।

पछै उणी सायत आठूं ई राजकंवर तपसी रा पगां में

माथौ निवायनै न्यारा न्यारा, आठूं दिसावां में वहीर व्हैगा । बरस उपरांत पाछा इणी दिन उठै आवण रौ कौल करग्या ।

कोई बीसेक पावंडा वहीर व्हियां पछै सगळा राजकंवर अेकण सागै लारै मुड़नै फेर तपसी नै प्रणांम करण सारू जोयौ तौ वांनै उठै कीं निगै नीं आयौ । तपसी तौ जांणै कठै ई तुरत लोप व्हैगौ व्है । विचारण लागा — आ कुण कांई माया रची ?

पैलौ राजकंवर

पैलौ राजकंवर झळ दिसा [उगूण] सांम्ही वहीर व्हियौ, दूजौ परियांण कूंट सांम्ही, तीजौ लंकावू दिसा सांम्ही, चौथौ निरांत कूंट सांम्ही, पांचवौ आथूण दिसा सांम्ही, छठौ पंचाद कूंट सांम्ही, सातवौ धुरावू दिसा सांम्ही अर आठवौ राजकंवर लांणी कूंट सांम्ही वहीर व्हियौ। तपसी रै लोप व्हियां पछै वै सगळा भाई अेक दूजा रै सांम्ही अठी-उठी देखण लागा। जळजळी आंख्यां अर होठां माथै मुळक रै सागै वै अेक दूजा सूं बिछड़्या। थोड़ी ताळ पछै सगळा ई आंख्यां री दीठ सूं अंगै ई अदीठ व्हैगा। असेंधा अर अछीही पंथ माथै वै आप आपरै आपै चालण ढूका। इत्ता बरसां में ईं वै पैली वार न्यारा व्हिया हा। भाइयां रै विछोह अर मां रै झुरावा नै चींत्यां सगळा ई पंथ चालता ठळाक ठळाक रोवण लागा। रोवता जावता अर पंथ चालता जावता। उण वगत रोवणौ अर चालणौ दोनूं ईं जरूरी हा। जे अैड़ी वगत ई आंख्यां नीं बरसै तौ पछै मिनख रै मन रौ औ अदीठ अर अथाग समंदर किण दिन वास्तै !

सगळा भाई आप आपरै दुख अर विखा रौ राव-रत्ती ध्यांन नीं करनै अेक दूजा री कुसळ-खेम मनावता, आगै बधता जावता। माथै अछेही आभा में अेकलौ सूरज दीखतौ हौ अर धरती ऊपरां पगां हेटै रा अनंत मारग माथै अेकला राजकंवर आप आपरौ पेंडौ पार करता हा। झरणां रौ निरमळ पांणी, कंदमूळ अर बनफळां रौ अैड़ौ अकथ स्वाद व्हिया करै,

इण पैला वांनै सपना में ई ओ चेतौ नीं हौ । वै सोचण लागा के भाटा डग्गर खिड़कनै मिनख क्यूं तौ परकोटा चुणावै, क्यूं छातां बिछावै, क्यूं आंगणा धड़ावै । परकोटा सूं अनंत दिसावां बंधै, वांरौ अंत आवै, छातां बिछावणा सूं अछेही गिगन रौ छेह आवै, झिलमिलता अणगिण तारा अर रूड़ौ चांद लोपीजै अर आंगणौ धड़णा सूं अगम धरती रा धड़बा खांचीजै, कुदरत सूं नातौ तूटै, बिरखा, हवा अर तावड़िया रौ तोटौ भुगतणौ पड़ै अर पंछी-जिनावरां सूं मोह-परीत तूटै ।

वां आठूं भाइयां री काया तौ आठ ही । पण सगळां रौ जीव तौ जांणै अेक इज हौ । अळगा अळगा पंथ चालता थका वै सगळा अेक ई भांत री बातां सोचता-विचारता जावता । पण पैलौ राजकंवर सबसूं लांठौ हौ, इण कारण उणनै सातूं भाइयां रौ अणूंतौ ई सोच हौ । वौ चारूं कांनी निजर घुमाय अर माथौ निंवायनै हाथ जोड़तौ थकौ कैवण लागौ — इण धरती रा सगळा जीव जिनावर, पदारथ, रूंख, बनराय, पवन, नखत, नद, नाडियां, झरणा अर समंदरां नै म्हारी आ इज वीणती है के म्हारा सात्यूं भाई जठै-तठै ई थांरा सूं भेंटै वांरी सहाय करजौ, वांनै फगत सुख अर आणंद ही दीजौ । दुख, जोखौ उठावणियौ म्हैं थां सगळां वास्तै उबरतौ पड़्यौ हूं । म्हारै थकां थें वांनै किणी भांत रा फोड़ा मती भुगताजौ । भगवांन अर कुदरत सूं ई म्हनै फगत आ इज लाळसा है । म्हारै मन अर म्हारी काया रौ तौ म्हनै सोळै आंना भरोसौ है के म्हारा हाथ सूं किणी जीव नै नीं कळपावूंला । कोई किणी नै अणूंतौ संतावै तौ उणनै बगसणौ अधरम ।

यूं सोचतां विचारतां दिन रै वधांण वौ मारग हालतौ ढबग्यौ। कंदमूळ खायनै झरणा रौ मीठौ पांणो पीयौ अर मारग छोडनै निसंक सूयग्यौ । थोड़ी ताळ ई में वौ मीठी ऊंघ में गैळीजग्यौ अर घोर खांचण लागौ ।

अगाढ़ ऊंघ में सूतौ सूतौ ई वौ फेर विचरण लागौ । धूंम तावड़ै भटकतां भटकतां उणरा कंठ सूखण लागा । अबै तौ पांणी हाथ नीं आयां, मरण में कीं कसर बाकी नीं। कंठां में जांणै तीखी सूळां खुबण लागी । कंठां री नळी में बळत रै कारण डीक ऊठण लागी। आंख्यां आडा खीरा जगण लागा। नाड़ियां वाढ़नै लोई पीवणा सूं ई तिस बुझै तौ लोई पीणौ पड़ैला । डील री सगळी नाड़ियां जांणै पींचीजण लागी। थाबा खावतां खावतां वौ अणचींत्यौ अेक बावड़ी रै पाखती आयौ । तांगियां खावतौ वौ पांणी रै अड़ौअड़ पूगौ । भंवळ खायनै छपाक देती रौ वौ पांणी रै मांय पड़ग्यौ। पड़तां ई वौ तौ मूंडौ फाड़नै गळळ गळळ पांणी खांचण ढूकौ । पलक झपतां ई बावड़ी नै ठाली-ठळाक कर न्हाकी । तिस तौ पूरी नीं बुझी, पण उणनै खासौ भलौ चेतौ बावड़ियौ । इचरज सूं अठी उठी जोयनै पगोतियां पगोतियां नीचै उतरण लागौ ।

हालतां हालतां थोड़ी ताळ उपरांत उणनै अेक अनोखौ ई बाग निगै आयौ । अैड़ौ बाग आज पैली नीं तौ वौ कांनां सुण्यौ अर नीं निजरां देख्यौ । चांदी रा गोड, सोना री डाळियां, सोना रा ई पांन अर मोत्यां रा झूमका । रूंख रूंख माथै सोना रा ई हंसला बैठा मोती चुगै। पाछी सोना मोत्यां री बींटां करै । चिड़ी, कमेड़ी, सूवा, मोर इत्याद सरब पंखेरू

सोना रा । उडै, किलोळां करै अर मोती चुगै । अेक लांठा रूंख रै तळै अपछरावां रौ भूलरौ निरत करणा में मगन हो । जाडा डाळा रै माथै हींडौ — हीरा, मोती जड़्यां सोना रा बंधणा सूं बंधियोड़ौ । माथै अपछरावां री रूपाळी राजकंवरी बैठी मस्ताई सूं हींडती ही । राजकंवर हळफळियौ होयनै खाथौ खाथौ चालण ढूकौ । पाखती आयनै राजकंवरी रै उणियारा सांम्ही भाळियौ — जांणै सोळै सूरज भळकिया । हींडती राजकंवरी बीजळियां रै उनमांन पळाक पळाक करती ही । चौनिजरियां व्हैतां ई राजकंवरी मुळकी । जांणै अणगिण तारा चिमकिया । राजकंवर तौ फेर भंवळ खायनै तड़ाच देती रौ हेटै गुड़ग्यौ ।

गुड़तां ई राजकंवर री आंख खुली — कठै राजकंवरी, कठै अपछरावां, कठै सोना रा रूंख, कठै सोना रा पंखेरू, कठै मोत्यां रा भूमका अर कठै बावड़ी । फगत आभा में पूनम रौ चांद मगसा तारां रै बिचाळै मुळकतौ हो । जांणै अपछरावां रा भूलरा बिचाळै वा राजकंवरी मुळकी । अैड़ौ सपनौ तौ आज पैली कदैई नीं आयौ । राजकंवर भिभकनै ऊभौ व्हियौ । सून्याड़ निंदरोही में हवा रौ खेंखाड़ बाजतौ हो । थोड़ी ताळ घूम-घांमनै राजकंवर पाछौ सूयग्यौ । सूवतां ई पाछौ वौ इज सपनौ — वा इज आकरी तिस, वा इज बावड़ी, उणी भांत भंवळ खायनै पांणी में पड़णौ, वौ इज सोना रौ बाग, वै इज सोना रा रूंखड़ा, सागै ई पंखेरू, वौ इज अपछरावां रौ भूलरौ, हींडा हींडती वा इज राजकंवरी अर उणी भांत उणरौ मुळकणौ । वौ फेर तिवाळौ

खायनै हेटै गुड़ियौ । पाछी आंख खुली तौ भिभकनै देख्यौ के रात ढळनै पौ फाटण वाळो है । पंखेरू चारूं दिसावां में चैचाट करै । वौ आळस मरोड़नै ऊभौ व्हियौ । ऊगता सूरज नै देख्यां उगनै अैड़ौ लखायौ जांणै बाग वाळी राज-कंवरी घूंघटौ आगौ लियौ । मन में सोचण लागौ के घड़ी घड़ी सपना रौ औ कांई संजोग बणियौ ।

नितनेम सूं निव्रत होयनै, सिनांन-संपाड़ौ करचां वौ कंदमूळां रौ सिरावण करचौ अर उणीज मारग आगै वधियौ । जावतां जावतां थोड़ी ताळ पछै ई उणनै मारग रै जीवणी बाज़ू अेक लांठी घेर-घुमेर पींपळी रै हेटै बावड़ी निगै आई । दिन मथारै आयौ हौ । बावड़ी नै देखतां ई उणनै सपना वाळी तिरस याद आई अर मारग सूं टळ परौ नै बावड़ो सांम्ही चालण ढूकौ । बावड़ी री पाज माथै ऊभनै वौ पांणी सांम्ही भाळियौ तौ उणरी आंख्यां सांम्ही रातवाळौ सपनौ सुभट उघड़ियौ । मन में सोचण लागौ — कांई आ सपना वाळी बावड़ी है ! पछै आपरी कालाई माथै विचार करचौ अर हंस्यौ । भलां आ बात कीकर व्है सकै ! सपना री बात सांप्रत कीकर देठाळौ दे सकै ! मन में भरम उप-जियौ । पांणी पीयनै आगै चालणौ सावळ है ।

बावड़ी रै पांणी सूं चारेक पगोतिया आंतरै उणनै अेक नवी ई बात निगै आई । अेक काळिंदर मूंडौ फाड़चां अेक मींडका रौ केड़ौ करै । मींडकौ डाफाचूक व्हियोड़ौ अठी-उठी फदाकां भरतौ सांम्ही पगोतियां चढ़तौ हौ अर सांप सळवळ दौड़तौ, फूंफाड़ा करतौ उण मींडका नै खावण सारू

लारै लारै दौड़तौ हौ । यूं आपरी आंख्यां किणी नै मरतौ अर किणी नै मारतौ वौ कीकर देख सकै । पण कीं जीवां नै तौ भगवांन इण खातर ई बणाया है के वै दूजा जीवां नै भखै ! दूजा जीवां नै मारचां बिना वै जीवता ई नीं रै सकै । पछै वांरौ कसूर ! काळिंदर रै खायां मींडकौ मरै अर काळिंदर किणी जीव नै नीं खावै तौ वौ मरै । पछै औ संजोग कीकर टळै । मींडका नै खावण रा कसूर माथै काळिंदर नै मारणौ ई सावळ कोनीं ।

राजकंवर अेक पलक में इण बात माथै विचार कर लियौ के मींडका नै कीकर बचावै अर कीकर सांप रौ कांम सारै । अर आ बात विचारतां ईं वौ अणजेज कमर सूं बंधियोड़ी कटार काढ़ी । भच देणी आपरी पींडी रौ मांस तोड़नै कालिंदर रै सांम्ही वगाय दियौ । मींडका रै साव माथै आयनै वौ उणनै खावण सारू बाकौ फाड़चौ इज हौ के उणरा मूंडा सांम्ही मांस रौ लोथौ आयनै पड़चौ । वौ फट अेक ई गपळका में राजकंवर री पींडी रौ मांस खायग्यौ । पण तौ ई वौ उणरौ केड़ौ नीं छोड्यौ । लारै रौ लारै पाछौ दौड़चौ । राजकंवर अबकी भळै लोथौ फेंक्यौ । काळिंदर तौ अेक ई गपळका में दूजोड़ौ लोथौ ई खायग्यौ । तद राजकंवर तुरत अेक नवौ उपाव विचारचौ । वौ मींडका रौ लारौ करता काळिंदर रै आडौ ऊभग्यौ । कह्यौ — म्हैं लोथा काटण सूं डरपूं कोनीं । पण अेकर ई बात सावळ सज नीं आई तौ मींडका री मौत किणी भाव टळै नीं । म्हारो हाथ जोड़नै फगत आ इज अरदास है के आप म्हारी

बोटी बोटी खाय सकौ, म्हैं नाक में सळ नीं घालूं । पण खुद री निजरां देख्यां पछै म्हैं कीकर मींडका नै मरतौ देख सकूं ।

राजकंवर रौ इत्तौ कैणौ व्हियौ नै मींडकौ तौ आभा री बीज रै उनमांन पळका करती अपछरा रौ रूप धारण कर लियौ अर काळिंदर सेसनाग रा रूप में परगट व्हियौ । आ तौ उण सपना वाळा बाग में हींडती अपछरा ! रांम जांणै आ कांई माया है, कांई चाळौ है !

राजकंवर आपरी पींडी सांम्ही जोयौ तौ उठै अेक ई बोटी कटचोड़ी नीं दीसी । नीं लोई रिसतौ निगै आयौ अर नीं किणी घाव रौ दरद लखायौ । वौ किण माया नगरी में फंसग्यौ ।

राजकंवर नै इण भांत विचार करतां देख सेसनाग कह्यौ — म्हैं सेसनाग रौ अवतार हूं अर आ म्हारी बेटी । ठेट पंयाळां म्हारौ राज है । बरसां हेरचौ तौ ई इणरै जोग म्हनै वर नीं मिळचौ । म्हारी बेटी रै दो बातां रौ प्रण हौ — उण में अेक तौ पूरौ व्हियौ । मींडका अर सांप दोनां रौ कांम सारण वाळा नै वा वरैला । अर दूजौ औ प्रण के सपना में सखियां बिचाळै जकौ उणनै हींडती देखनै, उणरी मुळक माथै भंवळ खायनै हेटै पड़ै, उणनै वा वरैला ।

सपना वाळी बात सुणनै राजकंवर मांडनै सगळी बात बताई । बतातां ई सेसनाग नै विस्वास व्हैगौ । राजकंवरी रा दोनूं प्रण पूरा व्हिया । वौ कैवण लागौ — सेवट, म्हैं बाप बेटी दोनूं हतास व्हैगा हा के इण दुनियां में इण जोग वर

मिळणौ दूभर है । सांप मींडका नै खावै तौ किण रौ कांई लियौ । देख्यां लोगां रै तमासौ बणै । किणी नै मींडका माथै दया आवै तौ वौ सांप नै मारण री चेस्टा करै । अेक री रिछ्या खातर दूजा नै मारणौ पड़ै । पण आपरै डील रौ मांस काटनै सांप रै सांम्ही फेंकणौ अर मींडका नै बचावणौ आ बिरली बात है । म्हैं तौ बेटी नै घणी ई समझाई के तीनूं लोकां में थारै प्रण रै उनमांन वर मिळणौ दूभर है, इण प्रण रै आगै तौ सगळी ऊमर थूं कंवारी रैवैला । तद वा कह्यौ — पछै बैड़ा ब्याव में म्हनै काढ़णौ ई कांई । ढांढ़ा सूं ब्याव करचौ अर नीं करचौ ! म्हैं तौ म्हारौ प्रण निभावूंला । अर वा आपरा प्रण रौ साच राख्यौ तौ उणरी मंसा पूरण व्ही । आज म्हारी खुसी रौ पार नीं ।

राजकंवरी अपूठी ऊभी ही । कड़ियां रळकंता सोना रा केस — जांणै सूरज री किरणां रौ झूमकौ बिखरचोड़ौ । राजकंवर वां किरणां रा पळका नै आंख्यां सूं पीवतौ हौ के सेसनाग कह्यौ — इण बावड़ी रै तळै पंयाळ में म्हारौ राज है । म्है दोनूं तौ पांणी रै मांयकर ठेट पार व्है सकां । म्है पांणी में सुण सकां, देख सकां अर सूखा ई रै सकां । पण आप पांणी रै मांयकर पार नीं व्है सकौ, इण खातर आपनै आ मिण देवूं । इण मिण रा जोर सूं पांणी मतै ई आपनै मारग देवैला । म्है पांणी में पग धरतां ई लोप व्है जावांला । अेक पलक में म्हांरै राज पूग जावांला । अर आप आ मिण हाथ में लेयनै लारै रा लारै आय जाजौ । डरै जैड़ी कीं

बात नीं । बाकी सगळी बातां म्हारा पंयाळ-राज में पूग्यां व्हैला ।

राजकंवरी पांणी में पग धरचां पैली अेकर मुड़नै लारै जोयौ । मुळकी, अर पांणी में लोप व्हैगी । राजकंवर तौ जांण्यौ के हाल औ सपनौ ई है । वौ तौ सपना रै भरोसै अजेज पांणी में पग धरचौ । पांणी दो फाड़ा में फाटतौ ई गियौ अर राजकंवर आगै बधतौ गियौ । राजकंवर रै आगै पग धरतां ई पांणी लारै पाछौ मिळतौ जावतौ । पांणी रै मांय राज-कंवर कित्तौ हाल्यौ, उणरौ उणनै कीं चेतौ नीं रह्यौ । अेक पलक हाल्यौ के अेक जुग हाल्यौ, कीं ठा पड़ी नीं । सात पांणी री, सात हवा री अर सात उजास री पोळां पार करचां सेवट पंयाळ-लोक आयौ ई ।

सात चांदी री, सात सोना री अर सात हीरा-मोत्यां री पोळां रै पछै राजकंवर नै सपना वाळौ बाग परतख आपरी निजरां दीख्यौ । सगळी बातां सपना रै हूबौहूब ही । वौ तौ चकन-बकन व्हियोड़ौ सगळा बाग में अठी-उठी फिरण लागौ । फिरतां फिरतां उणनै अपछरावां रौ सागै ई भूलरौ निरत करतौ निगै आयौ । वौ खाथौ खाथौ उठीनै चालण लागौ । सपना वाळी राजकंवरी साचांणी आपरी सखियां रै बिचाळै हींडती ही । चौनिजरियां व्हैतां ई राजकंवरी मुळकी । मुळ-कतां ई भंवळ खायनै वौ डिगण लागौ के वा फेर मुळकी, इण मुळक सूं राजकंवर आपरौ आपौ संभाळ लियौ । झण-झणातौ चेतौ वापरियौ । वौ पाछौ मुळकियौ । उणरै मुळ-कतां ई लाज रै कारण राजकंवरी रौ मूंडौ रातौ व्हैगौ । जांणै

सूरज रै आडौ रातौ बादळौ आयौ ।

राजकंवरी हींडा सूं नीचै उतरी तौ सगळी सखियां उठा सूं बोली बोली वहीर व्हैगी । पछै उण अजब-गजब रा बाग में फगत राजकंवर अर राजकंवरी ऊभा रह्या । थोड़ी ताळ पछै राजकंवरी नीची धूण करनै होळै सूं बोली — आपरै लोक री गळाई म्हांरै अठै ब्याव नीं मंड्या करै । आ मुळक ई ब्याव रौ सावौ, ब्याव रा फेरा अर ब्याव री चंवरी अर हथ-ळेवौ ! अठै मन रै मांनणा अर जचणा रौ नांव ई सगाई । अपांरै ब्याव रौ समचौ मिळतां ईं म्हारा जीसा अठै आवैला अर अपांनै राज री सगळी जिम्मेवारी संभळावैला ।

राजकंवरी रै मूंडा सूं आ बात निकळतां ईं सेसनाग अठीनै इज आवतौ निगै आयौ । पाखती आतां ईं दोनूं जणा वांनै माथौ निवाय नै प्रणांम करचौ । डोकरियौ आसीस दियां पछै कैवण लागौ — केई जुगां सूं इण लोक रौ राज करतां करतां म्हैं काठौ कायौ व्हैगौ हूं । बेटी रै जोग वर सारू म्हैं इण माया में भिल्यौ रह्यौ । अबै म्हैं म्रत-लौक रौ वास करणी चावूं । थें दोनूं औ राज संभाळौ । सौ बरसां पछै सेसनाग रै अवतार रौ रूप थामें परगट व्हैला । जितै तपणौ पड़ैला ।

थोड़ी ताळ ढबनै वौ फेर कैवण लागौ — म्रतलोक रौ आदमी वरणा सूं अबै राजकंवरी रै आगै पांणी मतै ई मारग नीं देवैला । इण मिण रा जोर सूं दोनां रै वास्तै पांणी फाटैला । सावळ संभाळनै राखजौ । गमाय दी तौ घणा घणा फोड़ा पड़ैला । पछै वौ राजकंवर रै सांम्ही देखनै कैवण

लागौ — आपरै जैड़ौ जोग राजा मिळणौ तीनूं लोकां में ईं दूभर । अबै म्हनै नीं तौ राज री चिंता है अर नीं बेटी री । फगत आतमा रौ कल्याण करणौ चावूं । म्हारै कल्यांण रै पैला थांनै अेक सीख री खास बात बतावणी चावूं के कोरा सुख, आणंद अर हरख रै कारण दोनूं लोक दिन दिन परवारता जावै । दुख, कळेस अर संताप बिना सुख अर आणंद रौ साचैलौ साव ई नीं आवै । दोनूं बातां रै मेळ सूं सगळी बातां सांतरी लागै । खोटा बिना खरा रौ मोल नीं, झूठ बिना साच री कीमत नीं, दुख बिना सुख री पूछ नीं । तोटा बिना नफा रौ मोद नीं । देवलोक अर पंयाळ-लोक में कीं कमी कोनीं, कीं दुख-संताप कोनीं अर कीं कळेस कोनीं । इण खातर दोनां रा वासिंदा निबळा, अैदी, माठा अर निकांमा व्हैगा । अबै सबसूं सिरै अर ऊंचौ म्रतलोक ई व्हैला । म्रत-लोक में बसियां ईं साच, आणंद अर सुख री खास पिछांण व्है । इकेवड़ी चीज री कठै ई कीमत नीं । दोवड़ा जोड़ा बिना सगळौ आणंद अकारथ है । खारौ-मीठौ, ठाडौ-ऊनौ विस-इमरत, धरम-अधरम, सुख-दुख, जलम-मरण, सवार-सिंझ्या, दिन-रात, सुद-वद इत्याद सगळी वातां जोड़ा सूं ईं आछी लागै ।

पछै वौ राजकंवर सांम्ही देखनै कह्यौ — आप म्रतलोक रा वासी हौ, इण खातर थोड़ा बरसां तांईं आपनै पंयाळ-लोक रौ वासौ आछौ लागैला । हीरा-मोती सोनौ-चांदी, देखनै आपरा मन में कदास हरख रौ पार नीं । पण म्हैं तौ धूळ, ठाडी अर भाटां सारू तरसूं । चिमटी धूळ वास्तै

म्हैं अणगिण हीरा-मोती देय सकूं । म्हैं म्रतलोक रा हीण सूं हीण मांणस नै देवराज इंदर सूं घणौ वत्तौ समझूं । म्हां दोनूं लोकां रा वासिंदा नै साच, दया, भलाई, मोह-परीत री कीं कीमत नीं । नीं तौ म्है आं सिरै बातां नै जांणा अर नीं समझां । म्है तौ सगळा मरद्या समांन हां । मरद्योड़ी ल्हास नै किणी बात रौ अनुभव व्है तौ म्हांनै व्है । जुगां सूं अखूट सुख अर आणंद में पळणा सूं म्है फगत सुख रै ई हेवा व्हैगा । आसीस देवती वगत सुख अर आणंद री बातां कैवणी पड़ै, पण म्हारा साचा मन री बात पूछौ तौ म्हैं म्हारी बेटी नै दुख-कळेस री आसीस देवणी चावूं । म्हैं तौ अबै म्रतलोक में जायनै पाछौ जुगां तक विखौ भुगतूं अर अणूंता फोड़ा झेलूं तौ म्हारौ जीव सुफळ व्है ।

पछै वौ आपरी बेटी रै सांम्ही देखनै कैवण लागौ— बाप रा मूंडा सूं बेटी वास्तै विखा रा बोल निकळै कोनीं । पण म्हारौ अंतस तौ फगत आ इज बात चावै के थूं अणमाप तोटौ, दुख, फोड़ा अर कळेस भुगतैला जद इज साचैला सुख रौ साव पिछांणैला । इण राजकंवर नै देख्यां पछै तौ म्हनै अठा रा आदमी, अठा री माया अर अठा रा सुख सगळा खावण नै दौड़ै । म्हारै वास्तै अबै अेक पलक ई अठै सांस लेवणौ दूभर व्हैगौ । है कोई दोनूं लोकां में अैड़ौ मिनख जकौ इण विध मींडका अर सांप रौ कांम अेक सरीखौ सार सकै । अपांरा देवता तौ राकसां सूं ई दोय तळ इदक है अर म्रत-लोक रा पापी, अधरमी अपांरै देवतावां सूं घणा सिरै अर पूजनीक है । पंयाळ-लोक रौ राजा म्हैं तौ आज इण राज-

कंवर सांम्ही पीढ़ियां रौ मंगतौ व्है ज्यूं म्हारा मन में लागूं। म्हारी बेटी, थारी लारला भौ री पुन्याई अणूंती सांतरी कर-चोड़ी, जिणसूं थनै औ वर मिळचौ। हमेसां याद राखजै के पंयाळ लोक रा राज सूं थारै वास्तै औ राजकंवर घणौ वत्तौ है। मिळण रै सुख री कीमत बिछोह व्हियां ईं ठा पड़ै। अबै तौ म्रतलोक में गियां ईं मुगती व्हैला। म्हैं जावूं। म्हैं थारा बिछोह नै सुख जांणूंला अर थूं म्हारा बिछोह नै सुख जांणजै।

जद पंयाळ-लोक रै लोगां नै आ ठा पड़ी के वांरौ राजा इण लोक रौ त्याग करनै म्रतलोक में जावणी चावै, तद वै अेक दूजा सूं सुरपुर करण लागा के राजा बावळौ व्हैगौ है। अैड़ौ सुख छोडनै वौ दुख, संताप अर अधरम अर अकरमां री लाय में सिळगण सारू मतै कूदै तौ औ परतख सुनपात ई है। लोगां घणा ई हाथ जोड़चा, पण सेसनाग तौ धत पकड़ली जकी पकड़ इज ली। सगळौ मांनखौ म्रतलोक री पोळ तक राजा नै छोडण सारू आयौ। राजकंवरी तौ अरड़ां अरड़ा रोवण ढूकी। आज जीवण में पैली वार उणनै ठा पड़ी के रोवणौ चीज कांईं व्है। सेसनाग री ई आंख्यां जळजळी व्ही।

राजकंवर अर राजकंवरी तौ ठेट बावड़ी तांईं साथै आया। बारै निकळतां ईं म्रतलोक हौ। बावड़ी रै बारै आतां ईं सेसनाग बावळौ सौ होयनै धूळ में अठी-उठी लुट्यौ, जांणै हील रौ रोगी लुटै। धूळ सूं सिनांन करतौ, माथा माथै घड़ी घड़ी धूळ न्हाकतौ कैवण लाग — अबै इण धूळ सूं म्हैं

धांन, रसाळां, सोनौ-चांदौ अर हीरा-मोती निपजावूंला । आपरा हाथ सूं अेक बूंटौ ई उगावण में कित्तौ सुख है । आखी ऊमर कुदरत रा अखूट कोठार नै बिना हाथ-पग हिलायां भोगणौ कित्तौ लांठौ अकरम है । हाथां निपजायनै भोगणौ ई तौ असली सुरग रौ राज है । पड़्यां भोगणौ तौ कीड़ा-मकोड़ां री जूंण भुगतणी है । मजूरी करनै भोगण रौ असली आणंद लेवणौ तौ सबसूं ऊंचौ सुख है ।

इण भांत माथा में धोबां धोबां धूळ उछाळतौ, हाथ-पग हिलावण रा सुख नै बिड़दावतौ वौ म्रतलोक में नाचतौ-कूदतौ रमग्यौ । दोनूं जणा बावड़ी री पाज माथै ऊभा रह्या अर सेसनाग दीठ री मार सूं मुळगौ ई अदीठ व्हैगौ । अळगी भांय फगत वांनै थोड़ी थोड़ी धूळ उडती अवस निगै आई । राजकंवरी राजकंवर रा गळा में हाथ घालनै डुसक्या भर भरनै घणी ई रोई । अर राजकंवर उणरा मोरां माथै हाथ फेरतौ उणनै थावस देतौ रह्यौ ।

पछै दोनूं जणा मिण रा जोर सूं बावड़ी रा पांणी में उतरया अर सूखा खणक आपरा राज में पूगग्या । पंयाळ-लोक में अस्टपौर बत्तीस घड़ी दिन रैवतौ, उठै रातां व्हैती ई नीं । उठै नीं रितुवां फिरती, नीं हवा बदळती । अेक सरीसा दिन अर अेक सरीसी मौसम । राजकंवर आं बातां रै हेवा नीं हौ, उणनै अणूंती अळखावण आवती । राजकंवर रा कैणा सूं अर उणरी अळखावण सूं राजकंवरी नै ई अट-पटाई लखावती । वै नित रात रा म्रतलोक में घूमण सारू आवता । चांदणी रातां बिचै वांनै अंधारी रातां घणी सुवावणी

लागती ।

राजकंवर नागकिन्या नै समझावतौ—नित सूरज रौ ऊगणौ, नित आथमणौ, चांद रौ घटणौ-बधणौ, अंधारी रातां में तारां रौ टिमटिमावणौ, रितुवां रौ बदळणौ, पांनां रौ झड़णौ, नवी कूंपळां रौ निकळणौ, कदेई साजौ रैवणौ, कदेई मांदौ होवणौ, पल में सुखी होवणौ अर पल में दुखी होवणौ आ ई तौ म्रत-लोक री इदकाई है। इणी इदकाई रा परताप सूं मांनखौ देवतावां नै खै में राख दिया। मिनख जूंण वास्तै देवता तरसै, कळपै। थांरा लोक में तौ हाल तांई जुगां पुरांणा रूंख है, नीं वै खतम व्है अर नीं नवा घूंटा ऊगै। नीं कोई मरै अर नीं कोई जलमै। जुगां पुरांणा जीव, जुगां पुरांणा रूंख, जुगां पुरांणी रितुवां, जुगां पुरांणी हवा, जुगां पुरांणौ उजास, जुगां पुरांणौ राज अर जुगां पुरांणी रैयत — जुगां में ई किणी भांत रौ कीं हेर फेर नीं। म्हारी जांण में असली नरक औ इज है। अठै तौ मंसा व्हैतां ई साध पूरीजै — आदमी नै चुळणौ ई नीं पड़ै, इणसूं वत्तौ कळेस अर संताप इण दुनियां में फेर कांई व्है। दुनियां में असली आणंद उलटफेर रौ ई है। म्हनै तौ सूरज रा उजास, चांदणी रात अर चांद बिचै अंधारौ, सिंझ्या अर तारा आछा लागै। बसंत रै जित्ती ई पतझड़ सांतरी लागै।

राजकंवरी जबाब देवती— आपरै विचारां सूं म्हारौ अंतस ई बदळतौ लखावै। जे म्हैं वै दोय प्रण नीं करती तौ रांम जांणै किणसूं म्हारौ पांनौ पड़तौ। संजोग अर करमां रौ जोर तौ अबै म्हांरा राज में होवण लागौ है।

इण भांत री बातां - विगतां करता दोनूं जणा वासौ तौ पंयाळ - लोक में राखता पण आणंद म्रतलोक री बातां सूं लेवता। सवार - सिंझ्या सूरज रौ ऊगणौ - आथमणौ निरखता, रात रा नित घड़ी दोय घड़ी बारै विचरता, बिरखा में भीजता, किलोळां करता। राजकंवरी वास्तै तौ म्रतलोक री सगळी बातां ई अनोखी ही, इण खातर वा तौ बात - बात में आणंद लेवती। पंयाळ - लोक री थिरता अर अमरता नै देखनै राजकंवर ई म्रतलोक री बातां सूं राजी होवतौ। उठै गियां ईं उणनै आपरा लोक रौ सावळ पतौ पड़चौ। पंयाळ - लोक री जड़ थिरता सूं वौ कायौ होवण लागगौ हौ। जे आपरा लोक में अेक दिन ई विचरण नीं करै तौ जोड़ै लगता दो दिन पंयाळ - लोक में काटणा दूभर व्है जाता।

अेकर काळी - बोळी विकराळ आंधी आई। राजकंवर अर राजकंवरी दोनूं बावड़ी सूं बारै ऊभा हा। राजकंवरी धूळ सूं भरीजण री परवा नीं करनै अठी - उठी आंधी में दौड़ती फिरी। उणरा गाभा, उणरा केस, उणरी आंख्यां अर भोपणा सगळा खंख सूं भूंडै ढाळै भरग्या तौ ई वा किलोळां करती सगळी आंधी नै आपरै डील माथै झेली। अेकर वतूळियौ देख्यौ तौ वा हरख सूं बावळी व्हैगी। वतूळिया रै मांय उणरै सागै दौड़ण री घणी ई चेस्टा करी पण वतूळियौ तौ आडौ-अंवळौ सरणाट पार व्हैगौ। अेकर वा बरसता गिड़ां में उघाड़ै माथै भीजी। गिड़ां रा थर माथै उरबांणै पगां जी धापनै न्हाटी।

बादळां री गड़गड़ गाज सुणतां ईं वा बिरखा नै उडी-

कती जकौ पछै पांणी ठमियां ईं उणरौ भीजणौ ठमतौ । घड़ी घड़ी राजकंवर नै कैवती — अेकर आं बीजळियां नै बाथ में भरलूं तौ पछै म्हारा हरख रौ पार नीं रैवै । पण अै अच-पळी बीजळियां बख में आवै ई नीं । झिलमिलाता तारां नै देखनै कैवती — आपरै म्रतलोक रा लोग कित्ता बावळा अर नासमझ है के वै आं तारां री दुनियां छोडनै सुरग री लाळसा करै । गिगन रा तारा तारा में सुरग है — समझण वाळौ चाहीजै । बीज सूं पूनम तक बधता चांद अर पूनम सूं अमा-वस तक छीजता चांद रै सांम्ही बापड़ा सुरग री जिनात ई कांईं ! घूंटा रौ रूंख, रूंख रौ पाछौ घूंटौ, कळी रौ फूल अर सुरंगा फूलां री सौरम माथै हजार सुरगां नै वारूं । म्रतलोक रौ मिनख कित्तौ परालब्धी है के वौ आठपौर बत्तीस घड़ी अैड़ी दुनियां में वास करै । अर इणरी तुलना में थिरता अर अमरता बिचाळै वास करण वाळा सुरग रा वासी कित्ता निबळा, निपग्गा अर हीणपुन्या है के वै सुरग में कीं उलट फेर नीं कर सकै ।

इण आणंद रै बिचाळै पलकां रै उनमांन दिन बीतता हा । राजकंवरी तौ म्रतलोक रा कांकरा नै आपरै राज रा मोती सूं ई घणौ वत्तौ समझती । पंयाळ-लोक रा नीं नीं व्है जैड़ा अमरफळ छोडनै वा बोर, ढालू, कंकेड़ा, केरूंदा, खिरणियां, पींपिया, भड़ोलिया, गुट्टा, पीलू, गूंदा, गूंदियां, आंमलियां, गेंगणियां, डांणियां, घीतोला, मोथिया, केडूला, खोखा, मांमालूणी, काचरा, काकड़ियां, खरबूजा अर मतीरां वास्तै तड़फा तोड़ती ।

मतीरा वास्तै तौ उगरौ औ कैणौ हौ के पंयाळ-लोक रौ राज उणरी खातर छिन में छोड सकै । काती पूनम री चांनणी में मतीरा री खुपरियां में किरणां रौ इमरत घोळता अर मतीरा री गिर खावता । बांवळिया रा गूंद सारू ई राजकंवरी री विसेस भावड़ ही । चिड़कल फुदकै ज्यूं वा गूंद खावण सारू फुदकती ही । पंयाळ-लोक रै सोना रा पंखेरू उणनै म्रतलोक रै काग, गिरजड़ा सूं ई अणूंता कोजा लागता ।

थोड़ा दिनां तांई राजकंवर नै नवौ नवौ पंयाळ-लोक लुभावणौ लागौ, पण उणनै मतै ई उणरी थिरता अळखावणी लागण ढूकी । सूरज रा अखंड उजास नै देखनै उणनै अणूंती जूंझळ छूटती । बिना आथमियां किणी नै सूरज कीकर आछौ लागै । उणनै रीस आवती के सूरज री किरची किरची करनै ऊंडौ जमीं में गाड दै । आयौ फूठरौ उजास रौ ठेकेदार ! राजकंवर रै मूंडा सूं पंयाळ-लोक री अणूंती भूंडाई सुणनै राजकंवरी कैवती — थांनै तौ थोड़ा दिनां में आपरौ लोक आछौ लागण लागग्यौ, पण म्हनै खुद नै ई म्हारौ लोक अणूंतौ खारौ लागै अर आपरौ लोक अणूंतौ लुभावणौ लागै । कठै ई आप म्हारै माथै कांमण तौ नीं कर दियौ ।

राजकंवर मुळकनै पडूत्तर दियौ — कांमण तौ कुण किण माथै करचौ के तौ वौ खुद ई जांणै है के उगरौ भगवांन जांणै ।

घणी वार तौ दोनूं सागै ई बारै घूमण सारू जावता । पण कदैई कदैई राजकंवर अेकलौ ई घूमण सारू निकळ जावतौ

अर कदैई कदैई राजकंवरी अेकली ई घूमण सारू निकळ जावती । पैला नित हमेस मोत्यां जड़ी सोना री कांघसी सूं आपरा केस सुळझावती ही, पण थोड़ा दिनां में जद पंयाळ लोक री अमोलक चीजां सूं उणनै ओक्या होवण लागी तौ वा राजकंवर रै साथै म्रतलोक सूं अेक चन्नण री कांघसी मंगवाई । पछै हमेसां वा उणसूं आपरौ माथौ सुळझावती । राजकंवर सूं परणीजियां पछै वा सखियां कना सूं कांम नीं करावती अर आपरै हाथां आपरा कांम निवेड़ती । सखियां उणसूं अणूंती राजी ही । राजकंवरी घणी ई समझाइस करी तौ ई वै पंयाळ-लोक सूं बारै जावण वास्तै राजी नीं व्ही । वै मरणा सूं डरती, बुढ़ापा सूं डरती, दुख-संताप सूं डरती । वांनै पंयाळ-लोक री थिरता चोखी लागती ।

अेकर नागकिन्या बावड़ी में झीलनै, चन्नण री कांघसी सूं सोना रा केस सुळझायनै पाछी आपरै लोक आई । पण भूल सूं कांघसी में उळझियोड़ै केसां रौ गूंचौ वा बारै ई पांतरगी । थोड़ी ताळ में ई संजोग री बात अैड़ी बणी के पाखती रै राज रौ राजकंवर सिकार रमनै बावड़ी रै गळाकर नीसरचौ । उणनै तीरस आकरी लाग्योड़ी ही । घोड़ा सूं नीचै उतरनै वौ खाथौ खाथौ पांणी पीवण नै उतरचौ । निरांत सूं बावड़ी रौ कमोद व्है जैड़ौ ठाडौ पांणी पीयनै वौ पाछौ जावण लागौ के मतै ई उणरी मीट राजकंवरी रै केसा माथै पड़ी । वौ फुरती सूं वां केसां नै उठाया । केस तौ साचांणी ई सोना रा दीसै । जिण लुगाई रा केस सोना रा है, वा खुद कैड़ी रूपाळी व्हैला ? उणरौ रूप तौ कुण आंक सकै !

राजकंवर चोर री गळाई डरतौ डरतौ वां केसां नै लुकाया अर उठा सूं वहीर व्हैगौ । मारग में घड़ी घड़ी सोना रै केसां रौ गूंचौ देखतौ अर कळपतौ के आ अपछरा कीकर हाथ आवै । आपरै राज गियां ई वौ किणी नै इण बात री चरचा नीं करी । केसां रौ गूंचौ लुकायनै वौ अेकर पैला केसांवाळी नै तपास करणी चावतौ । उण बावड़ी माथै वा फेर कदेई पाछी सिनांन करण सारू तौ अवस आवैला ।

उण दिन सूं ई वौ दुमनौ रैवण लागौ । नीं किणी नै बतळावतौ अर नीं किणी सूं चलायनै बात ई करतौ । वौ चारूं कांनी लुकतौ - छिपतौ बावड़ी रै फेरा देवतौ रैवतौ । पाखती रा घेर घुमेर बड़ला माथै चापळनै बैठ जावतौ । आंख्यां फाड़नै केसांवाळी री उडीक में निरी ताळ तांई उठै ई भूखौ तिरसौ बैठौ रैवतौ ।

सेवट अेक दिन नवोड़ा राजकंवर री उडीक भरै पड़ी । अेक वतूळिया रै लारै बीजळी रै उनमांन पळपळाट करती, सोना रा केसां वाळी अपछरा दौड़ती निगै आई । वौ तुरत बड़ला सूं हेटै उतरचौ । सोना रै केसांवाळी उण अपछरा नै पकड़ण सारू उणरै लारै दौड़चौ ।

पराया मिनख नै इण विध आपरै सांम्ही दौड़तौ देखनै पैला तौ राजकंवरी डरपी, पण पाछौ तुरत ई धीरज धारचौ । अेकदम अपूठी घिरनै बावड़ी सांम्ही भरणाटै दौड़ी । सिकारी राजकंवर जांण्यौ के अबै आ उणरै आगै कठै जावैला । बावड़ी में गियां तौ सांम्ही सावळ बख में आवैला । कदास तिरसां मरती बावड़ी में पांणी पीवण सारू जावै दीसै । सिकारी

कंवर तौ ई लारै रौ लारै दौड़तौ आयौ । पाज माथै आयनै वौ दो दो पगौतिया मलापतौ राजकंवरी नै झालण रौ पूरौ मतौ करचौ ई हौ के वा तौ पांणी में पग धरतां ई अदीठ व्हैगी । पांणी उणनै तौ मारग दे दियौ पण सिकारी राजकंवर रै पग धरतां ई वौ वत्तौ हिबोळा खावण लागौ । अबै वौ पांणी में लारौ करै तौ कीकर करै ! हाथ मसळतौ, मन में कळपतौ वौ निरी ताळ उठै ई ऊभौ रह्यौ । पण कोरौ दुख करचां ई बात कांई बणै । कीकर ई करनै अपछरा री सोय तौ लाधी । फेर कीं नवौ उकरास लगावांला — औ विचार करनै वौ उठा सूं विलखौ विलखौ वहीर व्हियौ ।

मारग चालतौ सोचण लागौ के जिण भांत पळापळ करती बीज तुरत देखतां देखतां पाछी बादळां में लोप व्है जावै, उणी भांत वा सोना रै केसां वाळी इदक सरूप अपछरा बावड़ी रा पांणी में लोप व्हैगी । वौ खुद आपरी निजरां देख्यौ के पांणी उणनै सांप्रत मारग दीनौ । है तौ अवस आ कोई करामाती अपछरा ।

राजमैलां में जायनै वौ तौ रिसांणौ करनै ऊंडा भंवारा में जायनै सूयग्यौ । नीं तौ पांणी पीवै, नीं थाळ अरोगै, नीं किणी सूं बात करै अर नीं बतळायां बोलै । अेका-अेक राजकंवर यूं रिसांणौ करनै सूय जावै तौ राजा नै चैन आवण री बात ई नीं । वौ घणी ई अकटळां सूं पतौ पाड़णी चायौ पण राजकंवर तौ बात रौ भणकारौ ई नीं पड़ण दियौ ।

सेवट खपतां खपतां मंत्री रौ बेटौ राजकंवर सूं भेद री

साची वात जांणी । राजकंवर आपरा सिरांतिया सूं सोना रै बाळां रौ गूंचौ निकाळियौ। आपरा मित नै वौ गूंचौ झिलायनै कैवण लागौ — इण अपछरा सूं परणीजूं तौ म्हारौ संताप मिटै।

पछै वौ गळगळै कंठ मांडनै सगळी बात बताई । बात सुणतां पांण मंत्री रौ बेटौ कह्यौ — भलां म्हारा मित अर राजकंवर होयनै इण नाकुछ बात सारू आछौ सोच करचौ । आप तौ अेक री बात करौ, म्हैं अैड़ी अठारा बीसी अपछरावां आपरै पगां लायनै पटक दूं । म्हारी जबांन रौ आपनै थोड़ौ घणौ ई पतियारौ है तौ औ रिसांणौ फिटौ करौ, आगली अमावस रै पैला पैला इण केसांवाळी अपछरा नै आपरा रंगमैल में नीं बिठांणूं तौ म्हारौ माथौ कलम कर दिराजौ ।

राजकंवर नै आपरा मित माथै पूरौ भरोसौ हौ । उणरै कैतां ई वौ आपरा कांम-काज में लागौ — सिकार रमणौ, सोना रा थाळ में जीमणौ, सोना री झारचां सूं पांणी पीवणौ, सोना रा प्याला में दारू चूंपणौ, सोना रा पिलंग माथै सूवणौ अर परभात री वेळा ऊठती वगत डावड़ियां सूं पग दबावाड़णा। राजकंवर रिसांणौ छोड्यौ तौ सगळा राजदरबार में आणंद री लैरां ऊठी । राजा तौ अणूंतौ राजी व्हियौ ।

दूजै दिन मंत्री रौ डीकरौ नगरी री सगळी दूतियां अर सिकोतरियां भेळी करी । वांनै पूछ्यौ के वै कांई कांई करामातां जांणै ? केई कह्यौ के म्हां आकास रा तारा तोड़ लावां। केई कह्यौ के वै पलक में पंयाळ रा समंचार लै आवै । केई कह्यौ के वै धरती अर आभा रै बीच री बातां झांप लावै । अेक जणी कह्यौ के वा भाटा सूं तेल काढ़ लेवै ।

अेक जणी कह्यौ के वा सती नै वेस्या अर वेस्या नै सती बणाय देवै । अेक जणी कह्यौ के बळद नै धीजाय उणसूं दूध काढ़ लेवै । अेक बूढ़ी सिकोतरी कह्यौ के वा सिंघणी नै उरणियौ चूंघाय देवै तौ अेक खंखर सिकोतरी कह्यौ के वा सिंघ अर बकरी नै परणाय देवै अर परणायां पछै वांरै ऊमर में ई किणी बात रौ रांफौ नीं पड़ण देवै ।

उण खंखर सिकोतरी नै तद वौ मंत्री रौ डीकरौ पूछ्यौ– थूं सिंघणी अर गिडक रौ घर मांड सकै कांई ?

वा गुमेज में हुंकारौ भरयौ — इण में किसी वड़ी बात ! आ तौ म्हारै वास्तै साव सहल बात है ।

पछै वौ उण खंखर सिकोतरी नै राज दरबार में ढाबी अर बाकी सगळियां नै सीख देय वहीर करी ।

मंत्री रौ डीकरौ सगळी बात उण सिकोतरी नै समझायनै सोना रै बाळां रौ गूंचौ उणरा हाथ में झिलायौ अर कह्यौ— जे थूं औ कांम पटाय देवै तौ थारी सात पीढ़ी रौ दाळिदर अळगौ व्है जावैला । जांणै जकी सगळी विद्या, सगळी करामातां अर चाळा पतवांण लीजै, नींतर थारी म्हारी दोनां री सांन बिगड़ जावैला । सांन रै सागै मरणौ तौ निस्चै है ई ।

सिकोतरी कह्यौ — इण छोटा सा कांम सारू आपनै इत्ती भुळावण देवण री जरूरत कोनीं । अेकर तौ म्हैं इण सोना रै बाळां वाळी नै राजकंवर रै मैलां दाखल कर देवूंला, पछै वै जांणै, वा बाळां वाळी जांणै, आप जांणौ अर आपरौ कांम जांणै ।

सिकोतरी रा मूंडा सांम्ही जोयां मंत्री रा बेटा नै पूरण

विस्वास व्हैगौ के कांम इक्कीस आंना बण जावैला, इण में कीं मीणमेख नीं। सिकोतरी रौ तोरूं व्है ज्यूं लांबौ अर पतळौ मूंडौ। तोरूं री धारचां रै उनमांन ई मूंडा माथै अणगिण सळ। मीडका री गळाई फींडौ नाक। चौड़ी फुरणियां। कोडियां व्है जैड़ी छोटी आंख्यां। धौळा भंवारा। धौळा भोपणा। दोनूं भंवारा बीच में मिळियोड़ा। दात लांबा, जड़ियां उघड़चोड़ी। काळा मसोड़ा। मसोड़ां रै पाखती दांत ई काळा। नीचलौ होठ नीचै टिरचोड़ौ। ओछा कांन। ओछी गाबड़। लांबा हाथ। कमर थोड़ी सी दोवड़ी। डील माथै ठौड़ ठौड़ अणगिण सळ, जांणै कूयोड़ा रींगणा रै उनमांन। मूंडा माथै पांच सातेक मस्सां री इदकाई। मांय धोळा रूंगतां री तुग्गियां ऊगोड़ी।

सिकोतरी रौ उणियारौ देख्यां डर लागै। ढपला, चाळा अर छळ करणा में वा अणूंती पाटक ही। हंसणौ अर रोवणौ वा सागै ई कर लेती। अेक आंख सावं कोरी अर अेक में आंसुवां री झड़ी बरसै, वा अै हुनर जांणती। दया री वगत दया, रीस री वगत रीस, नरमाई री ठौड़ नरमाई, निबळाई रै मौकै अणूंती निबळाई तौ उणरा सुभाव में मतै ई रळ जाती। जद उगरा मूंडा माथै दया व्हैती तौ देखण वाळा नै अैड़ौ लखावतौ के इण नै रीस तौ सपना में ई नीं आती व्हैला। अर जद वा रीस रै पांण वाभरा-भूत व्हैती तौ देखण वाळा नै अैड़ौ लखावतौ के जांणै दया, ममता जैड़ी चीज सौ कोसां तांई इणरै अळगी नैड़ी नीं व्हैला। वा इण भांत री चात्रंग अर पाटक सिकोतरी ही। जद वा सोना रा बाळां

वाळी उण अपछरा नै सिकारी राजकंवर रै रंग-मैल में लावण सारू वहीर व्ही तौ मंत्री रौ बेटौ उणनै फेर भुळावण दी के कैड़ीक हुंस्यारी सूं सगळौ कांम पटावै, तद वा आंख्यां में थोड़ी सी रंगत बदळनै बोली — आपनै म्हारै माथै इत्तौ ई भरोसौ कोनीं, आप थोड़ौ घणौ तौ नेहचौ राखौ। खुद अपछरा नै लावणी तौ किसी बड़ी बात, आप फरमावौ तौ उणरी छींयां लारै छोडनै उणरी कोरी काया ई नै लै आवूं अर आप फरमावौ तौ काया लारै छोडनै फगत उणरी छींयां लै आवूं।

वा इण भांत रा गडका सूं बोली ही के मंत्री रौ बेटौ धकै फेर कीं दपूचा नीं लिया।

अठीनै राजकंवरी नै उचकावण रा अै छळ रचीजता हा अर उठीनै पंयाळ-लोक में दोनूं जणा पूरण रूप सूं नेगम निसंक हा। नागकिन्या जद डरती डरती कंवर नै सगळी बात बताई तौ कंवर नै अेकाअेक उण बात माथै विस्वास ई नीं व्हियौ। वौ उणनै थावस देवतां कह्यौ— भलां आ ई बात कदैई व्है। थें कैवौ जकी बात सोळै आंना साच मानूं के कोई आदमी थांरै लारै अवस दौड़्यौ व्हैला। पण उणरा मन में किणी भांत री कोई कुटळाई थोड़ी व्है सकै! वौ किणी कांम सूं थांरै लारै लारै दौड़्यौ व्हैला। कोई मिनख रौ जायौ पराई लुगाई री कीकर मंसा कर सकै! म्हारा मन में तौ आ बात ढूकै ई नीं।

नागकिन्या कह्यौ—आप मन में भलांई कीं मांनौ अर जांणौ, वौ दुस्टी तौ खोटी मंसा सूं ई म्हारौ लारौ कर्‌यौ। मिनख

रै अंतस री भावना कैड़ी ई गैली - गूंगी लुगाई सूं नीं छिपै। म्हैं तौ अबै बेळा - कुबेळा बावड़ी सूं बारै ई नीं जावूं ।

राजकंवर उणरै सोनल केसां नै सहळावतौ लाड सूं कह्यौ — वा रावळी मरजी ! पण अैड़ी वैड़ी बात थें मन में ई मत लावौ ।

लजाळू नागकन्या निजर नीची करनै बोली — आप फरमावौ तौ म्है मांनूं ई हूं, पण आप तौ आपरै मन परवांण धोळौ धोळौ सै दूध ई जांणौ ।

जिण वगत दोनूं जणा इण विध री बातां करता हा, उण वगत दूध रा झागां रै उनमांन धौळां बाळां वाळी वा सिकोतरी बावड़ी री पाज माथै बैठी अेकली ई अरड़ां अरड़ां रोवणौ मांडियौ । हाथ री गेडी नै पसवाड़ै पाज माथै धरनै, माथा रै दोनूं हाथ दियां वा तौ रोवणौ मांड्यौ जकौ रोवती ई गी । रोवतां रोवतां उणरा सै गाभा आला व्हैगा, तौ ई वा नीं ढबी ।

सिंझ्या रा आथमता सूरज नै जोवण सारू दोनूं जणा बावड़ी रा पांणी सूं बारै निकळिया तौ वांनै पाज माथै बैठी अेक डोकरी दीसी । वांरै कांनां उणरौ अरड़ां अरड़ां रोवणौ सुणीजियौ । दोनूं जणा लपकनै उणरै पाखती गिया । पूछ्यौ — डोकर मां थांमें कांई विखौ पड़्यौ, थूं रोवै क्यूं ?

डोकरी तौ पडूत्तर में पाछी घणा जोर सूं रोवती ई गी । वै फेर गळगळा कंठ सूं कह्यौ — म्हांरा सूं अबै नीं तौ थारौ रोवणौ सुणीजै अर नीं थनै इण भांत रोवतां देखीजै । व्है जकी बात म्हांनै तुरत बता, नींतर म्हैं खुद थारै सागै भेळा

बैठनै रोवां ।

इत्तौ धीजौ व्हियां पछै डोकरी डुसक्या भरती कैवण लागी — म्हैं सेसनाग री बाई हूं । सौ बरसां पैली म्रतलोक देखण री मंसा परगट करचां, म्हारौ भाई अणूंती खीझ करी अर म्हनै सौ बरसां तांई म्रतलोक में रैवण सारू देस निकाळौ दियौ । भाई रौ आदेस म्हैं कदैई नीं टाळियौ । आज वै सौ बरस पूरा व्हिया । म्हैं सौ बरसां लग हेमाळै जायनै तपी । देस निकाळा री वेळा म्हैं नीं धांन रौ दांणौ ई मूंडै घाल्यौ, नीं पांणी री छांट ई पी अर नीं आंख्यां में नींद रौ कस ई लियौ । म्हैं आज बीस घाट दोय सौ बरसां री हूं । कीं तौ बुढ़ापा रै कारण अर कीं निरणी, तिरसी रैवणा रै कारण लारली सगळी बातां चेतै उतरगी, कीं आंख्यां आडा झांवळा ई आवै । म्हारा भाई रा राज में जावण वाळी बावड़ी किसी है, म्हैं तौ सागै ई जांणनै अठै आई ही । पण आयां पछै कीं संका उपजगी । बावड़ी सागै ई व्हैती तौ म्हारौ भाई म्हारौ रोज सुणतां पांण हजार कांम छोडनै बारै अवस आवतौ ! वौ नीं आयौ जिणसूं म्हनै वेम उपजै ।

तद राजकंवरी गळगळा कंठ सूं बोली — भूवासा आपरौ वेम ई साचौ है अर आ बावड़ी सागै ई है, पण आपरौ भाई पंयाळ-लोक रौ राज छोडनै, हमेसां रै वास्तै म्रतलोक रौ वास कर लियौ । वै आपरा राज में व्हैता तौ आपरै चिता-रतां ई दौड़्या आवता ।

डोकरी री बात आछी तरै सुणली तौ ई ऊंचौ मूंडौ करनै बोली — बेटी, म्हैं कीं ऊंचौ सुणूं, इण वास्तै थांनै जोर

सूं बोलण री तकलीफ करणी पड़ी ।

पछै राजकंवरी ऊंची गळ सूं सगळी बात मांडनै बताई । बतातां ई डोकरी तौ फेर अरड़ां अरड़ां रोवण ढूकी । छाती माथा कूटै अर बावळी व्है ज्यूं रोवती ई जावै । रोवती रोवती ई कैवण लागी — म्हारौ भाई फगत म्हारै वास्तै ई राज छोडनै गियौ । अबै तौ म्हैं जीवती ई मरचा समांन हूं । अबै तौ खुद म्हैं उणरी सोय में पाछी जावूंला । म्हारौ सौ बरसां रौ तपणौ अकारथ गियौ । अवस म्हारा तप में कीं न कीं खांमी रैगी । म्हारौ जीव जांणै के म्हैं सौ बरसां लग कीकर म्हारा भाई रौ बिछोव झेल्यौ । दरसणां सारू पाछी आई तौ वौ म्हारी सोय में कालौ होयनै निकळग्यौ । बिना कालाई रै कुण अैड़ौ बावळौ जकौ आपरै हाथां आपरै माथै धूळ उछाळै । म्हनै सुभट दीसै के म्हारा झुरावा सूं उणरौ चित्त उपड़ग्यौ ।

पछै वा राजकंवरी रै सोनल बाळां सांम्ही देखनै कह्यौ — भाई रै बिना म्हनै पंयाळ लोक मसांण ज्यूं लागैला । म्हैं खुद पाछी म्रतलोक में जावूंला । भाई नै हेरचां बिना पांणी पीवणौ तौ अळगौ, म्हैं पांणी नै निजरां देखूंला ई नीं । थांनै फालतू तकलीफ दी । अबै म्हैं जावूं ।

आ कैयनै डोकरी गेडी हाथ में लेय ऊभी होवण लागी तद नागकिन्या कह्यौ — भूवासा, म्हैं आपरी भतीजी हूं । आपनै पाछा भवै ई नीं जावण दूं । जीसा नै तौ म्रतलोक सारू वैराग ई ऊठग्यौ हौ । वै पंयाळ-लोक रै राज सांम्ही पाछौ मूंडौ ई नीं करैला । आप म्हांरै साथै पंयाळ-लोक चालौ अर म्हांनै

आपरी सेवा-बंदगी रौ मौकौ दौ ।

सिकोतरी पैला ई बातां सुणनै ई समझगी ही के आ सेसनाग री किन्या है, पण दरसायौ कोनीं । गेडी हेटै पटक राजकंवरी नै बाथां भरली । अरड़ां अरड़ां रोई । डुस्किया भरती भरती ई कैवण लागी — म्हारी बेटी, म्हारी लाडल बेटी, थूं इत्ती ताळ म्हारा सूं चोज क्यूं राख्यौ । म्हनै तौ उणियारौ देखतां ईं समझ जांणौ हौ । भलां तीनूं लोकां में अैड़ी बेटी म्हारा भाई रै टाळ फेर किणी रै व्है सकै ? पण म्हारौ माथौ तौ साव भंवियोड़ौ । सुभट अर सीधी बातां ई दोरी समझ में आवै । बेटी, म्हारा भाई नै म्रतलोक वास्तै कीकर वैराग सूझ्यौ, अेकर म्हनै फेर सावळ मांडनै बता । थांनै वौ म्हारी कदैई चरचा करी के नीं ।

राजकंवरी कह्यौ — आपरी चरचा तौ कदैई नीं हाली, पण अबै म्हनै ई ठा पड़गी के जीसा क्यूं म्रतलोक वास्तै तड़फा तोड़ता । आपरी खातर वै मांय रा मांय सिळगता गिया, कदैई भूल सूं ईं चरचा नीं करी । पण वासदी रूई में कित्ता दिन दपट्योड़ौ रै सकै । आपरै वास्तै वांनै पंयाळ-लोक रौ राज छोडणौ पड़ चौ ।

डोकरी फेर छाती माथा कूटती बोली — म्हारौ भाई म्हारै वास्तै राज छोडनै वैराग धारण कर लियौ अर म्हैं निरभागण हाल जीवती हूं । अबै म्हैं कांईं करूं अर कांईं नीं करूं । थें दोनूं जणा म्हारौ कह्यौ मांनौ, बोला बोला पाछा आपरा राज में जावौ परा । भाई बिना म्हैं तौ अठै अेक पलक ई रैवास नीं कर सकूं ।

पण दोनूं जणा घणा घणा नेवरा करनै भूवाजी नै आपरै साथै लेय आपरै राज सांम्ही वहीर व्हिया। भूवाजी पूरण ध्यांन सूं सावचेती बरतता वांरै लारै लारै चालण ढूका। मिण रा जोर सूं पांणी मतै ई मारग देवतौ हौ।

हवा, पांणी, उजास, सोना, चांदी अर मोत्यां री सात सात पोळां पार करयां पंयाळ-लोक रौ बाग आयौ। उठा रौ नजारौ देखनै भूवाजी रौ तौ माथौ ई भंवग्यौ। पण आपरा सुभाव सूं वै किणी भांत आ बात परगट नीं होवण दी के अै बातां वांरै वास्तै नवी है। वै तौ उठै गियां पछै ई आपरा भाई रौ सोच अणूंतौ करता।

पंयाळ-लोक में भूवाजी रै सिवाय कोई बूढ़ौ नीं हौ। सगळा जवांन अर रूपाळा। अेक दिन भूवाजी मिसखरी रा भाव सूं राजकंवर नै कह्यौ—भतीजी रै सरब सोना रा केस तौ भूवा रै ई सरब रूपा रा केस।

पछै वै अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै कह्यौ—जे सौ बरसां लग म्हैं म्रतलोक में देस निकाळौ नीं भोगती तौ म्हारी अैड़ी गत क्यूं बिगड़ती। बेटी, वै ई दिन हा जद म्हैं थारा सूं ई फूठरी ही। थारै जैड़ी नै तौ म्हैं साथणियां ई को राखती नीं। पण बेटी, थनै भेद री अेक बात बतावूं के जवांनी रौ मजौ जवांनी में है अर बुढ़ापा रौ मजौ बुढ़ापा में। लाख जवां-नियां साटै ई म्हैं म्हारा बुढ़ापा रौ सोदौ नीं करूं। इण लोक रा लोग कित्ता निरभागी है के वै बुढ़ापा रौ आणंद नीं लै सकै।

पण भूवाजी आपरा मन में जवांन होवण सारू घण ई

तल्ला तोड़ता, घणा ई कळपता पण अबै तल्ला तोड़्यां सांधौ ई कांईं लागतौ। वै खरावण सारू राजकंवरी नै पूछता — म्रतलोक में बसियां म्हनै बूढ़ौ व्हैणौ ई पड़्यौ अर अठै बसियां म्हैं कठैई पाछी जवांन व्हैगी तौ म्हारै दुख रौ पार नीं व्हैला।

राजकंवरी जबाब देवती — इण लोक रौ कायदौ तौ औ इज है।

भूवाजी माळा फेरण रै मिस अेकांत में दोय कांम छांनै-ओलै करता। अेक तौ आपरा घाघरा री चीण में हीरा-मोती भरता अर दूजौ घड़ी घड़ी आरसी में आपरौ मूंडौ निरखता के जवांनी पाछी बावड़ै है के नीं। वांनै केई वार इण बात रौ भरम ई व्है जातौ।

भूवाजी नै जोवण सारू पंयाळ-लोक रौ मांनखौ आवतौ अर वांनै देखनै इचरज करतौ। भूवाजी रौ ढाळौ देख्यां पछै तौ वै सगळा ई म्रतलोक सूं अणूंता डरण लागा। पण राजकंवर अर राजकंवरी नै भूवाजी रौ बुढ़ापौ अणूंतौ ई सुहावणौ लखावतौ। वै खुद इण बात री लाळसा करता के दिनां परवांण वै ई बुढ़ापा रौ आणंद उठावै।

थोड़ा दिनां में ई भूवाजी वांनै पूरा धीजाय लिया। वै इण भांत लाड अर गडकां सूं बातां करता, जांणै वांरा सूं भलौ अर स्यांणौ मिनख तीनूं लोकां में ई नीं है।

पण भूवाजी रै स्यांणापणा रौ थोड़ा दिनां में ई छेह आयग्यौ। वै कदैई अेकला बात्रड़ी रै बारै घूमण नै जावता तौ मंत्री रा बेटा नै चीण मांय सूं काढ़ काढ़नै मोती झिलाय देता। मोत्यां रौ लोभ नीं व्हैतौ तौ वै भतीजी नै कदैई

ठांणै लगाय देता । वै केई वार भतीजी रै साथै घूमण नै जावता । अेक दिन राजकंवर कह्यौ — इण अमावस नै म्है दोनूं घूमण नै जावांला । घणी रात ढळियां पाछा आवांला ।

भूवाजी ऊपरला मन सूं तौ हां में हां मिळाई, पण मन रै मांय कह्यौ — अबै अमावस री रात अेकलौ ई धमीड़ा लीजै ।

तेरस री रात भूवाजी चीण खाली करचां मंत्री रा बेटा नै कह्यौ — कालै दोय टाळका घोड़ा लेय आप सांमला बड़ला रै हेटै ऊभा रैजौ । म्हारै हाथ मांयली मिण आपनै मिलतां ई राजकंवरी नै घोड़ा माथै बैठायनै सोरा रैजौ ! म्हैं लारला घोड़ा माथै बैठनै लारै री लारै दौड़ती आवूं । चीण मांयला मोती दरबार में पूग्यां आपनै संभळाय देवूंला ।

थोड़ी ताळ रुकनै पछै फेर कैवण लागी — साथै रह्यां भूंडा भला री पिछांण व्है । राजकंवर अर नागकिन्या रौ सुभाव बरतियां पछै वांरै साथै घात करण रौ मन नीं व्है । आपरौ आदेस टाळ नीं सकूं, इण खातर मन परबारौ औ कांम तौ करणौ ई पड़ैला । पण राजकंवर री संगत सूं तौ म्हारी काया ई पलटीजण लागगी । ऊमर में पैली वार म्हारा खोटा मन में भलाई री तिणग उछळी ।

मंत्री रौ डीकरौ कह्यौ — वा तिणग उछळी जका रौ चांनणौ म्हनै ई दीसै । थारा दूतीपणा रौ परचौ म्हनै मत बता । थारौ जीव डुळगौ व्है तौ वै सगळा हीरा-मोती थूं ई राख लीजै । औ वचन तौ निभावणौ ई पड़ैला ।

सिकोतरी कह्यौ — म्हैं ऊमर में कदैई साच नीं बोली ।

छळ कपट अर चाळां सूं म्हारौ रूं रूं इत्रोड़ौ है, पण आज तौ अेक वार ई सांच बोलनै म्हारी जीभ पावन करलूं के आं हीरा-मोत्यां रौ म्हनै मुळगौ ई चाव नीं है। चोरी रौ सुभाव नीं छूटै, इण खातर म्हैं चोर चोर नै मोती भेळा करचा। वांरा सूं मांग लेवती तौ इणसूं सौ गुणा मोती हाथै लागता। उठै तौ मोत्यां बिचै बांणा रै कण री घणी कदर है। वै थोड़ा घणा ई पाटक व्हैता तौ घात करण रौ ई आंणद आवतौ। पण वांरौ अंतस इत्तौ धौळौ अर निरमळ है के वांरै साथै छळ करतां संकौ आवै। लारला कुकरमां रै कारण औ छळ तौ मतै ई पार पड़ै, पण पैली वार मन में संका उपजी जकौ आपनै दरसावूं।

मंत्री रौ डीकरौ सोच्यौ के अै सगळा सिकोतरियां वाळा चाळा है। लोभ देवतां कह्यौ—थारै राजी व्हियां बिना म्हैं म्हारा राजकंवर नै नागकिन्या रौ उणयारौ ई नीं बतावूं। थूं निसंक रै।

दूती कह्यौ—आप मांनौ, म्हैं तौ औ छळ नीं करचां घणी राजी! पण म्हारै राजी व्हियां कांम नीं सरै। सगळी ऊमर जिणरौ लूण-पांणी खायौ उणनै राजी करणौ म्हारौ पैलौ धरम है। अंदाता री खुसी आगै म्हारै हरख री कांई जिनांत।

मंत्री रौ बेटौ मुळकनै कह्यौ—अेक घर तौ डाकण ई टाळै, थूं म्हारै आगै थारौ जाळ मत बिछा। हाल दूजी दुनियां ई घणी बाकी है।

अबै वा खंखर सिकोतरी कीं जबाब देणौ सावळ नीं

समझ्यौ । मन में आ बात विचारनै सबर करी के दूती री बातां नै जाळ नीं समझणौ ई तौ नादांनी है । सोच्यौ के अबै मंत्री रा बेटा सूं माथौ लगावणौ बिरथा है । कीं पडूत्तर नीं देवण रौ तेवड़ियां उपरांत ई वा सांम्ही मुळकनै उणरी बात नै मांनतां थकां कह्यौ — इण दुनियां में किणी आगै म्हारी दाळ नीं गळै तौ फगत आपरै आगै । आपरै धकै म्हारी सगळी करामातां ठाय रैवै ।

मंत्री रौ बेटौ पाछौ मिसखरी करतौ कह्यौ — म्हैं ई ठोकरां थारी खाई हूं । म्हारी आ हुंस्यारी थारी इज बग-सियोड़ी है ।

सिकोतरी कना सूं मोत्यां री झड़ती लेयनै वौ तौ रोजीना री गळाई आपरै ठांणै गियौ ।

पण उण खंखर दूती रा मन में साचांणी ई-अेक नवी दूती जलम लियौ हौ । आज उणनै इण नवा जलम री थोड़ी घणी जाच व्ही ही । इण नवी दूती रा चाळां आगै तौ बरसां पुरांणी दूती नै हार मांनणी पड़ै ।

पंयाळ-लोक में वड़तां मिण रा जोर सूं पांणी फाटतौ हौ अर दूती आपरा मन माथै हेमाळै रौ बोझ धरयां होळै होळै पाछी जावती ही । उणरा मन में हरख रौ नांव ई नीं हौ । आज ऊमर में पैली वार उणनै अेक नवौ अेलम व्हियौ के मन परबारौ कीं खोटौ कांम करणा सूं जकौ आतमा में कळेस उपजै, उणसूं वत्तौ दुख दुनियां में फेर नीं कीं व्है । राजी मन सूं आज पैला कैड़ा कैड़ा लांठा अकरम करया, जिणरौ कोई लेखौ ई नीं, पण कळपणौ तौ अळगौ, मन में

अणूंतौ मोद अर हरख व्हैतौ ।

इण भांत रै नवा विचारां री काचौ सूत उळझावती सुळझावती वा उठै पूगी तौ राजकंवरी पूछ्यौ — भूवाजी, आज मोड़ा घणा आया । घूमण नै अळगी भांय गिया कांई ?

भूवाजी होळै सूं पड़ूत्तर दियौ — हां, बेटी !

भतीजी कैवण लागी — आपरा म्रतलोक री छिब ई अैड़ी है । उठै गियां पछै पाछौ आवण रौ सोरै सास मन ई नीं करै ।

भूवाजी रै काळजै फेर अेक बळबळतौ डांम लागौ । वा कांई कांम सारू आई ही अर किण फंदै फिलगी । वा अेकांत में घणौ ई इण बात माथै विचार करयौ, पण वा कीं निस्चै नीं कर सकी । मंत्री रा बेटा रौ कांम तौ वा माडांणी ई करणी चावती, पण मन में कळेस तौ बधतौ ई जावै । आपरा अंतस में जलमी नवी दूती सूं वा काठी आंती आयगी तौ वा खमखरी खायनै उणरौ कंठ रोस न्हाकियौ । अबै जायनै उणरा जीव में सांयत वापरी । रांम जांणै कैड़ी अणूंती गांगरत में पजगी । मन सूं ई घड़ती अर मन सूं ई भांगती । अेक नाकुछ मांमूली सा कांम सारू कित्ता कळाप व्हिया । सेवट नवी दूती रौ कंठ रोसियां नेहचौ व्हियौ ।

म्रतलोक री चवदस रै दिन जद भूवा-भतीजियां दोनूं बारै घूमण सारू जावण लागी तौ फगत भरोसौ करण रै मिस खंखर सिकोतरी राजकंवर नै यूं ई पूछ्यौ — आपरौ मन व्है तौ आप ई सागै चालौ । अठै अेकला बैठा कांई करौला ।

तद राजकंवर कह्यौ — निरी वार अेकलौ रैवणौ ई जरूरी

है । सोचण सारू म्हारै गोडै केई बातां है । थें दोनूं जणियां ई जावौ । म्है तौ कालै अमावस रै दिन दोनूं जणा सगळी रात म्रतलोक में रैवांला । कोई समझणौ आदमी मिळै तौ उणनै पूछजौ के कालै अमावस ई है कांई । अठै वार तिथां रौ हिसाब राखणौ अणूंतौ दौरौ । म्हैं घणौ ई ध्यांन राखूं तौ ई पांतरौ पड़ जावै । कालै सूं औ हिसाब थांनै सूंपूंला ।

राजकंवर री इण भोळप सूं सिकोतरी रै काळजै फेर बळत ऊठी । पण वा पाछौ कीं पडूत्तर नीं देयनै उलटी खाथाई करती भतीजी नै कह्यौ — चालणौ ई है तौ पछै वैगा चालौ । फालतू मोड़ौ करणा में कीं आंणी जांणी नीं । राजकंवर नै तौ अणूंती बातां घणी आवै । मतलब री बातां भगवांन जांणै वै कद सीखैला ।

आ कैयनै वा भतीजी रौ हाथ झाल्यौ । उणनै तगतगायनै खाथी खाथी चाळण ढूकी । मारग में भतीजी कीं बात करणी चावती तौ ई भूवा कीं जबाब देवती नीं । सांम्ही झिड़कनै दोय तीन वळा कह्यौ — म्हारौ जीव आज ठिकांणै कोनीं । थूं फालतू रा दपूचा मत लै । थूं चार पांच बरसां री अबूझ टाबर कोनीं जकौ अै मांमूली बातां ई नीं जांणै ।

पण भतीजी तौ ई नीं मांनी । टाबर री गळाई दूजी वार फेर कह्यौ — आप तौ बात बात माथै चिड़ौ घणा । थें ऊमर घणी पाई हौ, म्हनै सावळ समझायनै इण बात रौ म्यांनौ दो के मिनख पराई लुगायां री लाळसा क्यूं करै ? वै तौ इण बात नै अबै ई नीं मांनै । वांनै तौ विस्वास ई नीं व्है के तीनूं लोकां में अैड़ौ ई कोई मिनख व्है सकै ।

उजास री पोळ आयगी ही । भतीजी फेर आगै कैवण लागी — पण म्हैं तौ अेकर भुगतियोड़ी हूं। अेक मिनख म्हारौ लारौ करतौ ठेट बावड़ी रै पगोतियां पगोतियां मलापतौ आयौ। मिण रा जोर सूं पांणी फाटनै म्हनै मारग नीं देवतौ तौ म्हांमें उण दिन जबरी व्हैती । उण बात नै आज ई चितारूं तौ म्हारा रूंगता ऊभा व्है !

भूवाजी झाल्योड़ा हाथ नै जंभेड़ता थका कैवण लागा — म्हारौ माथौ मत पचा । माठ कर । भगवांन थनै लुगाई री ठौड़ कागला री कुपाळी दी है । आठ पौर कांव कांव करती ई रैवै । अबै म्हारा कांन खाया तौ चुट्टौ पकड़नै किणी दूजा मिनख नै सूंप देवूंला । पछै थनै ठा पड़ैला के आदमी पराई लुगाई री मंसा क्यूं करै ? इण बात री सावळ ठा पड़्यां पछै थूं दुनियां नै म्यांनौ समझावती रैजै ।

भतीजी नै तौ ई चेतौ नीं व्हियौ। वा जांण्यौ के भूवाजी नै उणरी बातां माथै रीस आयगी । पण तो ई वा भूवाजी री रीस सूं विसेस डरपी कोनीं । वा तौ फेर अेक अणूंती बात करी । कैवण लागी — भूवाजी नाराज नीं व्हौ तौ अेक खास बात बतावूं । उण मिनख रै लारौ करयां पछै म्हारा मन रौ वेम मिट्यौ कोनीं । वेम तौ वेम इज है, म्हारा मन रौ ओछापणौ देखौ के म्हनै सरूआत में आपरौ ई वेम व्हियौ ।

आ बात सुणतां ईं भूवा रौ हाथ थर थर धूज्यौ । वा होळै सूं धूजतै कंठां पूछ्यौ — कांई म्हारौ वेम ?

भतीजी हंसती थकी जबाब दियौ — हां आपरौ वेम !

इण कालाई रौ म्यांनो म्हैं वांनै पूछ्यौ । वे केई वार तौ टाळमटोळ करता रह्या । पण म्हैं लारौ ई पकड़ लियौ । वांनै कह्यौ के अपांरा अै भूवाजी कठै ई अपांरै साथै घात नीं कर बैठै ।

सांम्ही हवा री पोळ आवण वाळी ही । भूवाजी अणजांण में ई राजकंवरी रौ हाथ छोड दियौ । बोला बोला उणरै साथै चालण लागा । भतीजी आगै फेर कैवण लागी—दुनियां में फेर इण भांत री केई बातां व्हे । म्हैं वांनै कह्यौ के कदास इण बात माथै थोड़ौ घणौ तौ विचार करौ के अै भूवाजी उण मिनख रा ई भेज्योड़ा व्हे । बातां बातां में भर-माय म्हारै साथै घात कर दियौ अर अै दोनूं मिळ परा नै म्हनै उडाय लेग्या तौ थांरौ म्हारौ कांई दीन व्हैला । मिण बिना थें बारै नीं आ सकौ अर मिण बिना म्हैं मांय नीं आय सकूं । आ दुरगत व्हियां म्हारौ तौ मगज कीं कांम नीं देवैला । थें ई बतावौ के उण वगत म्हैं कांई करूं अर कांई नीं करूं ।

भूवा रै गळा में जांणै कोई डूंजौ फंसग्यौ व्हे । नीठ होळै सूं बोली — भली आदमण क्यूं कांव कांव करै । थोड़ी ताळ मूंन राख । घणी चीं चपड़ करी तौ थांमें आज आ ई करनै बतावूंला ।

भतीजी भूवाजी रौ हाथ झाल्यौ अर हंसती थकी कैवण लागी — अबै थें म्हनै कित्ती ई डरावौ तौ ई म्हैं डरूं कोनीं । औ वेम तौ वां दिनां हौ । आज तौ म्हारा मन में वेम रौ लवलेस ई कोनीं । पण राजकंवर रौ मन तौ रांम जांणै किण संचै ढळघोड़ौ हौ के वै तौ उण दिन म्हारै इत्ता कैणा

माथै ई वेम नीं कर्‌यौ । जद म्हैं घड़ी घड़ी पूछ्यौ के म्हैं अैड़ा विखा में कांई करूं अर कांई नीं करूं म्हनै आप कीं उपाव तौ बतावौ ? तद वै अैड़ौ उपाव बतायौ के सुणतां ई म्हारौ मगज तुरत ठिकांणै आयग्यौ । उण दिन सूं ई म्हनै कदैई किणी माथै वेम नीं व्है ।

भूवाजी नै लखायौ के वांरौ काळजौ जांणै कॅंकड़ा रा पंजा में भिल्योड़ौ पींचीजै । वांरी नाड़ियां में जांणै लोई ऊंधौ बेवण लागौ । बोलणी चायौ तौ ई वांरा मूंडा सूं बोल नीं निकळिया । अबै पंयाळ-लोक री सोंव खतम होयनै बावड़ी रौ पांणी सरू व्हैगौ हौ । मिण रा जोर सूं पांणी फाटै ज्यूं भूवा रौ काळजौ ई फाटण लागौ ।

भतीजी फेर धकै कैवण लागी — वांरै बतायोड़ा उपाव थें ई सुणौ तौ सुणता ई रै जावौ । वै सांम्ही म्हनै समभावतां कह्यौ — कदास थांरै कैणा मुजब वैड़ी अजोगती बात बण जावै तौ थें किणी नै उण बात री चरचा ई मत करजौ । बोला बोला लिजावणिया रै साथै जाजौ परा । लोगां नै थोड़ी घणी ई भणक पड़गी तौ पछै वै किणी गरीब दुख्यारा माथै कदैई भरोसौ नीं करैला । अपां तौ कीकर ई करनै विखौ काट लेवांला, पण वा बात परगट व्हियां थें ई बतावौ दुख्यारां रा कांई दीन व्हैला । वांरा दुख-दरद माथै कुण पतियारौ करैला !

बात सुणतां ई भूवाजी रा कांनां में तौ जांणै अेकर सागै हजार तोपां दागी । आंख्यां सांम्ही जांणै सूरज तूटनै बिखरग्यौ ।

दोनूं जणा बावड़ी रै पांणी सूं बारै निकळनै म्रतलोक

में आयग्या हा । भतीजी री बातां सुणणा सूं भूवाजी तौ आपरी सुध-बुध ई पांतरग्या । वांनै इण बात रौ ई चेतौ नीं रह्यौ के अबै वांनै कांई करणौ अर कांई नीं करणौ ।

भतीजी री कळाई सेंठी पकड़नै वै किड़किड़ियां चाबता कैवण लागा—आया बापड़ा दुख्यारां रौ सोच करण वाळा ! दुनियां रा दुख्यारा थां दोनां रै ई भरोसै को है नीं । थें ढोल घुराय घुराय सगळी दुनियां में उण बात रौ हाकौ करजौ । थारौ लारौ करणियौ सिकारी राजकंवर थनै लेवण सारू बड़ला हेटै ऊभौ है । म्हैं छळ सूं थनै बारै भरमायनै लाई हूं । आया बापड़ा दुख्यारां रौ दुख-दरद मेटण वाळा !

आ कैयनै भूवाजी तौ कोई भली सोची नीं कोई भूंडी, दोनूं हाथां सूं भतीजी रै सोनल बाळां रौ चुट्टौ झाल्यौ अर उणनै तगतगावता सीढ़ियां चाढ़ण लागा । उण वगत वामें घोड़ा जित्तौ करार आयग्यौ हौ । वै घड़ी घड़ी किड़किड़ियां चाबता अर कैवता जावता—आया बापड़ा गरीबां रौ सोच करण वाळा ! थूं छाती माथा कूटती सगळै डूंडी पिटवाय दीजै, दुनियां सूं छौ म्हा गरीबां रौ विस्वास ऊठतौ ।

चुट्टौ खांचतां खांचतां भूवाजी भतीजी नै पाज माथै लाया तौ बड़ला हेटै ऊभौ अेक घोड़ौ जोर सूं हींसियौ । उणरौ हींसणौ सुणनै दूजोड़ौ ई जोर सूं हींसियौ ।

घोड़ा रौ हींसणौ सुणतां ई भूवा नै अणूंती कांपणी छूटी । उणरै हाथां अणजांण में मतै ई चुट्टौ छूटग्यौ । अेक छिण में ई काया पलट व्हैगी । छबरां छबरां रोवता कैवण लागा—राजकंवर री बातां तौ म्हारौ सगळौ अंस ई काढ़ लियौ ।

जे थां जैड़ा लोगां री म्हनै संगत मिळती तो आज म्हैं औ दूती रौ कांम क्यूं करती । फगत म्हैं ई जांणूं के म्हैं कैड़ा कैड़ा अकरम करचा ।

घोड़ा फेर हींसिया । भूवाजी धूजता हाथ सूं उठीनै सांनी करता थका कैवण लागा — म्हारै कैणा सूं ई वौ दुस्टी थनै उडावण सारू आयौ है । पण अबै तौ वौ थारी छींयां नै ई कांई देखलै ।

भतीजी नै तौ सोचण रौ कीं मौकौ ई नीं मिळचौ । के ईत्ता में भूवाजी उणनै कड़ियां तणी उंचायनै मोरां लारै ली अर पाछा आया उणी पगां दड़बड़ दड़बड़ दो दो पगोतिया मलापता बावड़ी में बड़ग्या । बावड़ी पार करचां जद हवा री पोळ आई तौ वांरा जीव में कीं नेहचौ व्हियौ । भतीजी नै दोवड़ी कमर सूं हेटै उतारनै थोड़ी कड़ियां पाधरी करी । कैवण लागा — अबै उण दुस्टी रौ कीं बख नीं लागै ।

पछै जड़ियां उघड़ियोड़ा लांबा दांत काढ़नै मुळकता थका कैवण लागा — म्हैं तौ जवांनी री ई लाळसा करती ही, इण पंयाळ-लोक में तौ आज म्हारौ नवौ जलम व्हियौ । म्हारौ नवौ जलम व्हियौ ।

नवा जलम री खुसी में बावळा व्हियोड़ा भूवाजी ताळ ताळ ऊंचा कूदण लागा । अर सुध-बुध पांतरचोड़ी भतीजी आंख्यां फाड़चां वांरै सांम्ही टकटकी लगायनै देखती री ।

दूजौ राजकंवर

दूजोड़ौ राजकंवर तपसी रै कना सूं कोस डोढ़ कोस ई अळगौ गियौ व्हैला के सांम्ही अेक गरीब बांमण धक्यौ । राजकंवर हाथ जोड़नै कह्यौ—पगां लागूं माराज ।

बूढ़ौ पिंडत आसीरवचन कैयनै उठै ई ठमग्यौ। पूछयौ— बारै बरसां री समाध सूं ऊठणिया तपसी रौ आसण अठा सूं अबै कित्तौक आंतरै है ? म्हैं तौ हालतौ हालतौ थाकग्यौ ।

राजकंवर कह्यौ—पिंडतजी अबै घणी भांय कोनीं। सांमलै धोरै ढळतां ई आपनै अेक जंगी बड़लौ दीखैला । उण बड़ला हेटै ई तपसी रौ आसण है । आप हुकम फरमावौ तौ म्हैं आपनै उठा तक छोडनै आय जावूं ।

पिंडतजी कह्यौ—नीं बेटा , म्हैं आपरा स्वारथ सारू मारग चालता बटावू नै क्यूं तकलीफ दूं । सुण्यौ के किणी देस रा आठ राजकंवर उठै आयोड़ा है। दया अर करुणा रा सागर किणी दुख्यारा रौ दुख तौ वै देख ई नीं सकै । इण लोभ सूं म्हैं वांरै पाखती जावूं । म्हारै सात बेटियां है । रूप अर गुणां री खांन । पण नांणा बिना म्हैं अेक रा ई हाथ पीळा नीं कर सक्यौ । हाथां रमायोड़ी पाळियोड़ी बेटियां , बिना परणायां खारी जैर लागै । अंटी में नांणौ व्है तौ लोग गधेड़ी सूं हथळेवौ जोड़लै । म्हारी बेटियां जैड़ी गुणवंती डावड़ियां दुनियां में को लाधै नीं । पण नांणा रा जोर आगै तौ किणी रौ ई जोर नीं चालै । कांई करूं बेटा , दरजै लाचार होयनै

म्हैं वां राजकंवरां री आसा में निकळियौ हूं । थूं ठायौ बताय दियौ, अबै म्हारा करम म्हारै पाखती है ।

राजकंवर गळगळा कंठ सूं कह्यौ — पण पिंडतजी वै आठूं राजकंवर तौ कालै ई तपसी रौ आस्रम छोड़ दियौ । अबै पाछा बरस उपरांत उठै भेळा व्हैला । वै सगळा वहीर व्हिया जद म्हैं उठै ई हौ ।

पिंडतजी तौ औ समंचार सुणतां ई गोडां रै हाथ देयनै उठै ई जरड़ देती रा बैठग्या । बोल्या — बाई रौ करम ई रांडचौ तौ कांई करै पांडचौ । लिप्तर लिप्तर करतौ सतरै कोस पाळौ आयौ जद आ सुणावणी मिळी ।

राजकंवर थावस देवतां कह्यौ — पिंडतजी यूं धरत्यां हाथ कांई टेकौ । इण धरती माथै फगत वै आठ राजकंवर ई तौ नीं बसै, भळै ई कोई मिनख बसता व्हैला के नीं ! सगळी दुनियां रौ कांम वै आठ राजकंवर ई तौ सारणा सूं रह्या ! म्हारै सागै चालौ, म्हैं थांरै वास्तै अवस कीं न कीं जुगत बिठाबूंला ।

पिंडतजी भारी गळा सूं कैवण लागा — बेटा कोरौ मिनख व्हियां ई कांई व्है ! यूं तौ म्हारा चौखळा में ई घणा मिनख बसै । जकां कनै नांणौ है, वांरै कनै देवण सारू मन कोनीं, अर जकां रै देवण सारू मन है, वांरै कनै नांणौ कोनीं । भूठौ किणनै दोसण देवूं । म्हारी बेटियां रै तेल चढ़ण रौ जोग ई कोनीं ।

राजकंवर कह्यौ — जोग रौ टीपणौ बांचयोड़ौ व्हैतौ तौ थें इत्ता डाफा क्यूं खावता । जोग अजोग री तौ पैला किणी नै

कीं ठा पड़ै नीं। हीमत हारनै बैठणा सूं तौ कांम नी सरैला।

पिंडतजी मन परबारा ई राजकंवर रै सागै पाछा वहीर व्हिया । घर-विद री बातां करता करता वै चारेक कोस रौ पैंडौ पार करचौ व्हैला के वांनै मारग री ढळांत सूं हेटै किणी सिंघ रै डाढ़णा री आवाज सुणीजी । कांनां में आवाज पड़तां ई पिंडतजी रा तौ धै छिलग्या । वै धूजता धूजता कैवण लागा — आप सुण्यौ के नीं, कठै ई नैड़ौ मारग माथै सिंघ गरजै । सांम्ही गियां तौ निस्चै काळ है । बेटियां रै हथळेवा पैला सिंघ री हत्थळ पड़गी तौ म्हारी सात पीढ़ियां रा सगळा ब्याव बिगड़ जावैला ।

सिंघ री आवाज लगौलग सुणीजती ही । राजकंवर कांन देयनै पूरा ध्यांन सूं वां हौकारां नै सुणतौ हौ । थोड़ी ताळ सोच विचारनै कह्यौ — पिंडतजी, निस्चै रूप सूं अै हौकारां तौ सिंघ री है, पण म्हनै लखावै के औ सिंघ गरजै कोनीं, डाढ़ै है । इणरी आवाज में निबळापणौ है । उणरा डील में कीं घाव के कीं अणूंती पीड़ लखावै, नींतर सिंघ यूं डाढ़िया नीं करै । पाखती जायनै देख्यां सावळ ठा पड़ै । बणती कोसिस उणनै मदत देवणी चाहीजै ।

पिंडतजी जांण्यौ के कदास औ आदमी तौ निपट बावळौ दीसै । म्हैं मिळियौ तौ म्हारी सहाय करण नै तैयार अर सिंघ रौ डाढ़णौ सुण्यौ तौ उणरी मदत करण नै आखतौ । औ मदत दै दी अर बेटियां रा ब्याव व्हैगा! मगज में वादी रौ असर दीसै । कह्यौ — भाया, सगळी दुनियां री भलाई रौ ठेकौ थारै लियोड़ौ है तौ थूं अवस भलाई कर, थनै म्हैं नीं

बरजूं, पण म्हारै सात लिछमियां परणावणी है। इणसूं तौ म्हनै सिंघ रै गरजणा अर उणरै डाढ़णा रौ फरक समझ में नीं आवै। सिंघ रौ कांई तौ डाढ़णौ अर कांई उणरौ निबळा पणौ। थारी बातां तौ अजब ऊंधी। म्हैं थारा कना सूं मदत भरपाई। थूं थारै मारग जा अर म्हैं म्हारै मारग जावूं।

राजकंवर नरमाई रै साथै कह्यौ — पिंडतजी जकौ आदमी मदत लेवण नै त्यार व्है उणनै वगत माथै पाछी मदत देवणी ई चाहीजै। सिंघ कुदरत सूं ई करारौ बण्योड़ौ है इणरौ तौ वौ ई कांई कर सकै, पण डील में पीड़ रौ दरद तौ उणनै ई लखावै। जे वौ भूखौ अरड़ावतौ व्हैला तौ अेक सूं वत्ती घात नीं करैला। म्हारै थकां आपरी वारी नीं आवण दूं। धाप्यां पछै वौ आपनै अैल ई नीं पुगावैला। आप मन में धीजौ राखौ! मन में डिढ़ता अर साच व्है तौ कठै ई कीं जोखौ कोनीं। मिनख रौ खोळियौ धारचौ हौ तौ जीव मातर माथै दया विचारौ।

पिंडतजी ई मनाग्यांना विचार कर लियौ के बेटियां रौ ब्याव नीं करचां म्हैं तौ मरचा समांन हूं। जीवतौ ई नीं जैड़ौ। अर इण बिचाळै सिंघ मार न्हाकियौ तौ भरम तौ बण्यौ रैवैला। लोग कैवैला के बापड़ौ पिंडत जीवतौ तौ कीं न कीं जुगत अवस बिठावतौ। आ सोचनै वौ राजी-खुसी राजकंवर रै साथै व्हैगौ। ऊपरला मन सूं माथै ठोसौ राखतां कह्यौ — बख लागतां जे मिनख किणी री मदत नीं करै तौ बौ सिंघ अर सांप सूं ई गियौबीतौ है।

दोनूं खाथा खाथा चालण ढूका। राजकंवर री बात

साव साची निकळी । अेक वाळ्हा में आडौ पड़चौ सिंघ अर-ड़ावतौ हौ । उणरा आगला दोनूं पंजां में थोर रा कांटा भागगा हा । राजकंवर रै पाखती जातां ई वौ नीठ बैठौ व्हियौ । आंख्यां में आंसू ढळकावतौ कैवण लागौ — थांरै पाखती कोई तीर कबांण व्है तौ म्हारै सांम्ही छाती मार दौ । औ कांटां रौ दरद म्हारा सूं सहन नीं व्है । के तौ म्हारौ दरद मेटौ के म्हारा प्रांण मेटौ । प्रांण नीं नीसरै इण खातर पड़चौ पड़चौ डाढूं हूं । सिंघ डाढ़ण लागै तौ बात साव खूटगी ।

पिंडतजी थोड़ा सा अळगा बांटका रै ओलै लुक्योड़ा ऊभा हा । राजकंवर नै निरांत सूं बातां करतां देख्यौ तौ वै ढुळक ढुळक उठै आयग्या । राजकंवर खांमचाई सूं कांटा काढ़ण लागौ ।

पंजा सूं कांटा निकाळतां ई जांणै जगजगता खीरा बारै निकळिया । तुरत पंजां री बळत मिटगी । सिंघ लप बैठौ व्हियौ । पूंछ हिलायनै राजकंवर रा पगां में दो तीन वळा लुट्यौ ।

राजकंवर पूछचौ — पंजां माथै हालणा में अबखाई आवती व्है तौ म्हैं मोरां माथै उखणनै थै माथै पुगाय दूं ।

सिंघ मुळकनै कह्यौ — असली सिंघ हूं तौ जीवूं जित्तै आपरौ औसांण पांतरूं कोनीं । जे घड़ी ताळ थें नीं आवता तौ म्हैं कुत्ता री मौत अरड़ावतौ मर जातौ । आज म्हनै नवौ जमारौ मिळियौ ।

थोड़ी ताळ रुकनै वौ फेर कह्यौ — आपनै म्हारी थै तांई

अेक तकलीफ तौ भळै करणी पड़ैला । उठै हीरा मोती अर मोहरां रौ अेक चरू गडियोड़ौ है, वौ म्हैं आपरै निजर करणी चावूं ।

राजकंवर कह्यौ — म्हैं इण लोभ री खातर औ कांम थोड़ौ ई करचौ । पण पिंडतजी वास्तै बात नांमी भरै पड़ी । आज तौ थें म्हारी लाज राख दी ।

तीनूं जणा वंतळ करता सिंघ री थै माथै पूगा । सिंघ आपरा कैणा रै मुजब पंजा सूं उकराळनै आखौ चरू वांरै हवालै कर दियौ । पछै राजकंवर रै सांम्ही देखनै जळजळी आंख्यां कैवण लागौ — कांटा काढ़ती वगत पंजा माथै आपरी आंगळियां रा परस सूं म्हनै म्हारी मां री याद आयगी । आपरा परस में म्हनै मां वाळी भावना लखाई । औ चरू तौ चीज ई कांई है ! म्हारै कनै परगट करण सारू बोल कोनीं । इण खातर आप म्हारा आंसुवां सूं म्हारै मन री बात समझ जावौ ।

आ कैयनै वौ सिंघ छबरां छबरां रोवण ढूकौ, जकौ ठमियौ ई नीं । राजकंवर दोनूं हाथां सूं आंसू पूंछतौ जावतौ अर सिंघ ठळाक ठळाक आंसू ढळकावतौ जावतौ ।

चारूं वेदां रै जांणकार पिंडतजी री निजर चरू माथै ही । वै मनाग्यांना हिसाब करण लागा के चरू में कित्तौ कांई माल व्है सकै । इण चरू रा धन में तौ सगळा चौखळा री कंवारी धीवड़ियां परणीज सकै । तड़कै सुगन ई नांमी व्हिया हा । रांम जांणै औ बटाऊ कित्ती पांती पटकावैला !

सेवट दोनूं जणा उटा सूं वहीर व्हिया । पिंडतजी माथै

चरू उखणण लागा तौ राजकंवर कह्यौ—आप बडेरा हौ, इण वास्तै पूजनीक हौ । म्हारै थकां आपरी बारी नीं आवै । औ भार उंचायनै म्हैं आपनै ठेट आपरै घरै पुगावूंला ।

पिंडतजी घणी ई पालापूली करी तौ ई राजकंवर आपरौ हठ नीं छोड्यौ । सेवट सिंघ पिंडतजी नै कह्यौ — आप मन में किणी बात रौ संकौ मत आंणौ । अै भार उखणण रै सिवाय चरू मांय सूं कोई पांती नीं पटकावैला । म्हैं जिनावर होयनै जकी बात सुभट समझग्यौ, वा हाल तांई आपरी समझ में नीं आई ।

सिंघ री बात सुणनै पिंडतजी कीं लचकांणा पड़्या । होळै सूं बोल्या — औ सगळौ धन आंरा परताप सूं ई हाथ लागौ । सगळौ ई राखै तौ म्हैं बरजणियौ कुण व्हूं ।

रांम जांणै कांई सोच विचारनै सिंघ कह्यौ — पिंडतजी बुरौ नीं मांनौ तौ अेक बात कैवूं ।

पिंडतजी माडांणी मुळकता थका कह्यौ — आपरी बात रौ म्हैं बुरौ मांनूंला, औ वेम आपरा मन में कीकर उपजियौ । अेक छोडनै बीस बातां कैवौ तौ ई म्हैं भूंडौ क्यूं मांनूं ।

सिंघ कह्यौ — आपरी निजर अर आपरौ उणियारौ देखनै म्हनै इण बात रौ अेलम व्हियौ के घणकरा मिनख म्हां जिना-वरां सूं हीण अर अधम व्हिया करै ।

पिंडतजी फीटा पड़नै कह्यौ — आप फरमावौ तौ बात साची ई व्हैला । हाथ री आंगळियां ई किसी सरीखी व्है । किणी रा जीव में तौ कुण जीव घालै । म्हैं तौ म्हारी जांण में आज दिन तांई किणी रौ बुरौ चींत्यौ कोनीं ।

राजकंवर देख्यौ के कठैई कोरी बातां बातां में बात नीं बध जावै, इण खातर अणजेज माथै चरू उखणनै उठा सूं वहीर व्हियौ । मौकौ देखनै पिंडतजी ई टुरग्या । सिंघ दोनूं जणा नै खासी भांय तांई पुगावण नै आयौ । ठेट मारग लग आयनै वौ आपरी थै सांम्ही मुड़ियौ । राजकंवर री बात याद करनै अेकलौ ई बड़बड़ायौ — जंगळ रा जिनावरां नै तीर कबांणां सूं अनाघात मारणिया ई मिनख है, औ कांटौ काढ़-णियौ ई मिनख है अर तिलक-छापा वाळौ औ पिंडत ई मिनख है ।

माथै चरू उखणियां बटाऊ रा बारा में सोचता सोचता पिंडतजी तौ गताघम में पड़ग्या । आपरा अणूंता लोभी मन रै जोड़ै करनै नापता तौ वांनै वौ अणूंतौ चात्रंग लखावतौ । हाल तांई औ भरोसौ नीं व्हियौ के औ चरू वांरै हाथ आय जावैला । के तौ औ असेंधौ बटाऊ साव बावळौ अर सितं-गियौ है । मारग में कठैई रूंगी आयगी तौ टूंपौ देयनै मार न्हाकैला । के औ पूरण अघोरी है — लोभ, स्वारथ अर डर में कीं समझै ई कोनीं । जिण ममता सूं वौ सिंघ रै कांटा काढ़िया, अैड़ी ममता तौ घरवाळां सूं ई नीं व्है । पिंडतजी पुरांणा सास्तर याद कर करनै उणरी पिछांण करण सारू घणा ई खपिया, पण कीं बात बणी नीं । इण भांत अण-चींत्या अमोलक खजांना रौ कुण त्याग कर सकै — पिंडतजी रै कीं समझ बैठी नीं । चरू तौ राजकंवर माथै हौ, पण उणरौ हजार गुणा बोझ पिंडतजी नै आपरै माथै लखायौ । पिंडतजी रै हाथ औ खजांनौ आवैला के नीं, बेटियां रौ ब्याव व्हैला

के नीं, पिंडतजी पूरण रूप सूं कीं निस्चै नीं कर सक्या ।

अर उठीनै राजकंवर तौ मन में अणूंतौ ई राजी हौ । जे मारग में सिंघ वाळी आ अणचींती तोजी नीं बैठती तौ आठ राजकंवरां रै भरोसै आयोड़ा इण बांमण री कीकर मदत बण आवती । आज तौ लाज बची पण बची ।

यूं न्यारा न्यारा सोचता विचारता अर भेळी बातचीत करता वै दोनूं जणा आधी ढळियां अेक बेरा माथै आया । पांणी पीयां पछै राजकंवर आगै हालण रौ मतौ करयौ तौ पिंडतजी कह्यौ — म्हैं बूढ़ौ आदमी हूं, म्हारी ऊमर में ई अेकण सागै इत्तौ पैंडौ नीं करयौ । बिना बिसाई खायां हालणौ दौरौ है । इण सूं ठावकी ठौड़ फेर कांईं व्है । थोड़ा हाडका पाधरा करलां । भांभरकै वैगा ऊठनै फेर वहीर व्है जावांला । पछै आपरी मरजी ।

इत्ती देर साथै रह्यां बटाऊ रै सुभाव रा बारा में पिंडतजी आ बात तौ आछी तरह जांणली ही के वांरै थाकैला रौ केणा सूं ई औ बिसाई वास्तै ठैरैला । अर वांरी बात साव साची निकळी । राजकंवर कैतां पांण हुंकारौ भर लियौ । हुंकारौ भरतां ई वौ तौ बेरा री पाज माथै निसंक होयनै सूयग्यौ । हीरा-मोत्यां वाळौ चरू पगांतियै पड़्यौ हौ । सूतां ई वौ तौ घोर खांचण ढूकौ । अर पिंडतजी सूवणा रौ मिस करनै सूय तौ गिया पण वांरी आंख्यां में नींद कठै ! वै तौ अणूंता आळ-जंजाळां में फंसग्या । बीच बीच में सास्तरां रा केई मंतर घोखिया, पण वांरा जीव नै सांयत नीं मिळी ।

पिंडतजी मन में विचार करण लागा के धन री जड़ ठेट

काळजा में व्है । जे म्हनै नींद आय जावै अर औ बिचाळै जागतै चरू उखणनै ढळ जावै तौ म्हांमें कैड़ी कुजरबी बीतै । कांई ठा औ घोर खांचण रौ मिस ई करतौ व्है । किणी रा जीव में कीकर जीव घालीजै । वांनै तौ आपरा जीव रौ ई पतियारौ कोनीं, पछै दूजा रै मन री कुण कांई कै सकै । धन सूं किणनै परीत नीं व्है । पण औ चात्रंग ठगोरौ हाल तांई आपरौ साचैलौ सुभाव परगट नीं करचौ । जे औ नींद रौ मिस करतौ भच देणी ऊठनै म्हनै बेरा में थरकाय देवै तौ पछै म्हांमें कैड़ी भूंडी बीतै ।

थोड़ी ताळ में ई पिंडतजी नै पूरौ निस्चै व्हैगौ के आज तौ बेरा में पड़चां ई सरैला । धन अर प्रांण दोनूं गमावणा में अबै कीं मीणमेख नीं । आपरौ जाब्तौ आपरै कनै । आप मरै तौ बाप किणनै याद आवै । बिना कपट व्हियां औ इत्ती भांय चरू उखणनै क्यूं आवतौ । महा छळगारौ ठगारौ कठारौ ई !

पिंडतजी खमखरी खायनै भच बैठा व्हिया । अर घोर खांचता उण वटाऊ नै बेरा में थरकावता इज निगै आया । माथै फेर मोसौ मारचौ—अबै बेरा रै मांय जायनै सावळ घोर खांचजै ।

पछै धूजतै हाथां धन रौ चरू माथै उखणनै वेदां रा मंत्र घोखता आपरै गांव रौ मारग लियौ । घड़ी घड़ी मन नै समझावता के आज तौ बचिया पण बचिया । भरोसा रौ जमांनौ ई कोनीं । कुण जांणै के इण अबूझ बावळा मिनख रा पेट में हाथ हाथ लांबी छुरियां व्है सकै । मिनख नै

आपरी छींयां रौ ई भरोसौ नीं करणौ चाहीजै । म्हैं कित्तौ भोळौ हूं जकौ असैंधा बटाऊ माथै विस्वास करचौ । बेटियां रै भाग रौ बचग्यौ, नींतर आज मरणा में कीं कसर बाकी नीं ही ।

पिंडतजी नै भळै अेक वेम उपजियौ के अैड़ा दुस्टी कोई सोरै सास मरचा नीं करै । ठालौ-भूलौ लारै रौ लारै दौड़नै आयग्यौ तौ म्हनै जीयामौत मार न्हाकैला । आ सौचनै अेकर तौ वै अणूंता आंचै दौड़चा । पण बुढ़ापा रै कारण सौ अेक पांवंडा दौड़तां ई हांफणी चढ़गी, सास चढ़ग्यौ । वांनै मतै ई ढबणौ पड़चौ, खेजड़ी रै हेटै ऊभनै लारै जोयौ के कठैई वौ आवै तौ नीं है । अळगी भांय लग कोई चिड़ी रौ बिचियौ ई आवतौ नीं दीस्यौ जद जायनै वांरौ काळजौ ठरचौ ।

अर उठीनै पांणी माथै पड़तां ई जोर सूं हबिदौ सुणियौ तौ राजकंवर री नींद तूटी । आपौ संभाळियौ । हाबगाब होयनै तिरण सारू झांपळियां मारी । दो तीन गुचळकिया खायां पछै बातड़ी बख में आयगी । पैलौ ई विचार औ आयौ के सिरकतौ सिरकतौ वौ आपै ई बेरा में गुड़ग्यौ । पण भगवांन सहाय करी के प्रांण बचग्या । पिंडतजी हबिदौ सुणनै अवस जाग्या व्हैला । बारै निकाळण सारू अबारूं उपाव करैला । थोड़ी तांळ तांई तौ वौ पिंडतजी रा उपाव नै उडीकतौ रह्यौ । पण उणनै कीं खटपट नीं सुणीजी तौ वौ जोर जोर सूं हेला पाड़चा — पिंडतजी, औ पिंडतजी !

पिंडतजी उठै व्है तौ सुणै । वै तौ खेजड़ी हेटै ऊभा बिसाई खावता हा । पगां गोडै पड़चा चरू नै देखनै वै विचार

करचौ के अेकर सगळौ धन उंधायनै देखूं तौ सरी । खांधा माथायली धोतड़ी विछायनै वै चरू खाली करचौ । धन रौ नजारौ देख्यौ तौ वै देखता ई रह्या । हरख सूं दो तीन बार मूंफाड़ फाड़नै कह्यौ — दुनियां में भगवांन है तौ खरी, दुनियां में भगवांन है तौ खरी । सेवट गरीब रौ हेलौ सुण्यौ । अर हेलौ ई अैड़ौ सुण्यौ के सात री ठौड़ सात सौ छोरचां रा थाट सूं ब्याव करूं तौ ई औ धन नीं खूटै । म्हैं खुद बांमणी थकां ई मन करूं जित्ता ब्याव भळै कर सकूं उणमें अबै घणौ कस को रह्यौ नीं ।

पण इण बिचाळै ई अेक नवी बात वांनै फेर सूझी — लाख रिपियां री रसम अदा करनै राजव्यास रै पद पूग जावूं तौ पछै कांई पूछणौ ! अेक मोती रा मोल में औ पद मिळै । चरू में पाछौ धन घालती वगत वै दो तीन वार बड़बड़ाया : म्हैं राजव्यास बणूंला, राजव्यास बणूंला । अर राजव्यास रा मंसोबा बांधता वै फेर खाथा खाथा आपरै गांव सांम्ही वहीर व्हिया ।

अर उठीनै बेरा में थरकीजियोड़ौ राजकंवर बेरा सूं बारै निकळण री तजबीज सोचण लागौ । तिरतां तिरतां कायौ होयनै वौ अेक खोखाल में वड़नै बैठग्यौ । बेरौ अैड़ौ सफीट बंधियोड़ौ हौ के हाथ भरचौ ई ऊंचौ चढ़णी नीं आवै । पांणी रै मथारै पक्कौ भाटौ व्हैणा रै कारण दो तीन खोखालां ही ।

बूढ़ा पिंडत रै राजव्यास री अणचींती तोजी सजी तौ बेरा सूं बारै निकळण सारू राजकंवर रै भाग री ई जुगत

बैठगी । लक्खी बिणजारा री बाळद उण बेरा रै गळाकर नीसरी तौ वौ आपरा रथ सूं उतरचौ । आदेस करचौ — आज सिञ्च्या तक पड़ाव अठै ई करांला । औ बेरौ छोडियां धकै बाईस कोस तक पांणी कोनीं । बाळद नै सावळ पाय, साथै पखालां, लादियां अर दीवड़ियां भरलौ ।

लक्खी बिणजारा रै साथै बेरा सींचण रा सगळा संज हा । आदेस मिलतां ई लाव, चड़स अर पंजाळी बेरा माथै आई । अर हांकरतां बेरौ जुतियौ । खांमीड़ौ सरण रै आयेटै पूगौ के सिचारू बेरा रै मांय भांकियौ, औ कांई नवौ तोतक ! चड़स रै मांय कोई मिनख बैठोड़ौ दीसै । वौ डरचौ । खांमीड़ा नै बळद ढाबण रौ कह्यौ । पछै बेरा में भाळनै पूछ्यौ — थूं कुण है, कोई भूत के पलीत ?

चड़स मांय बैठचौ मिनख ऊंचौ मूंडौ करनै कह्यौ — म्हैं नीं भूत हूं अर नीं कोई पलीत । थांरै सरीसौ ई मिनख हूं । रात रा पाज माथा सूं सूतौ सूतौ नींद में मांय थर-कीजगौ । इण चड़स रौ भंग देखनै मांय बैठग्यौ । आपनै कीं तकलीफ व्ही तौ माफी चावूं ।

सिचारू कह्यौ — भाया, इण में तकलीफ री किसी बात ! मिनख ई मिनख रै वगत माथै आडौ आवै ।

पछै वौ खांमीड़ा नै कह्यौ तौ वौ बळद हांकिया । राजकंवर पाज माथै चढ़तां ई अठी-उठी जोयनै पूछ्यौ—अठै अेक बूढ़ा पिंडतजी नै को देख्या नीं ? वै म्हारै साथै हा ।

पण उठै पिंडतजी व्है तौ कोई देखै । मारग ढळतां रा खोज सुभट दीखता हा । राजकंवर तुरत लखग्यौ के वौ

मतै बेरा में नीं पड़्यौ । पिंडतजी धन रा लोभ में घात करग्या । वै म्हनै सावळ पिछांण नीं सक्या । मन रा भरम भरम में औ खेलौ करग्या । तौ ई वौ किणी नै आपरा मन री बात दरसाई कोनीं ।

पाज सूं ताचकनै सीधौ पांणी माथै पड़ण सूं राजकंवर रौ डील जरकीजगौ हौ । बारै आतां ई उणरौ सांधौ सांधौ कुळण लागौ। जांणै कोई मोटा गिड़ा रै हेटै उणरौ डील दबग्यौ व्है ।

बिणजारौ सतवाड़ा तांई उठै ई डेरौ राख्यौ । राजकंवर री सावळ पाटा-पीड़ करी। आठवै रोज राजकंवर पूरण रूप सूं भलौ-चंगौ व्हैगौ । बिणजारौ वहीर व्हैती वगत राजकंवर नै अेक भुळावण फेर दी । कह्यौ—औ मारग टाळनै थें जीवणो बाजू जाजौ । इण मारग रै धकला राज री सींव में वड़नां ई थांनै राज रा सिपाई पकड़ लेवैला । लारला दस बरसां सूं कोई बटाऊ उण राज री सींव में पग ई नीं धरै। उणरी राजकंवरी अेक अनोखौ ई प्रण लियौ है । नौ दिन निरणा सिंघ रा पींजरा में पकड़ियोड़ा वटाउवां नै न्हाकै। जकौ सूरवीर के तौ आपरी ताकत सूं सिंघ नै मारै के सिंघ खुद उणरा तेज आगै हार मांनलै, फगत उण मिनख रै साथै वा ब्यात्र करैला ।

बिणजारौ अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै धकै फेर कैवण लागौ — इण प्रण रा थोथा गुमेज में वा राजकंवरी सैकड़ूं मिनखां नै हकनाक मराय दिया । भूखौ सिंघ होकारां भरतौ ताचकनै हत्थळ वावै अर थर थर धूजतौ मिनख मरती वगत

कूकै जद गोखड़ा में बैठी राजकंवरी खिलखिल हंसै । उणरौ हंसणौ ढबियां पैली पैली सिंध पींजरा वाळा मिनख री बोटी बोटी खाय जावै । भूल में ई इण राज री सींव में पग मत धरजौ । पछै रोयां - रींक्यां कीं कारी नीं लागैला ।

बिणजारा री वाजिब सीख रौ औ नतीजौ व्हियौ के राजकंवर उणरै मूंडै - मूंड ई कह्यौ — आपरी घणी महरबांनी के म्हनै मरण सूं बचण री सीख दीवी । पण आ बात सुण्यां पछै तौ म्हनै उण राज में जावणौ ई पड़ैला । औ ई कोई जुलम है । म्हनै अचुंभौ व्है के उठारी रैयत चुप - चाप इण अन्याय नै भेलै कीकर है ? के तौ म्हैं औ अन्याय मेटूंला अर के भूखा सिंघ नै हार मनावूंला । मन में साच, डिढ़ता अर निसंकता व्है तौ सिंघ ई कीं नीं विगाड़ सकै । आ बात सुण्यां पछै अठै अेक पलक ई ढबणौ म्हारै वास्तै अधरम है । म्हैं हाथ जोड़नै माफी चावूं के म्हैं आपरी भुळावण नै टाळूं । सगळी बाळद नै खोटी करनै थें म्हारै ओखद करी, इणरौ ताजिंदगी औसांण मांनूंला । अबै आप हुकम दिरावौ तौ म्हैं उण राज री सींव में वड़नै कीं न कीं तूमार जोवूं ।

बिणजारौ कह्यौ — म्हारै पालतां पालतां मरण रौ तूमार जोवौ तौ आपरी मरजी । पण मरयां पछै पाछौ जीवण रौ तूमार जोवण री मन में ई रैवैला ।

राजकंवर कह्यौ — म्हनै तौ मोड़ौ - वेगौ अेकर मरणौ है, जकौ म्हैं तौ मरणा नै अजोगती बात नीं गिणूं । जिणनै कदैई नीं मरणौ व्है वौ भलांई अैड़ी बातां माथै विचार करै तौ उणरी मरजी ।

राजकंवर तौ सेवट उणरै जची ज्यूं ई करी । अर उण राज रा सिपाई वांनै ज्यूं कह्योड़ौ हौ त्यूं करयौ । राज रौ कांठौ लांघतां ईं वै राजकंवर नै पकड़ लियौ । सांकळां सूं काठौ जरू करनै राज दरबार में लेगा । राजकंवर घणौ ई कह्यौ के उणनै बांधण री कीं जरूरत कोनीं । मन रै मतै ई जठै कैवौ उठै हालण नै त्यार हूं । किणी सिपाई री निगरांणी री ई जरूरत कोनीं । पण सिपाई उणरौ कैणौ नीं मांन्यौ । बरजतां बरजतां जरू कर दियौ ।

राजदरबार में पूग्यां पछै वौ दो घड़ी तांई उणी भांत बंध्यौ रह्यौ । हाथी सिंघ रौ पींजरौ खांचनै दरबार में लायौ उण वगत उणरी सांकळां खोलीजी । नौ दिनां री भूख सूं तड़फा तोड़तौ सिंघ मार हौकारां माथै हौकारां करतौ हौ । अळगा ऊभां रा ई थरणा कांपता हा ।

दरबार में अणगिण मांनखौ ऊभौ हौ । राजकंवरी ई साथणियां रै साथै सब सूं आगै गोखड़ा में बैठी ही । राजकंवर रै पाखती चार हथमार आया । बाहूड़ा झालनै वै उणनै सिंघ रा पींजरा में न्हाकण सारू खांचण लागा तद वौ हूचटौ देयनै आपरा हाथ छुडाय लिया । मुळकनै कह्यौ — म्हैं म्हारै पगां हालनै पींजरा में जाय सकूं । थांनै मदत करण री जरूरत कोनीं । म्हैं थांरौ औ औसांण आगला जलम में कद उतारूंला ।

पछै वौ अड़वड़ता अणगिण मांनखा नै हाथ ऊंचौ करनै कंवण लागौ — भूखा सिंघ री हत्थळ सूं मरण वाळा मिनख रौ तमासौ जोवण सारू थें लोग अठै भेळा व्हिया हौ । अबै वौ तमासौ सरू होवण वाळौ है, थें आखता मत व्हौ । म्हैं

थांनै अबै घणा खोटी नीं करूंला । पण इण तमासा रै पैली म्हैं थांनै अेक बात कैवणी चावूं । थें अलेखूं मिनख आज भेळा व्हियोड़ा हौ । जे अेकण साथै सगळा फूंक ई मारौ तौ लांठा सूं लांठा राज रौ पायौ उलट सकै । म्हनै अचूंभौ आवै के थें कोड सूं औ तमासौ कीकर देखौ ! इण भांत मिनख रौ मरणौ आपरी आंख्यां अणूंतै कोड देखणां सूं तौ पैला थां लोगां रौ मरण है । जीवतौ मिनख आंख्यां सांम्ही औ अन्याव कदैई नीं देख सकै । म्हैं तौ म्हारी जांणूं थांरी बातां थें जांणौ । इण अन्याव नै तमासा ज्यूं बरतौ तौ मिनख रौ खोळियौ लाजै । अबै म्हैं चलायनै पींजरा में जावूं । थें खुसी खुसी औ खिलकौ जोवौ ।

मिनख नै पींजरा सांम्ही आवतौ देख्यौ तौ सिंघ जोर सूं पींजरा माथै हत्थळ मारी । जोर जोर सूं गरजियौ । देखण वाळां रा सास ऊंचा चढ़ग्या । आज पैली वां लोगां नै इण भांत सीख देवणियौ मिळचौ नीं हौ । सीख समझ में आयां पछै ई वै जोर कांई करै । है तौ औ जबरदस्त अन्याव । आंख्यां सांम्ही मिनख नै यूं मरतां देखां अर कीं बदळौ नीं लै सकां, अैड़ा जीवणा में धिरकार है । के इत्ता में पींजरा री आगळ खोलनै वौ मिनख मांय पग धरचौ । सिंघ अेकर जोर सूं गरजियौ । हत्थळ मारती वगत सिंघ उणरै सांम्ही मूंडौ करचौ । तौ वौ अेकदम धीमौ पड़ग्यौ । हौकरां करणी मुळगी ई बंद करनै उणरै सांम्ही पूंछ हिलावण लागौ । उणरा पगां में दोय तीन वळा लुटियौ ।

लोगां औ खिलकौ देख्यौ तौ वै देखता ई रैग्या । साचा

मिनख रौ तेज अैड़ौ ई व्हिया करै । गोखड़ा में बैठी राज-कंवरी उणरै सांम्हौ देखनै मुळकी । लोग खुसी में बावळा व्हैगा । सिंघ मन में पिछतावौ करण लागौ के जे खुद राज-कंवर पींजरा में आवै तौ भलां वौ अेक वार ई हौकारा करै !

राजकंवर लाड सूं सिंघ रा डील माथै हाथ फेरण लागौ । पछै पींजरा रौ किंवाड़ खोलनै वौ सिंघ नै बारै काढ़ियौ । बारै आवतां ईं लोग तौ बख लागौ उठीनै ई मतै मतै दौड़्या । दरबार में खळवळ मचगी । राजाजी दौड़णी चायौ तौ वांरा तौ उठै ई पग चिपग्या । थर थर धूजता कैवण लागा — यूं कायरां री गळाई दौड़ौ कांई हौ । औ सिंघ कीं नुक्सांण नीं करैला । भला आदमियां पाछा आय जावौ, पाछा आय जावौ ।

पछै राजाजी राजकंवर रै सांम्ही देखनै धूजता कंठ सूं कैत्रण लागा — आप किणी बात री संका मत करौ, म्हैं आज ई राजकंवरी साथै आपरौ ब्याव कर देवूंला । म्हारै माथै विस्वास करौ, इण सिंघ नै जल्दी पाछौ पींजरा में घालनै सैंठी आगळ भ्फड़दौ । लोग डरै घणा । देखौ म्हैं तौ अेकण ठौड़ ऊभौ हूं । पण रैयत रै डरणा रौ ध्यांन राजा ई नीं राखैला तौ पछै कुण राखैला ।

राजकंवर राजा रै सांम्ही जोयौ तौ वौ भूंडै ढाळै थर थर धूजतौ हौ । राजा धूजता कंठ सूं भळै कह्यौ — आज सिञ्या पैली पैली सांतरौ सावौ देखनै म्हैं आपरौ राजकंवरी साथै ब्याव कर देवूंला । आप मन में किणी बात रौ संकौ मत लावौ म्हारौ कैणौ मांनौ, इण सिंघ नै पींजरा में वाड़दौ ।

लोग डरै घणा ! भलां सिंघ सूं डरण री कांईं बात ! पण अबूझ लोग इत्ता समझै कोनीं ।

राजकंवर पडूत्तर दियौ — म्हैं तौ म्हारा हाथ सूं इणनै पींजरा में रोकूं कोनीं । इणरी मरजी व्है जठै औ जा सकै । राजकंवरी घणा खेला कराया, उणनै आपरा रूप माथै गुमेज अर भरोसौ व्है तौ सिंघ नै पींजरा में घाल देवै ।

राजकंवरी तौ सिंघ रै बारै आतां ई बेचेतै व्हैगी ही । सिंघ दोय तीन वळा राजकंवर रै पगां में लुटनै जंगळ री सोय करी । नगर रा किणी मिनख अर जीव नै वौ हांण नीं पुगाई । पण तौ ई केई मिनखां रौ चित्त उपड़्यौ । उण में घणकरा सिकारी हा ।

सिझ्या रा गुदळकियै सावै धूमधांम सूं राजकंवर रौ ब्याव राजकंवरी रै साथै व्हैगौ । राजकंवरी रौ जीव तठा लग ई ठांणै नीं आयौ । वा घड़ी घड़ी झिझकनै सिंघ सिंघ वेलण लाग जावती ।

पण चंवरी री वगत अेक अजोगती बात फेर बणी । राजव्यास तिलक करण सारू वींदराजा रै मूंडा सांम्ही भाळियौ तौ वौ थर थर धूजण लागौ । अरे ! औ तौ धन रौ चरू दिरावणियौ सागै ई बटाऊ ! बेरा सूं जीवतौ बारै निकळनै औ तौ राजकंवरी सूं ई ब्याव कर लियौ ! अबै तौ म्हनै घांणी में पीलाय देवैला । मार मारनै फेर मारैला । पिंडतजी घणी ई चेस्टा करी तौ ई धूजता हाथ सूं लिलाड़ माथै तिलक नीं कर सक्या ।

राजकंवर वांनै थावस बंधावण सारू मीठी गळ में कह्यौ :

पगां लागूं माराज !

पछै फेर होळै सूं कह्यौ — आप धीरज राखौ, म्हैं आपनै किणी भांत री हांण नीं पुगावूंला ।

पण पिंडतजी री धूजणी तौ ई नीं ढबी ।

तीजौ राजकंवर

तपसी रै अठा सूं बिछड़तां ई तीजोड़ा राजकंवर रै साथै अेक अैड़ी अनोखी बात बणी के सुण्यां अेकाअेक किणी नै ई विस्वास नीं व्है । वौ मारग में सोचतौ जावतौ के अेक व्हैणा सूं ई कोई निबळौ नीं व्है जावै, आभा में सूरज किसा दो है ! सगळी दुनियां में उजास पूरै । चांद किसा दो है । सगळी दुनियां में चांनणी छितरावै । तारा अणगिण अलेखूं है पण आप सूं आगै उजास री मार कोनीं ।

इण भांत रा विचारां में रूंध्योड़ौ वौ मारग चालतौ हौ के उणनै आपरै धकै अेक पंखेरू री छींयां दीसी । वौ ऊंचौ जोयौ । अेक चील ऊपर चकारा देवती ही । थोड़ौ सौ आगै जावतां ई बिल सूं अेक ऊंदरौ बारै निकळियौ । चील उण माथै ताचकी । टूंच में झिलियोड़ी चीज छिटकनै पाधरी राजकंवर रा गळा में आयनै पैरीजगी । राजकंवर झिझकियौ । गळा मांयली चीज हाथ में लेयनै देखी । नवलखौ हार !

अर चील ऊंदरा माथै झपटी तौ ऊंदरौ तुरत पाछौ बिल में वड़ग्यौ । चील पाछी ऊंची उडनै गिगन में चकारा देवती री । राजकंवर ई देखतौ रैग्यौ । अणचींतो आ कांई बात बणी । हार नीं तौ गळा में राखणी आयौ अर नीं फेंकणी आयौ । राजकंवर नै अमोलक हार हाथ आवण रौ हरख नीं होयनै फगत इचरज व्हियौ । रांम जांणै चील औ हार कठा सूं उचकायौ ! क्यूं उचकायौ ! उचकायौ तौ म्हारा गळा में इज क्यूं आयनै पड़चौ !

हार रा बारा में यूं भांगतौड़ बिठावतौ हौ के मारग में उणनै अेक चिड़ीमार सांम्ही धकियौ । उणरा जाळ में अेक तीतर फंस्योड़ौ हौ । तीतर जाळ रै मांय फड़फड़ावतौ हौ । चीं चीं करनै कुरळावतौ हौ । राजकंवर उणरौ कुरळावणौ सुण्यौ तौ उणनै अणूंती दया आई । चिड़ीमार नै पूछ्यौ— भाया, थारा पेट री खातर थूं आं भोळा पंछियां रा प्रांण क्यूं लेवै ।

चिड़ीमार कह्यौ — म्हैं नीं मारूं तौ कांई, आंनै कोई न कोई तौ मारैला ई । पछै म्हैं ई क्यूं चूकूं । आज तौ घणी ई माथा फोड़ी करी, तौ ई औ अेक तीतर हाथै आयौ । म्हारै घरै सात जीवां रौ भारीगरौ है । इण अेक तीतर सूं कीकर पार पड़ैला, म्हनै तौ इण बात रौ सोच लागौ । अर आप कैवौ के म्हैं आं भोळा पंछियां रा प्रांण क्यूं लेवूं, पंछियां नै भोळा तौ आप ई कह्यौ । अैड़ा चात्रंग है के जाळ रै तौ नैड़ा ई नीं आवै । खप खपनै मर जावूं तौ ई म्हारौ डाव नीं लागै । जाळ रा दांणा री तौ रांम जांणै आंनै वास आवै । पंछियां जैड़ी चात्रंग जात तौ इण दुनियां में ई कोई कोनीं ।

आपरौ ग्यांन दरसाय नै वौ ही ही हंसण लागौ । जांणै कागलौ हंसियौ !

राजकंवर दूजी भिकाळ करणी वाजिब नीं समझी । सीधौ पूछ्यौ — थूं कीं करयां ई इण तीतर नै छोडै ।

चिड़ीमार कह्यौ — छोड़ूं क्यूं नीं । म्हारा गुजारा लायक कीं चीज देवता व्है तौ अेक री ठौड़ दस वळा छोड दूं ।

आ बात करती वगत उणरी निजर राजकंवर रै गळा रा नवलखा हार माथै पड़ी । वौ काळा उणियारा रै बीच धौळा दांत काढ़तौ कह्यौ — इण माळा रा दस मिणिया देवौ तौ औ तीतर आपरै सांम्ही अठै इण वगत ई छोड दूं ।

राजकंवर मन में राजी व्हियौ के औ तौ सस्तौ ई सोदौ व्हियौ । वौ तौ लप दस मोती गिणनै भिलाय दिया । पछै भुळावण देवतां कह्यौ — अबूभ जांणनै थनै कोई ठग नीं लेवै । अेक अेक मोती लाख लाख रिपियां सूं वत्तौ है । थूं अबै किणी पंछी नै मत मारजै ।

चिड़ीमार लाख री बात सुणतां ई डरचौ । मोती पाछा भिलावतां कह्यौ — अंदाता, म्हैं अैड़ा अमोलक मोत्यां रौ कांई करूं । म्हैं तौ गुजारा सारू दोय सेर धांन मांगतौ हौ । आपरा अै मोती पाछा लिरावौ ।

तद राजकंवर कह्यौ — कित्ता ई अमोलक व्हैतां थकां ई आं मोत्यां रौ कीं न कीं मोल अवस है, पण इण तीतर रै प्रांण रौ कांई मोल ! सगळौ हार देवूं जे थूं मरचोड़ा तीतर में पाछा प्रांण घाल दे तौ ! अपां इणरै प्रांणां री कीमत नीं आंका । पण इणनै पूछ के दुनियां रा राज साटै ई औ मरणौ चावै कांई ।

इत्ता में तीतर बोल्यौ — आप तौ फगत दुनियां री बात करौ, प्रांणां साटै तीनूं लोकां रौ राज मिळै तौ ई कांई कांम रौ । पण कांई करां मिनख रा हुनर आगै म्हांरौ बस नीं चालै । म्हांरा प्रांणां नै धूळ सूं ई सस्ता वौ बणाया ।

तीतर री बात सुणनै राजकंवर री आंख्यां जळजळी व्हैगी ।

वौ गळगळा कंठ सूं कह्यौ — छोड दै बाबा, इण तीतर न तुरत छोड दै । जाळ रै मांय इणरौ जीव तड़फै ।

चिड़ीमार ओछी काटी । राजकंवर रै कैतां ई तीतर नै जाळ सूं छोड दियौ अर अंटी में दसूं मोती खसोलनै वौ आपरै मारग वहीर व्हियौ ।

तीतर राजकंवर रै पाखती आयनै कह्यौ — म्हैं इण देस रै तीतरां रौ राजा हूं । आप म्हारा प्रांण बचाया । भगवांन करै आप में कदैई विखौ नीं पड़ै । सता पड़ ई जावै तौ उण वगत म्हनै चितारज्यौ । म्हारी सरधा मुजब पाछौ बदळौ उतारणी चावूं ।

राजकंवर मुळकनै कह्यौ — थारा बोल हमेसां याद राखूंला । जे अैड़ी ई कोई वगत आई तौ थनै अवस याद करूंला । म्हैं तौ इण बात नै मांनूं के मौका माथै ईली ई जकौ कांम सार सकै वौ हाथी सूं ई बण नीं आवै ।

पछै तीतर कह्यौ—आपरौ हुकम व्है तौ म्हैं अबै जावूं । म्हनै घरै उडीकता व्हैला । रमण नै बारै निकळियौ हौ के इण जाळ में फंसग्यौ । म्हारा साथी म्हनै घणौ ई बरज्यौ, तौ ई म्हैं वांरी बात नीं मांनी, जिणरौ हाथौहाथ परचौ भुगत लियौ । दो टांगां माथै हालणियौ औ जीव मिनख, दुनियां में कैड़ा कैड़ा जाळ रचिया है । सगळी दुनियां माथै राज करै तौ ई उणरी तिसणा नीं बुझी । लाखूं मण धांन निपजायनै ई उणरी भूख नीं मिटी तौ म्हां भोळा जीवां नै मारचां उणरै कांई सांधौ लागैला ! आप आपरा बेलियां नै समझावौ कोनीं के वौ जिनांवरां री क्यूं हित्यावां करै ।

राजकंवर कह्यौ — समझावूंला, जरूर समझावूंला । पण मिनख आपरो समझ सूं ई चालै, दूजां री समझ कद मांनै ! थूं जांणै के म्हैं समझावणा में कीं कसर छोडूंला ।

तीतर उडतां उडतां ई कह्यौ — आप जैड़ी समझ रा मिनख इण दुनियां में व्है जावै तौ वांनै कीं समझावण री ई जरूरत कोनीं । पछै म्हैं भोळा जिनावर मिनख सूं कदै ई नीं डरां ।

राजकंवर नै तीतर री बातां साव साची लागी । वां बातां सूं उणरौ मन भारी व्हैगौ । दिलगोर व्हियोड़ौ मारग चालतौ हौ के उणनै गैंगाट करती नदी रौ कळकळाटौ सुणो-ज्यौ । वौ मारग सूं टळ परौ नै नदी रो आवाज कांनी वहीर व्हियौ । नदी री आवाज सुणतां ई उणनै तिरस लखाई । वौ मन में सोचतौ जावतौ के पंख, पग अर जीव बिना दुनियां में दो चीजां हरदम चालती रैवै — हवा अर नदियां । कुदरत री छिब रौ आंणद कुदरत में ई है ।

राजकंवर नदी रै ढावै पूगौ तौ उठै कांई देखै के अेक मच्छीमार नदी सूं जाळ बारै खांचै । जाळ रै मांय अेक लांठी माछळी छटपटाट करती बारै आई । राजकंवर सोच्यौ — मिनख नै औ कांई हिड़कियौ सूझ्यौ के वौ गिगन में उडता पंखेरू नै जीवतौ छोडै नीं, धरती माथै विचरण करता जीव नै देख्यां छोडै नीं अर पांणी में तिरता जीवां नै बख लाग्यां जीवता छोडै नीं । कांई वौ आपरा भाग में आ ई बात लिखा-यनै लायौ के दूजा जीवां रौ जीव लियां बिना वौ किणी भांत जीवतौ नीं रै सकै । वौ धरती री छाती चीरनै अणमाप

धांन उगावै, भांत भांत री रसाळां निपजावै तौ ई उणरै पेट रौ खाडौ नीं भरीजै। औ आपरा जीव री गळाई दूजा जीव नै क्यूं नीं गिणै, आपरा लोई रै उनमांन दूजा रा लोई नै क्यूं नीं जांणै, आपरा सास रै सरीखौ दूजा रा सास नै क्यूं नीं मांनै अर आपरी पीड़ रै समांन दूजा री पीड़ नै क्यूं नीं कूंतै ? पछै मिनख रौ मिनखीचारौ किण बात में ! जे ग्यांन रा उजागर मिनख सूं ईं अै वातां बण नीं आवै तौ पछै जिनावरां नै दोसण देवणौ बिरथा !

वौ मच्छीमार रै पाखती जायनै कह्यौ — म्हारा भाई, पांणी में तिरती मछरां करती इण माछळी नै जाळ में क्यूं फांदी ? आ थारौ कांई बिगाड़ करयौ।

मच्छीमार जाळ नै संवटतौ संवटतौ ई बोल्यौ — अैड़ी भोळी बात आप म्हनै कांई पूछी ! आप किसी दुनियां में बसौ ! इत्ती ई बात नीं जांणौ के आ तौ म्हारी रोजी है। मछळियां मारनै नीं बेचूं तौ म्हारै घरवाळां रौ पेट कीकर भरीजै।

तद राजकंवर कह्यौ — बात तौ थारी साव साची। पण थोड़ी ताळ वास्तै सोच तौ खरी के मछळियां भूखा मरती व्है तौ थूं थारै डील रौ मांस काटनै वांनै चुगा सकै कांई ! मरण रौ दुख तौ सगळा जीवां नै अेक सरीखौ व्है।

राजकंवर री बात सुणनै मछियारौ डग डग हंसियौ। हंसतौ हंसतौ ई बोल्यौ — आ बात म्हारै सोचण री नीं है, मछळियां रै सोचण री है। वांनै मरणौ आंहजौ लागै तौ वै अपारौ जाब्तौ करै। म्हनै म्हारी रोजी कमावणी है जकौ म्हैं कमावूं। मछळियां कांई सोचै अर कांई नीं सोचै, इणरौ

जिम्मौ म्हैं किकर लै सकूं ।

राजकंवर कह्यौ — मिनख रौ खोळियौ धारण करणवाळा नै सगळी दुनियां रौ जिम्मौ है । उणनै सगळां रै साथै मरणौ जीवणौ है ।

मछियारौ कह्यौ — म्हैं परतख मिनख हूं, पण म्हारौ तौ औ जिम्मौ कोनीं । म्हैं तौ म्हारा जीवणा सूं आगै कीं सोच ई नीं सकूं । सगळी दुनियां नै मारचां म्हारौ पेट भरीजैला तौ म्हनै मारणी पड़ैला । म्हारा पेट आगै तौ दुनियां घणी छोटी है ।

मछियारा री समझ रै परवांण उणरी बातां सात्र सीधी अर साची ही । पण मिनख आं साची बातां सूं कद ऊपर ऊठैला ! इण साच सूं ऊपर ऊठियां सूं ई तौ मिनख, मिनख बण सकै, नींतर वौ सदा जिनावर रैवैला ।

मछियारा री बातां सूं राजकंवर नै अेक नवौ ग्यांन व्हियौ के सगळी दुनियां सूं वौ कदैई न्यारौ नीं व्है सकै । इण दुनियां में कठै ई किणी ठौड़ हित्या व्है तौ वौ खुद हित्यारौ है, कठै ई कोई मिनख अन्याव करै तौ वौ खुद अन्यायी है, कठै ई किणी ठौड़ पाप व्है तौ खुद पैला पापी है, कठै ई कोई गरीब है तौ वौ पैला गरीब है अर इण दुनियां रा किणी खुणा में कोई दुखी है तौ वौ पैला दुखी है । उणरौ जिम्मौ फगत उण तांई सिवटियोड़ौ नीं है । उणरा जिम्मा री नीं कोई माठ है अर नीं कोई सींव ।

राजकंवर मछियारा नै सावळ समझावण री चेस्टा करतां थका कह्यौ — थूं कीं करचां इण मछळी नै पाछी नदी में

छोडग री बात मांनै ।

मछियारौ अड़काई जतळावतौ कह्यौ — म्हैं कोई मंगतौ थोड़ौ ई हूं जकौ किणी रै दियोड़ा सांम्ही हाथ पसारूं । भुजावां री कमाई नीं खावूं तौ म्हनै अपचौ व्है जावै । अर आज तौ किणी रौ कैणौ मांन ई लूं, पछै रोज रोज मनावण नै कुण आवैला ! सेवट म्हारै मांनणा सूं ई म्हारौ कांम सरैला ।

राजकंवर कह्यौ — थूं मंगता वाळी बात गिणाई तौ म्हनै ई जबाब में पाछी वैड़ी ई बात कैवणी पड़ै के इण मछळी रौ जीव किसौ थारौ है । आ मरनै थनै पाळै । इण सूं वत्ती मंगताई फेर कांई व्है । औ तौ थारी समझ रौ फरक है । थूं फगत अेक ई बात मांन लेवै तौ पछै सगळी बातां आप ई सलट जावै के दुनियां में आप जैड़ी पराय मांनणी । आपरै जीव रै समांन ई दूजा रौ जीव मांनणौ ।

मछियारौ फेर हंसनै जबाब दियौ—भलां आ बात ई दुनियां में कदै ई व्है सकै । आ तौ फगत कैवणा री बात है, करण री नीं । अै मछळियां किसौ आपरै जीव ज्यूं दूजा रा जीव नै जांणै । अै तौ पांणी में हरदम छोटा छोटा जीवां रौ भक्सण करती रैवै । इण खातर साची बात आ इज है के म्हारौ जीव तौ मछळियां नै खावण सारू बणियौ है अर मछळियां रौ जीव म्हारी रोजी कमावण सारू अर पेट भरण सारू बण्यौ ।

राजकंवर कह्यौ — आ तौ जिनावरां री कुदरती समझ है । पछै मिनख रै ग्यांन री कांई इदकाई ।

अबकी फेर मछियारौ जोर सूं डगडग हंसियौ । कह्यौ : भाया, म्हनै तौ थांरौ औ ग्यांन फगत ढपला अर छळछंद

ई लखावै । इण ग्यांन रै उपरांत मिनख कांम तौ वै इज करै जकौ जिनावर करै । म्हैं तौ मछळियां मारतौ मारतौ फगत आ बात जांणी हूं के मिनख अेक कपटी, जाळी अर ढोंगी जिनावर है । वौ दया नीं करै, दया रौ ढोंग करै, वौ धरम नीं करै फगत धरम रौ जाळ फैलावै । मिनख तौ कबूड़ा रौ ढोंग रचनै सिंघ रा सगळा कांम करै, दया ममता री झूठी बातां करनै सांप वाळी सगळी घातां करै । मिनख बिचै तौ सिंघ अर सांप ई घणा सावळ जकौ वै भलाई रौ दिखावौ तौ नीं करै । म्हैं तौ अेक छोटी सी बात जांणूं के दुनियां में कोई अमरता रौ परवांणौ लिखायनै नीं लायौ । जीवां नै मारतां मारतां अेक दिन खुद नै ई मरजांणौ है । मरयां पछै किणी नै नीं मरणौ । जीवण अर मरण रौ तौ आपस में मेळ है ।

मछियारा री बातां राजकंवर रै पूरी हीयै ढूकी । पण जाळ में लटपट लटपट करती मछळी रौ कस्ट उण सूं नीं देखीजियौ । वौ मछियारा नै हाथ जोड़नै कह्यौ — घरै लेजायां पैली अबारूं ई क्यूं इणनै संतावै । बातां करां जित्तै तौ जाळ नै पांणी में रैवण दै ।

मछियारौ लिलाड़ रै हाथ लगायनै कह्यौ — भाया, थूं तौ साव भोळौ अर अबूझ है । मरयां पैली अेकर इणनै जित्ती लटापट करणी है वा तौ करैला ई । भलांई अबारूं करौ भलांई पछै करौ । थारै कैणा मुजब तौ इणनै मरयां पैली दो वार लटापट करणी पड़ैला । पण तौ ई थूं कैवै तौ थारी बात मांन ई लूं ।

आ कैयनै वौ जाळ पाछौ पांणी में टेर दियौ । राजकंवर गळा मांयलौ हार मछियारा नै भिलावतां कह्यौ — म्हैं थनै लाखूं रिपियां रौ औ हार देवूं, थूं मछळियां मारणौ छोड़ दै तौ ।

मछियारौ हार नै आपरा हाथ में लेय मोत्यां नै देखतां कह्यौ — भाईड़ा, अबकी बात थूं पता री करी । पण तौ ई थूं है साव अधगेलौ ! पेट भरणा में कसर नीं रै तौ पछै कुण निकूच जीवां री हित्या करै । म्हनै जीव मारण रौ कोई आड़ौ के कोई कोड थोड़ौ ई है । म्हारा जीव नै पोखण सारू म्हनै आंरा जीव लेणा पड़ै । मिनख रौ जीव सै जीवां सूं ऊंचौ । उणरी खातर किणी जीव री हित्या करां तौ वौ पाप कोनीं ।

राजकंवर कह्यौ — क्यूंके वै मिनखां री गळाई भिकाळ नीं कर सकै, क्यूंके मिनखां री गळाई वै समरथ कोनीं ।

मछियारौ कह्यौ — बातां में अबै थारा सूं कुण पड़पै, कुण माथौ लड़ावै । पण औ मोत्यां वाळौ कांम थूं नांमी करयौ । अबै कदै ई सपना में ई मछळियां नीं मारूं । घर में कोकळ घणी । आंनै मारण रौ धंधौ नीं करां तौ जीवां कीकर ?

आ बात कैतौ कैतौ ई मछियारौ जाळ नै काढ़ियौ । मछळी नै पाछी नदी में छोड दी । पछै जाळ नै ई पांणी में वगाय दियौ । कह्यौ—औ थारै सांम्ही जाळ नदी में वगावूं । मिनख हूं तौ पाछौ इणनै हाथ में नीं भेलूं ।

राजकंवर हरख सूं कह्यौ — औ तौ म्हनै थारै माथै पूरौ विस्वास है । थारी बातां सूं आज म्हनै नवौ ग्यांन व्हियौ ।

आ कैयनै राजकंवर बहीर होवण वाळौ हौ के वा मछळी पांणी सूं मूंडौ बारै काढ़नै बोली — राजकंवर, म्हैं मछळियां री रांणी हूं। थूं म्हारा प्रांण बचाया। इणरौ ओसांण तौ कांई परगट करूं, म्हारौ जीव जांणै। कदै ई कोई अबखी पड़ जावै तौ उण वगत म्हनै चितारजै।

राजकंवर कह्यौ — इण में इत्ती भुळावण देवण री कांई जरूरत। वगत माथै थनै अवस चितारूंला। थे जिनावर वगत माथै जकौ भलौ कर सकौ, वौ मिनखां सूं कदै ई बण नीं आवै।

तीनूं ई जणा अणूंता राजी होयनै उठा सूं अळगा व्हिया। मारग चालतौ राजकंवर सोचण लागौ — जे चील री टूंच सूं अणचींत्यौ औ हार हाथ नीं लागै तौ तीतर अर मछळी रा प्रांण कीकर बचता। कुदरत रौ कोई कांम बिना सार रै नीं व्है। राजकंवर इचरज करतौ जावतौ के मछळियां मारण रौ कांम करण वाळौ अबूझ मछियारौ कैड़ी ठेळबंद बातां करी।

मछियारा री बातां माथै विचार करतौ करतौ राजकंवर दूजा राज री सींव में वड़ग्यौ। उण वगत सांझ पड़गी ही। वौ रातवासौ नगरी में ई लियौ। दूजै दिन धकै जावतां वौ राजदरबार रै गळाकर नीसरियौ तौ वौ उठै अणगिण भीड़ देखी। पूछयां पतौ लागौ के राजकंवरी रौ स्वयंबर होवण वाळौ है। तमासौ जोवण सारू वौ ई भीड़ में अेक ठौड़ ऊभौ रैग्यौ। सूंड में माळा लियां हाथी आखी भीड़ में घूमैला। वौ जिण किणी रा गळा में माळा पैरावै, उणरै सागै ई राजकंवरी रौ ब्याव व्हैला।

राजकंवर आज पैली इण गत रौ खिलकौ नीं देख्यौ

इण खातर वौ अणूंता कोड सूं सगळौ तमासौ देखणा में मगन हौ । सूंड में माळा लेयनै हाथी मस्ताई सूं चालण लागौ तौ सगळी भीड़ में अेकर खळवळ मचगी । वौ मिनखां रा उणियारा देखतौ आगै बधतौ जावतौ । उणरै आगै बधणा रै सागै लोगां रा मूंडा उतरता जावता ।

हाथी घूमतौ ई गियौ, घूमतौ ई गियौ । किणी रै गळा सांम्ही वौ माळा नीं करी । केई राजा, माराजा, सेठ-साहूकार नीं नीं व्है जैड़ा बणाव में अड़ीजंत ठस्योड़ा राजकंवरी नै वरण सारू ऊभा हा । पण हाथी गळाकर नीसरनै जद आगै बधतौ तौ वांरै माथै जांणै घड़ां घड़ां पांणी पड़ जातौ ।

हाथी सगळी भीड़ में घूमग्यौ तौ ई वै माळा पैरावणी तौ अळगी, वौ सूंड नै नीची ई नीं करी । राजा, रांणी रा ई काळजा ऊंचा चढ़ग्या ।

घूमतां घूमतां हाथी राजकंवर रै पाखती आयनै ठमियौ । सूंड सूं तीन वार प्रणांम करनै उणरा गळा में माळा पैराय दी । भीड़ में अेकर फेर खळवळ माची ।

राजकंवर धूळ सूं भरचोड़ौ हौ । गाभा फाटोड़ा । लिग्तरा फाटोड़ा । उणियारा रौ रूपाळौ व्हैतां थकां ई उणरौ लिवास गरीबी रौ हौ । उणनै माळा पैरावणी सगळां नै खटकी ।

भीड़ मांय सूं घणकरा लोग हाकौ करचौ — कदास औ हाथी मतवाळौ है, औ हाथी मतवाळौ है । दूजौ हाथी लायनै फेर घुमावौ ।

सगळा दरबारी इण बात री ताईद करी । राजा रांणी रै ई बात पूरी जचगी । आदेस व्हैतां ई दूजौ हाथी आयौ ।

सगळी भीड़ में माळा लेयनै घूमियौ । किणी नै ई माळा नीं सूंघाई । राजकंवर रै पाखती आतां ई वौ सूंड सूं तीन वार प्रणांम करयौ अर उणरा गळा में माळा पैरायदी । भीड़ में फेर अणूंती खळवळ माची । हाकौ व्हियौ के औ ई हाथी मतवाळौ है । दूजौ हाथी फेर घूमणौ चाहीजै । राजकंवरी रै चाकर वास्तै ई जकौ मंगतौ नीं फबै, राजकंवरी उणनै वरैला ! औ अन्याव म्है नीं देख सकां !

राजा रांणी फेर आदेस करयौ । तीजौ हाथी आयौ । वौ ई माळा लेयनै सगळी भीड़ में चकारा दिया। किणी रै सांम्ही मूंडौ करनै ई नीं जोयौ । वौ तौ पाधरौ जायनै राज-कंवर रै पाखती ढबियौ । उणरा पगां में सात वार प्रणांम करनै वौ उणरा गळा में माळा पैराय दी ।

भीड़ में फेर हाकौ व्हियौ — औ अवस कोई भाड़ागर है । हाथियां नै आपरा बस में कर लिया ।

राजा - रांणी रै कांनां भीड़ री हाकाहाक ई सुणीजती ही अर वै आपरी आंख्यां तीन वळा राजकंवर रा गळा में माळा पैराइजती देखी ही । वै किण चीज माथै डिढ़ रैवै ! राजदरबार रा केई दांना आदमी कह्यौ—रैयत रै हाका करणा सूं कांई व्है । जे खुद धणियां री जबांन आंटियां खावै तौ पछै रैयत रा कांई हाल व्हैला । राजा नै तौ आपरै वचनां माथै डिढ़ता राखणी चाहीजै । केई नवा दरबारी कह्यौ — माळा पैरणिया रौ थोड़ौ घणौ तौ घसकौ व्हैणौ चाहीजै । राजकंवरी नै दीखती आंख्यां बेरा में कीकर थरकाय दां । जद खुद राजकंवरी इण स्वयंबर सूं बेराजी है तद उणरा गळा में

औ डाळौ कीकर फंदायौ जावै

राजा उणमणै भाव सूं पूछ्यौ — अै बातां तौ म्हैं ई जांणूं । अबै करयौ कांई जावै । साव सीधौ सीधौ तौ नटीजै ई कोनीं । बचनां री मरजादा ई नीं तूटै अर औ सनमत ई टळ जावै, कोई अैड़ी जुगत बिठाऔ । म्हारै तौ कीं समझ में नीं आवै के कांई करणौ अर कांई नीं करणौ ।

अेक चात्रंग मंत्री कह्यौ — समझ में तौ म्हारै पूरी बैठगी है, जे आप सगळा ई म्हारी बात मांनता व्हौ तौ ! अंदाता, रै बचनां री मरजादा ई रै जासी अर इण झाड़ागर रौ पापौ ई कट जासी ।

मंत्री होळै हीळै नेठाव सूं बतावण लागौ — माळा रा इण दस्तूर रै सागै दो बातां फेर पजायदां । वै दो बातां पूरी करयां राजकंवरी रै साथै इण आदमी रौ ब्याव कर देसां । अेक बात तौ आ के सौ मण राई रौ सात कोस री भांय में दांणौ दांणौ छिटकाय दां ! जे कालै दिन आथमियां पैली सौं मण राई धूळ सूं काढ़नै भेळी नीं करै तौ इणनै सूळी कबूल करणी पड़ैला । तीनूं लोकां में ई औ कांम किणी सूं पार पड़णा रौ कोनीं । कालै दिन आथमतां ई सूळी रै साथै इणरा फेरा व्है जावैला । जे भोळप सूं वौ आ बात कबूल ई करलै तौ पछै दूजी बात आ के रायां भेळी व्हियां हजार मोती सात कोस री भांय में नदी रै मांय अेक अेक करनै वगाय दिया जावै । जे परसूं सिंझ्या पैली औ पाछा वां इज हजार मोतियां नै भेळा करनै नीं लावै तौ भळै सूळी त्यार । कै तौ अे दोनूं बातां सुणतां ई औ मूंडौ लेयनै अठा सूं न्हाट जावैला अर जे

इणनै मरणौ है तौ दोनूं बातां कबूल करैला ।

मंत्री री बातां सगळां रै ई हीयै ढूकगी । राजकंवर नै बुलाय दोनूं बातां सुभट सुणाय दी । राजकंवर कह्यौ — राजकंवरी रै साथै ब्याव करण सारू म्हैं कोई कोडायौ नीं हूं ! पण हाथी तीन वार ई म्हारा गळा में माळा पैराय दी, इणरौ तौ म्हैं ई कांई करतौ । जे औ संजोग सजणौ है तौ थें भलांई कित्ती ई आंटियां पजावौ, आ बात भवै ई टळै नीं । अर जे आ बात नीं व्हैणी है तौ म्हैं कित्ता ई ताखड़ा तोड़ूं, औ जोग बणैला नीं । किणी कांम सारू नटणौ तौ म्हैं जांणूं ई नीं । आप लोगां री अै दोनूं बातां ई म्हनै मंजूर है । पार नीं पड़्यां सूळी चढ़णौ म्हनै कबूल है । जकौ कांम पार पड़ै ज्यूं व्है, वौ तौ पार पड़ैला ई ।

सगळा दरबारी उणरी बात माथै हंसिया । सगळां नै विस्वास व्हैगौ के औ आदमी गैलौ है । उणनै समझावतां कह्यौ — अै कांम कोई थारा सूं पार पड़ सकै, क्यूं हाथां करनै मौत निवतै । नामंजूर होयनै जांन री खैर तौ मना ।

राजकंवर कह्यौ — मौत तौ बिना निवतियां सगळां री सिगरथ पांवणी है । नीं किणी रै पालियां ढबै अर नीं किणी रै निवतियां वगत सूं पैला निवतौ मांनै । उणसूं सांमनौ कर्‌यां कीं वार लागै नीं अर नीं उणसूं डर्‌यां कीं सांधौ लागै । म्हनै समझावण री जरूरत कोनीं । आपरी अै दोनूं बातां म्हनै सौ वळा मंजूर ।

अटकळ बतावणियौ मंत्री कह्यौ—साची बात बतायनै अपां इणरौ फरज चुकायौ । हाथां करनै मौत बुलावै, उणनै बचा-

वणौ किसौ सारै है । औ खुद मरणी चावै तौ खुसी खुसी मरण दौ । अपां बरजणिया कुण व्हां !

राजकंवर रै कबूल करतां ई सौ मण रायां सात कोसां लग राज रा आदमी धूळ में आपरै हाथां खुदोखुद छांट दी । धड़ी रायां ई सात दिनां में भेळी नीं व्है ।

राजकंवर कांकड़ में जायनै बेफिकर होयनै बैठग्यौ । के थोड़ी ई ताळ में राजकंवर नै अेक सरणाटौ सुणीजियौ । आभा में ऊंचौ भाळियौ । अलेखूं पंछी उड़ता आवै हा । आभौ तौ सगळौ छायग्यौ हौ अर धरती माथै बादळां री व्है ज्यूं छींयां व्हैगी ही । तेज उडणा रौ सरणाटौ ई अेक अजब सरणाटौ हौ । राजकंवर पंछियां रा इण अनोखा नजारा नै देख्यौ तौ देखतौ ई रैग्यौ । अरे ! अै तौ सगळा ई तीतर । अेकण सागै इत्ता तीतर तौ सपना में देखणा ई दूभर ! इत्ता भेळा होयनै रांम जांणै कठा सूं आया नै कठै जावै !

के इत्ता में अेक तीतर न्यारौ टळनै राजकंवर रै पाखती उडतौ उडतौ आयौ । उणरा खांधा माथै बैठनै कैवण लागौ— म्हनै ओळखियौ कोनीं ! म्हैं तीतरां रौ राजा हूं । म्हनै आप जंगळिया रा जाळ सूं छुडायौ हौ । आप किणी बात री चिंता मत करौ । म्हैं सवालाख तीतरां नै लेयनै आयौ हूं । घड़ी पलकां में सौ मण रायां भेळी करनै ढिगलौ देय देवांला । हजार मण व्हैती तौ ई काढ़नै को देवता नीं । आप नेगम निसंक रौ ।

राजकंवर देखतौ रह्यौ अर हांकरतां तीतरां रौ राजा सौ मण रायां रौ दांणो दांणो भेळौ कर न्हाक्यौ । राजा रांणी

नै ठा पड़ी तौ हाक्या-बाक्या रैग्या । थोड़ा घणा डरण ई लागा । कठैई मंतर फूंकनै औ सगळा राज नै ई भसम नीं करदै । तौ ई वै डरता मंत्रियां रै कैणा सूं मोत्यां वाळी परख फेर करी । हजार मोती सात कोस नदी में पटक दिया । राजकंवर, निसंक होयनै नदी रा ढावा माथै बैठौ हौ । के इत्ता में अेक मछळी पांणी सूं मूंडौ बारै काढ़नै बोली — राजकंवर, थें म्हनै ओळखी कोनीं कांई ! म्हैं मछळियां री रांणी हूं । थें म्हनै मछियारा रा जाळ सूं छुडाई । आज थांरै कांम पड़्यौ तौ चुप कीकर बैठणी आवै । अै तौ अेक हजार मोती है, लाख मोती व्है तौ ई हांकरतां काढ़ देवां । आप किणी बात री चिंता मत करौ, म्हां हजार मछळियां रै अेक अेक मोती पांती आवैला ।

मछळियां पांणी में जकौ रीठ उडायौ के सिझ्या पैली पैली सागै ई हजार मोती अेकठ कर दिया । पछै तौ चात्रंग मंत्री ई अणूंतौ डर्‌यौ । वौ आगै होयनै अणूंतौ कोडायौ दोनां रौ ब्याव कराय दियौ । राजा, रांणी अर राजकंवरी तीनूं उण माथै खीज करी के वौ फालतू अैड़ा देवता नै ताया । तद वौ बात बणायनै तीनूं जणा नै समझाया — म्हैं तौ जांणतौ ई हौ के राजकंवर अणूंतौ, करामाती अर ऊंचौ तपसी है । पण बिना पतवांणियां म्हारी बात रौ कुण पतियारौ करतौ । पण म्हनै काच में दीखै ज्यूं साफ दीखतौ हौ के अै दोनूं कांम वांरै वास्तै साव सरल व्हैला । हाथौहाथ परचा देख्यां पछै तौ सगळौ देस वांनै मांनै । सगळा देवता मिळनै ई अै दोनूं कांम नीं कर सकता, वै वांनै चुटकियां में संपूरण कर दिया । म्हैं

बिना सोच्यां समझ्यां कीं कांम नीं करया करूं । आ म्हामें खास भूंडी लत है ।

धूमधांम सूं राजकंवर अर राजकंवरी रौ ब्याव व्हैगौ । वौ चात्रंग मंत्री सगळा दरबारियां सूं सवायौ कोड दरसायौ। हाथियां नै माळा पैरावती वगत जका मिनख वद वदनै हाका करता हा, वै सबसूं घणी खुसियां मनाई! राजकंवरी तौ इण निसंक भाव सूं मिळी, जांणै वांरी जुगां जूंनी प्रीत व्है। राजा रांणी दोनूं उणरा पगां में पलकां बिछाय दी। अर राजकंवर आपरा हाल में ई मस्त हौ ।

राजकंवरी पूछयौ — म्हनै तौ हाल तांई समझ में नीं आवै के अै दोनूं कांम आप करया कीकर। म्हनै व्है जकी साची बात बतावौ । म्हैं किणी रै कांनौकांन ई भणक नीं पड़ण दूं ।

तद राजकंवर कह्यौ — अै बातां लुकावण छिपावण री नीं है । थें निसंक ढोल घुरावौ । किणी रै साथै सपना में करयोड़ी भलाई कदै ई अैळी नीं जावै। चाहे मिनख व्हौ, चाहे पंछी व्हौ अर चाहै कोई दूजौ ई जिनावर व्हौ । फगत आ छोटी सी बात मिनख हमेसां ध्यांन में राखै तौ वौ कैड़ौ ई लांठौ कांम भरै पटक सकै । पण भलाई खुद आणंद है अर भलाई करणौ ई खुद मीठौ फळ है । भलाई खुदौखुद आपरौ चांनणौ है ।

चोथौ राजकंवर

तपसी रै अठा सूं वहीर व्हियां पछै थोड़ो ताळ तौ चोथौ राजकंवर आपरी मां, नवी-रांणी, राजा, राजदरबार, आठूं भाई अर तपसी रा बारा में विचार करतौ रह्यौ। किणी वगत वौ अणमाप धरती रौ राजकंवर हौ अर आज चार आंगळ जमीं ई उणरी कोनीं। मिनख री ऊमर में किण वगत कांई पासौ पलट जावै, इणरी कीं जाच पड़ै नीं। आ तौ घटत-बढ़त री छींयां। मिनख जमारौ अर कुदरत आं दोनां रौ उतार-चढ़ाव अेक सरीसौ। आं बातां नै उथापतौ उथापतौ वौ कुदरत रा बारा में विचार करण लागग्यौ। नित हमेस वगत माथै आपरै ठायै सूरज रौ ऊगणौ अर आथमणौ कित्ता इचरज री बात है। तपता सूरज रौ अखंड उजास देखनै कुण अंदाज लगा सकै के इण उजास री माठ है अर इणरी ठौड़ अंधारौ प्रगटैला। रात रा फेर अखंड अंधारौ देखनै कुण सोच सकै के औ खूटैला अर इणरौ अंत आवैला।

चालतां चालतां अेक विकराळ जंगी बड़ला माथै उणरी निजर पड़ी। राजकंवर भर निजर उणनै निरखतौ ई रह्यौ—जांणै पैली वार वौ इण चीज नै देखी। राई जित्ता इण छोटा सा बीज में बड़ला रौ औ जंगी रूप कठै लुक्योड़ौ हौ—अै जड़ियां औ गोड, अै डाळा, अै अणगिण भड़ोलिया अर अै झूलती साखां! समझ, ग्यांन अर विचारां रै बिना देखणौ आंधा रौ असूझपणौ है। बाळक रा छोटा सा डील में जवांनी अर

बुढ़ापौ दिन लाग्यां कीकर प्रगटै ! जांणतां थकां ई अेक डोकरा नै देख औ विस्वास नीं व्है के कदैई औ अेक अबूझ नादांन बाळक हौ । किणी चीज रौ जलम चाहे बनस्पति व्हौ, चाहे पंछी - जिनावर व्हौ अर चाहे मिनख व्हौ — कित्ता इचरज अर आणंद री बात है । किणी नवी चीज रै जलम सूं वत्तौ आणंद अर इचरज दुनियां में फेर कांई व्है । बरसाळा री बिरखा — आ ई कांई कम इचरज री बात है — आड़ंग, बादळा, बीजळियां, गड़ गड़ गाजणौ अर आभा सूं धारौळां रौ ओसरणौ, नाळा, परनाळा, वाळ्हा, खाळा, नदियां रौ चालणौ अर नाडियां रौ हिबोळां चढ़णौ, पंछियां रौ मीठौ बोलणौ, मींडकां रौ गावणौ, कुदरत रौ लीलौ बणाव, ममोलियां रौ सुरंगौ रंग — कोई इण बिरखा नै समझ सूं देखलै तौ वौ सपना में ई सुरग रै आणंद री बात नीं करै ! विणास अर मरण रौ दरद अवस कळपावै, पण ग्यांन री मीट सूं देख्यां औ भरम लोप व्है सकै । वगत परवांण विणास अर मरण तौ नवा जलम रा बधाउड़ा है । इण दुनियां में सबसूं सिरै अर सार चीज है — मिनख री समझ, मिनख रौ ग्यांन । मिनख री आ समझ अर औ ग्यांन दुख, कळेस, संताप री आंच बिना जग - मगै कोनीं । जूंझियां बिना बधै कोनीं । कुदरत अर आपरा अंतस नै समझणौ ई मिनख रौ सबसूं ऊंचौ समझणौ है । इणरै बिना सगळी समझ अेक जंजाळ है अर मिनख रौ अस्ट-पौर थुड़णौ साव अकारथ अर निरफळ ।

राजकंवर रै विचारां री कांठळ इण विध चढ़ती गी, गाजती गी, चिमकती गी अर बरसती गी । वौ लगातार चालतौ

ई रह्यौ । चालतां चालतां नवा राज री सींव में वड़ग्यौ । सूरज री उगाळी अेक छोटा सा गांव में वासौ लियौ । गांव में वड़तां ई धड़ा माथै अेक कुमार री ग्वाड़ी ही । अणचींत्यौ ई वौ उण कुमार रै घरै पूगौ तौ उठै मार-कूकारोळौ मच्योड़ौ । सगला घरवाळा रोवै अर छाती माथा कूटै । राज-कंवर वांनै थावस देवतां पूछ्यौ — थां लोगां में अैड़ौ कांई विखौ पड़्यौ, म्हनै बतावौ तौ खरी । थें सगळा ई इण भांत रोवौ क्यूं ?

जबाब में वे फेर वत्ता ई रोवण ढूका । सेवट डोकरी छबरां छबरां रोवती ई बोली — बटाऊ थूं म्हारौ न्याव निवेड़ दै । आंरा कीकर हीया फूटा, म्हारै तौ कीं समझ बैठी नीं । म्हारी कुण सुणै ! औ म्हारौ बेटौ है । कालै ई परणीजनै आयौ । हाल तौ कांकण-डोरड़ा ई नीं खुल्या, तौ ई औ दुस्टी कैवै के देंत रै भख सारू बारी म्हैं साजूंला । बेटा रै मरचां म्हे तीनूं तौ पैला ई मरग्या । आ म्हारी बींदणी है । हाल तौ घर में आयनै घूंघटौ ई नीं उघाड़ियौ । तौ ई बैरण कैवै के देंत रै भख सारू बारी म्हैं साजूंला । औ औ म्हारौ घर-धणी है । भाटा नै ई पूछलौ के म्हारै थकां इणरी बारी कद आवै ! तौ ई लैणायत कैवै के बारी म्हैं साजूंला । म्हैं बारी साजूं तौ सगळौ घर भरचौ-तरचौ रैवै । बेटौ मोट्यार काटी है, हथणी व्है जैड़ी बींदणी है अर म्हारा मोट्यार सूं ग्वाड़ी री मरजादा बणी रैवैला । म्हैं तौ अबै वाळियोड़ौ खत हूं । कालै पोता आंगणै थड़ियां करण लाग जावैला । तौ ई ओळचा-कड़ा कैवै के म्हैं नीं जावूं ! म्हनै दीखै के इण ग्वाड़ी

रौ आंकौ आयग्यौ ।

राजकंवर रै कीं समझ बैठी नीं के किसौ देंत अर कैड़ी बारी । घर में आ कांई झोड़ पजी । वौ पूछ्यौ — मां, म्हनै सावळ सोजी नीं बंधी के बात कांई है ! थांरै किण बात री तळतळावण है अर किण बात रौ रांझौ !

डोकरी डुस्किया भरती ई बोली — म्हारी तौ ग्वाड़ी रौ विणास व्है है अर भाया, हाल थनै सोजी ई नीं बंधी ! पण थनै सोजी बंधायनै म्हांनै लेणौ ई कांई है । ज्यूं म्हांरा करम व्हैला, व्है जावैला ।

बेटौ सगळी बात मांडनै बताई के इण राज में अेक अलांम देंत रैवै । वौ मिनखां रौ अणूंतौ बिगाड़ करतौ । राजा उणनै समझाइस करी तौ वौ अेक बात माथै राजी व्हियौ । दिन आथमतां ई सिंझ्या रा देंत रा मैल में अेक आदमी पूग जांणौ चाहीजै । बारी आयां घर पूठचौ अेक आदमी । काले लाखापानां न्हाकीज्या । म्हारा घर री बारी आई । इण बात री ई म्हारा घर में तळतळावण है अर इण बात सारू ई रोवणौ रींकणौ है । घर में च्यार जणा है । सगळा ई आप आपरी खांचै — वौ कैवै के म्हैं जावूं अर वौ कैवै के म्हैं जावूं । अबै आप ई न्याव री बात बताऔ के म्हारै थकां म्हारै बूढ़ा माईतां री बारी कीकर आ सकै ।

पछै वौ आपरी बहू रै सांम्ही हाथ करनै कैवण लागौ — आ निरभागण कैवै के वा हर सूरत में देंत री बारी साजैला । आप ई बताऔ के इणरा घरवाळा इण वास्तै म्हारै लारै करी के वा इण भांत अणचींती मारी जावै । आ तौ म्हांरा

घर री लिछमी है ।

इत्ती ताळ बींदणी लाज रै खातर बोली बोली ऊभी ही । अबै लाज सरम अळगी वगायनै वा होळै सूं बोली— म्हारौ पगफेरौ ई इण घर में कावळ व्हियौ । म्हैं खूड़पग्गी हूं । धणी रै मरचां पछै लिछमी री ठौड़ म्हैं डाकण बाजूंला । अै जीवता रह्या तौ इण ग्वाड़ी में नवी बींदणी आय जावैला । म्हारै मरचां कीं फरक को पड़ै नीं । देंत रै पाखती जावणौ ई सावळ है ।

अबकी डोकरौ किड़कतौ बोल्यौ— आया बापड़ा म्हारै थकां घर रौ सोच करण वाळा ! किणरौ मूंडौ मग्दूर के म्हारै बैठां घर री कोई चिंता करै ! म्हैं जीवूं जित्तै तौ ग्वाड़ी री सुख-सांयत रौ जिम्मौ म्हारौ । म्हारा कैणा नै कोई लोप नीं सकै । किणरी मां अजमौ खायौ जकौ म्हनै ओड़ौ दै सकै । कांन खोलनै सुणलौ, देंत रै भख सारू म्हैं जावूंला, म्हैं जावूंला । घणी ताळ व्ही थांनै लपका करतां नै । चूपचाप घर रौ कांम संभाळौ । म्हारै मरणा री कोई चिंता मत करौ ।

डोकरी राजकंवर रै सांम्ही देखनै कैवण लागी— देखौ आंनै अपळ-गपळ बोलतां नै सरम ई को आवै नीं । आंरै जित्तौ ई म्हारौ इण घर में सारौ है । घर में सुख-सांयत वणी रैवै, इणरौ आधौ जिम्मौ म्हारौ । अै अेकला ई इण घर रा ठेकेदार कीकर बणै । म्हारै मरचां तौ इण ग्वाड़ी री सुख-सांयत में किणी बात रौ भंज नीं पड़ैला । म्हैं कदैई झूठ नीं बोलूं । आप म्हारी बात माथै विचारनै न्याव करौ ।

सगळा ई मतलबी है । सै आप आपरी तांणै । आप समझदार आदमी हौ । थोड़ौ घणौ तौ आप विचार करौ के म्हारै मरचां इण घर में कांई हांण पड़ैला । समझदार आदमी नै तौ म्हारै पखै बंधणौ ई पड़ैला ।

डोकरी फेर अरड़ां अरड़ां रोवण ढूकी — राजकंवर रै पगां पड़ती कैवण लागी — बापजी, आप कीकर ई आंनै समझावौ । म्हैं आंरौ कांई बिगाड़ करचौ जकौ म्हनै अै दुख देवै । म्हारै साथै औ किण भौ रौ आंटौ साजै । अै सगळा ई मांन जावै तौ म्हैं हंसती गावती दैंत रै पाखती जावूं । म्हनै कोई इण बात रौ डर थोड़ौ ई है ! म्हैं तौ कळपूं के अै म्हारी बात क्यूं नीं मांनै । आखी ऊमर म्हैं आं सगळां रै वास्तै फोड़ा भुगतिया, इणरौ म्हनै औ फळ देवै । आंनै मनावौ तौ आपरी बळियारी ।

चारूं घरवाळां रौ वौ अजीब रासौ देखनै राजकंवर री ई आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू ढळकण लागा । इण विध रौ रांभौ, इण विध रौ आंमनौ अर इण विध रौ लड़णौ तौ वौ आज ई देख्यौ । सगळा घरवाळा अेक दूजा री ठौड़ मरण सारू कित्ता कळपै, कित्ता रोवै ! मौत नै इण विध हरख सूं भेटणी तौ आज पैली कदैई नीं सुणी । जे खुद मौत रै जीव व्हैतौ तौ वा औ रांभौ देखनै लाज सूं मर जावती । आं लोगां सूं भेटचां तौ राजकंवर रौ जोवण सारथक व्हियौ । उणरौ मिनखजमारौ सुफळ व्हियौ । राजकंवर सोचण लागौ के घर नांव इणरौ है । ग्वाड़ी री मरजादा यूं निभिया करै ।

पण सगळा घरवाळां नै यूं झुरतां कळपतां देख उणसूं गाढ़ नीं राखीज्यौ । कह्यौ — आप सगळा इण रांभा नै सुळ-झावण वास्तै म्हनै पंच थापौ तौ म्हैं न्याव निवेड़ूं । म्हनै वाचा देवौ के थें सगळा म्हारी बात मांनौला ।

आपस में मांमलौ नीं निवड़तौ देखनै वांनै नवौ पंच थापणौ ई पड़्यौ । सगळा राजकंवर नै वाचा दिया के कोई उणरी बात नीं टाळैला । टाळै तौ वौ जलम जलम नरक रौ भागी बणै ।

तद राजकंवर निरांत भाव सूं कैवण लागौ — म्हैं किणी देस रौ राजकंवर हूं । म्हारै राज रौ त्याग करनै म्हैं संजोग सूं ई अठै आयौ । म्हारौ घण सौभाग के म्हैं इण जलम में थां लोगां रा दरसण करया । थांरी ग्वाड़ी में जकौ आज म्हनै ग्यांन मिळियौ उण माथै म्हैं वैड़ा लाख राज वार सकूं । आज म्हारौ परम कल्याण अर परम मुगती व्ही । म्हनै अबै इण दुनियां में कीं चावना बाकी नीं । थांरै अठै म्हैं जकौ नजारौ देख्यौ, इण सूं कोई सिरै अर लांठी चीज मिनखां री दुनियां में फेर ई कीं व्है सकै, म्हैं इणरी कल्पना नीं कर सकूं । मिनख जूंण रा हजार जलम पावूं तौ ई म्हैं आज रौ ग्यांन नीं पांतरूं । म्हारी काया रौ रूं रूं आज सुफळ व्हियौ । जे म्हारी ठौड़ मौत आपरी निजरां औ नजारौ देख लेती तौ उणरौ ई जमारौ सुधर जावतौ । उणरौ सगळौ गरब-गुमेज धूळ में मिळ जातौ अर उणरौ असली कल्याण व्है जातौ ।

डोकरी आखती पड़ती थकी बोली — थूं अै फालतू रा

क्यूं पंपाळ कूटै । थारा सूं व्है जकी मतलब री बात तुरत बता । म्हनै दीखै के अबै म्हारौ चित्त उपड़ण वाळौ है ।

राजकंवर मुळकतौ थकौ कैवण लागौ — मां, मन में थोड़ी धणी तौ निरांत राख । म्हैं अबारूं थां सगळां री बातड़ी ठांणै बिठाय देवूंला । पण पंच थापियां पछै थांरा मांय सूं कोई म्हारी बात उथापी तौ म्हैं अठै थांरी गवाड़ी में ई आपघात करनै मर जावूंला । थें म्हनै इण बात रौ सोळै आंना विस्वास दिरावौ तौ म्हैं म्हारी बात परगट करूं ।

चारूं जणा ई अेकण सागै विस्वास दिरायौ के वै जीवियां ई उणरी बात नीं टाळै । तद राजकंवर कह्यौ — थां लोगां री बातां सुणियां पछै म्हनै थांरै जोग फबतौ ई न्याव करणौ पड़सी । इण ग्वाड़ी री सुख-सांयत वास्तै थां च्यारूं जणा रौ जीवण अमोलक है । कोई किणी रौ घाटौ नीं पूर सकै । पण साथै रौ साथै बारी वाळौ जोग ई सजणौ चाहीजै । मिळजुळनै राज रा सगळा लोग जकी बात कबूल करी उणनै लोपणौ ई वाजब कोनीं । लाखापांना में थांरा घर री बारी आई, उण पेटै अेक जीव रौ जांणौ ई जरूरी । म्हैं इण राज रौ वासी कोनीं । बटाऊ हूं । थांरी बारी रै आंगै म्हैं देंत रै पाखती जायनै बारी रौ गेड़ौ पार पटकूंला । थांरै रांझा रौ इणरै अलावा न्याव दुनियां में ई दूजौ नीं व्है सकै । थें राजी-खुसी मांनौ तौ थांरी मरजी है, नींतर थांरै बचना-प्रमांण थें बंध्योड़ा हौ, म्हैं तौ देंत रै पाखती जावूंला ई ।

औ न्याव सुणतां ई च्यारूं जणा रौ लोई जांणै अेकण सागै सगळौ रौ सगळौ धोळौ पड़ग्यौ । वै रुंध्योड़ा कंठ सूं

नीठ बोल्या — आ ई बात कदै व्हैणी है ! पांवणौ तौ घर रौ परमेस्वर व्है । म्हांरै बदळै किणी दूजा री बारी साजणा बिचै तौ च्यारां रौ मरणौ घणौ सिरै । औ तौ हळाहळ ऊंधौ न्याव । कबूल करलां तौ म्हांरै जैड़ौ अन्याई, अकरमी अर पापी इण दुनियां में ई दूजौ नीं व्है । भगवांन रै दरीखांनै म्है इणरौ कांई जबाब देवांला ! थें तौ म्हांनै मरणा अर जीवणा बिचै ई घणा पजाय दिया । जैड़ौ थांरौ उणियारौ है वैड़ौ ई फूठरौ न्याव करचौ । वीरा, थूं थारै मारग जा, म्है मतै ई सलट लेस्यां ।

राजकंवर कह्यौ — यूं रीस करचां बात नीं बणै । आज मरणौ तौ थां सगळां वास्तै मंगळ व्हैगौ है । अर जीवणा री बात सुणतां ई थांरी नाड़ियां रौ लोई ठसै । थें म्हारा मन रौ अंधारौ लोप्यौ । दैंत री खातर म्हारौ इण विध मरणौ, मरणौ थोड़ौ ई है । इण भांत रा मरण माथै हजार जलम वारूं तौ ई थोड़ा । बचनां री मरजादा राखौ, म्हारी रत्ती भर ई चिंता मत करौ । थांरा घर रै मिस आज म्हनै धरती माथै सुरग मिळियौ । म्हारी हाथ जोड़नै आप सगळां नै आ इज वीणती के थें सुख - सांयत सूं जीवौ अर दैंत वाळी बात नै पांतर जावौ ।

डोकरी हुचकां चढ़गी । उणनै अमूंझणी आयगी । अटकती अटकती बोली — थूं सुख - सांयत वाळी बात राखी व्है तौ ! बेटा, थारै वाळी बात सूं नीं तौ मरचां सरै अर नीं जीवियां सरै । थूं तौ अैड़ा बांधनै बाळिया के प्रांण कदै ई नीं निकळै । बटाऊ, थूं म्हांरै भाग रौ कठा सूं आयौ ?

राजकंवर जळजळी आंख्यां अर भारी गळा सूं कैवण लागौ—थें थांरी नासमझी सूं ई अणूंता कळपौ ! इणनै थें म्हारी मौत जांणौ हौ कांई ! औ तौ जुग जुग जीवणौ है । जे इणरौ ई नांव मौत है तौ पछै अमरता नांव किणरौ ? थें म्हनै देंत रै पाखती जावणा सूं पालियौ अर आपरौ बचन नीं निभायौ तौ वा म्हारी मौत है । अर इण मौत माथै ई आपनै दुख करणौ चाहीजै ! हाथ जोड़नै घड़ी घड़ी म्हारौ औ इज कैवणौ है के थें इण सुभ कांम रै आडा मत आवौ ! मिनख रा जीवण में अैड़ा अमोलक छिण नीठ हाथ लाग्या करै ! म्हारै इण अणचींत्या कल्याण रौ अमंगळ मत करौ ।

राजकंवर रा हठ आगै सगळां नै ई हार मांनणी पड़ी । उणनै विदा देवती वगत सगळा घरवाळा बाथां भर भरनै इण भांत गळै मिळचा जांणै उणरी आखी काया नै आपरा अंतस में भरणी चावै । डोकरी कह्यौ—बेटा, औ किण भौ रौ म्हांरा सूं बदळौ काढ़ियौ ? अबै तौ भगवांन नै आ इज वीणती करां के थारी हजारी ऊमर व्है । म्हांरा अंतस में साच अर न्याव है तौ थारौ कीं बिगाड़ नीं व्हैला । मां रा बोल कदैई निरफळ नीं जावै ।

जद राजकंवर उठा सूं देंत रै मैल जावण नै वहीर व्हियौ तौ घरवाळां री सूझती आंख्यां अेक दम अंधारौ व्हैगौ । वै सगळा ई अेक दम बोळा व्हैगा । वांनै नीं तौ कीं दीख्यौ अर नीं कीं सुणीज्यौ । वेचेतै होयनै च्यारूं जणा ई आंगणा में तड़ाच देती रा पड़ग्या ।

राजकंवर अणूंतौ कोडायौ खुसी खुसी दैंत रा मैल में पूगौ । दैंत उण वगत अेक मिनख रौ भख करनै डकार खावतौ हौ । अेक दूजा मिनख नै फेर आवतां देख्यौ तौ वौ दांत काढ़तौ , पेट माथै हाथ फेरतौ पूछ्यौ — आज दो जणा कीकर आया । भै बिना प्रीत नीं । नगरवासियां नै घणी सुमत आयगी दीसै । मोट्यार तौ नांमी टाळकौ अर सरूपवांन भेज्यौ । खायां आणंद आय जावैला । पण अबारूं तौ गळा तणौ धाप्योड़ौ हूं । आज तौ बारी सर मिनख कांई आयौ , कोई छोटौ मोटौ घोड़ौ हौ । नीठ खायनै पूरौ करयौ । उणरा डील माथै मांस रौ वाखर तौ अणूंतौ हौ , पण मरणा रा डर सूं उगरौ लोई तौ पांणी सूं ई पतळौ पड़ग्यौ । लोई बिना खावण रौ स्वाद नीं आयौ । मांस ई वादी भिलियोड़ौ हौ — लुगथुकौ ! अणूंती चरबी छायोड़ौ । सात आठेक लोथा खाया जित्तै मूंडै आयग्यौ । अैड़ा डरकण अर कायर मिनखां नै खावणा सूं म्हारा मन में ई निबळापणौ उपजै । पण मिनख जित्ता मरणा सूं डरै उत्ता किणी बात सूं नीं डरै । मारयां पैली ई मर जावै । वै साफ जांणै के वै अमर कोनीं , तौ ई मरणा सूं डरै । मिनख जैड़ो मूरख जिनावर तीनूं लोकां में ई सोध्योड़ौ नीं लाधै । आं मूरखां रौ भक्सण कर करनै म्हनै दीखै के म्हारौ माथौ ई भंवग्यौ ।

आ कैयनै वौ पूरौ मूंफाड़ फाड़नै हंसियौ । ऊंट गाजै ज्यूं गळळ गळळ करतौ कैवण लागौ — पण आज थूं वगत रै पैला कीकर आयौ , म्हनै इणरौ म्यांनौ तौ बता ।

राजकंवर निसंक भाव सूं पडूत्तर दियौ — कालै सिंझ्या

रा म्हारी बारी है । दूजौ कीं कांम हौ कोनीं, इण खातर सोच्यौ के पैला ई चालूं परौ । देंतराज सूं कीं वंतळ ई करांला । अेक बात भळै सोची के वगत माथै जांणा सूं तौ देंतराज भूख रै कारण सीधौ खावण नै ई ताचकैला । बात-विगत करण रौ कोई मौकौ ई हाथ नीं आवै । म्हैं आपसूं केई सवाल पूछणी चावतौ । आप भूंडौ नीं मांनौ तौ आपसूं जबाबां री थोड़ी घणी आसा कर सकूं ।

देंतराज आज आपरी मस्ताई में हौ । कह्यौ — थारै दाय पड़ै जकी बातां पूछ; म्हैं जबाब देवूंला, पण घणी भिकाळ म्हनै आछी नीं लागै । म्हनै निसंक, निडर अर मस्त आदमी पसंद है । म्हारौ बस चालै तौ कायर अर गांजरा मिनखां नै खावूं ई कोनीं, पण औ खण करियां तौ म्हनै घणकरौ भूखां मरणौ पड़ै, आज रा मिनखां में डिढ़ता अर निसंकता रौ लवलेस ई कोनीं । म्हैं तौ सोच सोचनै कायौ व्हैगौ तौ ई म्हनै हाल तांई इण बात री सावळ जाच नीं व्ही । थूं जांणतौ व्है तौ बता के थांरी जात मरणा सूं इण भांत डरपै क्यूं ? मौत रौ नांव सुणतां ई वांरा प्रांण निकळै । म्हैं पूछणी चावूं के काला मिनखां प्रांण सूं वत्तौ तौ मौत ई नीं मांगै । मौत रा डर सूं मरणौ अर मौत रै हाथां मरणौ -- दोनूं अेक ई बात है । आज थूं वगत रै पैला ठीक आयौ । बता म्हनै के थें लोग मरणा सूं इत्ता डरौ क्यूं ?

राजकंवर कह्यौ — क्यूंके म्हांनै मरणा रै जोड़ै जीवण अणूंतौ वाल्हौ लागै । म्हैं फगत मरणा सारू ई जलम नीं लेवां । म्हांनै नित नवा अर अनोखा कांम सीखणा है अर नित

नवा नवा कांम करणा है ।

देंतराज अेक उबासी खायनै बोल्यौ — बात तौ थारी साव साची । थें लोग थुड़ौ तौ अणूंता ई हौ । थांरै कळापां री खट-पट म्हांरै तौ समझ में नीं आवै । म्हांनै तौ आरांम अर अैदीपणा सूं लांठौ आणंद ई फेर नीं दीसै । जादू - मंतरां सूं म्हैं खुद अनोखा अनोखा कांम करलां, पण डोल सूं आफळणौ म्हांनै खारौ जैर लागै । अर थें लोग हाथां धांन निपजाऔ, हाथां कपड़ौ बुणौ, हाथां इमारतां चुणौ, हाथां वासदी चेतन करौ अर हाथां रसोई बणावौ तौ ई थाकौ कोनीं । म्हांनै तौ देख्यां घणौ इचरज व्है के दो वेंत रौ मिनख सिंघ नै मार न्हाकै, हाथी नै हांकै अर घोड़ा री असवारी करै ! अळिया अर अलांम थें लोग ई कम नीं हौ । थांरौ बख लागै तौ सारी कुदरत नै ई फतै करलौ । हवा अर पांणी नै तौ थें धारौ ई कोनीं, पण भांत भांत री खटापट सूं कांई सार निकळै । सेवट अेक दिन सगळां नै मरणौ है ।

राजकंवर मुळकतौ थकौ कह्यौ — म्हां सगळां नै अेक दिन मरणौ है, इण खातर ई थें मौत रै विळू बंध बंधनै म्हां मिनखां नै वेगा मारण री तजबीज करौ । आ तौ आपरी बड़ी मेहरबांनी ।

देंत राजकंवर री बात सुणनै डग डग हंसियौ । जांणै बादळा गाजिया । बोल्यौ — अैड़ी बात तौ नीं है । पण अबै मिनखां रौ लोई म्हारै होठां लागग्यौ । हाथै नीं आवै तौ म्हैं रंजूं ई कोनीं । म्हारी बेटी रै समझायां कदैई कदैई पिछ-तावौ ई करूं पण जीव बस में को रैवै नीं ।

आ बात कैयनै देंत बेटी बेटी करनै हेलौ मारयौ । हेलौ सुणतां ईं बेटी वांरै पाखती आई । जांणै आभा री बीजळी खुद पगां चालनै आई व्है । आ तौ परतख रूप री माठ है ! इणसूं वत्ता रूप री कल्पना ई नीं कीं जा सकै । औ रूप अर इण देंत रै कब्जै ! राजकंवर देखतां ईं चकन-बकन व्हैगौ ।

देंत री बेटी राजकंवर सांम्ही देख्यौ तौ उणरी ओप निर-खनै उणरौ काळजौ फड़कां चढ़ग्यौ । इण रूपाळा मोट्यार नै भूख लागतां ईं देंतराज समूळौ गिट जावैला । इण खातर वा कदैई अैड़ा मौका माथै आवती ई कोनीं । मरतोड़ा मिनख री रंगत देखनै उणरौ जीव अणूंतौ कळपतौ । देंत सोगनां माथै सोगनां खायनै ई पाछौ मिनखां वास्तै मन विटळाय लेतौ । वा घणी वार ई समझवती के नीं नीं व्है जैड़ी तेवड़ करनै रात दिन थाळ जीमावती रूं, जे मिनखां नै खावणा बंद करदै तौ, पण बात निभावणी तौ देंत रै हाथ ही । सेवट वा ई हारनै तिथ छोड़दी । बारी वाळा मिनख रै आवतां ईं वा लुकनै बैठ जावती । आज देंत रौ हेलौ सुणनै वा आय तौ गी, पण उणसूं उठै ऊभौ रवणी नीं आयौ । वा थर थर धूजण लागी ।

देंत लाड सूं बुचकारनै कह्यौ — थूं डर मत बेटी, म्हैं हाल इणनै खावूं थोड़ौ ई हूं । औ तौ बारी सूं आठ पौर पैला ई आयग्यौ । इणरी बातां म्हनै सांतरी लागै । के तौ ऊमर में पैली वार म्हनै थारै माथै ममता आई के आज दूजी वार इण मोट्यार माथै लाड आयौ । हजारूं मिनखां नै पत -

वारण रौ मौकौ लागौ, पण इण जैड़ौ निडर आदमी म्हारै देखणा में नीं आयौ । इणनै मारण री बात मन में सोचूं तौ जीव कटमटौ व्है । म्हैं तौ इण मोट्यार नै आवतां ईं कह्यौ के डरकण मिनखां नै खावण सूं म्हैं खुद डरकण सुभाव रौ बणग्यौ ।

राजकंवर कह्यौ — अपां तौ बातां बातां में कठारा कठीनै उछरग्या , म्हैं कैवणी चावतौ के वगत आयां मौत सब जीवां रा प्रांण लेवै, पण उणनै इण वास्तै अक्रमी अर अन्याई नीं कै सकां । वा तौ आपरौ फरज पूरौ करै । पण मौत रा इण फरज में हाथ बटावण वाळा दुनियां में सब सूं लांठा पापी अर अधरमी है ! जकौ वांरौ कांम नीं उण में वै क्यूं हाथ घालै ! म्हैं थांनै पूछूं के अेक ईली नै पिचड़ियां पछै उणनै पाछा प्रांण सूंपणा आपरै हाथ नीं है तौ आप अण-गिण मिनखां नै मारण रौ कांईं हक राखौ ? उणरै मरियां पछै ई सांयत कठै व्है । सगळा घरवाळां बरसां तक रोवै, रींकै अर कळपै । उणरी याद में झुरै । घरवाळां नै औ संताप देवण रौ थांनै कांईं हक है ?

दैंत कह्यौ — म्हारी बात तौ थूं छोड । म्हारै पाखती इमी रौ कूंपौ है । बरसां पुरांणी हाडकियां माथै छांटा न्हाक दूं तौ वां में पाछौ साचेलौ जीव बावड़ जावै । म्हैं मार सकूं, म्हैं जीवाड़ सकूं ।

तद राजकंवर ठीमर बणनै पूछ्यौ — अै दोनूं बातां व्हैतां थकां ईं थें म्हनै इण बात रौ लेखौ बतावौ के थें आज दिन तांईं जीवाड़िया कित्तां नै अर मारया कित्तां नै ।

देंत लचकांणौ पड़नै पडूत्तर दियौ — मारचा तौ अलेखूं मिनखां नै, पण जीवाड़ियौ अेक नै ई नीं। इमी रा कूंपा नै तौ म्हैं पांतर ई गियौ।

राजकंवर इचरज सूं कह्यौ — मरचोड़ां नै पाछा जीवता करण री करामात हाथ में व्हैतां थकां ई थें फगत मिनखां नै मारण री ई आदत पोखता गिया, बड़ी गजब री बात है। राजकंवर नै अेकाअेक इण बात माथै भरोसौ नीं व्हियौ। वौ देंत नै दो तीन वार ऊपर सूं नीचै तक देख्यौ ! इण विडरूप जिनावर सूं फेर कांई आसा की जावै ! खेजड़ी रै लगै टगै डीगौ। आडुवां री गळाई माथै दो सींगड़ा — तीखा तच्च। सेवळा री सूळां रै उनमांन माथा रा केस, जटा बिखरयोड़ी, भेंसा जैड़ौ माथौ, आंगळ डोढ़ेक री लिलाड़ी, सांम्ही आंवळिया खाता भंवारा, रींछ रै भपौभप रूंवाळी, गोह रै जिसी खाल, घोर खोदणिया जिनावर री गळाई तीखा नख— सीपनियां जिसा लांठा। गधा रै प्रमांण डीगा कांनड़ा, सांयड री गळाई लटकता अर ढीला होठ, बिलाई रै कूंटिया जिसा दांत, मगरमच्छ री गळाई खुरदरा अर काठा मसूड़ा, जरख जैड़ी लपरका करती जीभ, गडसूरड़ा री दाई फींडौ नाक, दीवटिया जित्ती लांठी आंख्यां, खैर रा खीरां रै प्रमांण जगमगता डोळा, गेंडा रै सीना सूं ई सवायौ सीनौ, ढोल रै परवांणै पेट, जाळकी रै गोड जैड़ी साथळां, गांठां पड़योड़ी सकरकंदां जिसी आंगळियां, धापड़पग्गौ, हथाळियां अर पगथळियां जांणै सांप्रत रींछ री, गोडां री ढकणियां ऊंट रा माथा जैड़ी, भेंपोड़ां रै समांन गिरचा, आरणियां छांणा जैड़ी अेडियां, डील में

खाज खिणियां गोगीड़ा जैड़ी लीकां अर मींडकां जिसी जूवां थचाक थचाक खिरै । इण विडरूप जंगी खाका नै देख सास तौ पैला ई ऊंचौ चढ़ जावै । मौत रौ रूप इण सूं तौ कीं ढाळै ई व्हैला । इमी रौ कूंपलौ अजमावण री इण डील में किण ठौड़ अर कठै भावना व्है सकै !

राजकंवर नै इण जंगी डील में मिनखां री अणगिण आंख्यां ठळाक ठळाक रोवती निगै आई । दैंत रै पेट री आंतड़ियां हाल वांनै सावळ पचा नीं सकी । राजकंवर नै लखायौ के आंसू ढळकावती वै आंख्यां जांणै उणनै पूछै — म्हारै घरवाळां रा कीं समंचार लाया व्हौ तौ बताऔ ! म्हारै बूढ़ा माईतां रा कांई हवाल अर म्हांरै टाबरां रा कांई दीन ? पाछा जावौ तौ वांनै कैजौ के म्हांरा नांव नै अबै रींकै कोनीं । सावळ घर रौ जाब्तौ राखै ।

राजकंवर हाक्यौ-बाक्यौ रैग्यौ । वौ दैंत नै कह्यौ — भळै थें मिनखां नै अलांम अर कुबदी बतावौ ! थांरै मूंडै आ बात ओपै कोनीं । इण इमी रा कूंपला सूं थें दुनियां रौ कित्तौ कल्याण कर सकता, पण इण बात नै थें अंगै ई पांतरग्या । थें तौ फगत मिनखां नै खावणौ याद राख्यौ । थांरा इण अथाग पेट में म्हनै मिनखां री अणगिण आंख्यां ठळाक ठळाक रोवती दीसै ।

के इत्ता में राजकंवरी बेचेतै होयनै गुड़गी । देखतां ई दैंत रै मूंडा री रंगत ई बदळगी । रीस रै पांण सणण सणण करतां उणरी रूंवाळी अेकदम ऊभी व्हैगी । उणरी आंख्यां रा कोया भणण भणण फिरण लागा । फूंफां फूंफां

करतौ उणरौ सांस जांणै उफणण लागौ । डील रौ सांधौ सांधौ कड़ड़ कड़ड़ करतौ बोलण लागौ । देखतां देखतां उणरी देह सूं बाफां निकळण लागी । राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ— रीस तौ अैड़ी आवै के चंडाळ री कापी कापी करनै खाय जावूं । पण म्हारी बेटी रौ थोड़ौ घणौ विचार आवै । आ इत्ती डरकण सुभाव री है के किणी मिनख नै आपरै सांम्ही मरतौ नीं देख सकै । इणरौ काळजौ तौ साव काचौ । चंडाळ मीठी मीठी बातां में अैड़ौ विस घोळियौ के म्हारी बेटी बेचेतै व्हैगी ।

देंतराज मलापनै राजकंवरी रै पाखती गियौ । दोनूं हाथां सूं उंचायनै आपरा खोळा में ली — जांणै रींछ रा हाथां में गुलाब रौ फूल । वौ उणनै जंभेड़तौ कह्यौ — बेटी, म्हारी लाडल बेटी, थूं विस्वास कर के म्हैं अबै सपना में ईं मिनख री हर नीं करूं । अबकी खंडण करूं तौ थूं कदैई म्हारा सूं मूंडै मत बोलजै ।

देंत री आंख्यां सूं आंसू ढुळकनै राजकंवरी रै गालां माथै पड़ण लागा । वा झिझकनै आंख्यां खोली । निस्कारौ न्हाकनै पूछयौ — बारी वाळौ वौ मिनख कठै ? उणनै म्हारी आंख्यां सांम्ही लावौ । उणरौ उणियारौ देख्यां म्हामें डिढ़ता पाछी बावड़ जावै ।

देंतराज उणरै गाळां माथै हाथ फेरतौ कह्यौ — बेटी थूं निसंक रै, म्हैं उणरै हाल तांई नख ई नीं लगायौ । थारै बेचेतै व्हैतां ईं म्हनै रीस तौ अणूंती आई, पण जीव माथै काबू राख्यौ । देख औ थारै पसवाड़ै ई ऊभौ । राजकंवरी

पसवाड़ौ पलटनै जोयौ । हां, साचांणी वौ मिनख ऊभौ हौ । वा हळफळाई बैठी व्ही । राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ — आप बारी सूं इत्ता पैली क्यूं आया ? म्हैं तौ आगै ई अणूंती दुखी ही । आप पैली आयनै फेर वत्ती दुखी करदी । आपनै कदास इण बात रौ तौ पतौ कोनीं के अठै आयां कांई दुरगत व्है । मरणा रौ डर तौ आपरै नैड़ौ आगौ ई कोनीं !

राजकंवर मुळकतौ थकौ कैवण लागौ — जे आप उण कुमार रै घर रौ रासौ देखता तौ आपरै अचंभा रौ पार ई नीं रैतौ । बारी साजण सारू वै च्यारूं जणा इण भांत ताखड़ा तोड़ता हा जांणै जमराज रै पाखती ऊपर रा दिन बधावण सारू जावै । मरणा रौ अैड़ौ कोड तौ म्हैं आज पैली कदैई नीं सुण्यौ ।

पछै राजकंवर मांडनै सगळी बात बताई । दैंतराज तौ काळा भाटा री मूरत रै उनमांन उणरी बातां सुणतौ रह्यौ । अणजांण ई में उणरी आंख्यां सूं आंसू टपकनै छाती रा रूंगता में रिसता गिया । वौ दो तीन वार बीच में बोलणौ ई चायौ पण उणसूं बोलीज्यौ कोनीं । गळा में जांणै कोई काठौ डाट आयग्यौ ! अबकी तौ वौ जोर करनै पूछ ई लियौ — अठै मरण नै आवण सारू व्है च्यारूं माहौमाह लड़िया ?

राजकंवर कह्यौ — हां, जांणै जित्ता लड़िया । आप आपरा हक में च्यारूं ई साचा हा । डोकरी तौ अठै आवण सारू ताखड़ा तोड़ती ही — जांणै नांनेरै जावण रौ आड़ौ लियौ व्है । सेवट री बाजी म्हारै माथै सगळी बात आयनै झिली । सगळा जणा म्हनै न्याव निवेड़ण सारू पंच थाप्यौ । म्हैं

पैला ई वां सगळां नै खराय खराय नै औ वचन ले लिया हा के वांनै म्हारी बात कबूल करणी ई पड़ैला । अर तद पूरौ पतियारौ व्हियां ई म्हैं औ न्याव करचौ के वांरी बारी माथै म्हनै जावणौ ई वाजब है ! उण रांभा रौ इणरै सिवा दुनियां में फेर कीं न्याव नीं व्है सकतौ । इण भांत रा मरणा नै म्हैं मरणौ नीं समझूं, हजार हजार जलम समझूं । वां सगळां नै तोटा में राखनै म्हैं म्हारौ औ अणचींत्यौ कल्याण करचौ । पण म्हारा मूंडा सूं औ अनोखौ न्याव सुणनै वांरौ तौ जांणै अंस ई निकळग्यौ । वांनै इण बात सारू कांई दौरा मनाया, म्हैं जांणूं के म्हारौ जीव जांणै ।

देंत अटपटी वांणी में पूछचौ — थूं आपरा हाथ सूं औ न्याव करचौ ! चलायनै मौत रै मूंडै आयौ ! बावळा अैड़ौ न्याव तौ आज पैली दुनियां में कोई नीं करचौ व्हैला !

राजकंवर मोद सूं कह्यौ — पण इण भांत रौ मरणौ ई दुनियां में कितरां रा भाग में लिख्योड़ौ व्है । म्हैं तौ इणनै मरण नीं मांनूं । म्हैं तौ अमरता रा लोभ सूं कोडायौ अठै आयौ । औ न्याव करनै म्हैं म्हारौ ई कल्याण करचौ हूं ।

औ कांई ! देंतराज तौ अणछक भूं भूं करनै रोवण लागौ । डील रा रूंगता तोड़तौ तोड़तौ कैवण लागौ — बेटी, जे म्हैं इणनै खाय जातौ तौ म्हारी कांई गत व्हैती ? ऊमर में आज पैली वार आं आंख्यां सूं आंसुवां रौ मेळ व्हियौ । म्हनै अैड़ौ लखावै के इण मेळ सूं म्हारी आंख्यां में अेक नवी जोत कसमसावण लागी । आं आंसुवां अर इण नवी जोत री सोगन खायनै कैवूं के म्हैं अबै कदैई किणी रौ जीव नीं लेवूंला ।

पण आ बात कैतां ई वौ जरड़ जरड़ रूंगतां री लटियां तोड़ण लागौ । आपरा ई नखां सूं आपरौ गळौ टूंपनै अपळ-गपळ कैवण लागौ — म्हारौ जीव म्हारा बख में नीं । म्हारी सोगनां री कीं सिधन नीं । म्हैं घड़ी घड़ी सोगनां खाई अर घड़ी घड़ी विटळचौ । म्हारा जीव रौ कीं पतियारौ नीं । इण खातर आपघात करनै मर जावूं तौ पाप कटै ।

वौ जोर सूं नखां नै भींचियां । लोई री तूंताड़ियां छूटण लागी । राजकंवरी दौड़नै उणरा हाथ खांचिया । खुद मरण री धमकी दी तद वौ मांनियौ ।

थोड़ी ताळ तांई सगळा ई बोला बोला बैठा रह्या । कोई किणी सूं बात नीं करी । आंख्यां मसळतौ मसळतौ दैंत ई बोल्यौ — म्हारौ ग्यांन ओछौ है, म्हारा सूं घणौ बोलणौ नीं आवै । औ राजकंवर म्हारौ जित्तौ कल्याण करचौ, वौ म्हैं जलम जलम नीं पांतरूं ।

आ कैयनै वौ फेर भूं भूं करनै रोवण ढूकौ । पछै डुस्किया भरतौ फेर कैवण लागौ — आप राजकंवर हौ तौ आ ई राजकंवरी है । म्हैं राजा रा मैल सूं इणनै खावण सारू उचकाई । पण इणरौ रूप देखनै मारण रौ जीव नीं व्हियौ । उण दिन सूं म्हैं बेटी री गळाई इणनै पाळी हूं । इत्ता दिन इण डर सूं ई इणरौ ब्याव नीं करचौ के आ म्हनै छोडनै परी जावैला । म्हैं मन में जांणतौ के म्हैं अेक पलक वास्तै ई इणरौ बिछोव नीं झेल सकूं । आज अणचींत्यौ जोग सजियौ । भलांई आप न्याव निवेड़ियौ अर भलांई आप अठै आया । आप हरख सूं मरण नै आया अर म्हनै जीवाड़ दियौ ! म्हारा

डोल री कापी कापी करनै आपरै पगां में बिछावूं तौ ई आपरौ औसांण नीं उतरै । पैला संजोग सज जातौ तौ इत्ता पाप नीं करतौ ।

आ कैयनै वौ जोर सूं दो तीन वार किड़कड़ियां चाबी, जांणै बीजळी कड़की । आपरी कळायां रै दो तीन बटका तोड़नै वौ कैवण लागौ — राजकंवर, म्हारा सूं हीण अर अधम जिनावर दुनियां थपियां पछै ई नीं कोई व्हियौ अर नीं कोई व्है । छोटा कंवळा टाबरां रै मांस री तोजी बैठै उण वगत म्हारा डील री सगळी नाड़ियां अजेज नाचण लागै । म्हारी तौ सगळी बातां ई ऊंधी । जीवण रा सगळा सराजांम सूं म्हनै अणूंती चिड़ है । लुगायां रै कूख री थैलियां अर हांचळां रै मांस री म्हनै अणूंती भावड़ है । मांस रै हिसाब सूं अै सांम्ही भूंडी चीजां है । कूख में जीवण सांचरै, हांचळां सूं जीवण रौ पोसण व्है, इण खातर म्हारा पापी मन में आंरी अणूंती चावना है । अेकर बारी माथै दो-जीवां लुगाई आई । उणरै नवमौ महीनौ हौ । तौ ई दया री ठौड़ म्हनै अणूंती चंडाळी छूटी । म्हारा हाथ में व्है तौ म्हैं दुनियां सूं जीवण अर उपज री जड़ियां ई काट दूं । म्हारै सिवाय म्हैं दुनियां में किणी नै जीवतौ देखणी नीं चावूं ।

बाहूड़ा रै जोर सूं अेक बटकौ भरनै वौ फेर आगै कैवण लागौ — वा लुगाई तौ म्हनै देखतां ई चिराळचां करण ढूकी । आंख्यां आडा हाथ देयनै वा बकण लागी — म्हनै दूजा जलम में ई फेर खाय जाजै, पण म्हारै पेट रा बेटा रै हाथ मत लगाजै । म्हारै बेटा रै हाथ मत लगाजै । पण म्हनै जलम

अर जीवण नांव माथै तौ झाळ झाळ ऊठै । आ लुगाई तौ गैली व्है ज्यूं चिराळचां करती री अर म्हैं सरूपोत उणरौ पेट ई चीरचौ । कूख री थैली समेत उणरा बेटा नै बारै काढ़चौ । नाळेर री काची गिरचां सूं ई कंवळा बाळक रौ म्हैं खूब चबाय चबायनै साव लियौ । अर लुगाई रा प्रांण निकळचा जठा तांई वा — म्हारौ बेटौ म्हारौ बेटौ रोवती री ! कूख री थैली अर बाळक रै पछै म्हैं जरड़ देती रा उणरा हांचळ तोड़नै खाया । अेक अेक गपळका में ई दोनूं हांचळां नै गिटग्यौ । लुगायां रा माथा सूं म्हनै अणूंती चिड़ है । कदै ई नीं खायौ । वांमें अकल अर समझ रौ तौ लवलेस ई नीं व्है । जे वांरा माथा खावणा सूं वैड़ी समझ बण जावै तौ मरणा बिचै ई घणौ खोटौ । लुगायां रा काळजा रै ई हाथ लगाया नीं करूं । वांरी आंख्यां रा डोळा ई नीं खाया करूं । मींडका अर विसांदरा सूं डरपण वाळौ काळजौ खा जावूं तौ म्हारौ ई काळजौ काचौ पड़ जावै । बात बात में आंसू ढळकावण वाळी आंख्यां खा जावूं तौ कदास म्हारी ई रोवणा री आदत बण जावै । राजकंवर अैड़ा पापी विचार म्हारै अेकला रै ई पांती क्यूं आया ? म्हारै अेकला रै ई पांती क्यूं आया ? म्हनै जलम अर जीवण माथै इत्ती जूंजळ क्यूं छूटै ? कांई मरचां बिना ई इण हीण भावना सूं म्हारौ लारौ छूट सकै ? नीं, नीं आ बात ई कदै व्हैणी है ! अकडोडियौ कदै ई बोर बण सकै ! पण राजकंवर म्हारा मन में घड़ी घड़ी औ विस्वास पसवाड़ा फेरै के आपरौ साथ म्हनै दस बरसां पैली मिळ जातौ तौ म्हैं इण अधम गति रै ठेट तळै क्यूं पूगतौ ! राजकंवर आपरौ

उणियारौ देख्यां जलम अर जीवण रै वास्तै म्हारौ अणूंतौ कोड बधै । म्हारा हाथ में व्है तौ म्हैं इण दुनियां सूं अबै किणी जीव रौ विणास नीं होवण दूं । म्हारा प्रांण देयनै ई म्हैं नवा जलम रौ पोसण करणी चावूं ।

के इत्ता में वौ अणछक उछळ्यौ । छात सूं माथौ टक-रायौ । आंख्यां में आंसुवां री पांण अर होठां माथै मुळक री सांन चढ़ावतौ बोल्यौ — इमी रौ कूंपलौ, इमी रौ कूंपलौ !

इमी रौ कूंपलौ घोखतौ घोखतौ वौ मलापतौ बारै गियौ । हांकरतां मलापतौ मलापतौ पाछौ आयौ । उणरा हाथ में इमी रौ कूंपलौ हौ । अजगर री गळाई सास खांचतौ वौ कैवण लागौ — करचोड़ा पाप तौ इण सूं नीं धुपै पण आज सूं जीवाड़ण रै अलावा म्हैं कीं दूजौ कांम नीं करूंला । किणी कीड़ी नै ई अबै म्हारा सूं डरणौ नीं चाहीजै । नीचै रा सगळा भंवारां में मरचोड़ा मिनखां री हाडकियां है । सगळी हाडकियां नै पीसनै सौ मण गावा घी में इण सीयाळै म्हारै संधीणौ करणी चावतौ हौ । हाडकां रा सांधा घणा दूखै । जाब्ता सूं अंवेरनै सगळा हाडक राख छोडया हा । आप देखता जावौ अेक पलक में सगळां नै पाछा जीवाडूं ।

हाडकियां माथै इमी रै छांटां रौ परस व्हैतां ई वै जीवता मिनखां रौ रूप धारण कर लियौ । बाळक, मोट्यार, लुगायां, बूढ़ा-ठाडा भांत भांत रा अणगिण मिनख, हा हौ, हा हौ करता मैल में भरग्या । मैल री तौ रंगत ई बदळगी । ज्यूं ज्यूं जीव बावड़तौ देंतराज हरख सूं किलकारयां करतौ । खाकां पिदावतौ । घड़ी घड़ी बीच में लाळां पटकतौ पटकतौ

ई बोलतो — हे भगवांन, म्हैं इत्ता दिन कैड़ौ बावळौ अर पापी हो के जीवाड़ण रौ कांम नीं करनै मारण रौ कांम करतौ।

इमी री गळाई उणरी लाळ रौ छांटौ पड़तां ईं हाडकियां मिनख बण जाती। ढोल रै उनमांन आपरा पेट नै दोनूं हाथां सूं ठपकारतौ कैवण लागौ — हे भगवांन, इत्ता सा पेट में म्हैं इत्ता मिनखां नै डकारग्यौ!

चकन-बकन व्हियोड़ा राजकंवर अर राजकंवरी तौ औ खिलकौ देखता ई रह्या।

के इत्ता में देंतराज खाकां पिदावतौ वांरै पाखती आयौ। राजकंवरी रा माथा माथै हाथ फेरनै कैवण लागौ — म्हैं जांणतौ के म्हारी बेटी री जांन में जांनिया कठा सूं लावूंला। इण सूं लांठी जांन तौ फेर कांई व्है! समटावणी में जांनी दीठ अेक अेक सोना रौ कळस मोत्यां सूं भरचोड़ौ देवूंला। आज पैली तीनूं लोकां में ई जैड़ौ ब्याव नीं व्हियौ, वैड़ौ म्हारी बेटी रौ ब्याव रचावूंला।

लाज री मारी राजकंवरी नीचौ माथौ कर लियौ।

देंतराज लाड सूं बुचकारतौ कैवण लागौ — म्हारी बेटी रै लाज अणूंती इज है, म्हारी बेटी रै लाज अणूंती इज है।

पछै राजकंवर रै पगां में जोर जोर सूं लिलाड़ रगड़नै कैवण लागौ — जे भख री बारियां साजण रौ औ पाप म्हैं नीं करतौ तौ आपरौ संजोग कीकर सजतौ? म्हारौ कल्याण कीकर व्हैतौ?

पांचवौ राजकंवर

मारग चालतां चालतां राजकंवर री निजर आपरी छींयां माथै पड़ी। चढ़ता सूरज रै साथै छींयां मतै ई घटती ही। सूरज मथारै आयौ जद छींयां साव पगां में आयगी। अर आथूण दिसा सांम्ही सूरज ढळण लागौ तद छींयां उगूण दिसा सांम्ही बधण लागी। उणरा मन में जांणै कांई धुन जची जकौ वौ घड़ी घड़ी पाछल फोरनै लारै छींयां नै देखतौ। छींयां साथै री साथै ही। नीं कठै ई लोप व्ही अर नीं कठैई लारै री। वौ सोचण लागौ— फगत इण छींयां बिना सगळां रौ साथ छूटगौ। आ साथै रह्यां मिनख साव अेकलो तौ कोनीं। अर यूं ई मिनख कद अेकलौ व्है! मन मांनै तौ वौ हजार मिनखां भेळौ ई अेकला ज्यूं है अर मन मांनै तौ अेकलौ ई सगळी दुनियां रै साथै है। मारग चालतां मारग रौ कण कण साथै, मारग रा चीला साथै, बांटका साथै, धड़ा, मगरा, धोरा अर भाखर साथै, उडता पंखेरू साथै, चरता विचरता जीव जिनावर साथै, दिन रा गिगन में तपतौ सूरज साथै, रात रा अंधारौ, तारा अर चांद साथै।

सूरज ढळतौ ढळतौ भाखर रै ओलै ढळग्यौ। क्यूं औ सूरज ऊगै अर क्यूं आथमै। उजास रा अथाग समंदर रै साथै ऊगै अर आथमतां ई सगळा समंदर नै संवेट खुद अदीठ व्है जावै। सगळी दुनियां में अंधारा रौ समंदर छौळां मारण लागै। छींयां रौ साथ ई अंधारा में लोप व्है जावै।

अणूंता आड़ंग रै कारण राजकंवर परसेवा में घांण व्हैगौ । देखतां देखतां उतराद सूं काळी कांठळ उमड़ आई । जांणै भाखर रा भाखर उमगिया व्है ज्यूं । के तौ बादळां में नगारा बाजण लागा के बादळां री गुफावां में लुक्योड़ा सिंघ गरजण लागा । लांबा बळ खाती बैरण बीजळयां झबूका भरती ही ।

आभा री चारूं दिसावां में काळी कळायण पाथरगी । जांणै धरती रौ समंदर ई आभै चढ़ग्यौ । समंदर ओसरचौ । गाजां-बाजां रै साथै धरती उणनै बधायौ । पछै आभै चढ़चा समंदर रै हरख रौ कांई पार ! परताळियां पांणी पड़ण लागौ । राजकंवर अेक घेर घुमेर आंमली री आसरौ लियौ । धरती माथै कड़ियां तणौ पांणी बहण लागौ, जांणै खुद समंदर पगां हालियौ । सगळै जळबंब ई जळबंब । आज तौ इण जळबंब में भीज्यां सूरज हमेसां रै वास्तै ठाडौ व्है जावैला । इण डर सूं वौ तौ तुरत लुकग्यौ । पण अंधारा नै ठाडा पड़ण रौ कीं डर नीं हौ । वौ तौ छांट छांट नै आपरी बाथां में भरली । अर झबाझब करतौ वौ आपरी बीजळ आंख्यां बहता समंदर नै निरखण लागौ । बीजळियां रा सळावा, उणनै निरखण सारू माहौमाह होड मारता हा ।

राजकंवर री आंख्यां तौ जांणै सळावा भरती वां बीज-ळचां सूं ई चिपगी व्है । वौ सोचण लागौ — मिनख जमारौ आं बीजळचां रा सळावा जित्तौ ई है । खिवणा रै साथै ई बुझ जावै । इण पळापळ करता झबूका रै मांय मिनख नै अमो-लक मोती पोवणा है । कांकरां रै मांय रळयोड़ा मोतियां

री पिछांण करणी है, चुगणा अर पोवणा है। चुगणा अर पोवणा री बारी तौ पछै आवै पैला पिछांण री निजर चाहीजै।

इण मिनख जमारा रै आणंद री सेवट माठ कठै ? कांई करयां उणरा मन में आणंद सांचरै। धन रौ पोतौ बधायां के धरती री सींवां जीत्यां के मिनखां माथै ठौर जतायां के किला परकोटा बणायां के काया रौ पोखण करयां के आतमा रौ कल्यांण करयां अर के मन में ग्यांन रौ उजास चेतायां ! आपरै खातै जीवणौ अर मरणौ आ तौ जिनावरां री जूंण है। मिनख इण जूंण सूं तिरनै कीकर तीर माथै जा सकै ? मिनख वास्तै सोचण री बात फगत आ इज है, ग्यांन रौ सार फगत इत्तौ इज है ! पण औ सोचणौ अर औ ग्यांन आवै कीकर ? अर ग्यांन आयां इणरौ अमल व्है कीकर ?

पांणी रै साथै अंधारौ ई बधतौ गियौ। राजकंवर डाळा माथै चढ़नै बैठग्यौ। थोड़ी ताळ में पंखेरुवां री फड़ाफड़ बाजी। बातचीत री कीं सुरपुर ई सुणीजी। चकवा चकवी रौ जोड़ौ आळा में तड़फड़ तड़फड़ करतौ हौ। छांटां री घमरोळ अर फांफां री फटकारां सूं आळौ मार झोला खावण लागौ। चकवी कह्यौ — इण बौछाड़ अर आं फांफां में सूवणौ तौ अळगौ, रात काटणी ई दोरी व्हैगी। थें सिंझ्या सूं ई दुमना हौ। बोलौ नीं कोई चालौ। पूछ पूछनै कायी व्हैगी, पण थें तौ मूंन ई धार लियौ। म्हनै आज ठा पड़ी के थें म्हारा सूं ई चोज राखौ। माथै औ प्रळै बरसै, आळौ झोला खावै अर थें सिंझ्यां सूं ई मूंन धारयां चापळचोड़ा बैठा हौ। म्हारा मन री म्हैं इज जांणूं।

चकवौ कह्यौ — थारा सूं कांईं चोज राखूं ! पण बात दरसायां काळजौ फाटै ! जीभ चीरीजै ! आ बात इज अैड़ी है। थूं रूसणौ मांडै तौ थनै बताणौ ई पड़सी । थनै बता-वणा रै साथै कोई रांणी-पांणी वाळौ मिनख सुणै अर आपरी जांन जोखम में घालणी तेवड़लै तौ वां बापड़ियां रौ फंद कटै । पण म्हनै अैड़ौ अपरबळी आदमी इण दुनियां में दीखै कोनीं ।

राजकंवर कांन देयनै सुणण लागौ । चकवौ निस्कारा न्हाकतौ बोल्यौ — इण नदी रै मांय अेक विकराळ दैंत रैवै । वौ जित्तौ पतळौ अर डीगौ है, उत्तौ ई कमींण अर चंडाळ है । दया-मया तौ उणरी सौ पीढ़ी में ईं नीं व्हैला । उणरै पाखती लाखूं हीरा-मोत्यां री माया है । कदास इण सूं धन-वांन दुनियां में दूजौ कोई नीं व्हैला । पण तौ ई उणरी तिसणा रौ पार नीं । मोती निपजावण रौ उणरै पाखती अेक अनोखौ ई अेलम है । सात भाइयां री बैन नै वौ चंवरी माथा सूं उचकावै । उणरौ माथौ वाढ़नै ऊंचौ कड़ा रै टेर देवै । पांणी रा हौद में लोई रा टपका पड़ै । हौद में पड़तां ईं वै टपका पळकता मोती बण जावै । वां मोत्यां नै वौ भेळा कर करनै भंवारां में भरै । सातमौ भंवारौ भरण वाळौ है । अेक अेक मोती उणरै गिण्योड़ौ । साकळै सगळा भंवारां खोल खोलनै वौ मोती संभाळै । हा हा करनै हंसै, मोत्यां में लुटै । सगळी दुनियां नै खरीदण री उणरी मंसा है । इत्ती संपत रै उपरांत वौ मूंजी इतरौ के अेक मोती सूं जे हजार मिनखां रा प्रांण बचता व्है तौ वौ मोती नीं खरचै । अै मोती बणै

जित्ते उणनै हाथां कमायोड़ी कमाई खावणी पड़ै, इण खातर वौ घणकरौ भूखौ ई रैवै ।

राजकंवर नै अैड़ौ लखायौ के जांणै कोई उणरौ ई माथौ वाढ़ लियौ । वौ तौ चेताचूक सौ व्हैगौ । चकवौ धकै फेर कैवण लागौ—कटचोड़ा उण माथा सूं बत्तीस घड़ी लोई झरै जित्तै वा मूंडकी मूंडै बोलै, कांनां सुणै अर निजरां देखै । तरवार रै अैड़ी बूंटी लगायनै वौ झटकौ करै के नीं तौ उणरै कीं पीड़ व्है अर नीं प्रांण निकळै । पण बत्तीस घड़ी रै पछै लोई टपक्यां जद वौ मूंडकी रौ चुट्टौ झालनै भंवारा में फेंकै तद उणरै अणूंतौ दरद व्है । वा जोर जोर सूं अरड़ावै । भंवारां में पटक्योड़ी मूंडक्यां बारै मईना तांई अरड़ावती रैवै । वांनै अरड़ावतां सुणै तौ देंत जोर जोर सूं हंसै । जे टपक्योड़ा लोई रौ अेक मोती उण मूंडकी नै गिटाय देवै तौ उणरै कीं दरद नीं व्है, पण उण दुस्टी सूं अेक मोती ई खवाड़णी नीं आवै । जिण बैन रा टपकता लोई सूं वौ हजारूं मोती बणावै, वौ पाछौ उणरौ दरद मिटावण सारू अेक मोती ई नीं दे सकै । बारै मईनां तांई मूंडक्यां कूकती रैवै तौ ई उण मूंजी नै दया नीं आवै ।

राजकंवर रा रूं रूं में जांणै सुइयां खुबण लागी । चकवी रौ ई सांस ऊंचौ चढ़ण लागौ । उणनै अैड़ौ लखायौ के कोई बाज आपरा पंजा सूं उणनै रोसै । अटकतौ अटकतौ चकवौ बोल्यौ—कटचोड़ौ डोचरौ हौद माथै टेरनै वौ दूजी बैन री फिराक में निकळै । वतूळियौ व्है ज्यूं भंवतौ फिरै । सात भायां री अेकाअेक बैन अर उणनै वौ चंवरी माथा सूं उचकावै तौ

लोई रा मोती बणै । वौ केई बैनां रा माथा यूं हकनाक ई वाढ़ न्हाकिया । अेक बैन रौ माथौ वाढ़नै ऊंचौ टेरचौ, पण उणरा टपकां सूं मोती नी बण्या । हौद रौ पांणी लोई सूं रातौ व्हैगौ । पछै पतौ लागौ के सात सगा मां जाया भाया व्हैणा चाहीजै । उण बैन रै छ तौ सगा भाई हा, पण अेक सावकौ भाई हौ । अंक बैन रा लोई सूं फेर मोती नीं बण्या तौ वौ देंत पतौ लगायौ के भाई तौ नौ जलम्या हा, पण अबारूं फगत सात ई जीवता है । लोई सूं मोती बणण सारू फगत सात भाई जलमणा चाहीजै । अर जलमियां पछै सात्यूं ई जीवता रैवणा चाहीजै । मोती नीं बणै तौ वौ सांम्ही वांरै माथै चिड़ै । ठोकरां मारै, बड़बड़ाटा करै — म्हारै अलेखूं रिपियां रौ नुक्सांण कराय दियौ । रीस तौ अैड़ी आवै के इणरी सात पीढ़ियां नै ई मार न्हाकूं । मोती नीं बणणा रा नुक्सांण री खातर वौ आगौलगी सात आठ बैनां - वत्ती राखै । नवी बैनां रै बावड़ में वौ हवा रै समचै दुनियां में चकारा देवै । हाथै आतां ई वौ उणी वगत आपरा डेरा में आय जावै । पण हाथै नीं आयां वौ घड़ी रात थकां पाछौ वळ जावै । रीस में नाड़ियां उफसियोड़ी । सूरज ऊगियां पैली पैली ठीक वगत माथै नवौ भोडक काटनै लटकाय देवै । उणरै वस पूगतां वौ अेक मोती ई कम नीं पड़ण दै । नवौ भोडक लटकायां पैली वौ हळ - फळायौ धोबा भर भरनै सगळा मोती बारै काढ़ै । हौद में चिमवयां मार मारनै वौ मोती हेरै । उणनै पांणी रै मांय ई सुभट दीसै । किणी बैन रै लोई कम व्हैणा सूं

मोती कम बणै तौ वौ अणूंती गाळियां काढ़ै । इण बात रै कारण म्हैं सिझ्या सूं ई दुमनौ हूं अर थूं म्हनै चोज राखण रौ ओळबौ देवै । भलां आ बात सुण्यां किणरौ जीव दुख नीं पावै । चंवरी सूं अेकाअेक बैन नै उचकायां पछै उणरै माईतां अर उणरै भायां री कांई हालत व्हैली व्हैला । जकौ तौ वांनै मोती बणावण री बात रौ पतौ ई नीं पड़ै, नींतर वांरै दुख रौ कुण अंदाज लगा सकै । म्हारौ मन तौ करै के जगता वासदी में पड़नै बळ जावूं । कोई रांणी-पांणी वाळौ मिनख सुणतौ व्है तौ म्हैं उणनै केई बातां बतावूं । मिनख रै लोई सूं मोती निपजावण्या अै देंत तौ सगळी धरती रौ ई पापौ काट न्हाकैला । आज मिनख रौ लोई तौ कितौ सस्तौ व्हैगौ अर उणसूं निपज्या मोती कित्ता मूंघा व्हैगा ।

सगळी बात चुपचाप सुणियां पछै अबकी चकवी मूंडै बोली — इण देंत नै मारनै औ अन्याव मेटियां बिना म्हैं तौ टूंच में चुग्गौ-पांणी ई नीं झेलूं । भूखा-तिरसां मरनै प्रांण देवणा सैल, पण औ अकरम नीं सुणीजै ।

राजकंवर नै लखायौ के जांणै वौ अजगर रै आंटां सूं छूटौ है । माथौ ऊंचौ करनै बोल्यौ — रांणी-पांणी वाळा दूजा मिनख नै कठै जोवता फिरौला । म्हैं हूं जैड़ौ त्यार हूं । आ बात सुण्यां पछै अेक पलक बितावणौ ई अधरम । म्हनै उण अधम देंत रौ ठायौ बतावौ । म्हैं उणनै मारयां छोडूंला ।

चकवौ कह्यौ — आप इत्ती तेवड़ली हौ तौ औ कांम अवस पूरौ व्हैला । पण उण देंत नै मारणौ इत्तौ सैल कांम नीं है । ग्याबण लूंकी अर कागला रा लोई में सात वार खोळचोड़ी

हिरण री सींगड़ी उंगरी छाती में खुत्रायां बिना उणरौ बाळ ई बांकौ नीं व्है । आ सींगड़ी हाथै आतां ई उणरौ सगळौ अंस निकळ जावैला । नींतर अेक हजार सिंघ ई उणरौ कीं नीं कर सकै ।

राजकंवर कह्यौ — उणनै मारण वास्तै पैला ग्याबण लूंकी अर कागला नै मारौ ! अै किणी रौ कांईं बिगाड़ियौ । म्हैं औ कांम तौ नीं करूं । म्हनै ठायौ बतावौ जकी बात करौ । म्हैं अजेज उण सूं भेंटणी चावूं ।

चकवौ अर चकवी उणरी बात सुणनै अणूंता राजी व्हिया । वांनै पूरौ पतियारौ व्हैगौ के औ अवस उण देंत रौ सांमनौ कर सकैला । जकौ आपरै प्रांणां री परवाह नीं करनै लूंकी अर कागला रै प्रांणां रौ इत्तौ ध्यांन राखै, इणसूं लांठौ अपर-बळी आदमी इण दुनियां में फेर दूजौ कुण व्है सकै ।

चकवौ कह्यौ — सांमला भाखर री ढाळ में अेक नंदी गैगाट करती बेवै । नदी रा उरला ढावा माथै अेक पीळा भाटा रौ मुट्ठौ रुप्योड़ौ । उणसूं सात हाथ अळगौ डावी बाजू वौ देंत बारै निकळै । अर उण ठौड़ सूं ई पाछौ मांय वड़ै । मांय वड़ती वगत जीमणा हाथ रा अंगूठा रै वौ चीरौ देयनै नंदी में लोई रा टपका पटकै । वां टपकां रै साथै ई वौ नवोड़ी बैन रौ चुट्टौ पकड़नै धेंग देय देवै । अर सीधौ आपरा मैल में पूग जावै । पूगतां ई हौद सूं मोती रौ मोती बारै काढ़नै कोठारां दाखल करै । झटका सूं नवौ भोडक काटनै हौद रै माथै कड़ा में टेर देवै । भोडक सूं टपक टपक छांटा पड़ता रैवै । जे इण बिचाळै भोडक उतारनै धड़ सूं चेप

देवै तौ वा बैन जीवती व्है जावै ।

चकवौ थोड़ी ताळ रुकनै फेर कैवण लागौ — ग्याबण लूंकी अर कागला नै नीं मारणी चावौ तौ उण देंत रौ सांमनौ करण री ओक दूजी अटकळ फेर है । पण इण सूं वौ मरैला कोनीं, निबळौ अर अपळंग व्है जावैला । डावी सींगड़ी रै मरोड़ी देयनै खींचणां सूं उणरौ सगळौ करार खतम व्है जावै । अबै थांरौ समचौ मिळचां ईं म्है दोनूं चुग्गौ पांणी लेवांला !

राजकंवर कह्यौ — म्हारौ बडभाग के आज म्हैं आंमली रै डाळै थांरी बातां सुणी । अैड़ी बातां सुण्यां पछै कुण अैड़ौ आदमी जकौ निरांत सूं बैठ सकै । बात सुणै जकां री बैन रौ ई माथौ वढ़िया करै । मिनख जूंण रौ सार तौ औ इज है । अन्याव री बात सुण्यां पछै उणनै सहन करण्यौ घणौ अन्याई ! म्हांरी मां री म्हांनै हमेसां आ इज सीख ही, औ इज आदेस हौ । अबै म्हारा बेलियां, जीवता रह्या तौ फेर मिळालां । थांरौ औ औसांण कदैई नीं पांतरूं के थें म्हारौ मिनख-जमारौ सुफळ अर सारथक करचौ । भलांई आ बरसात व्ही अर भलांई म्हैं इण आंमली रै हेटै आयौ । अबै ओक पलक ई फालतू ऊभौ रैवूं तौ पाप है ।

चकवौ अर चकवी दोनूं आसीस देवता कह्यौ — आप जैड़ा मिनखां सूं ईं आ दुनियां टिक्योड़ी है, नींतर कदैई पोखाळौ व्है जातौ । भगवांन आपरी हजारी ऊमर करै, दुनियां नै आप सूं सुख अर आणंद मिळै । म्है अठै बैठा आपरी बाट न्हाळा हां ।

बरसतै मेह राजकंवर उठा सूं वहीर व्हियौ । कड़ियां

तणा पांणी में छपाक छपाक करतौ वौ सांमला भाखर री सोय में चालतौ रह्यौ । बीजळचां रा पळका में सांमला भाखर रौ उणनै भबकौ पड़ जातौ अर वौ पांणी फाड़तौ उठीनै चालतौ ई रह्यौ । नीचै कड़ियां तणौ आडै मारग वेवतौ पांणी, माथै पांणी रा धारौळा, अंधारी रात, बादळां रौ गाजणौ अर बीज-ळचां रौ कड़कणौ, इण प्रळै रै बिचाळै वौ अन्याई दैंत सूं सांमनौ करण सारू वहीर व्हियौ। वौ घड़ी घड़ी आपरा माथा माथै हाथ फेरतौ, जांणै उणरौ माथौ कटचोड़ौ व्है । तड़ातड़ बरसती छांटां उणनै लोई रा टपका ज्यूं लखाई । वौ सोचण लागौ — कांई लोभ इत्तौ आंधौ है के वौ मिनखां रा लोई अर मिनख रा आंसुवां नै ई नीं देख सकै । कांई लोभ इत्तौ बोळौ है के वौ रोवता मिनखां री चिराळचां ई नीं सुण सकै । कांई लोभ इत्तौ मूरख अर बावळौ है के वौ आपरा अर पराया में इण भांत रौ फरक जांणै ।

कड़कड़ाट करती जोर सूं बीजळी किड़की । बहतै पांणी अर बादळां रै बिचाळै चांनणा री अेक लींगटी मंडगी । मंडतां ई लोप व्हैगी । कांनां में कड़कड़ री आवाज गूंजती री । राजकंवर सोचतौ रह्यौ के मिनख इत्तौ मूरख, आंधौ अर बोळौ क्यूं व्हैगौ, कीकर व्हैगौ ? इण मांदगी सूं वौ पाछौ कद साजौ व्है सकैला ?

आडा पांणी नै चीरतौ, माथा में विचारां नै चीरतौ वौ बीजळचां रै पळकै चकवौ बतायौ उण ठांणै पूग ई गियौ । नदी रै ढावै पीळा भाटा रौ मुड्डौ रुप्योड़ौ हौ । उणसूं सातेक हाथ जीवणी बाजू वौ पांणी में तुरत अगूंठौ चीरनै टपका न्हा-

क्या । अर वौ अजेज कूदनै पांणी में धमाक दै दी । आभा में ऊंचौ फेंक्योड़ौ कोपरचौ नीचौ आवै ज्यूं वौ नदी में सरर सरर नीचै जावण लागौ ।

कित्ती ताळ अर कित्ती भांय लग वौ हालतौ रह्यौ इणरी तौ उणनै कीं सोजी नीं बंधी, पण सेवट पांणी रै पछै काठेड़ौ आतां ई उणनै ढबणौ पड़्यौ । काळा पगोतियां री गोळ नाळ दीसी । वौ बिना सोच्यां विचारयां ई नाळ सूं हेटै उतरण लागौ ।

नाळ सूं उतरतां ई अेक लांठौ आंगणौ आयौ । आंगणा में पग धरतां ई उणनै मूंडक्यां री चिराळयां सुणीजण लागी । उणरौ माथौ चकरी चढ़ग्यौ । भंवळ खायनै वौ हेटै पड़ण वाळौ हौ के मतै ई आपौ संभळग्यौ । चिराळयां रै समचै जांणै आंसुवां री परनाळां उणरा डील में उतरण लागी । उणरी आंख्यां ई जळजळी व्हैगी । वौ खुदौखुद ई होळै सूं बोल्यौ — बैनां, थोड़ी देर धीरज धारौ । म्हैं थांरौ आठवौ भाई हूं । थांरा आंसू पूंछण री, थांरी चिराळयां नै किल-कारयां में बदळण री कीं न कीं जुगत बिठावूंला । नींतर विस्वास राखौ म्हारी खुद री मूंडकी थांरै भेळी ई चिराळी करैला, थांरै भेळी ई रोवैला । थांरौ धड़ कट्योड़ौ है तौ म्हारौ ई साबत नीं रैवैला । म्हारी लाडली बैनां थोड़ी ताळ बोली रौ, म्हारा सूं थांरी अै चिराळयां सुणीजै कोनीं । म्हारी छाती अणूंती काची है ।

वौ तांगियां खावतौ अललटिप्पै अठी - उठी हालतौ रह्यौ । के इत्ता में उणनै अेक चिराळी ऊंची सुणीजी । वौ तुरत

उठीनै ई गाबड़ ऊंची करी । अेक मूंडकी छत सूं लटक्योड़ी ही । नीचै हौद में टपक टपक छांटा पड़ता हा । वौ हळ-फळ्यौ दौड़नै हौद रै पाखती गियौ । ऊंचौ भाळ्यौ । मूंडकी डग डग हंसी ।

राजकंवर पूछ्यौ — वाल्हा, थारी मूंडकी कट्योड़ी लटकै अर थूं हंसै । थोड़ी ताळ पैला तौ थूं चिराळी करी ही ।

मूंडकी बोली — म्हैं तौ अबै अरड़ां अरड़ां रोवूं तौ ई कांई सांधौ लागै ! पाखती रा खोडां सूं रात दिन चिराळ्यां सुणूं तौ माडांणी ई म्हारा मूंडा सूं चिराळ्यां निकळै । आज नवमौ दिन है म्हनै औ कूकारोळौ सुणतां नै । कालै वौ म्हारी धड़ वाढ़नै म्हनै ऊंची टेरी । म्हारै लोई रा टपकां सूं हौद में मोती बणै । थूं आं मोतियां रा लोभ में अठै आयौ तौ परौ, पण अठै आयां थारै लोभ री कांई दुरगत व्हैला । आ सोचनै म्हैं मतौ तौ रोवण रौ करयौ हौ, पण म्हनै माडांणी ई हंसी छूटगी । बटावू, वौ दुस्टी देंत आतां ई थनै उकळता कड़ाव में थरकावैला ! थूं औ नीं व्हैतौ लोभ क्यूं करयौ ? म्हारी तौ गत बिगड़ी जकौ बिगड़ी ई । चंवरी सूं उचकायां रै सात दिन पछै म्हारी मूंडकी इण विध मोती निपजावै ? म्हारौ बूढ़ौ बाप, म्हारी बूढ़ी मावड़ी अर म्हारा सात्यूं भाई म्हारा नांव नै रोय रोय मरग्या व्हैला ।

आ कैयनै वा मूंडकी ठळाक ठळाक आंसू ढळकावण लागी । हौद में पड़तां ई आंसू अमोलक लालां बणगी ।

राजकंवर उणनै थावस बंधावतौ कह्यौ — थूं रो मत म्हारी बाई, म्हैं थारौ आठवौ भाई हूं । म्हैं मोत्यां रा लोभ सूं अठै

नीं आयौ । म्हारी बैनां री चिराळ्यां सुणनै आयौ हूं । के तौ चिराळ्यां नै मेटूंला के म्हैं खुद मिट जावूंला । दुनियां रा किणी खुणा में अै चिराळ्यां सुणीजै तौ मिनखां रौ जीवणौ बिरथा अर अकारथ ! म्हारी बाई, म्हारै तौ भोळा सुभाव में आ बात ढूकै के दुनियां रा किणी खुणा री दो आंख्यां में आंसू है तौ पछै दूजा लोगां नै हंसणौ कीकर पोसावै ? कोई अेक जणौ ई दुखी है तौ पछै दूजा लोग सुख रौ सात्र कीकर लै सकै ? म्हारी बैन रौ माथौ वढ़्योड़ौ लटकै तौ पछै म्हारै इण साबत माथा में धूड़ । अैड़ा जीवणा बिचै तौ मरणौ घणौ सिरै । म्हारी बाई, थूं म्हनै इत्तौ कुमांणस जांणै के थारा लोई सूं बण्योड़ा मोत्यां रौ म्हैं सपना में ई लोभ करूंला !

मूंडकी बोली — म्हारा वीरा, दुनियां में आज मिनख रै लोई रौ मोल ई कांई है ! टकै धड़ी ई मूंघौ । हजार मोत्यां सारू तौ लाखूं मिनख मर सकै अर लाखूं मार्‌या जा सकै । खैर छोड़ौ आं बातां नै । म्है तौ सगळी मरी जकौ मरी ई । अबै घड़ी डोढ़ घड़ी मोती बणै जित्तौ ई म्हारी मूंडकी में लोई है । वौ दुस्टी कोई नवी बैन रौ चुट्टौ हाथ में झेल्यां आतौ ई व्हैला । उणरी निजर पड़्यां पछै उकळता तेल में थारौ फूलौ बणतां कीं जेज नीं लागैला ।

राजकंवर कह्यौ — म्हैं तौ तेवड़नै ई आज फूलौ बणण सारू आयौ हूं । थूं म्हारौ फिकर मत कर । थारी धड़ कठै पड़ी है जकौ म्हनै तुरत बता । म्हैं म्हारी बाई नै वरी में ठस्योड़ी लड़ाभूम देखणी चावूं ।

मूंडकी आंख्यां सूं सांनी करनै कह्यौ — उण सांमली साळ में म्हारी धड़ पड़ी है । मूंडकी जोड़तां ईं म्हैं पाछी साबत व्है जावूंला ।

इत्तौ सुण्यां पछै राजकंवर रै कांईं जेज ! वौ तुरत मूंडकी उतारनै धड़ सूं चेपदी । चेपतां ईं वा तौ गवर रै उणियार जीवती व्हैगी । राजकंवर थुथकौ न्हाकतां सोच्यौ — म्हारी इण बैन री आ दुरगत ! माथै मोत्यां रा हजार भंवारा वारनै फेंक दूं तौ ई कम ! उणरी मूंडकी रा लोई सूं मोती बणावण्यौ वौ देंत कित्तौ पापी है । मिनख रै डील रा कटचोड़ा न्यारा अंग कित्ता डरावणा अर कोजा लागै । जीवता मिनख री काया सूं फूठरी अर सिरै चीज फेर कांईं व्है सकै । मिनख रा डील नै सपना में ईं घात पुगावणा सूं लांठौ पाप म्हारी समझ में तौ दूजौ कीं नीं व्है सकै ! इण देंत नै म्हैं आ बात कीकर समझावूं । कुदरत रै बिचाळै जीवतौ रैवणौ ई सबसूं लांठौ अर सिरै आणंद है । चाहे वौ सिंघ रौ जीवणौ व्हौ, चाहे देंत रौ जीवणौ व्हौ, चाहे कीड़ी रौ जीवणौ व्हौ अर चाहे मिनख रौ जीवणौ व्हौ । इण जीवण रौ पोसण करै जकौ देवता है अर इण रौ विणास करै, उणरा बधाव में रोड़ा अटकावै, उणनै दुखी करै, संतावै वौ देंत अर राकस । इण पाप रा डंड में प्रांण खोसणा सूं तौ जीवण रौ अनादर व्हैं । पापी रा प्रांण तौ आदर री चीज है । पापी सूं उणरौ पाप छुडावणौ है । प्रांण छुडायां तौ फेर पाप रौ वधापौ करणौ है । पछै इण पाप रौ अंत कठै ?

नवा प्रांण बावड़चोड़ी बैन कह्यौ — आप कांईं सोच में

उळझ्योड़ा हो । देंत अबै आयौ के आयौ । आतां ई आपरौ मरणौ अर बळणौ साथै ई व्हैला । अर म्हनै दूजी वार मरणौ पड़ैला । आप म्हांरै खातर मरगा रौ ओ जोखौ क्यूं उठायौ ?

खोडां में रड़वड़ती मूंडक्यां रौ रोवणौ - रींकणौ चालू हौ। राजकंवर ऊंडौ निस्कारौ न्हाकतौ कह्यौ — म्हारी बाई, किणी रा प्रांण लेवणा सूं लांठौ कीं पाप कोनीं, पण प्रांण लेवणा रै डंड में पापी रा पाछा प्रांण लेवणा, औ तौ साचौ न्याव कोनीं । पापी, प्रांणां रै पेटै पाप सूं कीकर छूट सकै, म्हैं तौ इण सोच में पड़्यौ हूं ।

बैन कह्यौ — जे अेक रा प्रांण लेवणा सूं हजार प्रांण बचता व्है अर अेक नै जीवतौ राखण सूं हजार जीवां में जोखम पड़ती व्है तौ ई उण अेक प्रांण वास्तै आपनै इत्तौ सोच विचार करणौ पड़ैला ?

राजकंवर कह्यौ— दीखणा में आ बात जित्ती सुभट लागै, उत्ती साचांणी आ सुभट नीं है । अेक काया में तौ फगत अेक ई जीव व्हिया करै । उणरै खतम व्हियां जौ उण वास्तै सगळी कुदरत मर्‌या समांन है । अेक रै मरणा रौ दरद तौ लाख मिनखां नै व्है सकै । पण लाख मरचोड़ां रौ दरद कोई दो मरचोड़ां नै कीकर परस कर सकै ! गिणती रा हिसाब सूं हजार अेक सूं सदा वत्ता है, पण हजार प्रांणां वास्तै अेक प्रांण नै खतम व्हैणौ पड़ैला, आ बात म्हारा मन में सावळ ढूकै कोनीं । कठैई न कठैई म्हनै इण में खांमी लागै । प्रांणां रौ विचार करती वगत गिणती रौ विचार छोडणौ पड़ैला । म्हारी बैन, म्हैं थनै सावळ समझा नीं सकूं,

पण म्हारै तौ कीं अैड़ी ई समझ में बैठोड़ी है । इण समझ रै आगै म्हनै हार मांनणी पड़ै । जरूरत परवांण म्हैं म्हारा प्रांण तौ तुरत दे सकूं, पण किणी रा प्रांण लेवण रौ म्हनै कांई हक है । आ बात आछी तरै म्हारी समझ में आयगी । म्हांरी मां सूं म्हांनै आ ई सीख मिळी अर म्हैं हमेसा इण सीख नै याद राखूंला ।

वरी में लड़ाभूम व्हियोड़ी बैन थोड़ा घणा मोसा रा भाव सूं मुळकनै बोली — पण अठै आवण रौ कस्ट करयौ तद मां री उण सीख नै आप कीकर पांतरग्या ! आपरी इण समझ रै कारण अेक ई जूंण में म्हनै दो बार मरण रौ ग्यांन व्हैला, इणरौ औसांण म्हैं आपरै सांम्हो कीकर परगट करूं । वौ दैंत आतां ई म्हनै दूजी वार मारैला तद आप मां री सीख नै घोखता रैजौ अर उण सीख नै घोखता घोखता ई खुद रा प्रांण गमाय दीजौ । औ दूजी वार प्रांण मिळयां म्हनै जीवण रौ अणूंतौ लोभ व्हियौ, मरण रौ घणौ वत्तौ डर लागण लागौ । औ आपरी समझ रौ ई परताप है, आपरी मंसा व्है तौ लुळनै इणरा वारणा लेवूं ।

राजकंवर निरमळ भाव सूं कह्यौ — म्हारी बाई, म्हांरी मां री सीख थारी समझ में सावळ बैठी कोनीं । इण सीख सूं ऊंची सीख आज पैली नीं तौ दुनियां में व्हो है अर नीं कदैई व्हैला । आ सीख म्हारा मन सूं नीं डिगै जित्तै म्हनै किणी बात रौ डर कोनीं ।

मूंडकी वाळी बैन कह्यौ — दैंत रै आयां पैली थें कित्ता ई निडरपणा री बातां करौ थांनै छाजै । उणरै आतां ई थांरै

निसंकपणा रौ अर मां री सोख रौ पतियारौ व्है जावैला । म्हारौ कैणौ मांनौ तौ आप आपरा हाथ सूं म्हारौ गळौ वाढ़नै म्हारी मूंडकी पाछी कड़ा रै टेर दौ । उण दुस्टी रौ म्हनै डर अणूंतौ लागै । म्हनै लखावै के म्हारी मूंडकी मतै ई उछळनै पाछी सागै ठौड़ टिर जावैला । इत्ती ताळ रै मोत्यां रा घाटा सूं वौ देंत बावळौ व्है जावैला ।

के इत्ता में वतूळिया रै वेग फूंफां फूंफां करतौ देंत आयौ। खाली हाथ आवणा रै कारण उणरी रीस रौ तौ पार ई नीं हौ । कीं घड़ी आध घड़ी रौ अबेळौ ई व्हैगौ हौ । लोभ अर रीस रै कारण आंधौ व्हियोड़ौ वौ सीधौ हौद माथै ई पूगौ । वां दोनां माथै ई उणरी निजर नीं पड़ी । हौद में लोई रा टपकता छांटां सूं मोती बणता नीं दीस्या तौ वौ हळफळायौ ऊंचौ जोयौ । छात सूं टिरचोड़ी कठैई मूंडकी नीं दीसी । तौ ई उणनै विस्वास नीं व्हियौ । जोर सूं आंख्यां मसळनै ऊंचौ जोयौ । मूंडकी उठै व्है तौ निगै आवै । अैड़ी बात तौ आज पैली कदैई नीं व्ही ।

डाफाचूक व्हियोड़ा देंत री उण वगत रंगत देखनै राज-कंवर नै हंसी आयगी । हंसतौ हंसतौ ई वौ बोल्यौ — म्हारा भाई, इण वास्तै इत्तौ दुख अर अचूंभौ करण री किसी बात, वरी रा वेस में लड़ाभूम व्हियोड़ी वा मूंडकी तौ आ म्हारै पाखती ऊभी ! आपनै तौ उल्टी खुसी मनावणी चाहीजै के अेक कट्योड़ी मूंडकी नै पाछी आपरी साबती काया मिळी ।

देंत इण असेंधा मिनख री हंसी अर उणरा बोल सुणनै गाबड़ रौ भटकौ देयनै उठी जोयौ । रीस रै बळ भचकै ऊभौ

व्हियौ । मूंडकी अपूठी ऊभी ही । पाखती ऊभौ अेक आदमी निसंक भाव सूं थोड़ौ थोड़ौ मुळकतौ हौ । मिनख नै इण भांत हंसतां तौ वौ पैली वार देख्यौ । उणरौ विडरूप जंगी रूप देखनै लोग थर थर धूजै, कांपै, रोवै, अरड़ावै, धौळा पड़ जावै अर देखतां ई आधा मर जावै, पण औ मिनख तौ सांम्ही ऊभौ निसंक हंसै। कठैई अणचींत्यौ म्हारौ काळ तौ नीं आयग्यौ। पण म्हारौ मरण तौ जमराज रै ई सारै कोनीं । जे काळ इत्तौ सरूपवांन अर लुभावणौ व्है तौ लोग उणसूं इत्ता डरै क्यूं ? तौ पछै आ कांई बला । नंदी रौ तळौ पार करचां कैड़ी अंबखी ठौड़ म्हारौ रैवास है । उण रैवास में निसंक आयनै मूंडकी नै धड़ सूं चेपली अर यूं म्हारै सांम्ही मुळकतौ जोवणौ, अवस आ कोई देंतां उपरली माया है । वौ साव-चेती सूं राजकंवर नै ऊंचा सूं नीचै लग जोयौ । कठैई ग्याबण लूंकी अर कागला रा लोई में सात वार खोळचोड़ी हिरण री सींगड़ी तौ उणरै हाथै नीं आयगी ।

अै सगळी बातां अेक पलक में ई देंत सोचली । वौ गताधम में पड़ग्यौ । कांई करै अर कांई नीं करै, इणरौ वौ कीं निस्चै नीं कर सक्यौ । तीखा नखां सूं माथौ खुजळावण लागौ । थोड़ी सी मूंफाड़ फाड़नै वौ टग टग राज-कंवर रै सांम्ही जोवण लागौ । जे थोड़ौ घणौ ई डर निजर आवै तौ इणनै यूं मुळकण रौ मजौ बतावूं ! पण राजकंवर तौ खुद टग टग उणरौ विडरूप खाकौ निरखण लागौ । निरखतौ जावतौ अर मुळकतौ जावतौ । अजब उण देंत री बणावट ही । माथा सूं पगां लग दो तीन वार वौ उणनै आछी तरै

देख्यौ भाळचौ । राजकंवर नै मुळगौ ई डरतौ नीं देख देंत खुद खासौ डरण लागौ ।

अैड़ौ अनोखौ जिनावर राजकंवर सपना में ई नीं देख्यौ हौ । बांस रै ज्यूं पतळौ अर डीगौ । घड़ली रै उनमांन तीखौ अर ऊंचौ माथौ । ठौड़ ठौड़ चांयलौ । माथै हिरण रै जैड़ी दो पतळी सींगड़चां । कुलड़ी रै पींदा जैड़ौ उफसियोड़ौ छोटौ लिलाड़ । आंख्यां ऊंडी, आंमली रै कूंदा जैड़ी, सांप सी डरावणी । बकरी रै ज्यूं लटकता कांन । भींगी व्है ज्यूं रांटौ अर भंवियोड़ौ नाक । गवारपाटा री कोर जैड़ा पतळा अर कंटीला होठ । संखिया री गळाई गोळ अर तीखा दांत, आंटा खायोड़ा । गोईड़ा जैड़ी जीभ । जबाड़ौ अर हिचकी जांणै हळ रौ तूंडौ । गिरजड़ा री गळाई गाबड़ । अंकोड़चा रै ज्यूं निकळचोड़ी गिलणी, नाड़ियां उफसियोड़ी । बोरड़ी री गांदळां जैड़ा पतळा हाथ । बांवळ री हिलारचां रै उनमांन आंगळियां । लंगूर रै जैड़ी छाती । बेवला री गळाई टांगां । बांदरा जैड़ी पगथळचां । सगळा डील माथै अमरबेल ज्यूं लिपटचोड़ी नाड़ियां । खातीचिड़ा री टूंच रै उनमांन बधियोड़ा नख । अजगर जैड़ी खाल । ऊंट री खाल रौ जांमौ । ठौड़ ठौड़ फाटोड़ौ । गधा री खाल रा फाटोड़ा लिग्तरा । डील माथै मैल री पड़पड़चां जम्योड़ी । अमर बकरा री गळाई उणरौ डील भूंडै ढाळै बासतौ ।

राजकंवर देंत रौ खाकौ देख्यौ तौ देखतौ ई रैग्यौ । सोच्यौ—भलां किण सुख अर आरांम री खातर औ अणगिण मोत्यां रा भंवारा भरचा ! उणनै फेर वत्ती हंसी छूटगी । राजकंवर री हंसी सूं देंत रौ काळजौ सुरक सुरक करण लागौ ।

राजकंवर डग डग हंसतौ थकौ कह्यौ — मूरखां रा पातसाह ! निरमळ पांणी में अेकर थारौ गसकौ तौ जोयौ व्हैतौ । थारी इण भांत बिगड़चोड़ी सिंग्या देखनै थनै सरम को आवै नीं । अैड़ी लागै के रोटी खायां नै थनै केई बरस व्हैगा ।

देंत फेर लचकांणौ पड़ग्यौ । उणसूं कीं बोलणी ई नीं आयौ । इण मोटचार रै सांम्ही देंत री आ रंगत देखी तौ मूंडकी वाळी बैन नै ई कीं थावस व्हियौ । उणरौ डर खासौ भलौ मिटग्यौ । देंत रै सांम्ही मूंडौ करनै बोली — पांणी रै लगावण सूं इकांतरै लूखा टुकड़ा खावै । सात दिन तौ व्हिया म्हनै देखती नै ।

देंत कीं बोलणौ चायौ तौ उणनै अळसूंद आयगी । थोड़ी देर में अटकतौ अटकतौ बोल्यौ — तकतूळी व्है ज्यूं थाकोड़ौ भलांई दीसूं, पांणी रै लगावण सूं लूखा टुकड़ा भलांई मठोटूं, पण थें मोत्यां सूं भरचा म्हारा भंवारा नीं देख्या । छ तौ भरग्या, अबै सातवौ ई भरण वाळौ है । थें आज म्हारै अलेखूं मोत्यां रौ नुक्सांण कर दियौ । इणरौ भरणौ कुण भरैला ? तौ ई चालौ म्हैं थांनै मोत्यां सूं भरचोड़ा भंवारा बतावूं । पछै थांनै म्हारा गसका री ठा पड़ैला । इण बात री तौ थोड़ी घणी जाच व्हैणी चाहीजै के म्हारै जित्ती माया तीनूं लोकां में ई किणी रै पाखती जुड़चोड़ी कोनीं । म्हारी माया रौ गसकौ देखौ तौ थांरी आंख्यां ऊंची लिलाड़ में चढ़ जावै ।

देंत मन में जांण्यौ के इत्ती माया रौ लेखौ बतावणा सूं इण आदमी नै उणरौ रुतबौ मांनणौ ई पड़ैला । माया रा जोर सूं ई थोड़ौ घणौ दबै तौ पछै इण में मन जांणी करूं ।

इण खातर मोत्यां रा भंवारा बतावण सारू वौ इत्ती अंतावळ दरसाई । आपरी माया रौ बिड़द बखाणती वगत वौ आपरा संखिया जैड़ा दांतां नै काढ़तौ फेर कैवण लागौ — कोई चावै तौ ऊमर में इत्ता कांकरा ई भेळा नीं कर सकै जित्ता म्हैं मोती भेळा करचा हूं । इण मूंडकी नै जीवती करण सूं म्हारै कित्ता मोत्यां रौ घाटौ पड़चौ, इणरौ ई थांनै कीं ध्यांन है ! अबै औ घाटौ कीकर पूरीजैला । घणौ ई भंवतौ फिरचौ तौ ई आज कोई हाथै नीं आई । भोळौ सैण दुस्मण री गरज साजै । थें आ कांई भोळप करी के मूंडकी नै धड़ सूं चेप दी । म्हनै अबै पाछी मूंडकी हौद माथै टेरण दौ, पछै थांनै निरांत सूं मोत्यां रा सगळा भंवारा बतावूंला । आज पैला म्हैं किणी नै ई म्हारै खजांना रौ पतौ नीं पड़ण दियौ ।

देंत री बात सुणतां ई मूंडकी वाळी बैन राजकंवर रै पाखती सरकनै अड़ौअड़ ऊभगी । राजकंवर नै लखायौ के वा वरी रै मांय थोड़ी घणी कांपण लागी है । उणरौ औ डर कीकर मेटणौ आवै ! होळै सूं उणनै धीजौ बंधावतां कह्यौ— अबै इण छत में टिरैला तौ पैला म्हारी मूंडकी टिरैला, म्हारी बाई, थूं किणी बात री चिंता मत कर ।

पछै वौ देंत रै सांम्ही चारेक पांवडा धकै सिरकनै कह्यौ—औ थारै मोत्यां रौ घाटौ नीं है, मन रौ घाटौ है । म्हैं आज थारै मन रौ घाटौ ई पूरण वास्तै आयौ हूं । बता थनै मोत्यां सूं भरचोड़ा कित्ता भंवारा चाहीजै । अबै मन में कीं बाकी मत राखजै म्हैं अेक पलक में हजारूं भंवारा भराय दूंला । बावळा इता दिन थूं हकनाक बैनां नै चंवरचां सूं

उचकाई अर वांरा गळा वाढ़िया। बता थनै कित्ता भंवारा चाहीजै। भंवारा नीं व्है तौ पैला भंवारा खुदाय दूं। गिणती नीं आती व्है तौ म्हारा कना सूं सीख लीजै, म्हैं थनै भणाय देवूंला। म्हैं आज थारी मंसा अर लाळसा पूरण वास्तै ई अठै आयौ हूं। मन में मत राखजै, अेकर बतायां पछै फेर थारी तिसणा चेतगी तौ पछै अणूंतौ पिछतांणौ पड़ैला! थारा आं भंवारा में भरचोड़ा मोती नवी तिसणा चेतण व्हैतां ईं सगळा मींगणियां बण जावैला। पछै थूं करमां रै हाथ देयनै रोवैला तौ ई सांधौ नीं लागै। ग्याबण लूंकी अर कागला रै लोई सूं सात वार खोळचोड़ी हिरण री सींगड़ी सूं मारण री तज-बीज जांणतां थकां ईं म्हैं आज थारी मंसा पूरण सारू आयौ हूं। बोल, बोल थनै मोत्यां सूं भरचोड़ा कित्ता भंवारा चाहीजै।

ग्याबण लूंकी अर कागला रै लोई री बात सुणतां ईं देंत तौ थर थर धूजण लागौ। मूंडा रै झाग आयग्या। तीखा नखां सूं जरड़ जरड़ चांय नै खुजळावतौ कैवण लागौ — औ तौ आपरौ माईतपणौ है। आं दो चीजां रौ नांव ई मत लौ, म्हारा प्रांण सूखै। मोत्यां वाळी बात तौ म्हैं सगळी पांतरग्यौ। म्हैं तौ पैला आपनै देखतां ईं समझग्यौ आ कोई देंतां ऊपरली माया है। म्हारी बात साव साची निकळी। पण हाथ जोड़नै आप सूं म्हारी आ इज वीणती है के मोत्यां री बात चालै जित्तै आप वां दोनूं चीजां री चरचा ई मत करज्यौ। अेकर मंसा परवांण भंवारा भरण दौ, पछै आपरी दाय पड़ै ज्यूं करज्यौ।

राजकंवर कह्यौ — पण थें भंवारा री गिणती बतावौ तौ

खरी । इण बार मन में राखी तौ पछै मोत्यां री अंगै ई मन में रै जावैला । बतावौ कित्ता भंवारा भरूं ।

देंत थोड़ौ नैड़ौ आयनै खुसी सूं उछळतौ बोल्यौ—कांई साचांणी थें म्हारी मंसा पूरण करदोला । पछै तौ कांई चाहीजै ! म्हैं अबारूं आपनै भंवारां री गिणती बतावूं । पण भंवारा पैला सूं कीं लांठा व्है तौ कीं उजर तौ कोनीं ।

राजकंवर मुळकनै पडूत्तर दियौ—कीं उजर कोनीं । अेक अेक भंवारौ सौ भंवारां जित्तौ लांठौ व्है तौ ई कीं हरज कोनीं । पण थांरै पाखती कित्ता भंवारा वणण री मुकळाई है, पैला इण बात रौ ग्यांन तौ सावळ करल्यौ ।

देंत तौ खुसी में चितबंगियौ व्हैगौ । बोलती वगत राफां सूं झाग उफणण लागा । कह्यौ—हां, आ बात आपरी सोळै आंना ठीक है । पैला म्हैं भंवारा वणण री मुकळाई तौ देखलूं । भंवारा जित्ता लांठा अर कम बणै, उत्ता ई सावळ । बीचली भींतां यूं ई मोत्यां री ठौड़ रूंधैला । कांई मतलब ? चालौ अपां तीनूं जणा चारूंमेर पैला भंवारां रो तजबीज करां ।

आ कैयनै बेवला पग्गौ देंत उचक उचकनै आपरै रैवास री सगळी जमीं देखण सारू वहीर व्हियौ । दोनूं ई उणरै साथै चाल्या । देंत आपरा सगळा रैवास में दोय तीन चकारा दिया । सेवट ऊंडा ऊंडा निस्कारा न्हाकतौ कैवण लागौ—पण अबै कांई जुगत बैठावूं । म्हारै गोडै भंवारा बणावण सारू जमीं री कोताई है इण में तौ सौ भंवारा नीठ बणैला । अर दूजी ठौड़ बणायां लोगां नै पतौ पड़ जावै । अबै करूं तौ कांई करूं ! आप थोड़ी देर नेहचौ राखजौ । म्हैं पैला

मोती राखण री जुगत तौ बिठायलूं ।

राजकंवर कह्यौ — म्हनै तौ नेहचौ इज है । थें म्हारी तौ चिंता इज मत करौ । सावळ निरांत सूं सगळी बातां सोच विचारलौ । म्हैं तौ फगत हुकम मिळतां ई मोत्यां सूं भंवारा भरण रौ सीरी हूं ।

दैंत पूछ्यौ — कांई ठेट पूरी छात तक भर देवौला !

राजकंवर कह्यौ — हां, भरण ढूकां पछै कांई ! म्हनै मोती किसा समंदर सूं भेळा करणा पड़ै । अबै तौ फगत थांरै सोचण री इज बात है । जल्दी सोच विचारनै जबाब देवौ ।

दैंत मूंडौ ढेरनै बोल्यौ — देवूं, अबार जबाब देवूं । दिमाग में सगळी बातां सावळ जमण तौ दौ ।

आ कैयनै वौ भंवारां री गिणती रा बारा में सोचण लागौ । भूंडी गताघम में पजग्यौ । कित्ता भंवारां री मंसा परगट करूं । नवा भंवारा बणण में देर ई लागैला । अबारूं तौ सात्र मांमूली भंवारा है ! सौ भंवारा बणावणा में खरचौ ई लागैला । सौ सूं तौ हजार भंवारा घणा व्है ! हजार सूं दस हजार घणा वत्ता व्है । इण गिणती रौ कांई मथारौ ! लाख, दस लाख, करोड़ ! दुनियां में इत्ती गिणती नीं व्हैती तौ कित्तौ आरांम व्हैतौ । उण कमसल रौ नास व्हैजौ जकौ हजार सूं वत्ती गिणती बणाई ! वौ बणाई तौ कांई व्है ! म्हैं खुद क्यूं इत्ती गिणती सीखी । आज इत्ती गिणती नीं जांणतौ तौ फट म्हारी मंसा दरसाय देतौ । अबै इण भला आदमी नै कांई जबाब देवूं ?

मोत्यां री आमद रै पैली दैंत नै भंवारा बणावण रै

खरचा रौ ध्यांन आयग्यौ । वौ मंगता री दीठ सूं राजकंवर रै सांम्ही देखनै पूछ्यौ—अै मोती बणै जित्तै म्हनै म्हारै हाथां कमायोड़ौ धन खरच करणौ पड़ैला । पछै भंवारा बणावण रौ खरच कठा सूं लावूं । आं मोत्यां रै मांय सूं तौ म्हैं अेक टकौ ई खरच नीं सकूं । इण खरचा री जुगत कीकर बिठावणी आवै । अेक बार में तौ म्हारी मंसा परगट नीं कर सकूं । जित्ती गिणती जांणूं उत्ता भंवारा नीं भरीजै जित्तै म्हारी लाळसा पूरी ई नीं व्है। अर इत्ता भंवारा आवै ई कठा सूं ! म्हैं इण हिसाब में भूंडै ढाळै कळग्यौ । ज्यूं ज्यूं बारै निकळण सारू भांपळयां मारूं त्यूं त्यूं वत्तौ कळूं । आप तौ मंसा पूरण सारू त्यार हौ, पण म्हारा सूं इण छळगारी मंसा रौ कूंतौ व्है । म्हनै थोड़ी ताळ फेर सोचण रौ मौकौ दिरावौ ।

अबकी मूंडकी वाळी बैन बोली—सोचण सारू मौकौ तौ अै थांनै मांगौ जित्तौ देय देवैला । मोत्यां सूं मंसा मुजब भंवारा भरण वाळा म्हारी जांण में वगत री कोताई तौ कांईं करैला ।

पछै वा राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ—आप आंनै पूछौ तौ खरी के सात भायां री बैनां रा गळा वाढ़नै वांरा लोई सूं बण्या अणगिण मोत्यां रौ अै करैला कांईं ? सातवौ भंवारौ भरण वाळौ है । अर आंरी लाळसा रौ तौ कोई छेह ई नीं है । इण अथाग माया नै क्यूं भेळी करणी चावै ।

मूंडकी वाळी बैन रा अै सवाल सुणनै दंत घोगू री गळाई हंसियौ । खासी ताळ हंसतौ ई रह्यौ । पछै हंसतौ हंसतौ ई जबाब दियौ—म्हैं जांणतौ के लुगायां में अकल

रौ लवलेस ई नीं व्है, आ बात तौ सोळै आंना साचौ निकळी । थूं म्हनै पूछै के म्हैं इत्ती माया रौ कांई करूंला ? थूं म्हनै पाछौ इणरौ जबाब दै के माया सूं कांई नीं व्है ? माया जुड़ियां पछै दुनियां रा सगळा कांम साथै ई सरै ! थूं जांणणी चावै तौ लै म्हैं थनै बतावूं के म्हैं इण माया सूं कांई कांई करणी चावूं ! इण माया री जोरावरी सूं म्हैं तीनूं लोकां नै म्हारै कब्जै करणी चावूं । इण माया सूं म्हैं तीनूं लोकां रौ तमांम रूप खरीदणी चावूं । म्हारा सूं फूठरौ म्हैं किणी नै नीं देखणी चावूं । इण माया सूं म्हैं तीनूं लोकां री सगळी आसावां अर वांरा सपना खरीदणी चावूं ! दुनियां री सगळी हंसी खरीदणी चावूं । म्हनै किणी रौ हंसणौ नीं सुहावै । सगळा टाबरां रौ रमणौ खरीदणी चावूं ! इण रमणा माथै म्हनै अणूंती चिड़ है । म्हैं सगळी मातावां री कूखां खरीदणी चावूं । सगळी दुनियां सूं ऊगता घूंटा अर नवी कूंपळां खरीदणी चावूं ! म्हनै नवा जलम माथै अणूंती चंडाळी छूटै । मौत नै म्हैं साव छुट्टी फिरण देवणी चावूं । सगळा लोगां रा माथा में पोटा भरनै म्हैं वांरी अकल, वांरी पीढ़ियां रौ ग्यांन खरीदणी चावूं ! मिनखां रा सगळा काळजा खरीदनै वांरी ठौड़ बघेरा रा काळजा घालणी चावूं । जिण सूं वांरा काळजा में रिस्योड़ी ममता, उमंग, दया, वीरता अर झळकतौ प्रेम, कोड अर साहस मुळगा ई लोप व्है जावै । इण माया रा जोर सूं म्हैं आभा रौ चांद, गिगन रा नवलख तारा अर सूरज नै खरीदणी चावूं, आंख्यां री जोत खरीदणी चावूं । लोग अंधारा में भटकै तौ म्हैं अणूंतौ राजी व्हूं । सगळी दुनियां रै

लोगां रै हाथां सूं वांरौ हुनर अर वांरी करामातां खरीदणी चावूं । म्हैं इण दुनियां रौ सगळौ दूध, सगळी हरियाळी, बादळा, बीजळचां अर बिरखा नै खरीदणी चावूं । बावळी, इण दुनियां में जकी सांतरी अर सिरै चीजां है वै म्हैं सगळी री सगळी खरीदनै म्हारै काबू करणी चावूं । पछै तीनूं लोकां में म्हारौ कुण मुकाबलौ कर सकैला ! अबै थनै ठा पड़ी के इण माया रा जोर सूं कांई कांई बातां व्है सकै ।

अणूंता जोस रै मांय अै सगळी बातां गिणायां पछै वौ राजकंवर रै सांम्ही देखनै कैवण लागौ—म्हैं गिणाई जकी बातां नै खरीदण सारू म्हनै कित्ती माया री जरूरत है, इणरौ म्हनै सावळ हिसाब करण दौ । कठैई माया कम पड़गी तौ म्हारी मन चाही नीं व्हैला । चूक जावूं तौ कांई आप म्हनै दूजी-वार मंसा परगट करण रौ मौकौ देवौला ! म्हैं म्हारी ऊमर में ई इत्तौ विचार नीं करचौ । लागै के म्हारौ माथौ कठैई फाट नीं जावै । आप म्हनै आछी तरै सोचण रौ वगत फेर दिरावौ ।

राजकंवर नै उणरी बातां सुण अणूंती ई दया आई अर अणूंतौ ई इचरज व्हियौ । माया रा इण जोर री तौ उणनै आज ठा पड़ी । दैंत रै गळाफड़ा सूं झरता थूक रै सांम्ही देखनै वौ कह्यौ—हां, इण माया रौ सुभाव अर रंग इण गत रौ इज है । इत्ती माया रो धणी मन माथै सावळ आंकस नीं राख सकै तौ पछै उणनै माया रौ औ रंग लागै इज । थूं कोई अजोगती बात नीं करी । माया रै बस व्हियोड़ा गुलांम री वांणी अैड़ी इज व्हिया करै । माया

नै बस में राखणिया सूरमा विरळा ई लाधै । इत्ती ताळ औ थूं नीं बोल्यौ, थारै माथै चढ़नै औ माया रौ गुमेज बोल्यौ हौ । थारी निजर में माया री कीमत अणूंती व्हैला, पण म्हैं तौ उण साटै धूळ रा अेक कण रौ सोदौ ई मूंघौ गिणूं । म्हारी निजर में कीमत नांव वगत री है । थनै थारी मंसा परवांण मोत्यां सूं भरचा केई भंवारा आसांनी सूं देय सकूं, पण वगत रौ देवणौ लेवणौ म्हारै हाथ में नीं है । वगत अमोलक अर सिरै चीज है । दुनियां री सगळी माया साटै बीत्योड़ा छिण नै पाछौ नीं लायौ जा सकै । इण खातर वगत रा छोटा सूं छोटा पल नै आछा सूं आछा कांम में बरतणौ, आ मिनखा जूंण री सारथकता है । थूं थारै साथै म्हारौ वगत फालतू मत गंवा । म्हैं लाख भंवारां रै मोत्यां सूं उणरौ घाटौ नीं पूर सकूंला । अबै थूं अणजेज थारी मंसा दरसावै जकी बात कर ।

राजकंवर फुरती रौ कह्यौ तौ देंत फेर वत्तौ गताघम में पजग्यौ । वौ जोर जोर सूं चांय कुचरण लागौ । तौ ई मगज में कीं बात बणी नीं । उणनै लखायौ के उणरा माथा में सौ अेक कीड़ी-नगरा कळवळ कळवळ करै । माथा री नसां जांणै तिड़ण लागी । वौ आपरा चांयला माथा में आंगळियां रा नख गडायनै नीचै बैठग्यौ । यूं नखां में माथौ काबू नीं करचौ तौ वौ उछळ जावैला । माथा में अेकर सागै जांणै अणगिण भट्टियां चेतन व्हैगी । उणनै आपरी तिसणा रौ कीं छेह लाधै तौ मंसा ई परगट करै ! सांम्ही ऊभौ आदमी मोत्यां रै भंवारां री गिणती बतावण सारू खतावळ करै अर वौ उणरौ

कीं जबाब नीं दै सकै । आ कैड़ी ऊंग्री पजी !

वौ सुनपात में आयोड़ौ व्है ज्यूं बकण लागौ — देखौ अबै म्हैं बतावूं जित्ता भंवारा मोत्यां सूं ठेट छात लग पूरा भर दीजौ । अेक हजार, नी नीं दस हजार, नीं नीं अेक लाख भंवारा, दस लाख भंवारा ! म्हैं जठै बोलतौ बोलतौ ढब्बूं वौ आंकड़ौ आप पकड़ लीजौ । पैला थें म्हनैं पूरी गिणती सिखाय दौ । जठै गिणती खतम व्है, उत्ता ई भंवारा तुरत भर दौ । पछै म्हैं ठाट सूं दुनियां माथै राज करूं ।

मूंडकी वाळी बैन अर राजकंवर दोनूं देंत रा इण खिलका सूं हाक्या-बाक्या व्हैगा । औ यूं आपरी सुध-बुध कीकर पांतरग्यौ ! घड़ली व्है जैड़ा उणरा चांयला माथा सूं ऊंडा नख गडणा रै कारण चारूंमेर लोई झरण लागौ ।

देंत अणछक जोर सूं डाढ़ियौ — म्हारौ माथौ फाटै ! म्हारौ माथौ फाटै !

यूं डाढ़ता डाढ़तां वौ आंगणै गुड़ग्यौ । आंगळियां रा नखां सूं माथौ तौ ई नीं छूट्यौ । वौ भूं भूं करनै रोवण लागौ । रोवतौ रोवतौ ई बीच में अेकाध बार अपळ-गपळ बोल्यौ — पैला पूरी गिणती सीख जावूं, पछै भंवारां रौ आंकड़ौ बतावूंला । आंमली रै कूंघां जैड़ी उणरी आंख्यां आंसुवां में डूबगी । भींगी री गळाई उणरौ रांटौ नांक रातौ लाल व्हैगौ । मिरगी रौ रोगो थर थर धूजै अर तड़ाचां बावै ज्यूं वौ धूजण लागौ ।

राजकंवर दौड़नै उणरै पाखती आयौ । हळफळियौ होयनै तीखा नखां सूं उणरा चांयला माथा नै छुडायौ । हथाळियां

अर पगयळियां आपरा हाथ सूं मसळी । मूंडा माथै पांणी रा छाबका दिया । दंत भिभकनै बैठौ व्हियौ । बगनौ व्है ज्यूं अठी उठी देखनै बोल्यौ—म्हनै अैड़ौ लखायौ के म्हारौ माथौ पगां में आयग्यौ अर म्हारा पग माथा री ठौड़ आयग्या । सगळौ मांमलौ ई जांणै उलटग्यौ । म्हैं आज पांणी रा हौद में म्हारौ मूंडौ जोयौ । म्हारी आ कांई दुरगत व्ही !

पछै वौ अचांणचक रौ अेकदम उछळियौ । माथा नै दोनूं हाथां सूं कूटतौ अरड़ावण लागौ—म्हारा माथा में कोई सेवळी वड़गी । नस नस में उणरी सूळां पार व्हैगी । कोई सेवळी नै बारै काढ़ौ ! कोई सेवळी नै तुरत बारै काढ़ौ ! म्हारा प्रांण निकळै !

वौ अठी उठी चकारा देवतौ दौड़ण लागौ । पछै लंगूर जैड़ा आपरा सीना नै कूटतौ कूकण लागौ—म्हारा काळजा में धपळ धपळ भट्टी सिळगै । कोई बुझावौ रे इण सिळगती भट्टी नै बुझावौ ।

इण विध कूकतौ कूकतौ वौ हौद में धेंग दे दी । दोनूं हाथां सूं झांपळियां मारतौ हौद में फुरती सूं कीं हेरण लागौ । गुचळकिया खावतौ अरळ-विरळ बोलण लागौ—म्हारा मोती कठै, म्हारा मोती कठै ? आज पैला मोत्यां री नागा तौ कदैई नीं व्ही !

बांदरा री गळाई छलांग मारनै वौ हौद सूं बारै उछ-ळियौ । बावळा मिनख री गळाई बड़बड़ाटा करतौ सीधौ मोत्यां रै भंवारां सांम्ही दौड़ियौ । म्हारा मोती, म्हारा मोती वेलतौ वौ मोत्यां रा डिगला में मार अठी उठी लुटण लागौ ।

राजकंवर दूजी बार जोव बावड़ियोड़ी बैन रै सांम्ही देखनै कह्यौ—कठै ई बापड़ा रौ चित्त तौ नीं उपड़ग्यौ । म्हनै तौ इण गरीब दुख्यारा माथै दया ई अणूंती आवै । म्हैं इणनै मारणी अवस चावतौ, पण औ तौ आपरै मतै ई जरूरत सूं ज्यादा मरग्यौ । अैड़ो नीं व्है के पाछौ साजौ व्है ई कोनीं ।

मूंडकी वाळी बैन कह्यौ—इण देंत रौ चित्त उपड़ग्यौ पण म्हनै दीखै के म्हारौ ई माथौ भंवण वाळौ है । आप इण देंत माथै औ कांई कांमण करचौ । आपरी मुळक देखतां ई उणरौ तौ जाणै अंस ई निकळग्यौ । म्हैं तौ खुद कणाकलो गताघम में पजगी । अबै आपरी मां री सीख रौ म्यांनौ म्हारो समझ में थोड़ौ थोड़ौ बैठण लागौ है ।

राजकंवर उंतावळ करतौ बोल्यौ—इण सीख रा बारा में तौ पछै सोच विचार करांला, पैला मोत्यां रा भंवारा में जाय इणनै सावळ संभाळां तौ खरी ।

दोनूं जणा साथै रा साथै उण भंवारा में गिया । देंत हिचकी तांई मोत्यां में गडियोड़ौ उभौ हौ । वांरा निवास सूं उणरौ थोड़ौ घणौ जीव ठांणै आयौ । घड़ली व्है ज्यूं उणरौ चांयलौ माथौ खूंटा रै उनमांन गडचोड़ौ दीसतौ ।

दोनूं जणा नै आपरै सांम्ही आवता देख्या तौ मोत्यां रै ढिगला सूं आपरा पतळा हाथ बारै काढ़नै खाकां पिदावतौ बोल्यौ—अैड़ा अैड़ा छ भंवारा तौ भरचोड़ा है । छातां तक तौ पूरा च्यार ई भरीजै । सातवौ हाल थोड़ौ खाली है । थें आज खासौ डाफौ दियौ, तौ ई आसा घणी घणी वंधाई ।

वौ मोत्यां सूं बारै निकळनै वांरै पाखती आयौ । कैवण

लागौ — भंवारां री गिणती में म्हारौ तौ मगज ई भंवग्यौ। आज तौ माथौ फाटणा में के उछ्ळणा में कीं कसर बाकी नीं री। म्हनै तौ पक्कौ निस्चै व्हैगौ हौ के आज तौ बंदौ बिना मौत मरग्यौ। जे म्हैं आज मर जातौ तौ अेक मोती ई म्हारै साथै नीं चालतौ। अै सात भंवारा म्हारै कीं कांम आवता नीं। अर नीं किणी दूजा रै ई कांम आवता। म्हारौ भेजौ आज भट्टी सूं तपनै बारै निकळियौ है। आज पैली वार म्हारा मन में ख्याल आयौ के मरचां अेक मोती ई म्हारै साथै नीं चालै तौ म्हैं अणगिण बैनां रा गळा क्यूं वाढ़िया? वांरा लोई सूं बण्योड़ा आं मोत्यां री कांई सारथकता? हौद रा पांणी सूं म्हारा मगज में नीं तौ ठाडोळाई वापरी अर नीं मोत्यां रा निवास सूं म्हारौ जीव ठांणै आयौ। म्हैं तौ जांण्यौ के अबै हिड़कियौ ऊठ्यौ, अबै हिड़कियौ ऊठ्यौ। अबै आप म्हनै भंवारां री गिणती रा जाळ सूं बारै काढ़ौ अर रावळी मरजी व्है जित्ता भंवारा मोत्यां सूं भर न्हाकौ। म्हारी मंसा तौ म्हनै दीखै के अबै पांगळी व्हैगी।

राजकंवर कह्यौ — मंसा तौ थांरी इज कांम आवैला। म्हैं तौ धूळ रा कण नै मोत्यां सूं घणौ वत्तौ समझूं। म्हैं तौ फगत आ बात चावूं के मोत्यां सूं आपरौ पूरौ मन भर-जावै तौ बैनां रा गळा वढ़ता तौ ढबै। म्हारी निजर में अेक छांट लोई रौ मोल थांरै सात्यूं भंवारां रै मोत्यां सूं घणौ वत्तौ है। पण म्हारी समझ थांरै कांम कांई आवै। बैनां रा गळा तौ थांरी मंसा पूरण व्हियां ई वढ़ता ढबैला।

दैंत मोळौ पड़तौ थकौ बोल्यौ — म्हैं निरमती मूढ़ हूं।

घणी बातां म्हैं समझूं-बूझूं कोनीं। तौ ई अेक बात सुभट समझ में आयगी के म्हारै मरचां अै सात्यूं भंवारा म्हारै साथै नीं चालता, अठै ई दब्योड़ा पड़्या रै जाता । अै मोती बणाय बणायनै भेळा करण वास्तै म्हैं कैड़ा कैड़ा कळाप करचा, इणरौ लेखौ लेलूं तौ म्हारौ मगज जांणै टसण लागै । आज दोय घड़ी सुभट लखायौ के म्हारौ लोई नाड़ियां में सरणाट ऊंधौ चाल्यौ । सूरज री किरण रौ परस पातां ई इत्तौ अपरंपार अंधारौ अेक दम कठै लुक जावै, म्हैं तौ सोच सोचनै बगनौ व्हैगौ तौ ई इण बात रौ म्यांनौ नीं पा सक्यौ अर सूरज रै आथमतां ई वौ अणचींत्यौ कठा सूं आयनै पाछौ सगळै उणी भांत पाथर जावै, इणरी ई म्हनै सावळ ठा पड़ी नीं । पण म्हारा मगज में इण जैड़ी ई बात आज व्ही । मगज रौ अंधारौ किणी किरण सूं अर कीकर लोप्यौ इणरी तौ सावळ ठा कोनीं, पण वौ लोप्यौ अवस । इण उजास आगै अै मोती म्हनै पैला जित्ता ऊजळा नीं लागै । पण हाल तांई आंरौ मोह छूटै कोनीं । केई बरसां सूं इण अंधारा रै हेवा होवण रै कारण इण अणचींती किरण रै उजास सूं हाल म्हारी आंख्यां चूंधीजै, म्हनै इण उजास में सावळ दीसै कोनीं । म्हारी काची आंख्यां हाल औ उजास झेल नीं सकै । पण औ उजास म्हनै सांतरौ लाग्यौ, इण में कीं मीणमेख नीं ! म्हनै आज ई सावळ ठा पड़ी के मरचां तौ म्हारी काया ई साथै नीं चालैला, पछै मोत्यां री बात तौ अळगी, वांरी मंसा रौ ई साथै चालण रौ भरोसौ कोनीं । म्हारै जीवतां थकां म्हारी लाळसा मर जावैला, आ बात म्हैं सपना में ई नीं जांणी ही । म्हैं तौ

अबै कीं मंसा परगट नीं करूं, आपरी मरजी व्है जित्ता भंवारा मोत्यां सूं भरदौ । छात लग भरौ तौ रावळी मरजी, आधा खाली राखौ तौ रावळी मरजी ।

राजकंवर कह्यौ — म्हारी मरजी सूं थांरी गरज कीकर सरैला ! म्हनै इण बात रौ कोई उकरास नीं लाधौ पण अेक बात वळै कर सकूं — थांरा खुद रा हाथ सूं अेक भंवारौ खरच व्हेतां ई पाछा उणी वगत इग्यारै भंवारा वैड़ा ई भर जावैला । थांनै जित्ता भंवारा भरणा व्है, उण हिसाब सूं जल्दी जल्दी खरच करता रैजौ । मतै ई थांरी मंसा पूरण व्है जावैला ।

देंत आपरी बध्योड़ी गिलणी नै खांचतै कह्यौ — खरच ! खरच रौ तौ आप नांव ई मत लौ । म्हैं तौ म्हारा हाथ सूं अेक मोती ई खरच नीं कर सकूं ! खरचणियां रौ गसकौ अैड़ौ व्है कांई ! म्हैं तौ आज दिन तांई सावळ धापनै रोटी ई नीं खाई ।

अबकी मूंडकी वाळी बैन देंत रै सांम्ही देखनै कह्यौ — थांरा कैणा मुजब लुगायां में अकल रौ लवलेस ई नीं व्है, तौ ई अेक लुगाई व्हेतां थकां ई म्हारै जकी बात साव सुभट समझ में बैठगी, वा हाल तांई थांरी समझ में नीं आई ! विना खरचियां थांरा अै सात भंवारा नीं मांनौ तौ धूळ बिरौबर है अर मांनौ तौ सात लाख भंवारा जित्ता है । गरीब इण वास्तै भूखां मरै के उणरै पाखती धन कोनीं अर थें इण वास्तै भूखां मरौ के मोत्यां रा सात भंवारा व्हैता थकां ई वांनै खरचण रौ मन नीं करै । अै सात भंवारा तौ दुनियां में किणी रा ई व्है सकै अर यूं अेक रा ई कोनीं । इण

अकल रा जोर माथै ई थें लुगायां री अकल नै कुराई ! नमौ है थांरी इण अकल नै ! जे अकल नांव इणरौ है तौ म्हांमें इणरौ लवलेस नीं व्हैणौ तौ घणौ चोखौ ! आ माया थांरै कीं कांम नीं आई अर थें अणगिण बैनां रा माथा इणनै भेळी करण सारू वाढ़ न्हाकिया । थोड़ी घणी तौ अकल लड़ावौ के थांरै हाथां औ कांई कांम व्हियौ ? चांयला माथा री गळाई कदास थांरी अकल ई चांयली व्हैगी । पण म्हनै तौ दीखै के इण विध माया भेळी करण वाळा रै अकल व्है ई नीं सकै । आवण वाळी उणरी पीढ़ियां में ई अकल नीं व्है सकै । म्हारी दूजी वार गाबड़ वाढ़ौ तौ ई म्हैं आ बात कैवती डरूं कोनीं !

देंत मोळौ पड़तौ थकौ होळै सूं बोल्यौ — इण में डरण री किसी बात ! थारी अेक बात ई भूठ कोनीं, साव साची लखावै । अबै तौ म्हैं खुद म्हारा सूं डरण लागौ हूं । आज ठा पड़ी के अेक गोगीड़ा में अकल व्है तौ म्हामें व्है । कित्ती सोरी बातां है । अेक जलमता टाबर रै ई समझ में आ जावै, म्हारै इत्ता बरस क्यूं नीं समझ आई !

पछै राजकंवर रै सांम्ही देखनै मुळकण री चेस्टा करतौ थकौ कैवण लागौ — आप म्हारी बात मांनौ ! म्हनै अैड़ौ लखावै के म्हारी गाबड़ माथै पैला रौ माथौ वढ़नै कोई दूजौ चिपग्यौ है । म्हनै समझावौ तौ खरी के बिना लोई आयां म्हारौ औ माथौ वढ़ियौ तौ वढ़ियौ ई कीकर ? माथौ बद-ळग्यौ तौ ई म्हारी चांय तौ नीं मिटी । इण बैरण सूं तौ मरचां ई पिंड छूटैला ।

आ बात कैयनै वो दबतौ दबतौ हंसण लागौ, जांणै ऊंदरौ हंसियौ । राजकंवर पाछौ हंसनै जबाब दियौ — होळै होळै सगळी बातां मतै ई समझ में आय जावैला । अेक दिन में ईं सगळी री सगळी बातां समझण री चेस्टा करी तौ नवा माथा री नसां तिड़कण लाग जावैला । पछै कंवौला के माथा में सेवळी वड़गी, भट्टी चेतन व्हैगी ।

देंत आपरा घड़ली व्है जैड़ा चांयला माथा नै हिलावतौ कह्यौ — नीं नीं, जद नीं ! होळै होळै छौ समझ आवती । म्हनै इत्तौ कांईं आंचौ । पण दूजी वार वैड़ी गत बिगड़णा बिचै तौ मरणौ सावळ । उण वगत तौ म्हनै नीं नीं व्है जैड़ा कस्ट व्हिया । कदै ई लखावतौ के म्हारा माथा नै कोई उकळती कड़ाई में तळै, कदैई लखावतौ के कोई हजारेक काळिंदर म्हारा माथां में फूंफां फूंफां करै, कदैई लखावतौ के किणी मोटा भाखर रै हेटै दबनै पोंचीजै, कदैई लखावतौ के कोई समंदर म्हारा माथा में हिबोळा मारतौ गरजै अर कदैई लखावतौ के जांणै अलेखूं टांटिया छिड़नै म्हारा माथा में भणण भणण करै । म्हैं आपनै कांईं बतावूं, बतावणी आवै ई नीं ।

राजकंवर कह्यौ — बतावण री जरूरत ई कोनीं । म्हैं सब समझूं हूं । अर म्हारी आ बैन म्हारा सूं ई वत्ती समझै है ।

देंत ई मुळकियौ । वा बैन ई मुळकी । थोड़ी ताळ तीनूं ईं चुप रह्या । के इत्ता में खोडां में रड़वड़ती मूंडकियां री चिराळियां सुणीजी । आज पैली तौ वौ देंत चिराळियां सुणनै

डग डग हंसतौ, बड़बड़ाटा करतौ अर वांनै गाळियां काढ़तौ । पण अबारूं चिराळचां री आवाज कांनां में पड़तां ईं खुद अरड़ां अरड़ां रोवण लागौ, फदाफद करतौ कूदण लागौ अर गांदळां व्है जैड़ा आपरा हाथां सूं दबादब माथौ कूटण लागौ। जोर सूं डाडियौ — म्हारा माथा री नस नस में तोपां छूटै, म्हारै माथा री किळी किळी व्है जावैला । म्हारी गाबड़ माथै आज ई तौ नवौ माथौ चिप्यौ अर आज ई वौ बिखर जावैला ! थोड़ा दिन तौ इण नवा माथा रौ साव लेवतौ ! जे आज ई इण माथा नै तोपां रै धकै व्हैणौ हौ तौ वौ म्हारै माथै चिप्यौ ई क्यूं ? म्हारै माथै चिप्यौ ई क्यूं ? आप देखता जावौ, म्हारौ नवौ माथौ बिखरै जित्तै म्हैं सगळी बैनां री मूंडकियां पाछी चेप देवूंला । म्हारौ माथौ बिखरग्यौ तौ आं बैनां रा कांईं दीन व्हैला !

आ कैयनै वौ उठा सूं ताचकियौ । अर पछै वौ कांईं कांईं करतब करचा, उण सूं उणरा रांती व्है जैड़ा डील रा करार रौ पतौ पड़चौ । खोडां माथा सूं सौ सौ मण रा खिला-पटा वौ कोपरियां री गळाई भरणाटै आगा वगाय दिया । आपरा दोनूं हाथां री आंगळियां वाढ़नै वौ खोडां में रड़वड़ती मूंडकियां माथै लोई रा छांटा न्हाक्या के अपछरावां रा भूलरा खोडां मांय सूं बारै निकळणा सरू व्हिया जकौ तीण बंधगी । झबाझब पळापळ करती सगळी बैनां खोडां सूं बारै निकळगी ।

परतख दीठ रै सांम्ही आ साची वारता तौ दुनियां रा सगळा सपनां नै कूड़ा साबत कर दिया । बापड़ा सपनां री

कित्तीक जिनात के वै इण साचला नजारा नै पूग सकै ।

देंत हरख सूं किलकारचां करतौ बोल्यौ—अबै जायनै म्हारा माथा में तोपां छूटणी बंद व्ही !

आ कैयनै वौ आपरा माथा नै संभाळियौ । दो तीन वार आपरा माथा माथै हाथ फेरचा । उणरो कटचोड़ी आंगळियां सूं हाल लोई झरतौ हौ । उणरौ चांयलौ माथौ ठौड़ ठौड़ लोई सूं रातौ व्हैगौ । वौ मसखरी रा भाव सूं हंसतौ थकौ बोल्यौ—लोई रा ठौड़ ठौड़ तिलक करनै औ तौ नवा माथा नै वधावणौ है !

ठौड़ ठौड़ तिलक करचोड़ा उणरा नवा माथा में अणछक अेक नवी बात सूझी । सीजती हांडी रौ ढकणौ फदाफद करै ज्यूं वौ उछळतौ कह्यौ—अै मोत्यां रा सात्यूं भंवारा म्हैं वैनां नै दायजै देवूंला । म्हारी लाडली बैनड़ियां रै दायजै चाढूंला ।

पछै आपरा नवा माथा री खुद ई तारीफ करतौ कैवण लागौ—इण नवोड़ा माथा में तौ म्हनै अकल निसैवार दीसै । वौ पुरांणौ माथौ तौ भंवारां री गिणती में चकरी चढ़ग्यौ हौ, पण औ माथौ तौ मोत्यां रै खरचण सूं अणूंतौ राजी व्हे । माथा माथा में इत्तौ फरक व्हिया करै, इणरी तौ म्हनै आज ई सावळ ठा पड़ी ।

छठौ राजकंवर

अेक दूजा री निजर सूं अदीठ व्हेतां ई छठा राजकंवर नै मां री कह्योड़ी अेक बात याद आयगी । वा आठूं राजकंवरां नै केई वार उण बात री सार समझावती । बात नै फगत सुणणा अर याद राखणा सूं कीं नीं व्है । बात रा सार नै आपरा करमां में बरतणौ ई तौ खास बात है । वा बात यूं ही—अेक भांड भांत भांत रा स्वांग में अेड़ौ प्रवीण हौ के उणरा स्वांग आगै असली अर साची बात स्वांग जैड़ी लखावती । अेक ई स्वांग नै केई दिनां तक राखतौ । जद वौ खुद ई परगट नीं करतौ जित्तै किणी नै ई स्वांग री जाच नीं पड़ती । सौ भांत री तौ वौ बोल्यां जांणतौ । जिनावरां री आवाजां हूबौहूब आपरा गळा में बिठांण लेतौ । खुद जिनावर नीं पिछांण सकता के औ कोई मिनख आवाजां काढ़ै । सेठ, भील, जंगळियौ, साधू, राईकौ, गूजरी अर सांई इत्याद रा अैड़ा स्वांग लावतौ के देख्यां ई वणतौ । देखतौ अर सुणतौ जकौ ई इण बात री तौ ताईद करतौ के अेक उणियारा री ठौड़ उणरै सौ उणियारा है अर बोलण वास्तै अेक गळा री ठौड़ उणरै पाखती जांणै सौ गळा है ।

अेकर वौ भांड अेक पोंच्योड़ा साधू रौ स्वांग लायौ । घण-कर साधू-मातमा ई उणनै देखनै चकरीजग्या के इत्ता दिन औ करामाती साधू कठै लुक्योड़ौ हौ । अचांणचक इण भांत अणचींत्यौ कठा सूं अवतरियौ ! वौ अेक सेठ रै अठै चतरमासौ करचौ । पाखती रौ सगळौ चौखळौ उणरा दरसणां वास्तै अड़-

बड़चौ तौ वौ अड़वड़चौ के भांड रा मन में हमेसां रै वास्तै साधू वणण री जचगी । पण तौ ई मन माथै काबू राख्यौ । दरसणां वास्तै आयोड़ा भगतां नै आतमा, परमातमा, धरम, मुगति अर कल्याण रा बारा में आपरा स्री मुख सूं अैड़ा आदेस करतौ के वांरी काया उण वगत पिघळती सी लखा-वती । सेठ रा घरवाळा तौ उणरी बातां सुण सुणनै अर उणरौ आचरण देख देखनै बावळा व्हैगा । अैड़ौ संजोग तौ लारला भौ री तपस्या सूं मिळिया करै । सेठ रौ तौ गिरस्ती अर दुनियां रै माया-जंजाळ सूं जीव ई उपड़ग्यौ । अेक दिन वौ ओडियां रै मूंडै सोनौ-चांदी लायनै साधू रै पगां में राळचौ । हाथ जोड़नै कह्यौ—बापजी, भगत रौ औ परसाद कबूल करौ तौ म्हारै जीव रौ मेल धुपै । अै तौ फगत भावना रा फूल है, म्हारी हस्ती ई कांई के म्हैं आपरी कीं बंदगी कर सकूं !

साधू मुळकनै सान्त भाव सूं कह्यौ—बेटा, थारै डील रौ औ धुप्योड़ौ मेल म्हारै मूंडै क्यूं चोपड़ै ? थूं गिरस्ती होयनै जिण माया रौ त्याग करै, म्हैं साधू होयनै उणरै वास्तै हाथ पसारूं तौ म्हारा साधूपणा नै धिरकार है । थूं म्हनै इत्तौ अबूझ जांणै है कांई !

सेठ कह्यौ—म्हैं गिरस्ती किण वगत माया सारू मन विटळाय लेवां, कीं पतियारौ नीं । राज आपरै हाथां इण मेल नै सुक्यारथ लगावौ ।

साधू रै पगां ओडियां रै मूंडै माया बिखरचोड़ी पड़ी ही । पण उण सांम्ही वौ मीट ई नीं करी । सेठ रै घरवाळा

नै पक्कौ निस्चै व्हैगौ के साधू रा भेख में औ तौ सांप्रत परमेसर ई दीसै । इत्ती माया नै धूळ सस्तै जांणणिया साधू तौ दुनियां में ई बिरळा लाधै ।

सेवट चौमासा रै उपरांत अेक दिन साधू आपरै स्वांग रौ भेद परगट करनै भांड री गळाई गाल बजायनै जाचना करी । सेठ रै सांम्ही हाथ जोड़नै कह्यौ—गरीब री भांडाई माथै रीझ करनै बगसीस करौ अंदाता । म्हैं रावळौ भांड हूं ।

आ कंयनै वौ खाकां बजाई । आपरा गाल बजाया । सेठ तौ आपरा परमेसर रै मूंडै बगसीस री आ जाचना सुणनै चितबंगियौ व्हैगौ । इत्ता दिन औ कांई खिलकौ व्हियौ ! घरवाळां री सगळी भगती निरफळ गी । चतर भांड कैड़ा भरमजाळ में फंसाया । थोड़ी ताळ सोच विचारनै सेठ कह्यौ—बावळा, म्हैं तौ थारै पगां ओडियां रै मूंडै इत्ती माया बिखेरी ही । साधू रा रूप में म्हारौ वौ परसाद लेयनै वहीर व्है जातौ तौ म्हैं म्हारा बडभाग समझतौ । म्हनै तौ इण स्वांग रौ ऊमर में ई भेद परगट नीं व्हैतौ । म्है तौ थारा नांव री माळा फेरता । हाथां आयोड़ी माया रै ठोकर मारनै अबै भांडाई री बगसीस सारू हाथ जोड़ै ! म्हैं देयनै मूरख बणियौ, तौ थूं माया नै भोळप सूं ठुकराय मूरख बणियौ । थनै आ कांई ऊंधी सूझी ।

भांड गाल बजावतां नरमाई सूं कह्यौ—अंदाता, आपनै जकी बात ऊंधी निगै आवै, वा म्हारै वास्तै साव संवी है । म्हैं इण वगत साधू बणियोड़ौ माया रै वास्तै मन विटळाय लूं तौ साधू रौ भेख लाजै ! अणगिण माया व्हैतां थकां ई

आ म्हारै वास्तै अकरम री कमाई है । फगत भांडाई री बगसीस रौ ई म्हैं हकदार हूं । साधू रा भेख अर आचरण सूं आप धोखा में आयग्या तौ कांई, म्हैं तौ धोखा में नीं हौ । असली बात म्हारा सूं तौ छांनी नीं ही । चार मईनां सूं घरवाळा बाट न्हाळै । गरीब भांड नै खुला हाथ सूं बगसीस दिरावौ ।

अठा तक पूरी बात सुणायां पछै राजकंवरां री मां आपरै आठूं बेटां नै समभावती — वौ भांड साधूपणा रै भेख री कित्ती लाज राखी । साधू रौ भेख तौ डील माथै राख रमायां, चंदण रा तिलक-छापा करयां अर कपड़ां नै भगवा रंगावण सूं ई व्है जावै, जिणरी लाज बचावण सारू वौ भांड पगां में बिखरचोड़ी अलेखूं माया नै ठुकराय दी । इण हिसाब सूं मिनख जमारा रै खोळिया री लाज रौ तौ कुण कूंतौ कर सकै ? पण पग पग माथै ई मिनख जमारा रै खोळिया री लाज बिगड़ै तौ ई कुण उणरी परवा करै ! साधू रा भेख रौ कांई, दिन में पांच वार बदळियौ जा सकै, पण मिनख जमारा रौ खोळियौ अेकर छूट्यां हमेसां रै वास्तै छूट जावै । थें दुनियां री होडाहोड मत करज्यौ । म्हारी कूख अर थांरै खोळिया री लाज उण भांड री गळाई राखज्यौ । थांनै म्हारी आ इज सीख है ।

छठौ राजकंवर मारग चालतां चालतां मां री इण बात अर मां री इण सीख नै चितारतौ रह्यौ । मां री दिवगंत आतमा नै आदर सूं माथौ निवावतां कह्यौ — मां थांरै आठूं बेटां वास्तै थारी आतमा में कदेई कळेस मत उपजाजै, मरियां

पछै गिरजड़ा के स्याळ आं खोळियां रौ भलांई बिगाड़ करै पण जीवतां थारी कूख सूं जायोड़ा खोळियां रै कदैई दाग नीं लागैला ।

वौ पंचाद कूंट सांम्ही आडी अंवळी डांडी माथै चालतौ ई रह्यौ ! चालतां चालतां वौ अेक विकराळ जंगळ में दिहा-वळौ व्हैगौ । जंगळ में रूंखड़ां रौ जांणै जाळौ तणियोड़ौ ! डांडी तौ पतळी पड़ती पड़ती खुद जंगळ में ई रमगी । अठी-उठी जोयां डांडी री सोय तौ लाधैला ई । आ सोचनै राज-कंवर जंगळ रा उण जाळा में मारग सोधण सारू अळूझग्यौ।

डांडी जोवण रा अळूझणा रौ ई अेक खास आणंद है । राजकंवर सोचण लागौ मारग रा चीला पगां हेटै आय जावै तौ अेक आंधौ ई आसांनी सूं चाल सकै । सीधा मारग माथै चालणौ, आ तौ मारग री बळिहारी है पण आंडौ, अंवळौ अर गमियोड़ौ मारग सोधणौ के नवौ पंथ मांडणौ, आ चालणियां री इदकाई है ।

वौ निसंक भाव सूं जंगळ रा रूंखड़ां रै परकमा देवतौ हौ के अेक सूवटौ उडतौ उणरै सांम्ही आयौ । बोल्यौ — रांम रांम बटाऊ, रांम रांम !

राजकंवर ई सूवटा सूं पाछा जवारड़ा करचा । औ तौ कोई अनोखौ ई सूवटौ है । साव पाखती आयनै सूवटौ तौ बिना किणी डर रै कैवण लागौ — बटाऊ, मारग भूलग्या कांई ! जाळौ छायोड़ा इण जंगळ में आवै जकौ ई डाफाचूक व्है जावै । हेर हेरनै हार जावै तौ ई वांनै मारग को लाधै नीं । इण थट लाग्योड़ा जंगळ में मारग बतावण री सेवा म्हैं करचा

करूं । म्हारै लारै आवौ, म्हैं आपनै तुरत मारग री सोय बताय देवूंला ।

राजकंवर मुळकनै कह्यौ — हाल म्हनै घणी जेज नीं व्ही, म्हैं मतै ई सोय करलूं तौ सावळ है !

सूवटौ कह्यौ — म्हां नाकुछ पंछियां री मदत लेवतां थांनै संकौ आवै तौ बात न्यारी !

राजकंवर कह्यौ — नीं, नीं, संका जैड़ी बात म्हारा मन में कीं नीं । म्हैं तौ सगळा जीवां नै अेक सरीखा जांणूं । पण सगळा जीव अेक सरीखा व्हैतां थकां ई, म्हैं मिनख आचरण में थांरां सूं घणा हीण अर अधम हां । थांरौ सुभाव तौ कुदरत सूं बणियोड़ौ है जकौ ई है। थें छळ, कपट, ढोंग अर जाळसाजी तौ नीं करौ । म्हे मिनख थांरी होड कीकर कर सकां ! यूं सगळा ई पंछी म्हनै अणूंता आछा लागै पण सूवटा, कबूड़ा, चिड़ियां, कोयलां अर कमेड़ियां तौ म्हनै अणूंती इज सांतरी लागै ! म्हे मिनख लोग थांरा आचरण नै पूग जावां तौ पछै चाहीजै ई कांई ! म्हैं तौ खुद म्हारै आपै मारग री सोय करणी चावतौ, थारा सूं मदत लेवणा में म्हनै संकां री कांई बात ! थनै म्हारी बात खारी लागी व्है तौ म्हैं माफी चावूं । अबै म्हैं थूं बतावै उठीनै ई चालण वास्तै त्यार हूं ।

पण राजकंवर चालण वास्तै त्यार व्हियौ तौ सूवटौ मोळौ पड़ग्यौ । वौ कह्यौ — थोड़ी ताळ इण जंगळ में विसाई खावौ । म्हैं आपनै सगळी बात मांडनै बतावूं । आपरी बातां सुणनै म्हैं तौ गताघम में पजग्यौ । थें मिनख लोग खुद तौ अकरम अर ऊंधा कांम करौ जका करौ ई हौ, पण म्हां पंछियां नै ई

आपरौ मतलब सारण वास्तै ऊंधा कांम सिखाय दिया । म्है तौ हा जैड़ा हा । पण मिनख म्हांनै ई छळ, कपट अर जाळ-साजी रौ ग्यांन करवाय दियौ । थांरो बातां सुण्यां पछै थांरै साथै घात करण सारू म्हारौ मन पाछौ पाछौ व्है । म्हैं थांनै जंगळ री गमियोड़ी डांडी री सोय बतायनै मौत रै मारग लै जावणी चावतौ हौ । अठा सूं दोय कोस आंतरै ठगां रौ टाळकौ गुड़ौ है । म्हैं ठगां रै सिरदार रौ पाळियोड़ौ सूवटौ हूं । वौ म्हनै बोलणौ अर मिनखां साथै छळ करण रौ नवौ ग्यांन करायौ । इण जंगळ में डांडी घालणी अर अठै डांडी नै रमा-वणी आ सगळी ठगां री इज करतूत है । पथ भूल्या बटाऊ नै अठा सूं बारै काढ़नै ठगां रै गुड़ा रौ मारग बतावणौ औ म्हारौ कांम है । ठगां रै सिरदार वाळौ ग्यांन तौ म्हैं घणौ दौरौ सीख्यौ, क्यूंके म्हारी पीढ़ियां में इण नवा ग्यांन रौ कांम को पड़्यौ हौ नीं । इणनै सीखण वास्तै म्हैं कित्तौ दुख उठायौ अर कित्ती मार खाई, उणरी पीड़ म्हैं जांणूं के म्हारौ जीव जांणै । वौ सिरदार सीखणा में भूल व्हैतां ई म्हारा पंजा में सूळां खुबावतौ, पांखां आगी लेयनै ताकळा रा गोदा देवतौ अर म्हारी जीभ माथै लूण अर मिरचां भुरकावतौ । मिनखां री इण बोली अर मिनखां रा इण ग्यांन नै सीखण वास्तै म्हैं कांई कांई फोड़ा भुगतिया वांनै जद कदैई याद करूं तौ म्हारौ काळजौ सुरक सुरक करै । उण सिरदार री मार रौ म्हनै इत्तौ ऊंडौ डर बैठोड़ौ है के इण जंगळ में साव छूट्‌टौ अर आजाद व्हैतां थकां ई म्हैं किणी दूजी ठौड़ उड नीं सकूं । दुनियां रै किणी छेड़ै वौ म्हनै छोडैला नीं । थें मिनख लोग आपरा स्वारथ री

खातर म्हां भोळा पंछियां नै ई विटळाय दिया । आज दिन तांई थांरै इण नवा ग्यांन रै आसरै म्हैं कित्ता बटावुवां रै साथै घात करचौ, इणरौ म्हनै आज सावळ चेतौ व्हियौ ? पण थें मिनख ई माहौमाह अेक दूजा सूं पड़प सकौ। जकौ जोरावर व्है वौ आपरौ कांम सार लेवै । थां लोगां सूं पूग आवणियौ इण दुनियां में कोई नीं । होळै होळै सेवट म्हैं ई नवा ग्यांन रै संगत व्हैगौ । किणी बटावू रै सागै घात के छळ करणा में म्हनै कीं दुख नीं व्है । मिनख मिनख सगळा अेक माजना रा है । थां मिनखां में कुण तौ चोखो अर कुण भूंडौ ! थें आपस में ई अेक दूजा रै साथै घात करौ तौ इण दुनियां में दूजौ थांनै कुण समझा सकै। थांरौ तौ सगळौ धरम , ग्यांन अर सगळो करामातां विटळियोड़ी है । अबै म्हां पंछियां नै ई आपरै सांचै ढाळणा सरू कर दिया । पण आपरी बातां सुणनै म्हारौ नवोड़ौ ग्यांन लोप व्हैगौ । अबै आपरै साथै घात करणा सारू किणी भांत म्हारौ मन नीं मांनै । ठगां रौ सिरदार म्हनै छूनै तौ छौ छूनतौ । आप आया जिणी मारग पाछा जावौ परा, म्हैं आपनै ठेट तक मारग बतावतौ चालूंला ।

राजकंवर कह्यौ—म्हारै भला री खातर थारै प्रांणां रौ जोखौ म्हैं कीकर ओढ़ सकूं । म्हैं तौ अै सगळी बातां सुणियां अवस ठगां रै गुड़ै जावूंला । आपरा हाथ सूं किणी नै ठगणौ आ सरम री बात है । पण खुद ठगावणा में किण बात री सरम । ठगणौ अधरम व्है सकै पण ठगावणौ तौ अधरम कोनीं । थें पंछीड़ा ई मिनखां री सीख सूं इण भांत छळ अर जाळसाजी सीखग्या तौ सगळी दुनियां रौ बसणौ ई अकारथ

अर निरफळ व्है जावैला । लीला सूवटा ! थूं निसंक हवा, जंगळ अर आभा में विचरण कर, थारौ कुण ई कीं बिगाड़ नीं सकै । थारी कुदरती इंछा अर सुभाव सूं थारौ जीवण बिता । मिनखां रै नवा ग्यांन नै हमेसां रै वास्तै पांतरजा । म्हांरा ग्यांन अर म्हांरी करामातां सूं म्हांनै ई विटळण दौ । थें पंछी जिनावर तौ अछूता रैवौ ।

सूवटौ कह्यौ — थें मिनख लोग म्हांनै अछूता रैवण दौ तौ ! थें भलांई नित नवा हुनर सीखौ, नित नवौ थांरौ ग्यांन बधावौ, पण इण बधापा सूं म्हां पंछी जिनावरां रै प्रांणां री जोखम क्यूं बधै ? थें म्हांनै कीकर अर कित्ता जल्दी मार सकौ, कांई थांरौ ग्यांन इणी बात में है । जे इणरौ नांव ग्यांन है तौ पछै म्हांरौ अग्यांन घणौ वत्तौ ।

सूवटा रै मन रौ खार इत्ता दिनां पछै आज उगटियौ । सांम्ही कोई सुणणवाळौ आदमी व्है तौ सुणावणा में ई आणंद है । सूवटौ धकै फेर कह्यौ — आप समझौ जिण सूं म्हैं आपनै इत्ती बातां सुणाई हूं । म्हारौ कैणौ मांनौ तौ ठगां रै गुड़ै जावणा में कीं सार नीं । आप अठा सूं ई पाछा आपरै ठायै वळ जावौ । म्हैं खुद अबै ठगां री संगत छोडनै आपरै साथै चालूंला । म्हनै सुभट लखावै के आपरै साथै चालूं तौ म्हनै किणी भांत री कीं जोखम कोनीं । हमेसां सखरी अर ग्यांन री बातां सीखण रौ मौकौ मिळैला ।

राजकंवर कह्यौ — औ तौ थारौ बडापणौ है । पण अेकर तौ ठगां रै गुड़ै जावूंला ई । म्हैं जांणूं के जलमतौ टाबर नीं तौ चोरी करै, नीं ठगाई करै, नीं किणी रै

साथै घात करै, नीं छळ करै अर नीं जाळ-साजी करै । नीं ठगां री कोई न्यारी जात ई व्है । मोटौ व्हियां पछै मिनख नै किणी कारण सूं अै सगळा अकरम सीखणा पड़ै । म्हनै पक्कौ विस्वास है के किणी कारण सूं अै हीण अकरम सीखीजै, तौ किणी कारण सूं पाछा मिट ई सकै । मिसाल देणा सूं थारै आ बात सावळ समझ में आवैला । थारी खुद री ई बात लै । थूं जलम सूं भूंडौ थोड़ौ ई हौ । ठगां रै सिखावण सूं थामें भूंडायां सांचरी । थारै कैणा मुजब म्हारी बातां सूं थामें पाछी सुमत चेतगी अर अेक छिण में थारा मन री हीण भावनावां मिटगी । उणी भांत ठगां रा मन में ई पाछी सुमत वापर सकै ।

सूवटौ कह्यौ — म्हनै तौ मिनखां में सुमत वापरणा रौ रत्ती भर ई भरोसौ कोनीं । पछै आपरै दाय पड़ै ज्यूं करौ ।

राजकंवर मुळकनै कह्यौ — थारौ भरोसौ नीं करणौ ई वाजब है, पण म्हनै पूरौ भरोसौ है ।

आ बात कैयनै राजकंवर सूवटा नै भर निजर जोयौ । कसूंबल टूंच । लीली पांखां । कित्तौ सोवणौ पंछी है । मिनख रा ग्यांन में औ कांई विस उगटियौ के वौ अैड़ा भोळा पंछी नै ई छळ अर जाळसाजी रा पाठ पढ़ाय दिया । औ सुरंगौ पंछी मिनखां रा बारा में कैड़ा हीण भाव राखै ! अबै इण दुरगत री माठ कठै ?

सूवटौ कह्यौ — आपनै भरोसो व्है तौ पधारौ, म्हैं आपनै पालूं कोनीं । आप आवौला जित्तै म्हैं इणी जंगळ में आपरो बाट जोवूंला, पाछा वळतां म्हैं आपरै साथै चालूंला ।

राजकंवर कह्यौ—जरूर जरूर ! म्हारौ सौभाग के म्हनै थारी संगत मिळैला ।

सूवटौ राजकंवर नै जंगळ रै जाळा सूं बारै काढ़तां कह्यौ—औ धूंम मारग है । सीधौ ठगां रै गुड़ै जावैला । कीं अबखी पड़ै तौ म्हनै चितारज्यौ । हूं तौ नाकुछ पंछी पण म्हारी सरधा मुजब आपरै कांम आवूंला ।

राजकंवर हां ना रौ कीं जबाब नीं दियौ । सोचण लागौ—मिनखां रै गुड़ै जावतां खुद मिनख नै जोखौ है, अर उण अबखी माथै जंगळ रौ पंछी मिनख रै कांम आवैला ! मिनख रौ ग्यांन सेवट इण ठौड़ आयनै छूटौ ! घणा रंग है मिनख नै अर घणा रंग है उणरा ग्यांन नै । थोड़ी ताळ पछै उणनै ध्यांन आयौ के वौ सूवटा नै तौ पाछौ कीं जबाब ई नीं दियौ । अणछक झिझकनै कह्यौ—जरूर चितारूंला म्हारा सूवटा भाई, थनै चितारूंला । थां पंछियां नै म्हैं नाकुछ नीं समझूं, म्हां मिनखां सूं घणा सिरै समझूं ।

ठगां रै गुड़ै जावण वाळा उण धूंम मारग माथै राज-कंवर खाथौ खाथौ चालण लागौ । जल्दी पूगण सारू उणरा मन में अणूंतौ कोड, अणूंती उमंग अर लाळसा ही । चालतां चालतां उणनै मारग माथै अेक बगेची निगै आई । बगेची रै पाखती आतां ई अेक हिरण मारग रै आडौ फिरनै कह्यौ—रांम रांम बटाऊ, रांम रांम !

राजकंवर हिरण सूं पाछा जवारड़ा करचा । हिरण फेर धकै कैवण लागौ—बटाऊ, यूं टळिया टळिया कीकर जावौ हौ । तिरस लागी व्है तौ मीठौ इमरत व्है जैड़ौ पांणी पीवौ ।

तिरस नीं लागी व्है तौ इण बगेची में धमेक बिसाई खावौ । बैठोड़ा रै तौ ऊभोड़ौ ई पांवणौ व्है । इण तपतो में म्हारी बगेची रै गळाकर नीसरौ अर म्हनै पांणी पीवण जोगौ ई नीं समझौ । भलां आ बात कीकर व्है ? जांणता व्हौ तौ म्हनै कीं ग्यांन री बातां बतावौ । अर यूं हवा रै वेग थें म्हारै लारै दौड़ौ तौ ई हाथै नीं आवां । म्हैं चलायनै आपरै पाखती आयौ । जद म्हैं आप सूं नीं डरां तौ आपनै तौ म्हारा सूं डरण रौ वास्तौ ई नीं ।

हिरण बोलतौ रह्यौ जित्तै राजकंवर उणरै सांम्ही हरख सूं जोवतौ ई रह्यौ । कित्तौ रूपाळौ जिनावर है ! खबसूरत आंख्यां जांणै इमरत रा प्याला । मांदौ आदमी देख्यां साजौ व्है जावै । ओपती सींगड़ियां । पळकतौ डील । रेसम नै ई सात वार मात करै जैड़ी कंवळी रूंवाळी । पतळौ अर लुभा-वणौ मूंडौ । आं पतळी पतळी टांगां में परतख वेग नै ई लारै राखण रौ करार । मिनखां री वास सूंघनै अै चरता ई हवा रै समचै दौड़ जावै, जकौ म्हारै पाखती ऊभौ पांणी पीवण री मनवारियां करै । जीवण में अैड़ौ सुख फेर कद आवैला । ठगां रा सिरदार गोडै जावणौ तौ जरूरी ई है, पण धमेक इणरी संगत रौ ई आणंद लेलां ।

सूवटा री सगळी बातां सुणियां पछै हिरण री मीठी बातां रै मांयला खार रौ राजकंवर नै तुरत पतौ पड़ जावणौ चाहीजतौ । पण वौ तौ सगळां नै आपरै सस्तै इमरत जांणतौ । हिरण री बातां सुणनै उणरा मन में तुरत आ बात आयगी के जे आ ई ठगां रै सिरदार री जाळसाजी है तौ सूवटौ

उणनै अवस इणरी जांणकारी देवतौ । पण मुद्दा में साची बात आ ही के सूवटा नै हिरण वाळा छळ रौ कीं पतौ नीं हौ अर नीं हिरण नै ई कीं सूवटा वाळी बात रौ अेलम हौ । ठगां रौ सिरदार इण बात नै आछी तरै जांणतौ के अेक दूजा रै अेलम री आपस में ठा पड़ियां कीं न कीं गड़-बड़ होवण रौ अंदेसौ है । मिनख ई मौका माथै गलती कर जावै । पछै पंछी जिनावरां री कित्तीक जिनात ! वौ मन में फेर विचार करचौ के वेम करचां अर नीं करचां फरक ई कांई पड़ै । वौ तौ खुद चलायनै ठगां रै गुड़ै आपरी मरजी सूं जावै । अैड़ा भोळा जिनावर माथै वेम करणौ खुद रा मन रौ ई ओछापणौ है ।

हिरण रै बोलणा रौ अर उणनै निरखण रौ आणंद मन में लेवतां लेवतां ई राजकंवर उण बिचाळै अै सगळी बातां आपरा मन में विचारली । हिरणां सूं मिनखां रै डरण री बात सुणनै वौ मुळकतौ थकौ कह्यौ — बावळा, थूं हिरण होयनै सांप्रत जम रै पाखती चलायनै आयग्यौ तौ पछै जम नै थारा सूं डरण री तौ बात ई कांई । म्है मिनख थां हिरण वास्तै तौ जम बिरौबर ई हां । हिरण जैड़ा भोळा अर संत जिना-वर सूं तौ अेक फूंदी ई नीं डरै । जे थूं मीठौ इमरत व्है जैड़ौ पांणी नीं पायनै हळाहळ जैर पावै तौ ई म्हैं हरख सूं पीवूं । मिनख रै हाथां नित अलेखूं हिरण मरै, जे इण खातै हिरण रै हाथ सूं अेक मिनख मर जावै तौ इणसूं वत्ता सौभाग री फेर कांई बात व्है । थां हिरणां रौ फरज तौ म्है अेकर दुनियां रा सगळा मिनख मरनै ई नीं उतार सकां ।

हिरण आपरी रूपाळी आंख्यां नै अठी-उठी फेरतौ राजकंवर रा मूंडा सांम्ही दो तीन वार जोयौ — जांणै वौ आपरा मन में पक्कौ निस्चै करणी चावतौ के वौ मिनख है के कोई दूजौ भलौ जिनावर है। है तौ साचांणी मिनख ई। पण मिनख भला कद सूं व्हिया! इण खातर घड़ी घड़ी मन में वेम उपजै। औ कदास किणी भली दुनियां रौ मिनख दीसै! मिनख किणी ई दुनियां रा व्है तौ कांई! तूहड़ा री किसी कोर मीठी! मिनख रौ रूप धारयां औ अवस कोई दूजौ जिनावर है। इणरी आंख्यां में काळ कठै रमै? इणरा उणियारा माथै जम री छीयां कठै?

वौ आपरी छोटी सी पूंछ नै हिलावतां कह्यौ — मारग माथै अठै तावड़ा में क्यूं ऊभा? चालौ बगेची में चालां। देखौ तौ खरी के म्हारी बगेची री छिब किसीक है?

राजकंवर कह्यौ — म्हनै आंचौ तौ अणूंतौ है। पण थारी मनवार कीकर टाळूं।

आ केयनै वौ हिरण रै साथै साथै बगेची में आयौ। बगेची देवता रमै जैड़ी। सगळी बगेची में फगत गुलाब रा फूल अर नींब रा रूंख। दूजी हरियाळी रौ कोई पांन ई नीं। कैड़ी रमणीक जागा है! राजकंवर रौ मन गुलाब रै फूलां ज्यूं खिलगौ। वौ अणूंता कोड सूं कह्यौ — थारी मया व्है तौ म्हैं पाछौ वळतौ अवस इण रमणीक बगेची में थोड़ा दिनां तक सुरग रौ आणंद लेवणी चावूं।

हिरण मन में सोच्यौ — अबै पाछा तौ थारा फूल ई नीं आवै। आछा करम करचा है तौ सुरग रौ आणंद सुरग ई

में लेजै । नींतर नरक री दुख, संताप भोगणौ है इज ! मिनख सुरग में जावै तौ पछै नरक किण खातर बणिया ! पण आपरा अंतस री बात वौ बारै दरसाई कोनीं । ऊपरला मन सूं हंसनै कह्यौ — इण बगेची में रैवण सारू म्हारी मया री कांई जरूरत, औ तौ आप लोगां रौ ई घर है । म्हैं तौ आप लोगां री हाजरी सजायनै म्हारौ आगलौ जलम सुधारणौ चावूं ।

आ कैयनै हिरण अेक नींबड़ी रै हेटै आयनै ऊभग्यौ । राजकंवर ई उणरै पाखती वेकळू रेत में बैठग्यौ । के इत्ता में अेक कबूड़ौ नींबड़ा री डाळी माथै बैठनै गटरगूं गटरगूं करण लागौ । हिरण रै साथै राजकंवर ई ऊंचौ कबूड़ा सांम्ही भाळियौ । कबूड़ौ घांटी हिलायनै गटरगूं करतौ हौ । दूध रै उनमांन उणरौ धोळौ रंग । गुलाबी पंजा । गुलाबी आंख्यां रै मांय भूरी टिपकियां अर गुलाबी टूंच । उणरी धोळी अर कंवळी पांखां देखनै राजकंवर नै लखायौ के जांणै वौ बरफ रा थर मांय सूं निकळनै सीधौ अठै आयौ है । राजकंवर थुथकी न्हाकनै कह्यौ — कित्तौ रूपाळौ कबूड़ौ है ! मन करै के इणनै बरसां लग देखतौ ई जावूं ।

कबूड़ौ अर हिरण दोनूं जणा सोच्यौ के इण भोळा बटाऊ नै आधी ढळियां ई मरणौ पड़ैला अर औ बरसां लग जीवण रा सपना देखै ।

राजकंवर कह्यौ — मन तौ करै के सपना में ई आ बगेची छोडनै कठैई दूजी ठौड़ नीं जावूं, पण अबारूं तौ म्हनै मन परबारौ ई जावणौ पड़ैला । आणंद अर हरख बिचै मिनख रौ फरज वत्तौ है ।

पछै राजकंवर वां दोनां नै जंगळ में मारग गमण री अर सूवटा वाळी वारता सगळी मांडनै बताई । हिरण राज-कंवर रै मूंडा सांम्ही टग टग जोवतौ सगळी बात सुणतौ रह्यौ। वौ तौ बात रै बिचाळै आपरी पूंछ ई नीं हिलाई । भाटा रौ घड़ियोड़ौ व्है ज्यूं ऊभौ रह्यौ । अर नीं कबूड़ौ ई बात रै बिचाळै गटरगूं करचा । वौ तौ आपरी पांखां चेप अर घांटी नीचै करनै राजकंवर रै मूंडा सूं निकळियौ अेक अेक आखर पीवतौ रह्यौ । डाळा माथै वौ तौ खुद काठ रौ बणि-योड़ौ व्है ज्यूं बैठौ रह्यौ । बात संपूरण व्हियां हिरण अर कबूड़ौ दोनूं अेक दूजा रै सांम्ही देख्यौ । दोनूं ई अेकण सागै जांणै कांई सोचनै राजकंवर नै पूछचौ — कांई थें खुद चलायनै ठगां रै गुड़ै जावौ ? उठै जायनै मरण वास्तै ई कांई थें इत्ती ताळ आंचौ करता हा !

राजकंवर कह्यौ—प्रांणियां रै हाथै व्है तौ वै लाख बरसां तांई मरणौ नीं चावै । पण जलम अर मरण दोनूं ई वांरै हाथै कोनीं । मौत नै हाथ जोड़ां अर पग पकड़ां तौ ई वा अेक छिण वास्तै ई बगसै कोनीं, पछै मरणा सूं डरियां कांई सांधौ लागै । इण खातर मिनख जमारा री सारथकता इण बात में है के जलम री गळाई मरणौ ई मंगळीक मांनीजै ।

राजकंवर धकै फेर ई कीं कैवणी चावतौ हौ के हिरण बीच में ई बोल्यौ — अठै आप थोड़ा सा भूठ बोलग्या । म्हारी जांण में मिनख जमारा रौ सार फगत इणी अेक बात में के वौ आपरी खुद री काया रै विना दूजा नै मारणौ मंगळीक जांणै । म्है पंछी जिनावर तौ म्हांरै वास्तै मौत अर काळ

तौ मिनख नै ई मांनां ।

राजकंवर मोळौ पड़नै कह्यौ—हां भाई, बात तौ थारी साव साची । पण पंछी जिनावरां नै मारतौ मारतौ सेवट मिनख खुद पंछी जिनावरां नै इण मारण रा कांम में आपरै साथै ले लिया है । सूवटा जैड़ा भोळा पंछी नै कीकर वौ आपरा कांम में भेळौ लियौ, समझणी चावूं तौ ई म्हारै सावळ समझ में को बैठै नीं । म्हैं ठगां रै गुड़ै जायनै वांनै वत्ती नीं तौ कम सूं कम आ बात तौ समझाय देवणी चावूं के भला आदमियां छळ, कपट, जाळ-साजी अर हित्यावां बिना थांरौ गुजारौ नीं व्है तौ थें अै अधरम करौ तौ करौ, पण थांरै आ अकरमां में भोळा पंछी जिनावरां नै क्यूं फांदौ ? जे अै छळ-कपट सीखग्या तौ इण दुनियां रौ ऊपरलौ पांनौ कदैई नीं आवैला !

हिरण कबूड़ा रै सांम्ही देखनै कह्यौ—हाल आपनै सूवटा री ई ठा पड़ी है । खुद म्हैं अर औ कबूड़ौ ई ठगां रै सिखायोड़ा इण बगेची में बटावुवां साथै छळ अर घात करां हां । अठा सूं टळ परौ नै कोई पाछौ नीं जावै परौ, औ जिम्मौ म्हारौ है । मीठी मीठी बातां में भरमाय, इमरत व्है जैड़ौ मीठौ अर ठाडौ पांणी पाय अर इण बगेची में सावळ बिसाई खवाय सीधौ ठगां रै गुड़ै रवांना करदां । बटावू रै रवांना व्हेतां ई औ कबूड़ौ उडनै ठगां रै सिरदार नै समचौ दे आवै । समचौ मिळतां ई वै आपरा कांम वास्तै त्यार व्हे जावै ।

पग सूं सींगड़ियां रै बिचाळै खाज खिणनै वौ फेर कैवण

लागौ — अबै आप सूं कांई छिपावां। आप खुद चलायनै उठै जावौ ई हौ, पछै म्हारा छळ सूं ई कांई गरज सरै! आप म्हांरै सांम्ही आपरौ निरमळ अंतस परगट करियौ तौ म्हांनै ई सगळी बातां दरसावणी पड़ै। नींतर मिनख माथै तौ म्हैं अणूंता इज खार खायोड़ा बैठा हां। आगला जलम में सिंघ री जूंण हाथ आय जावै तौ इण दुनियां सूं मिनख जात रौ अंस ई मेट दूं। म्हारै माईतां नै म्हारै देखतां देखतां तीर सूं बींध न्हाकिया। ठगां रै भाग रौ म्हैं अेकलौ बचग्यौ। उण वगत रौ अरड़ावणौ सुणियां तौ सिंघा रा ई काळजा पिघळ जावै, पण मिनख रा डील में दया रौ लवलेस ई कोनीं। वौ तौ जिनावरां रौ अरड़ावणौ सुणनै वत्तौ राजी व्हे। उण दिन न्हाय छूटचां पछै म्हैं ठगां रा जाळ में फंसग्यौ। अर ठगां रौ सिर-दार जद म्हनै मिनखां रै साथै छळ करण री बात बताई तौ म्हैं अणूंतौ राजी व्हियौ। उणरी सिखायोड़ी बातां अर उणरा नवा ग्यांन नै म्हैं तुरत सीखग्यौ। म्हारै हिड़दा रौ औ साच देखनै सिरदार म्हारै माथै अणूंतौ राजी व्हियौ।

गुटरगूं करनै कबूड़ौ बीच में बोल्यौ — पण म्हैं मिनख री बोली अर उणरा ग्यांन नै घणौ दोरौ सीखियौ। घणौ ई खपतौ तौ ई म्हारै वै बातां समझ में ई नीं आवती। घोखतां घोखतां ई भूल जातौ। म्हांरी जात में ई कोई छळ अर जाळसाजी करणी नीं जांणै, पछै मिनखां री बातां म्हारै कीकर हीयै ढूकै। पण ठगां रौ सिरदार तौ म्हारौ लारौ छोड़ियौ ई नीं। सेवट अणूंतौ कायौ व्हियां पछै वौ अेक नवी अटकल विचारी। अेक मिनकी नै सगळा पाठ पढ़ायां

पछै म्हारी गरू बणाई । मिनकी रै गोरकां अर उणरा पंजां रा डर सूं म्हनै मिनखां री बोली अर वांरौ ग्यांन माडै ई सीखणौ पड़्यौ । कांई मिनखां रा ग्यांन सूं दुनियां रौ विणास ई व्है सकै, उणरा ग्यांन में भलाई रौ अंग लवलेस ई कोनीं ?

राजकंवर गळगळा कंठ सूं कैवण लागौ — थांनै कांई बतावूं ? म्हांरै ग्यांन अर म्हांरी अकल रा अै नतीजा व्हैला, म्हैं सपना में ई आ बात नीं जांणी ही । थें म्हारी बातां रौ ऊंधौ मतलब मत लेजौ । म्है मिनख थां पंछी जिनावरां नै मारण री नित नवी अटकळां विचारां अर म्हैं थांनै भलाई री सीख देवूं, थांरी समझ परवांण औ ई म्हारौ छळ व्है सकै ! इण खातर थांनै भलाई री बातां बतावतौ संकूं । थांनै मारणा रौ बदळौ थें अवस मिनखां सूं लौ, म्हैं थानै पालूं कोनीं । थांरा बदळा सूं म्है सगळा मिनख इण धरती सूं खूट जावां, इण बात री म्हनै रत्ती ई चिंता कोनीं, पण हिरण जैड़ा संत जिनावर अर कबूड़ा जैड़ा संत पंछी मिनखां रै सिखायां वांरौ छळ, कपट, जाळसाजी अर वांरौ ग्यांन सीख-ग्या तौ पछै आ दुनियां जीवण कावल नीं रैवैला । म्हैं मांनूं के म्है लोग जीवण रै काबल कोनीं, पण आ दुनियां तौ जीवण जोगी है । अबै थां पंछी जिनावरां रै ई हाथै है के आ दुनियां जीवण जोगी बणी रैवै ! म्हैं तौ फगत आ बात जांणूं हूं के इण दुनियां सूं कबूड़ां री गुटरगूं, सूवटा अर कोयलां रौ बोलणौ, चिड़ियां रौ चहकणौ, हिरणां रौ मलापणौ खतम व्हैगौ तौ इण दुनियां रौ बसणौ ई अकारथ व्है जावैला ।

सिंघ, स्याळ, बघेरा, बिसांदरा, सांप, मकड़ियां, बाज, सिकरा गिरज अर मिनखां रै भरोसै आ दुनियां कित्ता दिन तक टिक सकैला ? कबूड़ा ! थूं मिनखां री बोली अर वांरा ग्यांन नै पांतरजा अर थारी मीठी गुटरगूं नै ई याद राख, याद राखै जैड़ी बात तौ फगत आ इज है । अर म्हारा लाडला हिरण थूं थारौ मलापणौ भूलनै मिनखां वाळी चाल मत सीख, थारी भोळी आंख्यां में मिनखां वाळी रंगत मत ला; नींतर इण दुनियां रौ सगळौ आणंद ई खतम व्है जावैला ।

कबूड़ौ उडनै राजकंवर रा खांधा माथै बैठग्यौ । गुटरगूं गुटरगूं करण लगौ । हिरण उणरै अड़ौअड़ ऊभनै उणरा डील सूं खसण लागौ । राजकंवर री आंख्यां जळजळी व्हैगी । हिरण रा डील माथै हाथ फेरण लागौ । कबूड़ौ कह्यौ — जे मिनकी म्हारी गरू नीं बणती तौ म्हैं अै बातां कदेई नीं सीखतौ, पण कांई करूं उणरा घोरकां आगै म्हारौ बस नीं चाल्यौ । पण अबै म्हनै रोस रोसनै मार न्हाकै तौ ई म्हैं थांरी बोली अर थांरा ग्यांन नै नीं सीखूं ।

हिरण माथौ ऊंचौ करनै कह्यौ — कांई करूं, म्हारै माईतां रौ अरड़ावणौ सुणूं तौ म्हनै सिंघ बणणा री लाळसा करणी ई पड़ै । म्हारौ काळजौ आप चीरनै देखौ तौ आपनै म्हारा मन री साची बातां ठा पड़ै ।

राजकंवर कह्यौ — साची बातां जांणण वास्तै म्हनै काळजौ चीरण री जरूरत कोनीं । थारा म्हारा काळजा किसा दो है ।

थोड़ी ताळ तीनूं जणा ई बोला बोला ऊभा रह्या । पण उण अबोलपणा में वै अेक दूजा सूं घणी घणी बातां

करी । जांणै कांई सोचनै कबूड़ौ अर हिरण दोनूं अेकण सागै कह्यौ—म्हांरौ कैणौ मांनौ तौ थें ठगां रै गुड़ै मत जावौ। थांरी बातां म्हांरै हीयै ढूकी ज्यूं वांरै हीयै नीं ढूकैला । वै ठग तौ अैड़ा दुस्टी है के मिनख रा लोई में चूरनै रोटी खाय जावै तौ ई वांनै इण बात री घिन ई को आवै नीं । थें अठा सूं ई पाछा वळ जावौ । म्है ई साथै चालण सारू त्यार हां ।

राजकंवर कह्यौ—उठै गियां म्हारै मरणा सूं तौ वत्तौ कीं जोखौ कोनीं । पण इत्ती बातां सुण्यां पछै उठै नीं जावणौ तौ मरणा बिचै ई घणौ कावळ । अर मरणा रौ इणसूं सिरै मौकौ फेर कद आवैला । रांम जांणै इण मौका रौ घाटौ कद पूरीजैला। आपरा मरणा बिचै मिनख नै दुनियां रै जीवण रौ घणौ ध्यांन राखणौ चाहीजै। खासी ताळ व्हैगी, अबै म्हनै जावण ई दौ । थांरी संगत रौ आणंद म्हैं जीवूं जित्तै पांतरूं कोनीं । पाछौ आवूं जित्तै इण बगेची में ई रैजौ ।

कबूड़ौ अर हिरण दोनूं राजकंवर नै मारग तांई पुगावण नै आया। राजकंवर वांनै उठै ई छोड धकै वहीर व्हैण लागौ तौ दोनूं जणा आंसू ढळकावतां कह्यौ—कोई संकट पड़ै तौ म्हांनै चितारजौ । आपरै कांम आवणा सूं वत्ती म्हांरै प्रांणां री दूजी फेर कांई सारथकता व्है सकै !

राजकंवर ई आपरा आंसू पूंछतौ थकौ कह्यौ—जरूर जरूर याद करूंला थांनै । अबै म्हैं जावूं । थें इण तावड़ा में ऊभा मत रौ, बगेची में जावौ परा ।

राजकंवर अगूंतौ खाथौ खाथौ चालण ढूकौ। दोनूं जणा

ऊंडा निस्कारा न्हाकतां थकां कह्यौ — जे सगळा ई मिनख अैड़ा व्है तौ आ दुनियां कीं री कीं बण जावै ।

चालतां चालतां राजकंवर गुड़ा रै गोरवै आयौ । उठै मारग रै जीवणी बाजू उणनै अेक भूंपौ बणियोड़ौ दीस्यौ । उठै जायनै ठगां रौ सावळ ठायौ पूछ लेवैला, जिणसूं वो सीधौ ई सिरदार रै घरै जावै परौ, फालतू कठै ई खोटी नीं व्है । भूंपा रै पाखती आतां ई अेक धोळौ खिरगोसियौ फदाकां भरतौ उणरै गोडै आयौ । बोल्यौ — जै रांम जी री, बटाऊ वीरा जै रांम जी री ।

राजकंवर चालतौ चालतौ ई पाछा जवारड़ा करचा । खिरगोसियौ फदाकां भरतौ आडौ आयनै कह्यौ — बटावू वीरा ! इत्ता खाथा खाथा सिध जावौ हौ ! म्हारी ग्वाड़ी रै गळाकर नीसरौ अर अठै पांणी लूंणी ई नीं करौ, भलां आ बात कीकर व्है ! मेह अर पांवणौ कद कद आवै ! आज दिन तांई म्हैं किणी बटावू नै सरबरा बिना धकै नीं जावण दियौ । आपरै जोग तेवड़ करण रौ तौ म्हारौ ठरकौ कोनीं, पण तौ ई आपनै ग्वाड़ी रौ तौ आंगणौ पवित्तर करण री मेहरबांनी तौ करणी ई पड़ैला ।

राजकंवर गुळकनै लाड सूं कह्यौ — ठगां रा सिरदार रै उठै पुगावण री के उणनै समचौ देवण वास्तै ई थारी आ सगळी सरबरा है तौ पछै इण खातर तौ थूं फोड़ा उठाजै ई मती । म्हैं खुद चलायनै म्हारी मरजी सूं उठै जावूं हूं । फालतू क्यूं अबेळौ करै ।

आ बात सुणतां ई खिरगोसियौ अेकदम फीटौ पड़ग्यौ ।

मूंडौ नीचै करनै थूक गिटतौ कैवण लागौ — किसा ठग अर किसौ ठगां रौ सिरदार ! म्हनै ठगां सूं कांई तल्लौ मल्लौ । म्है सगळा घरवाळा भला अर म्हांरी ग्वाड़ी भली । म्हनै तौ आ ई ठा कोनीं के अठै कोई अळगा नैड़ा ठग ई रैवै ।

राजकंवर कह्यौ — थें खिरगोसिया कद सूं झूठ बोलण लागा । हाल थूं छळ अर जाळसाजी में मिनखां री गळाई पारंगत को हुवौ नीं । थारौ उणियारौ साफ थारी कह्योड़ी बात रौ खंडण करै !

खिरगोसियौ मांडाणी मुळकण री चेस्टा करतौ थकौ कैवण लागौ — कूड़ तौ थें ई कम नीं बोलौ । ठगां रै गुड़ै सांम्ही चलायनै कोई ठगीजण वास्तै जावैला, थें जांणौ के म्हैं इत्तौ मूरख हूं, जकौ इण बात माथै भरोसौ करलूं !

राजकंवर ई पाछौ डग डग हंसनै जबाब दियौ — ठगां रा सिरदार कना सूं ग्यांन सीखियां पछै थारौ भरोसौ नीं करणौ ई वाजब है । भोळा खिरगोसिया थूं तौ वेगौ चात्रंग बणियौ ।

पछै वौ खिरगोसिया नै आपरी खाक में उंचायनै उणरा कंवळा वाळां माथै हाथ फेरनै कैवण लागौ — म्है तौ म्हांरा ग्यांन सूं बिटळिया जकौ बिटळिया ई, पण थांरै जैड़ा भोळा जिनावर मिनखां री गळाई अकलवांन व्हैगा तौ इण दुनियां में सास लेवणौ ई दूभर व्है जावैला । म्है आ ई बात ठगां रा उण सिरदार नै समझावणी चावूं । मिनख रा आचरण माथै थां जिनावरां रौ भरोसौ करण वाळी बात खुद मिनख ई आपरा हाथ सूं खुटाई है । इणमें थांरौ कीं कसूर नीं । पैला

म्हैं थारा सूं मसखरी करी ही । थारै जैड़ा भौळा जिनावर नै इण भांत छळ करतां देख म्हैं घणौ ई रोवणौ चावूं, पण म्हारी आंख्यां में इत्ता आंसू कोनीं इण खातर माडै ई हंसनै आंसुवां री कमी पूरी करूं ।

राजकंवर रै हाथ रौ परस पातां ई खिरगोसिया नै मां री याद आयगी । पछै उणसूं ढबीजियौ कोनीं । डुस्किया भर भरनै रोवण लागौ । रोवतौ रोवतौ ई बोल्यौ—म्हारी मां अर म्हारा बाप नै म्हारी आंख्यां सांम्ही मरता देख्या अर म्हैं मारण वाळा मिनख रौ कीं नीं कर सक्यौ । म्हारी मां रा पेट में अेक लांबौ तीर विंधियोड़ौ हौ । पेट सूं धकळ धकळ लोई छूटतौ हौ । तीर अर लोई री कीं परवा नीं करनै वा म्हारै मूंडा सांम्ही देखनै कह्यौ—बेटा, आ मिनख री विद्या है । म्हैं मरी जकौ तौ मरी ई । थूं अेकर म्हारा मूंडा माथै वालौ देयनै दौड़जा । पाछौ लारै मुड़नै ई मत देखजै । म्हारी मां तौ इत्तौ कैयनै उठै ई ढिगली व्हैगी । म्हारै वाला रौ कदास उणनै अेलम ई नीं व्हियौ व्हैला । मिनख री आ विद्या म्हारा बाप रै, सांम्ही लिलाड़ आपरौ परचौ बतायौ । उणसूं तौ कीं बोलीजियौ कोनीं । वौ अेक छिण पैला जीवतौ हौ अर अेक छिण पछै मरग्यौ । कदास आज दिन तांई म्हारा बाप नै मरणा रौ ग्यांन नीं व्हियौ व्हैला । पण उण दिन म्हनै मरणा रौ जकौ ग्यांन व्हियौ अर मिनख री विद्या रौ जकौ अेलम व्हियौ वौ म्हैं हजार वार मरूं तौ ई भूल नीं सकूं । उणरी विद्या रौ वळै अेक अेलम व्हैणौ बाकी हौ । वौ अेलम पूरौ व्हियौ म्हारी घरवाळी नै मरतां

देखनै । जद मिनख री विद्या सगसगाती म्हारी जोड़ायत रा पेट में लागी तौ उणरौ पेट वेंत भर चीरीजगौ । पेट चीरीजतां ई दो बिचिया उणरा पेट सूं बारै पड़्या । गिगन में तौ फगत अेक चांद है, जकौ सगळी दुनियां नै रात रा उजास पूरै, पण म्हारी घरवाळी रै पेट सूं दो चंदरमा बारै पड़्या । मिनख री विद्या रौ परस वांनै जलमियां पैली ई मार न्हाकिया । म्हारी घरवाळी अर म्हारा बिचियां री आ हालत देखनै ई म्हनै उठा सूं दौड़णौ पड़्यौ । अर आंख्यां मींचनै दौड़तौ ई गियौ । आंख्यां खुली राखूं तौ म्हनै म्हारी मां, म्हारौ बाप, म्हारी घरवाळी अर म्हारा बिचिया सगळा मरता निगै आवता । पाछी आंख्यां खुली तौ म्हैं ठगां रै सिरदार रा जाळ में तड़फड़ तड़फड़ करतौ हौ । मिनख री विद्या सूं म्हैं कठै ई नीं बच सक्यौ । पण जद वौ मिनख साथै छळ, कपट अर घात करणा री विद्या म्हनै सिखावण लागौ तौ म्हैं अणूंतौ राजी व्हियौ । उणनै कह्यौ — आं छोटी छोटी बातां सूं कीं नीं व्है, कोई अैड़ी विद्या सिखावौ के म्हैं दुनियां रै सगळा मिनखां रौ खातमौ कर सकूं । ठगां रौ सिरदार म्हनै भरोसौ दियौ के वौ होळै होळै म्हनै सगळी विद्यावां सिखाय देवैला । म्हैं खूब मन लगायनै उणरी विद्यावां सीखी । थोड़ा दिनां में ई खासौ भलौ पारंगत व्हैगौ । इण झूंपा में बैठौ घणा कोड सूं बटावुवां रै साथै छळ कपट रौ आणंद लेवतौ हौ के इण बिचाळै थें म्हारी आसावां माथै पांणी फेर दियौ । म्हनै आज ठा पड़ी के इण दुनियां में आप जैड़ा मिनख ई है । थें सगळा मिनखां नै आप जैड़ा कर दौ तौ म्हैं वांनै मारण रौ पाप क्यूं करूं !

म्हा खिरगोसियां री तौ सगळी जात अेक सरीखी है, किणी कोड़ी नै ई अैल नीं पुगावां । पछै थां मिनखां में इत्तौ फरक क्यूं ?

आ कैयनै वौ फेर डुस्किया भर भरनै रोवण लागौ । राजकंवर री आंख्यां ई बरसण लागी । कह्यौ — म्हैं खुद ई हाल इण बात रौ जबाब नीं जांणूं तौ पछै थनै कांई बतावूं ! पण अेक बात साव सुभट म्हारी समझ में आयगी के म्है मिनख तौ हां जैड़ा पापी हां, पण म्हांरी विद्या अर म्हांरौ ग्यांन सीखनै खिरगोसिया जेड़ौ भोळौ जिनावर चात्रंग अर कपटी व्हैगौ तौ पछै इण दुनियां रौ खातमौ व्हैणौ ई सावळ है । ठगां रा सिरदार नै म्हैं आ ई बात पूछणी चावूं के वौ सूवटा, हिरण, कबूड़ा अर खिरगोसिया नै मिनखां रै सांचै ढाळण रौ पाप क्यूं करचौ ? इण पाप पछै तौ दुनियां जीवण जोगी ई नीं रैवैला ।

खिरगोसियौ राजकंवर रै मूंडा सांम्ही देखनै कह्यौ — ठगां रा सिरदार नै हाल थें जांणौ कोनीं । थांरै समझायां वौ कीं नीं समझैला । वौ मिनखां री ल्हासां माथै नेगम नींद लै सकै । उठै गियौ जकौ मिनख आज दिन तांई पाछौ नीं आयौ । दुनियां तौ अैड़ा ठगां सूं भरी पड़ी है । आप किण किणनै समझावौला । मिनख भोळा खिरगोसिया कोनीं जकौ कैतां ई फट समझ जावै । म्हारै घरवाळां री मौत नै चितारूं तौ मिनख नै हजार जलम ई माफ नीं करूं । पण आपरी बोली म्हारै माथै अैड़ौ कांमण करचौ के म्हैं वै सगळी बातां भूलग्यौ । इण दुनियां में सगळा ई आप जैड़ा मिनख व्है तौ

म्हैं आज म्हारा घरवाळां रै साथै जंगळ में मछरां करतौ। मिनख नै आपरी अकल अर आपरै ग्यांन रौ अणूंतौ गुमेज है, पण म्हनै उणरी अकल अर उणरै ग्यांन में कीं लूंण-लखण दीखिया नीं। रांम जांणै खुद मिनख आपरै ग्यांन अर आपरी करामातां रौ भरम कद समझैला।

राजकंवर अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै कह्यौ—समझैला रे भाई समझैला। अेक दिन वौ अवस आपरा भरम नै समझैला। थां पंछी जिनावरां रौ आसीरवाद रह्यौ तौ वौ अेक न अेक दिन जरूर समझैला।

खिरगोसियौ कह्यौ—वौ म्हांनै आसीरवाद देवण वास्तै जीवता राखै तौ !

राजकंवर इणरौ कीं जबाब नीं दियौ। खिरगोसिया नै पुचकारतां कह्यो—म्हैं अेकर ठगां रै गुड़ै जावूंला तौ खरी। थूं म्हारै वास्तै किणी बात री चिन्ता मत कर। दुनियां में साच, न्याव अर भलाई सूं लांठी अर ताकतवर चीज दूजी कोई नीं है। इण दुनियां में भलांई कित्तौ ई अधरम, अन्याव अर पाप फैल जावै, पण आ साच, न्याव अर भलाई रै माथै ई पूरण रूप सूं टिक्योड़ी है। जिण दिन अधरम, अन्याव, पाप अर कूड़ रा जोर आगै धरम, न्याव भलाई अर साच हारग्यौ उण दिन दुनियां आबाद नीं रैवैला, आ थूं निस्चै जांण !

खिरगोसियौ कह्यौ—आपरी बोली में तौ जांणै कांई इमरत घुळचोड़ौ है के म्हनै आप कैवौ जकी बात माथै आपै ई भरोसौ व्है। पण आपनै अेक बात कैवूं, मांनौ तौ आपरी

मरजी नीं मांनौ तौ आपरी मरजी । आपरै प्रांणां रौ जिम्मौ फगत आपरौ ई नीं है, म्हांरो ई भेळौ है। आपरै मरयां लाखूं जीव मर जावैला अर आपरै जीवियां अणगिण जीवां रा प्रांण बचैला, इण खातर जठै कठै ई आप आपरा प्रांणां नै जोखम में नीं घाल सकौ । आप जैड़ा मिनखां रै प्रांणां री हिफाजत राखण रौ म्हांरौ करतब अर हक दोनूं ई है । पछै ई आप वाद निभावौ तौ आपरी मरजी । म्हां नाकुछ जिनावरां रै कैणा री कुण गिनरत करै !

राजकंवर थुथकी न्हाकतां कह्यौ — सुसिया थूं तौ थोड़ा ई दिनां में अणूंतौ हुंस्यार अर पाटक व्हैगौ । थारी बातां आगै तौ म्हारी बातां साव मांमूली लागै । नीं सुणियौ जित्तै तौ म्हैं करतौ ई कांई, पण सगळी बातां सुणियां पछै ठगां रै गुड़ै नीं जावूं तौ ठगां रा सिरदार अर म्हामें फरक ई कांई । थूं राजी खुसी जावण रो मया देवै तौ म्हारौ मन ई राजी व्है । नींतर थनै बिलखौ देखूं तौ म्हारौ मन ई कटमटौ व्है । थूं अेकर मुळकनै राजी मन सूं म्हनै जावण री मया दे दै ।

खिरगोसियौ मुळकनै कह्यौ — बातां में तौ कोई आप सूं जीत ई सकै. पण आपरा आचरण आगै दुनिया नै ई निवणौ पड़ै, पछै म्हारी तौ जिनात ई कांई । अबै म्हनै साव सुभट समझ में आयगी के आप जैड़ा मिनखां रौ जलम ई इण वास्तै व्हिया करै । अर जलमियां आपरै वास्तै जलम अर मौत में कीं फरक नीं रैवै । आप खुसी खुसी पधारौ, अबै म्हैं बरजण री भूल नीं करूं ।

दोनूं ई अेक दूजा रै सांम्ही देखनै मुळकिया । पछै राज-

कंवर अजेज ठगां रै गुड़ा सांम्हो वहीर व्हियौ । खिरगोसियौ मारग माथै बैठौ उणनै चालतां देखतौ रह्यौ । मन में दो तीन वार अेकलौ ई बड़बड़ायौ—जे सगळी दुनियां अैड़ा मिनखां सूं आबाद व्है जावै तौ अेक पलक में दुनियां रा सगळा खारा समंदर दूध रा बण जावै । पछै सगळी दुनियां दूध सूं न्हावै-धोवै तौ ई समंदरां रौ दूध नीं खूटै । पछै दूध री ई बिरखा बरसै अर दूध री नदियां अर दूध रा ई वाळ्हा बहै । सगळी धरती माथै दूध ई दूध । कोरी दूध ई दूध !

उण खिरगोसिया नै दूध री भावड़ अणूंती इज ही । दूध रौ बिड़द बखांणतौ केई वार कैवतौ के देवतावां रौ इमरत दूध री होड थोड़ौ कर सकै !

गुड़ा में वड़तां ई अेक दो ठौड़ पूछ्यां पछै राजकंवर सीधौ ठगां रै सिरदार रै घरै पूगौ । सिरदार उण वगत बारली चांतरी माथै बैठौ सिनांन करतौ हौ । अणचींत्यौ किणी बटावू नै आपरै सांम्ही आवतां देख्यौ तौ वौ हळफळायौ होयनै ऊभौ व्हियौ । हाथ जोड़नै राजकंवर सूं जवारड़ा कर्‌या । मन में इचरज करण लागौ के आज आ कांई बात व्ही ! इत्ता बरसा में ई हिरण, कबूड़ौ अर खिरगोसियौ पुख्ता समचौ दियां बिना को रह्या नीं, आज वांरा कांम में आ खांमी कीकर री । चारूं मारगां माथै उणरौ माकूल बंदोबस्त करचोड़ौ, पछै आ अजोगती बात कीकर व्ही ! औ बटावू कोई हवा में उडनै आवणा सूं तौ रह्यौ । कोई ठगां उपरलौ ठग तौ नीं है । औ इत्तौ निधड़क होयनै कीकर आयौ ?

पण कुण ई व्हौ, म्हैं कांईं दाद देवूं । इणरी मौत इणनै अठै लाय फंसायौ दीसै । वा फंसायौ है तौ उणरौ आदेस सिर आंख्यां माथै । पण ठगां रै मन री बात कदैई होठ, आंख्यां अर वांरा मूंडा माथै नीं आवै । पछै वौ कोई मांमूली ठग नीं हौ, ठगां रौ सिरदार हौ ।

वौ राजकंवर रैं सांम्ही चमचेड़ री गळाई हंसनै पूछ्यौ— आज इण गरीब री झूंपड़ी कीकर पधारणौ व्हियौ ?

राजकंवर निसंक भाव सूं जबाब दियौ— गरीब री गरीबी मिटावण सारू ठगीजणनै आयौ हूं । म्हनै ठा कोनीं के कीकर ठगाइजै । आप जल्दी ठगाई करौ तौ म्हनै ई कीं नेहचौ व्है ।

ठगां रै उण सिरदार जैड़ौ दुनियां में ई कोई दूजौ लांठौ ठग नीं हौ । ठगाई में उणरी अकल अणूंती ई फिरती । पण ठगाई रौ कोई मांमलौ व्है तौ ! सीधापणा रै आगै उणरौ कीं बस लागतौ नीं । आज औ कांईं खिलकौ व्हैणौ है ! सगळा रा सगळा टूंकियां रै आज कांईं बळग्यौ । खिर-गोसियौ तौ भवै ई भूल नीं करै ! सांम्ही ऊभौ औ तौ निसंक कैवै के वौ खुद चलायनै ठगीजण सारू आयौ । आ बात तौ सपना में ई कीकर मांनणी आवै ! फिड़कली फिरै ज्यूं अै सगळी बातां ठग रा मगज में फिरगी । पण वौ बारै कीं दरसायौ कोनीं । टीलोड़ी रै उनमांन हंसनै कह्यौ— औ हौ, थें भूल सूं अठै आयग्या । ठगां रौ गुड़ौ तौ धकै परली बाजू रैगौ । नैड़ा रैवणा रै कारण कोई वेम ई करै तौ वांमें दोस नीं । अठै भूल सूं ई आया तौ ई भलां पधारिया । आपरौ

घर है । पण आपनै ठगीजण रौ इत्तौ कांई कोड लागौ ?

राजकंवर मुळकनै कह्यौ—बात तौ आप सिरदार जोगी इज करी हौ, म्हैं भूंडौ मांनूं ईं क्यूं ! घणा बरसां सूं ठगाई करणा रै कारण किणी माथै आसांनी सूं भरोसौ करण रौ आपरौ सुभाव मुळगौ ई खतम व्हैगौ, आ बात ई म्हैं जांणूं हूं । पण भरोसा री बात माथै भरोसौ नीं करणौ, आ हुंस्यारी री बात कोनीं । आप जैड़ा सिरदार नै ई साच-भूठ री सावळ जाच नीं व्है, तौ आ आपरै जोग फबती बात कोनीं । आप भरोसौ करौ, म्हैं साचांणी ई म्हारी मरजी सूं ठगीजण नै आयौ हूं ।

ठगां रौ सिरदार आपरा डील माथै हाथ फेरतौ फेरतौ ई कह्यौ—मरजी सूं ठगीजणौ तौ हाथां दांन करणौ व्हियौ । असली ठग तौ दांन दियोड़ी चीज भेटै ई कोनीं । म्हारी जांण में ठग लोग इण भांत री मरजादा राख्या करै । जे आप भूल सूं ई म्हनै ठगां रौ सिरदार गिणौ, तौ म्हैं दांन के भीख दियोड़ी चीज नै म्हारा गुड़ा में ई नीं राखण दूं । आप चलायनै ठगीजण सारू आयग्या पण ठगणौ तौ म्हारै हाथ है । आप खुद ई इण बात नै तौ जांणता व्हौला के ठग अर चोर में तौ घणौ फरक है । कोई अबूभ बाळक सोना सूं लदियोड़ौ अेकलौ ई धकै पड़ जावै तौ ठग सपना में ई उण बाळक रै साथै धोखौ नीं करै । बराबरी रा मोट्यार साथै ठगाई रौ आणंद है । आप मरजी सूं चलायनै ठगीजण वास्तै आया तौ किणी मंगता रै पाखती जावणौ हौ के किणी बांमण रौ घर सोधणौ हौ, अठै आयनै तौ आप भूल ई करी । ठगां रा जल-

मता टाबर नै ई इण बात री गुटकी मिळिया करै । म्हैं आपरै साथै किणी भांत रौ धोखौ नीं करूं तौ ई अठै आयनै आप धोखौ तौ खायग्या । म्हनै इण धोखा रौ ई पिरास्चित करणौ पड़ैला ।

राजकंवर सिरदार रा मूंडा सूं अै बातां सुणनै अचुंभा में आयग्यौ । वौ दो तीन वार मीट गडायनै उणनै जोयौ । छोटा कद रौ धुगधुगौ आदमी । कड़ियां गमछौ लपेटियोड़ौ । बाकी सगळौ डील उघाड़ौ । माथै पळपळाती टाट । डील माथै कठई रूंगतां रौ लवलेस नीं । भोपणा अर भंवारा में ई बाळां री कोताई । फगत मूंछ्यां रा नांव माथै आधी-दूधी तुग्गियां, चीता री गळाई पतळी धकै बधियोड़ी । इणनै घड़ती वगत बेमाता कदास रूंगतां री बात अंगै ई पांतरगी । म्याळमिन्ना री गळाई कायरी आंख्यां । ऊंदरा रै ऊनमांन छोटा कांन । पींपळी रौ ऊगती कूंपळां री गळाई पतळी अर छोटी लोळां । ओछी गाबड़ । सूंठ रा गांठिया जैड़ौ छोटौ अर गोळ नाक । टीलोड़ी री गळाई दांत । पतळा अर चितकबरा होठ । सीना री ऊपरली हाडकियां उफसियोड़ी । ओछा हाथ । मूंगफळियां जैड़ी छोटी आंगळियां । डोयली रै उनमांन छोटी टांगां । ओछौ फाबौ । आंगळियां छोटी, हळदी रा गांठियां जैड़ी । इमी सांप री गळाई छळगारौ उणियारौ ! उणियारौ घड़ी घड़ी बदळतौ निगै आवै । ठगां रै सिरदार रौ डील निरखनै राजकंवर नै जैड़ौ लखायौ, जांणै इणनै घड़ती वगत वेमाता रा कोठार में सगळी चीजां रौ तुठार आयग्यौ व्हे । राजकंवर सोचण लागौ के इण आदमी में अैड़ी कांई खासियत

है के गुड़ा रा ठग इणनैं आपरौ सिरदार थापियौ ।

सिरदार ई राजकंवर रै मन री बात तुरत लखग्यौ । टीलोड़ी रै उनमांन आपरा दांतां सूं हंसनैं कह्यौ — डील देख्यां म्हारी सिरदारगी रौ कीं पतौ नीं पड़ै, इणरा परचा तौ वगत माथै ई मिळिया करै । अबै आप सूं कांई चोज राखूं । आपरी दया सूं म्हैं ई इण गुड़ा रौ सिरदार हूं । चलायनैं ठगीजण सारू आया, इण खातर आज तौ छोडूं हूं, पण कदैई म्हारी ठगाई रै हत्थै चढ़ग्या तौ पछै दूजी वार ठगीजण री थांरै मन में ई रैवैला ।

आ कैयनैं वौ सिरदार बेटी बेटी करनैं दो तीन हेला मारचा । हेलौ सुणतां ई बेटी सिरदार रा गाभा लेयनैं आई । इण सिरदार री अर आ बेटी ! वेमाता, सूं ई घणी वार भूल व्है जाया करै । राजकंवर नैं अैड़ौ लखायौ जांणै कोई गुलाब रौ फूल थोड़ा ताळ वास्तै इण बेटी रौ रूप धारण करनैं आयौ है । बादळां सूं छूटता पालर पांणी री गळाई निरमळ अर पावन ? बापड़ी ओपमावां री कांई जिनात के बेटी रै किणी अंग रौ वै मुकाबलौ कर सकै ! वेमाता निकमाई सूं अणूंतैं कोड इण डील रै सांचै आपरौ औ पैलौ नमूनौ घड़चौ ।

ठगां रौ सिरदार आपरी बेटी नैं मसखरी रा भाव सूं कह्यौ — बेटी, आंरौ भोळापणौ तौ देख के अै खुद चलायनैं अठै ठगीजण सारू आया । बिना किणी समचै अपांरा गुड़ा में औ पैलौ आदमी आयौ । सगळा रा सगळा टूंकिया अेकण सागै कदैई मर तौ नीं गिया । नीं मरचा है तौ आज सिञ्या रा वांरी खैर नीं । मरग्या जकौ तौ छूटग्या, नींतर वांमें

मरणा बिचै ई भूंडी बीतैला । जे यूं भोळप व्है जावै तौ ठगां रा गुड़ा नै कोई धरती माथै टिकण देवै ! चलायनै भरोसा सूं मतै ठगीजण नै आयग्या है तौ बेटी आंरी सरबरा में कीं खांमी मत राखजै । अै कांई याद राखैला के ठगां रै सिरदार गोडै गियौ तौ हौ ।

सिरदार रै संपाड़ौ करचां पछै उणरा घरवाळा अर राजकंवर सगळा मेड़ी में आयनै बैठ्या । पैलपोत खुद सिरदार ई बोल्यौ — म्हैं सोच सोचनै कायौ व्हैगौ तौ ई म्हैं इण बात रौ सावळ म्यांनौ नीं काढ़ सक्यौ के दुनियां रा सगळा ठग चलायनै ठगाई तौ करै, पण आज तांई आ बात सुणणा में नीं आई के कोई आदमी मरजी सूं खुद चलायनै ठगीजण वास्तै ठगां रै गुड़ै गियौ व्है ! ज्यूं ज्यूं विचार करचौ त्यूं त्यूं सांम्ही वत्तौ पजियौ । आप खुद चलायनै अठै ठगीजण सारू आया तौ घणी आछी बात, अबै आप खुद चलायनै इण बात रौ म्यांनौ म्हांनै सावळ समझावौ तौ आपरी बड़ी मेहरबांनी ।

मेड़ी में सिरदार रा दो बेटा, अेक बेटी, उणरी घरवाळी अर अेक मिन्नी ही । वा मिनकी ई मिनखां री गळाई ठीमर बणनै अठै बातां सुणण सारू बैठी ही । सिरदार रा बेटा बेटी सगळा आपरी मां रै उणियारै हा । बेटी वाळी आब अर परस तौ मां में नीं ही पण दोनां रौ उणियारौ खासौ मिळतौ हौ ।

राजकंवर मांडनै विगतवार सगळी बातां बताई — जंगळ में डांडी रमणा सूं लेय, सूवटा, हिरण, कबूड़ा अर खिरगोसिया तक । इण बिचाळै किणी रै मूंडा सूं सास लेत्रण री

ई आवाज नीं सुणीजी । कोरचोड़ा चित्रांमां रो गळाई सगळा बोला बोला बैठा रह्या । ठगां रा सिरदार री आंख्यां जळ-जळी होवण लागी तौ वौ आंख्यां नै गमछा सूं पूंछतां होळै सीक कह्यौ—आंख्यां में चार पांच दिनां सूं खाज घणी चालै, इण सूं हरदम पांणी पड़तौ रैवै । म्हैं तौ पूंछ पूंछनै कायौ व्है जावूं ।

बेटो डबडबाई आंख्यां सूं राजकंवर रै सांम्ही देखनै बोली: म्हारा काका रै ऊमर में आज पैली वार आंसुवां रौ कांम पड़्यौ, इण खातर वांनै बतावतां संकौ आवै । आप वांरी भूठी बात रौ कीं ख्याल मत करज्यौ ।

आ बात कैयनै वा अपूठौ मूंडौ करनै बैठगी । आगै कीं बोली नीं कोई चाली । सगळां नै इण भांत बोला बोला बैठा देखनै मिनकी कह्यौ—म्हारै भणायोड़ा पाठ कबूड़ौ फेर भूल-ग्यौ । कदैई भेटका व्हैगा तौ जांणै जैड़ी बितावूंला । कबूड़ा जैड़ा ठोठी पंछी तौ म्हैं आज दिन तांई नीं देख्या । अकल रौ आं में वास्तौ ई नीं व्है । म्हैं तौ सिरदार नै घणी ई वार कह्यौ के औ कदैई कदैई अवस धोखौ देवैला । जकी इज बात व्ही । चंडाळ घरै आवै तौ उणरी फींदी फींदी बिखेर्यां बिना नीं छोडूं ।

वा आगै ई कीं कैवणी चावती ही के सिरदार रीस में दांत पीसतौ उणरै सांम्ही देखनै कह्यौ— रांड, थूं बोली को बळै नीं । कबूड़ा री फींदी बिखरती बिखरती बिखरैला, म्हैं अबारूं थनै पिछांटनै मार न्हाकूंला । बीच में पंचायती मत कर ।

सिरदार री धसळ सुणनै मिन्नी तौ अेकदम चापळनै बैठगो ।

पाछौ चुंकारौ ई नीं करचौ ।

पछै राजकंवर कैवण लागौ — अबे तौ आप सगळा म्हारै ठगीजण रौ म्यांनौ सावळ समझग्या । घणी बातां आप लोगां रै समझ में नीं आवै तौ नीं सही, पण म्हारी अेक अरज तौ मांनणी ई पड़ैला के आं भोळा पंछी जिनावरां नै मिनखां वाळी ठगविद्या मत सिखावौ । अपां मिनखां री पुन्याई तौ खूटी जकौ खूटी इज, पण आं पंछी जिनावरां नै तौ बगसौ ! लांबा चौड़ा ग्यांन री इण में कीं दरकार कोनीं, साव मांमूली बात है, समझणी चावौ तौ फट समझ में आय जावैला । थांरै साथै कोई ठगाई करै तौ थांरा मन माथै कैड़ी बीतै ? वैड़ी री वैड़ी दूजा रै साथै बीत्या करै ! जे आ नाकुछ बात ई मिनख री समझ में नीं आवै तौ पछै उणसूं मूरख जिनावर दूजौ फेर कुण व्है सके ! के तौ मिनख रै आ बात हमेसां रै वास्तै समझ में आय जांणी चाहीजै के उणनै हमेसां रै वास्तै आपरी अकल रौ घमंड करणौ छोड देवणौ चाहीजै ।

किणी नै कीं बोलतां नीं देखनै राजकंवर वांनै भांड वाळी वा बात सावळ मांडनै बताई । सगळी बात बतायां पछै वौ कह्यौ — वौ भांड साधू रा भेख री उत्ती मरजादा निभाई के पगां पड़्योड़ी ओडियां रै मूंडै री माया नै धूळ रै उनमांन ठोकर मार दी । कांई मिनख जमारा रै खोळिया री मरजादा साधू रा भेख सूं कीं कम है ! थें लोग सगळी ऊमर मिनखां रै साथै ठगाई करी । आपरा पेट री खातर अणगिण मिनखां रा गळा वाढ़िया । धन रा लोभ में अणगिण मिनखां साथै खोसा-लूटौ करचौ ! म्हैं तौ जांणतौ के इण विध मिनख

री हित्यावां अर खोसा-लूटी करण वाळा ठगां रै अेक री ठौड़ लाख पेट व्हैला । बत्तीस दांतां री ठौड़ अलेखूं दांत व्हैला । वै बिना माथा रा खईस व्हैला । पण अठै आयां पतौ पड़्यौ के दूजा मिनखां री गळाई थांरै फगत अेक पेट ई है । जबाड़ा में फगत बत्तीस ई दांत है । फगत आपरौ अेक पेट भरण वास्तै थांनै इत्ता पाप करणा पड़ै ! कांई टंक रौ हजार मण धांन खायां बिना थांरौ औ पेट भरीजै कोनीं । ठगाई री मरजादा रौ गुमेज बखांणती वगत थांरा कांन उण गुमेज नै सुणै कोनीं कांई ? थोड़ौ घणौ तौ विचार करौ के चोरी करणा सूं किणी दूजा मिनख रै जीव में कळेस उपजै । वौ कळेस अर संताप ठगाई अर धाड़ा सूं ई उपजै । थांरी ठगाई सूं कांई ठगीजण वाळा रौ काळजौ ठरै जकौ थें उणरी मरजादा रौ ठौर जतावौ । थांनै ठगाई री मरजादा रौ तौ इत्तौ घमंड है अर मिनख जमारा री मरजादा नै खिरियोड़ा पांन बिचै ई घणी अकारथ समझौ ! थांनै ठगाई री मरजादा रौ गुमेज बखांणतां इत्तौ ई विचार को आवै नीं । मिनख रा पग नै ई जकी बात तुरत समझ में आय जांणी चाहीजै, वा बात थांरा मगज में ई नीं बैठै, बड़ा अचुंभा री बात है ।

ठगां रौ सिरदार होळै होळै अटकतौ बोल्यौ—राजकंवर, इण में इत्ता अचुंभा री कांई बात ! मिनख री समझ तौ समझायां बणै ! आपरी मां री सीख मुजब आप आचरण करौ अर म्हे म्हारै माईतां री सीख रौ आखर आखर पाळण करां । थें थांरी सीख में कमी नीं पड़ण दौ अर म्हे म्हांरी सीख में कमी नीं पड़ण दां । आपरी सीख तौ आ है के ठगाई करणा

सूं मिनख जमारा री खोळियौ लाजै अर म्हांनै जलम सूं ई आ सीख मिळी के जकौ नांमी ठगाई नीं कर जांणै वौ मिनख ई कांई । म्है म्हांरा टाबरां नै ई आ सीख देवां । माईतां री सीख नै नीं म्है लोपी अर नीं म्हांरी सीख नै म्हांरा टाबर लोपै । राजकंवर ! इण में इत्ता इचरज री कांई बात ! आ बात कैतां ई सिरदार री आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू ढळकण लागा ।

ठगां रौ सिरदार रोवतौ रोवतौ ई बोल्यौ — म्हैं इत्ता दिन आंख्यां सूं आंसू लावण वाळा मिनख नै मिनख ई को गिणतौ नीं । पण आज ठा पड़ी के आंख्यां में आंसू आयां बिना कोई मिनख ई नीं बण सकै । आप बताई जकी बातां रौ म्हनै सपनौ ई आ जातौ तौ म्हैं अै अकरम नीं करतौ । पण आज दिन तांई म्हांनै अै बातां कोई बताई व्है तौ ! मतै म्हांनै उपजी कोनीं । म्हनै पक्कौ विस्वास है के म्हारा माथा में अकल री ठौड़ कोई मोटौ भाटौ है अर काळजा री ठौड़ ई कोई भाटौ घड़ियोड़ौ है । आपनै विस्वास नीं व्है तौ अबारूं चीरनै बतावूं । जे म्हांरी अकल अर काळजा री ठौड़ भाटा नीं व्हैता तौ म्हैं अै पाप करता ? अबै अेक बात फेर ऊंधी पजगी । इत्ता दिन समझ में नीं आई जित्तै अै अकरम करता रह्या । आज आपरै समझायां समझ में आयगी तौ अबै लारला अकरमां रौ लेखौ देखनै अेक घड़ी ई जीवण वास्तै मन नीं मांनै । अबै कांई करूं, कांई नीं करूं ! आप म्हनै इणरौ सावळ म्यांनौ बतावौ ।

राजकंवर वांनै लाड सूं समझावतां कह्यौ — आ बात

समझ में आतां ई थांरौ मरण तौ पैला ई व्हैगौ । अबै तौ औ नवौ जलम है । जे उण माथा में वा इज अकल अर उण काळजा में वै इज भावनावां रैवती तौ मरणौ वाजब हो। पण सगळी बातां पलटियां पछै जीवणौ वाजब है । अबै तौ सगळी ऊमर भलाई करनै ई मिनख जमारा रौ साव लै सकौ !

ठगां रौ सिरदार कह्यौ — म्हारा मन में तौ इण वगत अैड़ी जचै के आपनै म्हारै खांधै बिठांणनै बतूळियौ व्है ज्यूं सगळी दुनियां में भरणाटै फिरतौ रैवूं । पछै देखजौ के थोड़ा दिनां में ई दुनियां री कैड़ी रंगत बदळै !

पछै टीलोड़ी री गळाई मुळकतौ कह्यौ — इण गुड़ा रौ तौ म्हैं आपनै पूरण विस्वास दिरावूं के आज सूं दुनियां में औ भलाई रौ गुड़ौ ई बाजैला । आपनै फगत म्हारी आ इज अरज है के आप किणी अेक ठौड़ ई मत ढबिया करौ । सगळी दुनियां ई आपरौ घर है । वगत वगत माथै सगळै ई साळ-संभाळ राखौ तौ आ दुनियां तर तर सुधरती ई जावैला ।

राजकंवर ई पाछौ मुळकनै जबाब दियौ — जांणै चांद मुळक्यौ । कह्यौ — औ तौ आपरौ बडापणौ है । पण अेक बात हमेसां याद राखौ के मिनखां री दुनियां किणी अेक मिनख रै भरोसै को रैवै नीं, वा तौ हर मिनख रै भरोसै है ।

अबकी सिरदार री घरवाळी बोली — म्हां जैड़ा मिनखां रै भरोसै आ दुनियां रैगी तौ इणरौ वैगौ ई विणास व्हैला, इण में कीं मीणमेख नीं ।

रांम जांणै कांई सोचनै ठगां रौ सिरदार जोर सूं खिल-खिल हंसनै कह्यौ — आप चलायनै खुद ठगीजण सारू आया तौ

आ बात ई आपरी पार पटकूंला ।

पछै आपरी घरवाळी सांम्ही देखनै कह्यौ — बोल, आपरै साथै बेटी रौ ब्याव करदां तौ कैड़ीक ऊंची ठगाई रैवै ।

आ बात कैयनै वौ खुद ई मन रै मतै हंसण लागौ, जांणै गिलगिली करयां कोई टीलोड़ी हंसै ।

धणी रौ हंसणौ ढब्यौ तौ उणरी घरवाळी कह्यौ — म्हनै तौ म्हारी बेटी रै करमां माथै पूरौ विस्वास हौ । इणरै करमां रा जोर सूं म्है सगळा घरवाळा ई तिरग्या !

लाज रै मारी बेटी ऊठनै मेड़ी सूं बारै गी परी । उणरै गियां पछै राजकंवर सिरदार रै सांम्ही देखनै कह्यौ — खुद मतै चलायनै ठगीजण सारू तौ म्हैं आयौ हौ, पण म्हैं आप लोगां नै ई ठग लिया । कांई इण बूता माथै ई ठगां रै गुड़ा रा सिरदार बाजता हा !

सिरदार जीवणा हाथ सूं आपरौ सीनौ ठौरनै कह्यौ : म्हारा बूता री तौ आपनै अबै ठा पड़ैला । आप देखता जावौ !

सातवौ राजकंवर

परसेवा में घांण व्हियोड़ौ सातवौ राजकंवर आपरै मारग चालतौ सोचण लागौ के औ सूरज उजास रै साथै इण भांत रौ बासदी नीं बरसावै तौ कांई व्है ? पण बिना तपियां अर वासदी में सिकियां उजास कठै ! मारग में अेक नाडी आई तौ वौ बिसाई खावण वास्तै ढबियौ । पाळ रा नींबड़ा री छींयां हेटै बैठतां ई उणरा मन में विचार आयौ के वौ तपसी रै अठै पाछौ जावै जित्तै अेक बरस तांई हरयौ नींबड़ौ वण जावै तौ कैड़ौक उम्दा कांम बणै । केई पंछी म्हारी डाळियां में आळा घालैला । आळा में पंछी ईंडा देवैला, ईंडा सेवैला । पछै कंवळा कंवळा चिन्नियां नवा जीवण री चैचाट करैला । मारग चालता बटाऊ म्हारी छींयां में बैठनै आपरौ थाकैलौ मिटावैला । सरवर रौ ठाडौ निर-मळ पांणी पीयनै जद वौ म्हारी छींयां तळै बैठैला तौ वांरै डील री सगळी बळत तुरत मिट जावैला । अै रूंख, अै भाड़-बांटका सूरज रै तपणा रौ ई परताप है । इण तपणा रै कारण ई तौ रूंखड़ा में जीवण सांचरै जकौ आपरी ठाडी छींयां सूं पाछी बळत मेटै । बापड़ा नाकुछ मिनख री कांई जिनात के वौ कुदरत रा किणी कांम में खांनी काढ़ सकै ।

थोड़ी ताळ बिसाई खायां पछै सरवर रा पांणी माथै पगल्या धरतौ धरतौ अेक ठाडौ भोलौ आयौ । सगळा डील रै मांय ठाडौळाई वापरगी । पवन रा परस सूं थिरकता सर-वर रै सांम्ही देखनै राजकंवर सोचण लागौ — इण पवन री

गति रौ कुण कांई मुक़ाबलौ कर सकै । औ सरवर रा पांणी माथै चालै, गैगाट करती नदियां रै माथै चालै, समंदरां रा अथाग अर अछेही पांणी माथै चालै, रूंखड़ां रा पांन पांन माथै सरणाट दौड़तौ बेवै, कांटां अर सूळां माथै निसंक चालै, भाखरां नै लांगतौ चालै, बळबळता धोरां माथै चालै अर वासदी रा जगमगतां खीरां रौ परस करतौ चालै । औ बायरियौ तौ कठैई किणी ठौड़ चालतौ ढबै ई नीं । बरसां चालतौ रैवै, जुगां लग चालतौ रैवै । बिसाई खावण में तौ समझै ई नीं । थाकैला रौ नांव नीं जांणै । पछै म्हैं चालतां चालतां बिसाई क्यूं खाई ? थाकेलौ मिटावण रौ मोह क्यूं करचौ ? इण बायरा सूं म्हनै पाठ सीखणौ चाहीजै । चालणौ, लगतौ ई चालणौ। आडी, अंवळी अर अबखी ठौड़ां माथै चालणौ, बिना किणी रुकावटां रै चालणौ । नीं विकट जागा सूं डरणौ अर नीं आरांम री ठौड़ ठमण रौ मोह करणौ । समझै जिणनै इण बायरिया री तौ फगत आ इज सीख है। राजकंवर भचकै ऊभौ व्हियौ। उण तपती लाय में ई आपरै मारग चालण ढूकौ ।

रात दो अेक घड़ी ढळी जद मारग में अेक गांव आयौ। फिळा माथै ई अेक कुमार रौ घर हौ । उठै ढोल-ढमाकां रा तापड़धिन्न उडता हा । राजकंवर नै तिरस लागोड़ी ही । सोच्यौ — दूजी ठौड़ कठै हेला मारतौ फिरूंला । अेक बार पांणी पीयां पछै नेगम । ठाडी रात रा खासौ भलौ पैंडौ पार व्है जावैला । वौ फळसौ खोलनै ग्वाड़ी रै मांय वड़चौ । चांतरी माथै डोकरी बैठी ही । उणनै पाखती ई किणी आदमी री झबकौ पड़चौ तौ होळै सूं पूछचौ — कुण व्है ई ?

राजकंवर कह्यौ — मारग चालतौ अेक बटाऊ ! तिरस लागी, इण खातर पांणी पीवण नै आयौ ।

डोकरी कह्यौ — भलां आयौ बेटा, भलां आयौ । मारग चालतौ बटाऊ तौ परमेसर री ठौड़ व्है ! बेटा आ तौ बता के थूं ब्याळू कठै करचौ ?

राजकंवर कह्यौ — जंगळ में कंदमूळां री किसी कमी है मां, कुदरत रै अखूट भंडार सूं अलेखूं जीवां रौ पेट भरीजै, पछै म्हारै ब्याळू रौ उणनै कांई भार ।

डोकरी बोली — कुदरत री होड तौ कुदरत ई करै, पण बेटा मिनख रै पांणी-लूंणी रौ मिनख नै ई कीं भार कोनीं । कुमारां री ग्वाड़ी रै पाखती निकळतौ बटाऊ आडै दिनां ई बिना रातवासौ लियां अर बिना ब्याळू करचां सपना में ई धकै नीं जा सकै । पण थूं तौ खास टांणौ साजियौ । म्हारौ बेटौ सात दिन व्हिया परणीजनै आयौ । दो पखवाड़ां तांई उणरा लाड कोड व्हैला । म्हारी ग्वाड़ी सूं कोई जिनावर ई भूखौ तिरसौ नीं जावै । थूं बिना ब्याळू करचां जावै तौ म्हनै सगळी रात ई नींद नीं आवैला ।

राजकंवर कह्यौ — ढबणी तौ नीं चावतौ हौ । पण अबै मां री मनवार कीकर टाळूं ।

डोकरी घणा आदर अर घणा लाड सूं राजकंवर नै ब्याळू करायौ । राजकंवर नै आपरी मां री याद आयगी । सोचण लागौ — मां सूं सिरै अर पवित्तर चीज तीनूं लोकां में ई फेर कांई व्है सकै ! मां रा खोळा में निसंक सूवणा सूं वत्ता आणंद री कल्पना तौ देवता ई नीं कर सकै ।

ब्याळू करयां पछै राजकंवर डोकरी रै पाखती बैठौ बींदणी रै बधावा रा ढोल-ढमाका सुणतौ रह्यौ । आधी ढळियां पछै सगळा घरवाळा सूता ।

आंगणा में डोकरी रै पाखती ई राजकंवर रौ मांचौ ढळियोड़ौ हौ । घड़ी डोढ़ घड़ी बातां-विगतां करतां करतां ई दोनां नै नींद आयगी ।

डोकरी सूं वंतळ करनै राजकंवर सूतौ तौ सपना में आपरी मां सूं बातां करण लागौ । बेटा रा आंसू पूंछनै मां कैवण लागी — बेटा, म्हारी याद में इत्तौ झुरण रौ कांई कांम । दुनियां री सगळी मावां नै म्हारै सरतै ई जांण । अेक मां रा घाटा बदळै म्हैं थनै सगळी मावां सूंप दी । पछै म्हनै याद करण री कांई जरूरत !

के इत्ता में राजकंवर नै दो तीन वळा बेटा बेटा री आवाज जोर सूं सुणीजी । वौ झिझकनै आंख्यां खोली । आंख्यां खोलतां ई मां तौ अदीठ व्हैगी । पाखती रा डुखलिया माथै सूतोड़ी डोकरी हेला मारती ही । राजकंवर पूछयौ — कांई बात है मां, म्हनै हेला मारचा कांई ?

डोकरी बोली — हां बेटा, थनै काची नींद सूं जगायौ, जिणरी माफी चावूं । इण कुबदी ऊंदरिया नै दो तीन वळा व्ही म्हारा पगां री आंगळियां कुरटै । अबकी औ म्हारा हाथ में झिलग्यौ । म्हनै रातिंदौ है, दीसै कोनीं । म्हारा डुखलिया रै कनै बिलोवणी पड़ी है, इण ऊंदरिया नै मांय घालनै माथै परात दे दै । झांझरकै बींदणी बिलोवणी मांडैला जद इणनै वाड़ा रै बिलां में छुडाय देवूंला । कांई करूं थनै फोड़ा घालूं

राजकंवर कह्यौ — इण में फोड़ा री कांई बात मां ! आ कैयनै वौ डोकरी रा हाथ सूं ऊंदरा नै लै लियौ । पछै डोकरी ज्यूं कह्यौ त्यूं विलोवणा में घालनै माथै परात उथांम दी ।

राजकंवर नै सूवतां ई पाछी नींद आयगी । पण इण वळा पाछौ मां रौ सपनौ नीं आयौ । वौ नेगम सूतौ हौ ।

झांझरके आंगणा में बींदणी रै आंवळां री झणकार सुणनै डोकरी कह्यौ — बेटी, रात रा म्हारी आंगळियां नै दो तीन वार ऊंदरियौ कुरटियौ तौ म्हैं उणनै विलोवणा में घलायनै माथै परात रौ ढकणौ दिराय दियौ । इण ऊंदरा नै झालनै थूं बाड़ा रा बिलां में छोडिया । दिनूंगा इणनै सिरावण कराय देवूंला ।

बींदणी परात रौ ढकणौ आगौ लेयनै ऊंदरा नै झालण सारू हाथ घालियौ तौ जोर सूं बोबाड़ौ करचौ । बोबाड़ा रै समचै ई वा तौ तड़ाच खायनै विलोवणा रै पाखती गुड़गी । पाछौ चुस्कारौ ई नीं करयौ । हाथ मांय घालतां ई सांप फुफकारौ करनै उणरा अंगूठा नै तोड़ लियौ । अंगूठा रै बटकौ भरतां ई उणरा माथा में जोर सूं बटीड़ौ ऊठ्यौ । उणी ठौड़ वा प्रांण मुगत व्हैगी ।

बींदणी रौ बोबाड़ौ अर उणरौ पड़णौ सुणनै डोकरी हळफळाई बैठी व्ही । राजकंवर ई भचकै मांचा सूं ऊभौ व्हियौ । दीवटियौ लेयनै विलोवणा रै मांय देख्यौ—अेक गोरियावर सरप गूंचळी मारचां बैठौ हौ । राजकंवर कह्यौ—मां, इण विलोवणा में तौ ऊंदरा री ठौड़ सांप है ।

डोकरी अरड़ां अरड़ां रोवण लागी । उणरौ बेटौ ई दौड़नै आयौ । बींदणी नै झंझेड़ी तौ वा माटी सस्तै पड़ी ही ।

इत्ती ताळ में ई आ कांई अणहोणी प्रगटी !

रोवणौ रींकणौ अर खटापट री आवाजां सुणनै सांप विलो-वणा सूं बारै निकळियौ । सरर सरर करतौ मोड़ा री थळी सांम्ही चालण लागौ । राजकंवर डोकरी नै थावस देवतां कह्यौ— मां, म्हैं आछी तरै देख-भाळनै विलोवणा में ऊंदरौ घालियौ हौ । उणरौ सांप कीकर बणियौ, बड़ा अचुंभा री बात है।

डोकरी रोवती रोवती ई कह्यौ— काळ रा केई रूप व्है बेटा । म्हारी बींदणी रौ इण मिस ई काळ आवणौ हौ । अबै रोयां ई कांई सांधौ लागै ।

राजकंवर कह्यौ — मां, म्हैं सांप रै लारै जायनै इणरी सोय करूंला, इणरौ पूरौ भेद जांणूंला । पाछौ आवूं जित्तै बींदणी री लास जाब्ता सूं राखज्यौ । थांनै म्हारी आ इत्ती इज भुळावण है । अबै म्हैं इण रै लारै जावूं हूं । म्हारा कैणा नै लोपजौ मती ।

आ कैयनै वो तौ उण गोरियावर सांप रै लारै रौ लारै वहीर व्हैगौ । किणी मिनख नै आपरौ लारौ करतां देख सांप सरणाटै दौड़ण लागौ । राजकंवर ई उणरै बिरौबर खाथौ खाथौ चालण लागौ । गांव रै गोरवै जावतां ई सांप अेक भरपूर ऊंट बणग्यौ । राजकंवर ऊंट रौ ई लारौ करचौ । थोड़ी ताळ में अेक राईकौ सांम्ही धक्यौ । वौ उण छुट्टा ओठारू नै इण विध भटकतौ देख उणरै मोहरी घाल दी । राजकंवर हाकौ करनै कीं बोलणी चायौ तौ ई उणसूं बोलीज्यौ कोनीं । राईकौ ऊंट नै झेकांणनै विना पिलांण ई माथै बैठग्यौ । वौ अेड लगा-यनै जोर सूं मोहरी रौ तणकारौ दियौ तौ ऊंट अणूंतो तेज

दौड़्यौ । राजकंवर उणनै पकड़ण सारू अर राईका नै पालण सारू घणौ ई खपियौ पण ऊंट हाथै नीं आयौ । सांम्ही जावतौ दीसै पण छेती नीं भागै ।

अचांणचक ऊंट री मोहरी तूटगी । अंवळी खायनै ऊंट तापड़ वाई के राईकौ नीचै धरती माथै पड़तौ ई दीस्यौ । ऊंट छाती माथै गोडा देयनै उण राईका नै ठौड़ ठौड़ सूं तोड़ न्हाकियौ । राईका नै मारयां पछै वौ ऊंट अेक वेलिया रौ रूप धारण कर लियौ । राजकंवर वेलिया रै लारै खाथौ खाथौ चालण लागौ । थोड़ी दूर जातां ई अेक बाळदियौ सांम्ही धक्यौ । वौ सूना मारग माथै इण विध अेकला बळद नै छुट्टौ फिरतां देख उणरै नाथ घालदी । हाथ में राहड़ी झालनै वौ बळद रै आगै वहीर व्हियौ । राजकंवर अणूंता वेग सूं दौड़नै बाळदिया रै कनै पूगौ । हांफतां हांफतां कह्यौ—भाई, इण बळद री राहड़ी छोड दै । पैला वौ ऊंट बणनै अेक राईका नै मारयौ । उणसूं पैला ऊंदरा रौ सांप बणनै बींदणी नै डसी । थनै ई औ अवस हांण पुगावैला । म्हारौ कैणौ मांन अर इण बळद रै लारै धूड़ वगा ।

बाळदियौ मन में जांण्यौ के औ मिनख इण बळद नै उचकावणी चावै । आज पैली कदैई ऊंट रौ बळद बण्यौ ? म्हनै औ कांई झांसौ देवै । मुळकनै कह्यौ—बावळा, म्हैं बाळदियौ हूं, थारै जैड़ा ठग तीन सौ तिरैपन देख्या । म्हनै हांण पुगावै तौ छौ पुगावतौ, थूं घाटौ पूरजै मती ।

के इत्ता में वौ बळद जोर सूं उण बाळदिया रा मोरां में भेटी दी । तीखौ तच्च सींगड़ौ मोर पार करनै सीधौ पेट

रै बारै निकळियौ । सींगड़ा में पोयनै वौ माथौ ऊंचौ कर्‌यौ, दो तीन वार भरणाटियां देयनै बाळदिया नै नीचै पटक दियौ। अेक ओडी रै भूंडै उणरा पेट सूं आंतड़ियां बारै आय पड़ी। पड़्‌यां पछै वौ तौ चुळियौ ई कोनीं । राजकंवर रै देखतां देखतां अेक ई पलक में सगळी बात व्हैगी । उणरौ कीं जोर नीं चाल्यौ । दो तीन वार आखूंडनै बळद जोर जोर सूं धङूका करचा । पछै उठा सूं दौड़्‌यौ । राजकंवर ई उणरै लारै दौड़्‌यौ ।

देखतां देखतां वौ बळद अेक रूपाळौ हिरण बणग्यौ । लारली सगळी बात नै बिसराय वौ तौ चाव सूं जंगळ में घास चरण लागौ । फुर फुर करतौ आपरी पूंछ हिलावतौ जावै अर घास चरतौ जावै ।

के इत्ता में अेक दूजौ राजकंवर घोड़ा री असवारी करचां उण हिरण रै पाखती आयौ । वौ अेक जंगी सूअर री सिकार सारू चढ़्‌यौ हौ । चरता हिरण रै गळाकर नीसरनै वौ थोड़ौ सौ धकै निकळियौ के वौ हिरण अेक केसरी सिंघ रौ रूप धारण कर लियौ । मलापनै सिकारी राजकंवर रै माथै हत्थळ वाई । राजकंवर तौ लुढ़कनै तुरत घोड़ा सूं हेटै पड़ग्यौ । दूजी हत्थळ वौ सिंघ उण घोड़ा रै मेली जकौ घोड़ौ तौ उठै ई ढिगली व्हैगौ ।

लारौ करता राजकंवर रै सांम्ही अेक वार देखनै वौ सिंघ उठा सूं मलापियौ । राजकंवर उणरै लारै रौ लारै दौड़्‌यौ । दौड़तां दौड़तां वौ सिंघ थोड़ी ताळ में अेक रूपाळी अपछरा रौ रूप धारण कर लियौ । वा अपूठी फिरनै अेक पींपळी रै

हेटै ऊभगी ।

के इत्ता में अेक राजा सिकार रमतौ उण पींपळी रै गळाकर नीसरचौ । उणरी मीट उण अपछरा रै माथै पड़ी । मन में कह्यौ — आज रौ औ सिकार तौ नांमी भरै पड्यौ ।

अपछरा मुड़नै राजा रै सांम्ही मूंडौ कर लियौ । मधरी मधरी मुळकण लागी । जांणै किरत्यां रौ झूमकौ हंसियौ । पछै राजा रै हरख रौ तौ कांई पार !

राजकंवर दौड़तौ दौड़तौ उण पींपळी रै पाखती आयौ । हांफतौ हांफतौ राजा नै लारली सगळी बात बताई । कह्यौ — आप इण अपछरा रौ लोभ मत करौ । तुरत घोड़ौ बगडायनै अठा सूं दौड़ जावौ । आ अपछरा नीं आपरी मौत है !

राजा हंसनै कह्यौ — जे मौत अैड़ी रूपाळी है तौ पछै इणसूं डरण री कांई जरूरत ! म्हैं तौ खुसी खुसी इण मौत नै वरूंला ।

राजकंवर कह्यौ — म्हारौ कैणौ मांनौ । आप इण अपछरा रै लारै धूड़ वगायनै अठा सूं तुरत जावौ जकी बात करौ ।

राजा मन में सोच्यौ के इण अपछरा नै देख्यां तौ देवतावां रा ई मन डिगै, पछै मिनखां री कांई जिनात । औ बापड़ौ कणाकलौ इणरौ लारौ करै । म्हारै थकां इणरौ बस कद चालै, इण सूं म्हनै जावण री अरदास करै । कह्यौ — आ अपछरा तौ राजमैलां में ई सोभा देवै, थारी झूंपड़ी में ओपै कोनीं । अबै थूं इणरी तिथ छोड दै । इण अपछरा रा भाग के म्हैं वगत माथै आयग्यौ ।

अपछरा राजा रै सांम्ही देखनै फेर मुळकी। राजा तौ उणरा रूप आगै बावळौ व्हैगौ। अपछरा दौड़नै उणरा घोड़ा रै पाखती आई। राजा उणनै खांचनै आपरै लारै बिठांण ली। घोड़ा रै अेड लगाई। घोड़ौ तौ पछै पवन रै वेग उडियौ। राजकंवर ई घोड़ा रै लगैटगै दौड़ण री चेस्टा करी। थोड़ी ताळ में ई राजा रै लारै बैठी वा रूपाली अपछरा अेक सूअर रौ रूप धारण कर लियौ। राजा रा पसवाड़ा में दातळी जरकाई जकौ आंतड़ियां बारै लाय फेंकी। राजा तौ उठै ई धूड़ भेळौ। घोड़ौ उठै ई आपरा धणी री ल्हास सूंघतौ ठळाक ठळाक रोवण लागौ।

राजा नै मार परौ नै सूअर तौ उठै ढबियौ ई नीं। राजकंवर ई उणरौ लारौ नीं छोडियौ। आ कांई माया है? इणरौ पूरौ उकरास लगावणौ चाहीजै। वौ सूअर तौ थोड़ी ताळ में अेक विकराळ भेंसौ बणग्यौ। केरड़ा री छींयां में मस्त होयनै ऊभग्यौ। दौड़तौ दौड़तौ राजकंवर उणरै पाखती आयग्यौ। भेंसौ अेक हाथ लांबी जीभ काढ़नै राजकंवर रै सांम्ही देख्यौ। बोल्यौ — कुमारी रा घर सूं लारौ करतां थारै पगां पांणी पड़ग्यौ दीसै। सेंठौ तौ थूं ई खासौ रह्यौ।

राजकंवर जवाब दियौ — नीं तौ म्हनै पगां रै पांणी रौ सोच है, नीं मरणा री कीं चिंता। ऊंदरा सूं लेय भेंसा तक री इण माया रौ लेखौ जांणणी चावूं।

भेंसौ कह्यौ — राजकंवर हाल आपनै इण सुभट माया री जाच नीं व्ही। इण में भेद री किसी बात! जकी बातां आंख्यां सूं देखी, उणरै सिवाय कीं दूजी माया नीं है। कुमारी

रो बोंदणो सूं लेय इण सिकारी राजा तक म्हैं जित्तां नै मारचा, वांरो काळ आयग्यौ हो । काळ रा जिण रूप सूं वांनै मरणौ हौ, म्हैं वगत माथै वौ ई रूप धारण कर लेवतौ । वां सगळा रूपां नै आप निजरां देख्या । मरणा रै सिवाय काळ री तौ कीं दूजी माया कोनीं । इण में आपनै भेद अर इचरज री बात कांई लखाई । जलम मरण बिना तौ अेक पल वास्तै ई दुनियां रौ कांम नीं चालै ।

राजकंवर कह्यौ — पण इण भांत री अकाळ मौतां बिना दुनियां रौ कांम नीं चालतौ व्है तौ नीं सही । बरसां परवांण बुढ़ापा में मौत व्है जावै, तौ इण में कीं दुख री बात नीं, पण रमतां, दौड़तां, सिकार करतां अर विलोवणौ करतां यूं अणचींती मौत आयनै प्रांण काढ़ लेवै तौ सगळा जलम नै ई विफळ कर न्हाकै । पंछी, जिनावर अर मिनखां री जूंण में जलम रौ अेक मापौ, अेक वगत अर अेक मंगळ घड़ी है, पण थांरी इण मौत रौ तौ कीं मापौ अर कीं वगत कोनीं ।

आपरी आंख्यां रा मोटा मोटा डोळां नै भंवायनै भैंसौ कैवण लागौ — म्हैं जमराज री सवारी रौ भैंसौ हूं । केई जुग बीत्या म्हनै मौत री माया देखतां नै । आज कालै मौत री गिणती इण विध बधगी के जमदूत पूग ई नीं आवै । खुद जमराज अर म्हनै ई न्यारौ न्यारौ दूतां रौ कांम करणौ पड़ै । पण मौत रौ औ सगळौ रासौ मिनख अर जीव खुद आपरा हाथ सूं बिगाड़ियौ । अबै सुधरतौ नीं दीसै तौ वौ जमराज में कसूर काढ़ै । वगत परवांण वनस्पति रा धूंटा ऊगै, सगळा झाड़, बांटकां अर रूंखड़ा री फबती ऊमर है । पण जिनावर

वांनै आपरा पेट री खातर चरै, जिनावर जिनावरां रौ भक्सण करै, मिनख आपरै हाथां अणमाप रूंखड़ा वाढ़ै, हरियाळी रौ खातमौ करै, धरती रै अणगिण जीवां रौ सिकार करै अर पांणी री अलेखूं मछळियां नै मारै, जद जमराज रौ आधा सूं वत्तौ कांम जिनावर अर मिनख खुद सारण लागगौ तौ पछै जमराज वांनै ई काळ रौ अवतार मांन लियौ। करमां सूं करमां रौ लेखौ जुड़तौ गियौ। मिनख री करणी आगै खुद जमराज ई नीं पड़प सकै। जे आपरा कांम में अबै थोड़ी घणी ई जमराज ढील वरतै तौ मिनख खुद जमलोक रौ राजा बण जावै। इण डर सूं जमराज नै अणूंतौ सावचेत रैणौ पड़ै। अकाळ मौतां री सरूआत जमराज नै मिनख रा डर सूं ई चालू करणी पड़ी, नींतर वांरौ कदैई जम-पद खुस जातौ। मौत रा माप नै बिगाड़णिया थें मिनख ई हौ। जमलोक में अठी-उठी रा भणकारां सूं अै थोड़ी घणी बातां जाणूं हूं जकौ आपनै बतावूं। आं बातां रौ खरौ अर पुख्तौ म्यांनौ तौ खुद जमराज ई दे सकै। थें चालणी चावौ तौ म्हैं थांनै जमलोक ले जावूं। खुद जमराज केई बरसां सूं किणी मिनख सूं भेटणौ चावै। पण वांनै मिनख रौ डर ई अणूंतौ लागै। म्हनै केई वार छांनै छांनै भुळावण दी के किणी जीवता मिनख नै अेकर जमलोक में लावूं। पण आज दिन तक कोई जीवतौ मिनख इण वास्तै त्यार नीं व्हियौ। जमपुरी रौ नांव सुणतां ई उणनै मौत आवै। थूं पैली वार इत्ती हीमत करनै म्हारौ इत्तौ लारौ करयौ। सागै रौ सागै काळ री इण माया रौ उकरास ई लगावणी चावै। सेवट जमराज री मंसा केई बरसां सूं आज

सूरज तौ व्हौ । थूं मन में किणी बात री डर मत आंणै, म्हैं थनै जमलोक तक अैल ई नीं आवण दूं । थूं निसंक होयनै म्हारै माथै बैठ जा । सूरज री किरणां रै वेग म्हैं थनै ठेट जमराज तक पुगाय देवूंला । आज दिन तांई म्हारी पूठ माथै जमराज रै बिना कोई देबता ई असवारी नीं कर सक्यौ, म्हैं थनै आज औ आदर देवूं । म्हनै विस्वास है के जमराज इण बात सारू म्हारै माथै नाराज नीं व्हैला । बोल, थूं इण माया रौ पुख्ता भेद जांणणी चावै तौ म्हारी पूठ माथै निसंक बैठ जा ।

राजकंवर कह्यौ—इण में डरण री कांई बात ! अणमाप खुसी रै कारण म्हारा मूंडा सूं कीं बोल ई नीं निकळै जिणरौ तौ म्हैं ई कांई करूं । अबै तौ थूं अेक पलक ई अठै फालतू मत गंवा ।

आ कैयनै राजकंवर उचकनै भैंसा री पूठ माथै बैठग्यौ । बैठतां ई भैंसौ तौ आंधी रौ काळौ गोटौ ऊठै ज्यूं सीधौ ऊपर ऊठियौ । अरजण रै हाथां छूटचा तीर रै वेग सणण सणण करतौ वौ हवा नै चीरतौ ऊंचौ उडतौ ई गियौ । राजकंवर रै कांनां रा पड़दा जांणै फाटण लागा । उणरौ फींफड़ौ जांणै चीरीजण लागौ । थोड़ी ताळ वास्तै तौ उणरी आंख्यां सांम्ही अंधारौ छायग्यौ, पग पछै वौ आपै ई वेग रै हेवा व्हैगौ । दो तीन वार पलकां झपायनै वौ आपरौ लोक देखण सारू नीचै भाळियौ — नदियां तांणी रै डोरां रै उनमांन पतळी अर मकड़ी रा जाळा रै उनमांन धोळी दीखती ही, भाखर घरकूल्यां रै उनमांन छोटा छोटा उभरचोड़ा दीखता हा । रूंखड़ा

तौ जांणै हरियाळी री टिपकियां, समंदर जांणै माटी री परात में भरियोड़ौ पांणी अर राजावां रा किला परकोटा कीड़ियां रै धोळा ईंडां ज्यूं लागता हा। राजकंवर मन में सोच्यौ के म्हारी दुनियां री आ कांई रंगत बदळी ? इत्ती ऊंचाई माथै आयां म्हारा लोक रा सगळा भेद लोप व्हैगा। जमलोक इतौ ऊंचौ है कांई !

भेंसौ पूछ्यौ — कीं डर तौ नीं लागै ?

राजकंवर कह्यौ — ऊं, हूं किणी बात रौ डर नीं लागै। थूं वेगा सूं वेगौ पुगावै जकी बात कर। अबै राजकंवर नै कीं मगसौ दीखण लागौ। आंख्यां फाड़नै वौ फेर आपरी दुनियां नै ध्यांन सूं देखण री चेस्टा करी। अबकी उणनै नीं तौ घरकूलिया निगै आया, नीं तांणी रा धोळा डोरा निगै आया, नीं हरियाळी री टिपकियां ई दीसी अर नीं पांणी सूं भर्‌या खब्रोचिया ई निगै आया। उणनै तौ फगत दातळा री गळाई अेक पतळी अर भंवियोड़ी चीज दीसी। वौ भेंसा नै पूछ्यौ — म्हनै आ दातळा जैड़ी अेक पतळी अर भंवियोड़ी चीज कांई दीसै ?

भेंसौ हंसनै जबाब दियौ — अठै आयां रावळी दुनियां रौ सरूप अैड़ौ ई दीस्या करै। अबै अपां खासा ऊंचा आयग्या। हां, थोड़ी ताळ फेर नेठाव राखौ। अबै तुरत ई काळौ बोळौ अंधारौ आवण वाळौ है। आप उणसूं डरजौ मती। इण अंधारा सूं ई जमपुरी री सींव सरू व्हैला। म्हांरा लोक में बारूं ई मास अंधारौ रैवै।

अंधारा री बात करतां ई अंधारौ सरू व्हैगौ। राज-

कंवर नै दीखणौ मुळगौ ई बंद व्हैगौ । कांनां में फगत वेग रै कारण सणण सणण री आवाजां आवती ही ।

अचांणचक भेंसौ बोल्यौ — आपनै अेक तकलीफ करणी पड़ेला । आप पूठ सूं उतरनै म्हारौ पूंछ झाल लौ । पूठ माथै आपनै चढ़चोड़ा देख जमराज अणूंती खीज करैला । अबै तौ थोड़ी सी भांय है ।

राजकंवर कह्यौ — अपांरै खीझ वाळी बात करणी ई क्यूं । पूंछ झालण में म्हारौ किसौ कुरब-कायदौ घटै ।

आ बात सुणतां ई भेंसौ आपरौ पूंछ ऊंचौ करयौ । राजकंवर पूंछ झालनै नीचै टिरग्यौ ।

राजकंवर रै कांनां में अणछक रोवणा-रींकणा री अणगिण आवाजां सुणीजी । वौ पूछ्यौ — रात रा औ रोवणौ-रींकणौ कुण मांडियौ । म्हारौ जीव काचौ अंत इज घणौ है । म्हैं किणी रौ रोवणौ नीं सुण सकूं ।

भेंसौ कह्यौ — अबै आपरै अठा रा दिनां री बात तौ साव पांतर ई जावौ । म्हैं आपनै पैला ई कह्यौ के अठै जमपुरी में दिन व्है ई कोनीं । अर जमपुरी में ई थांनै रोवणौ-रींकणौ नीं सुणीजैला तौ पछै कठै सुणीजैला । अेक दिन तांई मरचोड़ी काया रौ जीव अठै जमपुरी में रह्या करै । अठा सूं सुरग-नरक रौ फरमांण निकळियां जीव आपरै ठायै जावै । नित अणगिण प्रांणी मरै । वां मरचोड़ा प्रांणियां रा जीव आपरा घरवाळां नै याद कर करनै रोवै । अठा सूं बारै निकळियां वै आपरी लारली सगळी दुनियां नै विसर जावै । अठै फगत जमराज रै घरवाळा अर जमदूत हंसणौ जांणै । बाकी सगळा जीव

अस्टपौर कूकँ ।

राजकंवर कह्यौ — म्हैं तौ किणो रौ रोवणौ-रींकणौ बरदास्त नीं कर सकूं । आ जमपुरी तौ थांरा जमराज नै ई सोभा देवै ।

भेंसौ बीच में ई बोल्यौ — सोभा देवै नीं देवै, इण लोक रा देवता तौ जमराज ई रैवैला पण अबै जमराज रौ दरबार आवण वाळौ है, थें कीं बोलौ-चालौ मती नींतर सगळी रीस म्हारै माथै उतरैला ।

राजकंवर नै मन रै माडांणी ई बोलौ रैवणौ पड़्यौ । भेंसौ अेक ठौड़ आयनै ढब्यौ । सांम्ही अेक उजास री पुंज झबाझब करतौ हौ । भेंसौ उण पुंज रै सांम्ही माथौ निवायनै कैवण लागौ — भगवन्, म्रतलोक सूं अेक भलौ आदमी अठै आवण री मंसा दरसाई तौ म्हैं पूंछ पकड़ायनै अठै लै आयौ, अबै आपरी ज्यूं इंछा व्है त्यूं करौ ।

जमराज कीं दूजा ध्यांन में हा । पूरी बात सावळ सुणी कोनीं । कह्यौ — इण में किसी नवी बात । म्रतलोक सूं रोज ई अणगिण मिनख आवै । खोडां में फेंक दै । कालै सुरग नरक रौ फरमांण निकळियां वौ मतै ई आपरै ठायै जावै परौला ।

भेंसौ कह्यौ — राजन्, आप सही फरमावौ । अठै नित अणगिण मिनख आवै तौ है, पण वै मरयां पछै आवै । म्हैं आज जीवता मिनख नै लायौ हूं ।

जीवता मिनख रौ नांव सुणतां ई जमराज ई अेकाअेक झिझकिया । वांरै उजास रौ पुंज वत्तौ झबाझब करण लागौ।

डरता डरता कह्यौ — मरचोड़ा मिनखां रौ जीव ई म्हनै बात बात में पजावै, पछै औ जीवतौ मिनख तौ म्हारी राळ ई पाड़ देवैला ।

भेंसौ पाछौ जबाब दियौ — इणरौ तौ म्हैं ई कांई करूं । आप केई वार मंसा दरसाई, म्हनै भुळावणां माथै भुळावणां दी के किणी जीवता मिनख नै अठै लावूं, आपनै केई वातां-विगतां करणी है । म्हैं तौ आपरै हुकम रौ तावेदार हूं । आप नाराज व्हौ तौ म्हैं अबारूं पाछौ पुगायनै आय जावूं । जातां कांईं जेज लागै ।

भेंसा रै कैतां ईं जमराज नै लारली बातां याद आयगी । याद आतां ईं मन में अणूंता डरचा, पण ऊपरला मन सूं खुसी दरसावतां कह्यौ — नीं नीं, बावळा इण में नाराजगी री कांईं बात ! म्हैं तौ किणी दूजी बात रा विचार में पज्योड़ौ हौ । इणसूं ध्यांन देयनै थारी बात सावळ सुणी कोनीं । औ तौ थूं नांमी कांम करचौ । केई बरसां रै पछै आज म्हारी मंसा पूरण व्ही । जीवता मिनख रै वास्तै तौ म्हारा मन में इंदर भगवांन सूं ई वत्तौ आदर है । इण करामाती जीव सूं मिळनै म्हारौ मन अणूंतौ राजी व्हियौ ।

पछै राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ — आप अठै म्हारै जोड़ै पधारौ । मोत्यां जड़चा इण सोना रा आसण माथै बिराजौ । औ तौ आपरौ घर है । मन में किणी बात री कोई संका मत राखजौ ।

राजकंवर कह्यौ — संका राखनै म्हनै अठै करणौ ई कांईं है । म्हैं तौ आप नै सवालां री कांयस कर करनै काया

कर देवूंला। म्हारी बातां रा खरा अर पुख्ता जबाब तौ देवणा ई पड़ैला ।

जमराज नै मिनखां रै आं सवालां रौ ई तौ अणूंतौ डर लागतौ हौ । अर औ मिनख तौ आवतौ ई सीधौ सवाल पूछण री ई बात करी । पाछा खरा अर पुख्ता जबाब नीं मिळिया तौ औ भूंडी बितावैला । जमराज री अेक मोटी कमजोरी आ ही के वै आपरी बेटी नै पूछयां बिना कीं कांम नीं करता । वै अेक जमदूत नै खास सांनी करी तौ वौ जमराज री बेटी नै बुलायनै लायौ ।

बेटी रै चारूंमेर ई उजास रौ पुंज दमकतौ हौ । राजकंवर उणरौ रूप देख्यौ तौ देखतौ ई रैग्यौ । गावा घी री सुद्ध पावन जोत रै उनमांन पळपळाट करती जम री बेटी राजकंवर रै जोड़ै आयनै बैठगी । राजकंवर रौ उणियारौ देखनै उणरौ ई माथौ अेकर ठणकियौ । उणरै रूप री जोड़ रौ कोई मिनख मिळियौ तौ खरी । अर वौ ई म्रतलोक में बसण वाळौ । बासदी रा परस सूं जिण भांत मेण पिघळै, उणी भांत राजकंवर रौ रूप देखनै जम री बेटी रौ गुमेज मांय रौ मांय पिघळण लागौ । जमराज आपरी बेटी रै अंतस री इण बात नै सावल समझी कोनीं । वै उणरै सांम्ही देखनै मुळकता थका कह्यौ—देख तौ बेटी अपांरी इण जमपुरी में आज पैली वार कोई जीवतौ भलौ मिनख आयौ । अर वौ आवतां ई सवाल-जबाबां रा फंद में फालतू अळूजणी चावै । म्हैं कैवूं के अठै आया हौ तौ कीं आरांम करौ, इण लोक रौ कीं आणंद लौ, सवाल-जबाब तौ जिग दिन चावांला

उणी दिन संपूरण व्है जावैला । बोल, बेटी थारी कांई मरजी है ?

जमराज रै इण सवाल रौ जबाब देवणौ ई बेटी रै वास्तै भारी पड़ग्यौ । आज पैली वा कदैई किणी वात वास्तै नीं अटकी । वा कीं जबाब देवणी चावती ही के उणनै लखायौ— गूंद री गळाई कोई चीज उणरा गळा में. सेंठी चिपगी । उण सूं तौ बोलणौ ई नीं आवै । वा उण चीज नै गिटण री चेस्टा करी ।

राजकंवर उण वगत उणरै मूंडा सांम्ही देख्यौ । कमोद व्है जैड़ा निरमळ पांणी रै आरपार कीं चीज दीखै ज्यूं जम री बेटी रै गळा मांय उतरतौ चढ़तौ थूक सुभट दिखतौ हौ । राजकंवर दो तीन वार सावळ उणरी छिब नै निरखी । अैड़ौ लखायौ के जांणै मीठा पांणी री कोई अथाग भील उणरै चारूंमेर छौळां मारै ।

वा अटकती अटकती बोली — अठै पधारया हौ तौ घणी आछी बात । कालै आपनै सवालां रा जबाब मिळ जावैला ।

धरमराज बीच में बोल्यौ — आप कीं हिसाब - किताब ई देखणी चावौ तौ मुनीमजी कना सूं दिखाय देवूंला । आपरै खपतां वै हिसाब ठीक राखण सारू खासी माथा फोड़ी करै, पग तौ ई आप अेकर निजर बारै काढ़ लिराजौ । कोई गलती व्हैला तौ तुरत सुधार व्है जावैला ।

राजकंवर कह्यौ — म्हनै हिसाब किताब कीं नीं देखणौ । सीधौ आप सूं ई कांम है । कालै माथै बात पड़ी तौ कालै निपट लेस्यां ।

भेंसौ आपरौ भोडक हिलायनै कह्यौ — आप म्रतलोक रै दिनां रै भरोसै मत रैजो । अठै दिन लांठा व्हिया करै, आपनै पैला कैदूं ।

जमराज रीस में झिड़कतां कह्यौ — थारौ कित्ती वार माजनौ पाड़चौ तौ ई हाल सलभ में नीं आई । थूं फालतू वीच में क्यूं पंचायती करै । म्रतलोक रा दिन म्रतलोक में कांम आवै अर अठा रा दिनां सूं अठै कांम सरै । औ थारै जैड़ा मूरख कोनीं जकौ आपनै आ छोटी सी बात ई याद दिरावणी पड़ै ।

राजकंवर अंतावळ दरसावतौ कह्यौ — आ तौ मौका माथै ठीक याद दिराई । म्हनै अठा रा दिनां री कांई जांणकारी । म्हनै पाछौ म्हारा लोक में जावणौ निहायत जरूरी है । कुमारी रै घर रा सगळा आदमी म्हनै उडीकता व्हैला । नींतर तौ म्हैं आप कैवता जित्तौ ठैर जातौ ।

जमराज राजकंवर नै तौ कीं नीं कह्यौ, पण भेंसा रै सांम्ही धसळ करनै कह्यौ — थूं अठै ऊभौ ऊभौ कांई वागोलै, थारी गडाळ में क्यूं नीं जावै । पाछौ कोई नवौ कांम नीं भुळावूं जित्तै उठै ई बैठौ रैजै । घणा दिन व्हैगा भारणी उतरियां नै, जिण सूं माथौ सूजग्यौ दीसै ।

भेंसौ मोळौ पड़नै उठा सूं वहीर तौ व्हैगौ, पण जावतां जावतां ई राजकंवर रै सांम्ही देखनै होलै सूं बोल्यौ — थोड़ौ घणौ वगत मिळै तौ अेकर आप म्हारा सूं फेर मिळज्यौ ।

जमराज जावता भेंसा सांम्ही थोड़ी ताळ तांई खारी निजर सूं देखता रह्या । पछै नरमाई सूं राजकंवर रा नांव - धांम पूछनै कह्यौ — म्हैं अबारूं पाछौ हाजर व्हैवूं, जित्तै आप राज-

कंवरी सूं वंतळ करौ । इण जैड़ी सरूपवांन अर समझदार बेटी तौ म्हैं तीनूं लोकां में ई नीं देखी । इणरी बातां सुणनै आपरौ मन अणूंतौ राजी व्हैला ।

उठा सूं बहीर होयनै धरमराज सीधा आपरै मुनीम चित्रगुप्त रै पाखती गिया । अेक कोठरी रै मांय बूढ़ौ खंखर चित्रगुप्त सूखोड़ौ खेलरौ व्है ज्यूं अेक लांबी बही रै माथै निजर गडायां बैठौ हो । जमराज वतूळिया रै वेग कोठरी रै मांय वड़्या । आखता पड़नै कैवण लागा — मुनीमजी, म्हैं पूछूं जकी बातां फटाफट बतावौ, अेक अैड़ी ई कावळ बात पजगी ।

पछै वै चित्रगुप्त नै राजकंवर रौ नांव-धांम बतायनै कह्यौ — इण नांव रौ खातौ निकाळौ, इणरै करमां रौ विगत-वार लेखौ बतावौ के औ कैड़ौक आदमी है ।

धरमराज री खाथाई देखनै मुनीमजी रै पसीनौ आयग्यौ । वै हळफळिया अठी-उठी पांना पलटण लागा । परसेवा रा दो तीन छांटा बही माथै पड़ग्या । धरमराज खिड़नै कह्यौ — म्हारौ डील तौ बरफ री गळाई ठाडौ है अर थांनै इत्ती तपत कीकर लखावै । सौ वार कै दियौ के बहियां नै हिफाजत सूं राख्या करौ, कदैई मिनख रै हाथ फंसग्या तौ छुडावणौ दूभर व्है जावैला । पसीनौ पूंछण वास्तै थांनै अेक गमछौ ई हाथ नीं आवै । हिसाब-किताब रौ तौ भूंडौ पोखाळौ करयौ । अबै ई फुरती सूं बतावौ जकी बात करौ ।

मुनीमजी फड़ाफड़ पांना उथैलण लागा । अचांणचक खुद धरमराज री निजर उण बही माथै पड़ी तौ वै जई देतां

कह्यौ — मुनीमजी थांरौ माथौ तौ नीं भंवग्यौ दीसै ? इण नांव रौ खातौ रोजनांमचा में कीकर लाधैला ! फुरती सूं खाता-बही निकाळौ ।

मुनीमजी फीटा पड़नै होळै सूं बोल्या — आपरी धसळ सुणतां ईं म्हैं तौ डाफाचूक व्है जावूं । पछै तौ म्हारौ मगज ई कांम नीं करै । आप निरांत सूं थोड़ी ताळ बिराजौ, म्हैं अबारूं सही सही बातां बांचनै सुणाय देवूंला ।

धरमराज धम्म देती रा बहियां री अेक थप्पी माथै बैठग्या । सेवट हेरतां हेरतां मुनीमजी नै राजकंवर रै नांव रौ खातौ मिळियौ । थूक उछाळतां कह्यौ — मिळग्यौ हुकम, मिळ-ग्यौ । हाथां खतावणी करचोड़ौ खातौ जावै तौ जावै कठै । म्हनैं तौ आछी तरै इण खाता रौ ध्यांन हौ । आप फरमावौ तौ सगळौ पढ़नै सुणावूं ।

धरमराज कह्यौ — पूरौ रौ पूरौ खातौ सुणूं जित्तो म्हनै वगत कोनीं । फटाफट बतावौ के औ आदमी कैड़ौक है । घणौ कुबदी व्है तौ उण ढंग सूं बात करूं अर स्यांणौ व्है तौ दूजा हिसाब सूं बात करूं ।

मुनीमजी पांना रै माथै नाक रगड़ता रगड़ता सगळौ खातौ निजर बारै काढ़्यौ । पछै कह्यौ — अैड़ा नेक अर भला मिनख तौ दुनियां में ईं बिरळा है । आठूं ई भाई वत्ता सूं वत्ता है । हुकम, थोड़ौ याद फरमावौ तौ आपनै ई तुरत ध्यांन बंध जावैला के गई साल विस्णू भगवांन जिण रांणी रा जीव वास्तै आप सूं लड़्या, वा इण राजकंवर री ई मां ही । उण रांणी रौ वौ पैलौ जीव हौ जकौ अठै आयां रोयौ कळ-

पियौ कोनीं । उणरा जीव नै अेक दिन अठै ढाबनै सीधौ विस्णू लोक नीं पुगावण वास्तै भगवांन कित्ता नाराज व्हिया । म्हैं अर आप दोनूं हाथ जोड़नै माफी नीं मांगी जित्तै वांरी रीस नीं उतरी । भलां उण रांणी री कूख सूं जाया बेटा कीकर कुबदी व्है सकै । अै तौ किणी माछर डांस नै ई अैल नीं पुगावै । इत्ती ताळ आप यूं ई खोटी व्हिया, म्हैं तौ बिना खातौ देख्यां ई सगळी बातां बताय देतौ । संजोग सूं इण जमपुरी में आदमी आयौ तौ ई लाखां में टाळकौ । सावळ निरांत सूं बात-चीत करौ तौ आपरौ खासौ भलौ धयौ मिट सकै । कोई अलांम अर कुबदी मिनख आय जातौ तौ अठै जम-पुरी में कुचमादां रीं लाय सिळगाय जातौ ।

चित्रगुप्त रै पाखती आयां पैला जमराज औ विचार कर्‌यौ के राजकंवर कुबदी अर कपटी व्हियौ तौ नरमाई सूं बात करैला । स्यांणौ अर नेक व्हियौ तौ रुतबा अर करड़ावण सूं बात करैला । पण चित्रगुप्त सूं सगळी बातां सुणियां पछै वांरौ विचार बदळग्यौ । सोच्यौ — नीठ तौ जमपुरी में जीवतौ मिनख आयौ ? अर वौ ई निहायत स्यांणौ अर नेक । इणनै सावळ समझायां सगळी बातां संवर सकै । इणरै साथै साफ, खरी अर साची बातां ई करणी सावळ है ।

मुनीमजी री कोठरी सूं पाछा जावतां धरमराज नै अैड़ौ लखायौ जांणै वांरा माथा सूं भार रौ भाखर अळगौ व्हैगौ । वै हंसता मुळकता राजकंवर रै पाखती आया । राजकंवर धरम-राज री बेटी नै आपरै लोक री बातां बतावतौ हौ वा तौ जकी बात सुणती उण माथै ई अचुंभौ करती । धरमराज नै देखतां

ई वांरै सांम्ही दौड़ी । कोयल रै उनमांन मीठीं वांणी में पूछयौ — म्रतलोक रा बारा मे इत्ता दिन अपां तौ साव ऊंधी बातां जांणता हा । सुरग में ई रात-दिन म्रतलोक री भूंडायां सुण सुणनै म्हारा तौ कांन पाकग्या, पर इत्ता दिन जकी बातां सुणी वै साव झूठी अर निपग्गी ही । राजकंवर जकी बातां म्हनै बताई वांनै सुणियां तौ बापड़ौ सुरग म्रतलोक रै सांम्ही हजार वार पांणी भरै ।

धरंमराज बेटी नै पुचकारतां लाड सूं कह्यौ—थारा मगज में तौ कोई बात जचणी चाहीजै, पछै तौ उणरा बखांण रौ कीं अंत ई नीं । हाल थारौ टाबरपणौ गियौ कोनीं । थोड़ौ घणौ नेठाव राखणौ सीख बेटी !

पछै राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ — म्हारी मंसा तौ थोड़ा दिनां तांई आपरी सरबरा करण री ही, पण आप अणूंतौ आंचौ दरसायौ तौ आपरौ औ आदेस ई सिर-आंख्यां माथै । फरमावौ आप कांई सवाल-जबाब करणी चावौ ।

पछै राजकंवर निरांत सूं गाढ़ रै सागै कुमारी रा घर सूं लेय भेंसा रा रूप तक मांडनै विगतवार बताई । दोनूं बाप बेटी ध्यांन सूं सगळी वारता सुणी । अंत में राजकंवर पूछयौ — आप धरमराज बाजौ अर आपरा राज में ई अध-रम बरतीजै, औ कठा रौ न्याव, औ किसौ धरम ? आपनै म्हांरी दुनियां रै जलमां रौ कीं ध्यांन है के नीं ? म्हैं आपरा लोक रा बारा में कीं नीं जांणूं । म्हांरी दुनियां में चाहै बनस्पति व्हौ; चाहै पंछी जिनावर व्हौ, चाहै जळचर व्हौ अर चाहै मिनख व्हौ, सगळां रै जलम रौ अेक मापौ

है, अेक सनेसौ है अर अेक वगत है पण थांरै इण मरणा रौ नीं तौ कोई वगत, नीं कीं सनेसौ अर नीं कोई मापौ है। जलम सूं पैला मर जावै, जलमतां मर जावै अर जलमणा रै सौ बरसां पछै मर जावै। छिण पैला ई आपरै इण मरणा रौ पुख्तौ सनेसौ नीं मिळै। मौत रौ औ अंधार खातौ अबै घणा दिन नीं चालैला, आ बात आपनै साफ कैदूं।

आ कैयनै राजकंवर धरमराज अर वांरी बेटी रै सांम्ही जोयौ। उजास रा दो पुंज झबाझब करता हा। बेटी बोलण सारू आखती व्ही तौ धरमराज कह्यौ—इण बात रौ जबाब म्हनै ई देवण दै बेटी। थूं किणी अबखा सवाल रौ जबाब दीजै।

पछै धरमराज राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ—बाप व्हैतां थकां ई म्हनै आ बात कबूल करतां अणूंतौ मोद व्है के म्हारी बेटी म्हारा सूं घणी वत्ती समझदार है। जठै म्हारौ मगज अटकै, उठै आ दाछंट पार व्है जावै।

आपरौ बखांण सुणनै लाज रै कारण उणरौ मूंडौ रातौ व्हैगौ, जिणसूं उजास रा पुंज में ई गुलाबी झांई सुभट दीखण लागी।

धरमराज कैवण लागा—म्हारौ अर म्हारा राजा रौ इण बात सारू कीं कसूर व्हैतौ तौ म्हैं सतरै वळा कांन पकड़नै ओळबा रौ झेलू व्हतौ, पण मौत रा बारा में आप जकौ अंधार-खातौ दरसायौ उणरौ कसूरवार खुद मिनख है। मिनख रा डर सूं आपरा स्वारथ री खातर म्हनै ई अणूंता अधरम करणा पड़ै, जे अै अधरम नीं करूं तौ सैकड़ूं बरसां पैली ई इण जमलोक माथै मिनख रौ कब्जौ व्है जातौ। पैला विगत-

ई वांरै सांम्ही दौड़ी । कोयल रै उनमांन मीठी वांणी में पूछ्यौ — म्रतलोक रा बारा मे इत्ता दिन अपां तौ साव ऊंधी बातां जांणता हा । सुरग में ई रात-दिन म्रतलोक री भूंडायां सुण सुणनै म्हारा तौ कांन पाकग्या, पर इत्ता दिन जकी बातां सुणी वै साव भूठी अर निपग्गी ही । राजकंवर जकी बातां म्हनै बताई वांनै सुणियां तौ बापड़ौ सुरग म्रतलोक रै सांम्ही हजार वार पांणी भरै ।

धरमराज बेटी नै पुचकारतां लाड सूं कह्यौ—थारा मगज में तौ कोई बात जचणी चाहीजै, पछै तौ उणरा बखांण रौ कीं अंत ई नीं । हाल थारौ टाबरपणौ गियौ कोनीं । थोड़ौ घणौ नेठाव राखणौ सीख बेटी !

पछै राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ — म्हारी मंसा तौ थोड़ा दिनां तांई आपरी सरवरा करण री ही, पण आप अणूंतौ आंचौ दरसायौ तौ आपरौ औ आदेस ई सिर-आंख्यां माथै । फरमावौ आप कांई सवाल-जबाब करणी चावौ ।

पछै राजकंवर निरांत सूं गाढ़ रै सागै कुमारी रा घर सूं लेय भेंसा रा रूप तक मांडनै विगतवार बताई । दोनूं बाप बेटी ध्यांन सूं सगळी वारता सुणी । अंत में राजकंवर पूछ्यौ — आप धरमराज बाजौ अर आपरा राज में ई अध-रम बरतीजै, औ कठा रौ न्याव, औ किसौ धरम ? आपनै म्हांरी दुनियां रै जलमां रौ कीं ध्यांन है के नीं ? म्हैं आपरा लोक रा बारा में कीं नीं जांणूं । म्हांरी दुनियां में चाहै बनस्पति व्हौ; चाहै पंछी जिनावर व्हौ, चाहै जळचर व्हौ अर चाहै मिनख व्हौ, सगळां रै जलम रौ अेक मापौ

है, अेक सनेसौ है अर अेक वगत है पण थांरै इण मरणा रौ नीं तौ कोई वगत, नीं कीं सनेसौ अर नीं कोई मापौ है। जलम सूं पैला मर जावै, जलमतां मर जावै अर जलमणा रै सौ बरसां पछै मर जावै। छिण पैला ई आपरै इण मरणा रौ पुख्तौ सनेसौ नीं मिळै। मौत रौ औ अंधार खातौ अबै घणा दिन नीं चालैला, आ बात आपनै साफ कैदूं।

आ कैयनै राजकंवर धरमराज अर वांरी बेटी रै सांम्ही जोयौ। उजास रा दो पुंज झवाझव करता हा। बेटी बोलण सारू आखती व्ही तौ धरमराज कह्यौ—इण बात रौ जबाब म्हनै ई देवण दै बेटी। थूं किणी अबखा सवाल रौ जवाब दीजै।

पछै धरमराज राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ—बाप व्हैतां थकां ई म्हनै आ बात कबूल करतां अणूंतौ मोद व्है के म्हारी बेटी म्हारा सूं घणी वत्ती समझदार है। जठै म्हारौ मगज अटकै, उठै आ दाछंट पार व्है जावै।

आपरौ बखांण सुणनै लाज रै कारण उणरौ मूंडौ रातौ व्हैगौ, जिणसूं उजास रा पुंज में ई गुलाबी झांई सुभट दीखण लागी।

धरमराज कैवण लागा—म्हारौ अर म्हारा राजा रौ इण बात सारू कीं कसूर व्हैतौ तौ म्हैं सतरै बळा कांन पकड़नै ओळबा रौ झेलू व्हतौ, पण मौत रा बारा में आप जकौ अंधार-खातौ दरसायौ उणरौ कसूरवार खुद मिनख है। मिनख रा डर सूं आपरा स्वारथ री खातर म्हनै ई अणूंता अधरम करणा पड़ै, जे औ अधरम नीं करूं तौ सैकड़ूं बरसां पैली ई इण जमलोक माथै मिनख रौ कब्जौ व्है जातौ। पैला विगत-

बार म्हारी सगळी बातां सुणौ अर पछै म्हांमें ओळबौ काढ़ौ ।

थोड़ी ताळ रुकनै जमराज धकै फेर कैवण लागा — हजारूं बरसां पैली री बात है जद मिनख पैलपोत इण धरती माथै आपरौ आपौ संभाळियौ, पगां माथै ऊभौ व्हियौ, भुजदंडां री करार अजमायौ अर अटपटी वांणी में बोलणौ सरू करचौ तद म्हांरी खुसी रौ पार नीं हौ । म्है जमपुरी रा लोग अर सुरग रा वासी पूरा सौ बरसां लग इण बात री खुसियां मनाई के अबै मिनख इण धरती नै कीं री कीं बणाय देवैला अर सगळां जीवां रौ जाब्तौ राखैला। वौ ज्यूं ज्यूं लाळसा करी त्यूं त्यूं उणरी समझ बधाई। अठीनै उणरी मंसा जागी अर उठीनै उणरी आस पूरीजी । म्हांनै उणरी समझ अर उणरा बळ रौ पूरौ भरोसौ हौ । सरूपोत में अतलोक, सुरग-लोक अर जमलोक तीनूं ई न्यारा न्यारा हा । आपस में मदत अर भाईचारा रौ नातौ हौ। अै दोनूं लोक उण वगत पूरा बढ़्या-चढ़्या हा । म्हांनै ग्यांन-विग्यांन रौ छेह नीं हौ, इण खातर निबळा मिनख नै आपरौ आपौ संभळावण वास्तै म्है घणा कोडाया होयनै उणरी सब तरफ सूं मदत करी । पण अबै तौ घणा ई पिछतावां के उण नुगरा जीव नै क्यूं आपरै आपै करचौ ? म्हांरी मदत रौ वौ पाछौ इण रूप में भुगतान करैला, म्हैं आ बात सपना में ई नीं जांणी ही । पण हाथां करनै वौ आपरी समझ अर हुंस्यारी रा जाळ में अळूझियौ जकौ अबै मरचां ई उणरौ छुटकारौ नीं व्हैला । म्हांरै साथै धोखौ करचौ तौ वौ खुदई सवायौ धोखौ खायौ। म्हांनै घणा घणा फोड़ा भुगताया तौ वौ आज खुद रात-दिन फोड़ा

भुगतै अर ताजिंदगी तर तर वत्ता फोड़ा भुगतैला । म्हांरै साथै छळ करनै वौ आपरै साथै ई छळ करयौ । म्है मांनां के आज वौ म्हांरा सूं घणौ अपरबळी व्हैगौ, आज वौ म्हांरा सूं घणी बातां में बढ़यौ चढ़यौ है, पण आंगळी कित्ती ई सूजै तौ वा देवळ रौ थांभौ नीं बण सकै । उणरी केई नसां म्हांरा सिकंजा में इण भांत भिलियोड़ी है के थोड़ी सी कसतां ई उणनै भूंडै ढाळै डाढ़णौ पड़ै । उणरा छळ, उणरा कपट, उणरा ग्यांन, उणरी समभ, उणरी विद्या अर उणरी करामातां सूं ई खुद उणरौ कदैई ऊपरलौ पांनौ नीं आवैला । थांनै कांई कांई बतावूं अर कठा सूं बतावूं, म्हारै कीं समभ बैठै नीं । म्हनै सावळ तरतीब वार बोलणौ ई तौ को आवै नीं । म्हारी बेटी बतावती तौ आपनै घणा फबता ढंग सूं बतावती । मिनख म्हनै आपरा छळ में इण भांत कावळ पजायौ के म्हैं कदैई सुख अर आरांम सूं सास नीं लै सकूं, पण म्हारै साथै रौ साथै वौ खुद ई कांई सुख रौ सांस लेलै ।

धरमराज नै ढबण री सांनी करनै बेटी राजकंवर रै सांम्ही देख्यौ । बीच में ई बोली — आप आं बातां रौ घणौ ख्याल मत करज्यौ । बाभौसा नै रीस आयां पछै बोलण री सोजी को रैवै नीं । जुगां जूंनी रीस है । आज आप हत्थै चढ़्या तौ सगळौ आंमनौ आप माथै ई दरसावणी चावै । धरमराज अंगां अणूंता भोळा है । पण रीस में आयां तौ आपरौ चेतौ ई बिसर जावै । म्हैं आपनै निरांत सूं सगळी बातां सावळ समभावूं ।

धरमराज रोवणकाळा व्हैगा । कह्यौ — अबै ई म्हनै मिनख री करतूतां माथै रीस नीं आवै तौ इण रीस री कांई

अचार घालूं । थूं म्हनै बोलतां पाल मती, नीं बोल्यौ तौ अमूं-झनै बेचेतै व्है जावूंला, म्हनै अैड़ौ लखावै । थूं जांणती व्हैला के यूं रीस में बकियां म्हारौ कोजौ लागैला, इणरी थूं रत्ती भर ई चिंता मत कर । म्हैं मुनीमजी नै सगळी बातां पूछनै आयौ हूं। आप जैड़ा सालस, स्यांणा अर नेक आदमी सगळा म्रतलोक में ई बिरला है । अै म्हारी बातां रौ कीं ख्याल नीं करैला।

राजकंवर मुळकनै कह्यौ—म्हैं तौ आपरै सांम्ही अबूझ टाबर री गळाई हूं । म्हारौ हाल तांई इत्तौ हौसलौ नीं वध्यौ के म्हैं आपरो बातां रौ ख्याल करूं !

धरमराज रौ रोवणकाळौ उणियारौ अेकदम झबाझब करण लागौ । कह्यौ—म्हैं तौ थनै पैला ई कै दियौ हौ के बेटी आप म्हारी बातां रौ कीं ख्याल नीं करैला । म्हारा अंतस में हजारूं बरसां री बूंबी दटियोड़ी है, थूं म्हनै आज मन चायौ अपळ-गपळ बोलण दै । आप अणूंता समझदार आदमी है, मतै ई साची बात रौ सार निकाळ लेवेला ।

बेटी आदर भाव सूं बोली—आपरी मरजी ! भलां म्हैं आपनै ओड़ौ कीकर दे सकूं ! आपरी ज्यूं इंछा व्है ज्यूं स्री मुख सूं फरमावौ ।

बेटी रा मूंडा सूं आ बात सुणनै धरमराज गळगळा व्हैगा । कह्यौ—अबै तौ म्हैं जमलोक रौ कांम करतां करतां ठेट गळा तांई धापग्यौ हूं । थूं औ कांम संभाळ लेवै तौ म्हारौ फंद कटै । म्हैं अबै काठौ आंती आयग्यौ हूं । रीस तौ अैड़ी आवै के म्रतलोक रै मिनखां रौ अेक छिण में पापौ काट न्हाकूं ! दुस्टी म्हनै कैड़ौ बांधनै वाळियौ !

जमराज री आंख्यां जळजळी व्हैगी। वांरौ गळौ रूंधग्यौ। बेटी दौड़नै इमरत री तासळी भरनै लाई। आदर भाव सूं बोली — आप थोड़ी ताळ निरांत राखौ तौ म्हैं थोड़ी में सगळी बात समझाय दूं।

धरमराज गपळ गपळ सगळौ इमरत पीगा। कीं मगज ठाडौ व्हियौ। बोल्या — थारी मरजी व्है तौ थूं ई समझा। म्हनै रीस रै आगै कीं सूझै नीं।

राजकंवर रै सांम्ही देखनै बेटी कैवण लागी — म्हारो घणी बोलण री आदत कोनीं। आप थोड़ा में ई घणौ समझ लिराजौ।

पछै वा नेठाव सूं मीठी वांणी में कैवण लागी — किण सांम्ही रीस करणी चाहीजै के नीं करणी चाहीजै, आ बात दूजी है, पण बाभौसा री रीस है साव साची। पैला म्रत-लोक रै साथै म्हांरौ अर सुरग रा वासियां रै सिवाय मदत देवणा रै कीं दूजौ घणौ नातौ नीं हौ। पण जद मिनख हाथ जोड़नै कह्यौ कै अबै भगवांन नै बणायां बिना उणरौ कांम मुळगौ ई बंद व्हैगौ तौ उणरै कैणा मुजब म्है भगवांन री ठागौ बणायौ। वौ सावळ आपरी बात म्हांनै समझाई के भगवांन बणायां बिना वौ आपरी दुनियां में धकै कीं बधापौ नीं कर सकै। सगळा मिनख अेक सरीखा कोनीं। वौ म्हांनै समझायौ के घणकरा मिनख जिनावरां सूं ई हीण अर अधम है। वांनै गुलाम बणायनै कांम लियां बिना अबै दुनियां में कांम ई नीं चालै। फगत भगवांन रा आंकस सूं वांनै काबू करचा जा सकै, नींतर वै अबै ई धारै कोनीं। म्है उणरा

कैणा माथै पूरौ विस्वास करचौ । दोनूं लोक रा वासी म्है बरसां तक सोच विचार करनै भगवांन री थापना करी । म्हैं तद मिनख नै समझायौ के अबै इण भगवांन रौ आव-आदर अर कुरब-कायदौ थारै हाथ है । अैड़ी नीं व्है के कदैई भगवांन रौ पोचापौ लाग जावै । अेकर बणियां पछै कदैई आंरी गादी खाली नीं रैवैला । आंरी पूजा अर आंरै सनमांन रौ जिम्मौ अबै थारौ । मिनख विस्वास दिरायौ उण मुजब ई वौ थोड़ा ई बरसां में आपरा म्रतलोक में भगवांन रौ अैड़ौ ठागौ जमायौ के म्हांरौ ई मगज चकरीजग्यौ । कदैई भेद परगट नीं करण वास्तै माहौमाह वाचा व्हिया । म्हैं आज दिन तांई उण वाचा रौ खंडण नीं करचौ । पछै म्रतलोक में भगवांन रौ भेद जांणण री वा लगन लागी के हाल तांई उणरौ थाग नीं आयौ अर कदैई थाग आवैला ई कोनीं । थोड़ा बरसां पछै वौ अेक दिन फेर अरदास करी के फगत अेक भगवांन सूं अबै कांम चालणौ दोरौ है । भगवांन रै जोड़ै केई नवा देवता बणाणा पड़ैला । वौ आपरी बात सावळ समझाई । म्है दोनूं लोक रा वासी फेर मिळजुळनै विचार करचौ अर मिनख रा कैणा मुजब देवतावां री थापना करी । वौ ज्यूं कह्यौ त्यूं म्है जमलोक अर सुरग में हेराफेरी करी । म्है उणरा कैणा रौ कदैई अभरोसौ नीं करचौ । पण जद भगवांन अर देवतावां रा नांव माथै म्रतलोक में माहौमाह तणातणी व्ही तद म्है उणनै इण बात रौ म्यांनौ पूछचौ । वौ जबाब दियौ के दुनियां में बधापौ करण सारू आ तणातणी जरूरी है, इणरै बिना कांम री चाल आगै बधै ई नीं । इणी तणातणी रै

साथै करम, आतमा अर मुगती रा जाळ विछावणा ई जरूरी है । वौ म्हांनै मांडनै नरक अर सुरग रौ सगळौ खाकौ समभायौ । करम, आतमा, मुगती, नरक अर सुरग रा बारा में उणरा नवा विचार सुणनै म्हांरै अचुंभा रौ तौ पार ई नीं रह्यौ । मिनख री समभ अर उणरा ग्यांन माथै म्हांनै ई गुमेज व्हियौ । केई बरसां लग मिनख री समभ अर उणरा कैणा मुजब म्है सगळी बातां रा रूप संवारिया । माहौमाह आपस में धणा ई वाचा व्हिया के कोई किणी रै साथै छळ नीं करैला अर आं बातां रौ किणी रै आगै भेद परगट नीं करैला । अर आं सगळी चीजां री थापना करनै भूलण री चेस्टा करण लागा । सगळा लोग मिळजुळनै जिण जिण चीजां री थापना व्ही, वांरौ अेक दूजां नै जिम्मौ संभळायौ । विस्णु भगवांन सुरग रौ कांम-काज देखैला अर धरमराज जमलोक रौ काम-कांज संभाळैला । मिनख म्रतलोक री मरजादा सूं कदैई बारै नीं निकळैला ! वौ जीवतौ कदैई जमलोक अर सुरग में प्रवेस नीं पा सकैला । मिनख रै कैणा सूं ई म्है सगळी बातां रा पंपाळ सरू करचा अर वौ तौ म्हांनै पंपाळ भिलायां पछै अठीनै पाछौ मूंडौ ई नीं करचौ । म्है तौ हाल तांई वां पंपाळां में अळूभियोड़ा हां । अर मिनख वां पंपाळां रा नांव माथै म्रत-लोक में अैड़ा अकरम करणा सरू करचा के पछै तौ म्हांरै लाख बरजियोड़ौ ई नीं ढब्यौ । आपरा मतलब सारू बातां बातां में तौ वौ म्हांरी पूजा करतौ अर कांम आपरै जचै ज्यूं करतौ । उणरा कैणा मुजब ई म्है उणरै करमां रौ ई अठै हिसाब-किताब राखां, नरक सुरग रौ फैसलौ करां । पण वौ म्हांरा

सगळा कांम रौ पोखाळौ कर न्हाकियौ । उण दिन विस्णु भगवांन रै सांम्ही सुभट तै व्ही ही के मिनख जलम-मरण रा कांम में किणी भांत री पंचायती नीं करैला । वौ तौ आपरा कांम सूं कांम राखैला । करमां रै हिसाब सूं सगळौ लेखौ-जोखौ म्है ई करालां । पण वौ तौ आपरी बात माथै रत्ती भर ई पाबंदी नीं राखी ।

राजकंवर इचरज सूं पूछ्यौ — तौ कांई, अै भगवांन, करम, आतमा, मुगति, नरक, सुरग अर देवी देवतावां रा पंपाळ खुद मिनख आपरा हाथ सूं सरू कराया ?

दोनूं बाप बेटी अेकण सागै जोर सूं हांमळ भरी । राजकंवर री तौ अकल ई कह्यौ नीं करयौ । बेटी धकै फेर कैवण लागी — पण मिनख तौ मारण रौ सगळौ कांम आपरा हाथ में भेल लियौ । इण पैंला मौत रौ मापौ हौ, वगत ही अर सनेसौ ई हौ । पण मिनख तौ माहौमाह लड़ाइयां लड़नै लाखूं मिनखां नै मारणा सरू कर दिया । करमां रौ लेखौ-जोखौ कीं कांम नीं दियौ । अठै हिसाब राखणौ मुस्कल व्हैगौ । नरक सुरग रा फैसला में गब्दोळा पड़ण लागा । अेकला चित्रगुप्त सूं कांम संभाळणौ मुळगौ ई दूभर व्हैगौ । जमदूतां बिना ई मिनख खुद अणगिण मिनखां नै मारणा चालू कर दिया, जिणरा म्हांनै आज दिन तक समंचार ई नीं व्हिया । नीं म्हांरा लोक में इत्ता जमदूत ई है के मिनख रै हाथां करयोड़ी अणगिण मौतां नै पूग ई आवै । मिनख रै कैणा मुजब म्है तौ नीं जमदूतां रौ आंकड़ौ बधा सक्या अर नीं चित्रगुप्तजी री ठौड़ वत्ता मुनीम ई राख सक्या । म्हांरै मापा

रौ कांम हौ जित्तै तौ सगळा कांम ठीक हा । पण मिनख म्हांरै मापा रौ अैड़ौ रूळियौ करचौ के अबै संभाळियां ई संभळै कोनीं । मुनीमजी तौ छकड़ी भूलग्या । हिसाब - किताब में अैड़ौ घोटाळौ बध्यौ के जिणरौ नांव कांई । विस्णु भगवांन री लतेड़ां सुण सुणनै म्है तौ अठै निसंडा व्हैगा । पण जद मिनख वांरा जलम रा कांम में पंचायती करण लागौ तौ वांरी ई आंख्यां उघड़ी । वांनै मिनख री करतूतां रौ थोड़ौ घणौ पतौ पड़चौ । उण पछै वै ई लतेड़ां कम करदी अर मिनख सूं पूरा डरण लागा । धरमराज अर विस्णु भगवांन दोनूं ई आपरै छक्कै - पंजै सावचेत व्हैगा । वांनै औ पक्कौ निस्चै व्हैगौ के मिनख नै उणरै लखणा मुजब सावळ नीं बरतियौ तौ वौ दोनूं लोकां माथै देखतां देखतां कब्जौ कर लेवैला । मिनख आपरा हिसाब सूं लड़ाइयां करै अर आपरा हिसाब सूं अण - गिण मिनखां नै मारै तौ धरमराज ई आपरा हिसाब सूं मन रै मतै मिनखां नै अणचींत्या मारण लागा । नींतर अबै मिनख धरमराज नै धारै ? मिनख आपरै मन मतै मिनखां नै मारण लागा तौ धरमराज ई आपरै मन मतै मिनखां री अकाळ मौतां करण लागा । जे वै अकाळ मौतां री जुगत नीं बिठावता तौ मिनख कदैई जमलोक माथै कब्जौ कर लेतौ । आपरै हाथां थापी जकी बातां नै वौ मुळगौ ई पांतरग्यौ । आपरी बातां रै खंडण मंडण में अळूझग्यौ । अेक दिन खुद ई तौ आपरी मरजी सूं भगवांन नै वणायौ अर अबै खुद ई उणनै भांगै ! अेक दिन खुद ई तौ करम, आतमा, मुगति, नरक अर सुरग रा पंपाळ रचवाया, अबै खुद ई आं सगळां रौ खंडण करण

लागौ । आपरा छळ में वौ खुद ई अळूझग्यौ अर कदैई वौ इण छळ सूं छुटकारौ नीं पा सकैला । सेवट मिनख रा डर सूं विस्णु भगवांन अर धरमराज अेक अैड़ी अटकळ विचारी के मिनख कदैई उण अटकळ नै समझ नीं सकै अर कदैई आपरा जाळ सूं छूट नीं सकै । वा अटकळ है मिनखां नै माहौमाह लड़ावण री । मिनख मिनख अेक दूजा नै अेक सरीखा नीं जांणै । माहौमाह छोटा मोटा जांणनै वै हरदम झगड़ता रैवै । नीं कदैई वांरौ झगड़ौ खतम व्हैला अर नीं कदैई जमलोक अर सुरग माथै राज करण री वांनै वगत ई मिळैला । वै खुद ई अेक दूजा माथै राज करण री अर अेक दूजा नै गुलांम बणावण री जुगतियां में ई ताजिंदगी आफळता रैवैला । अर म्है दोनूं लोक रा वासी बळतै काळजै मिनख नै सराप दियौ के वौ आपरै हाथां बणायोड़ा भगवांन, करम, आतमा, मुगति, नरक अर सुरग रौ कदैई पार नीं पा सकैला । आं सगळां रा बारा में वौ नित नवी जुगतियां बणावतौ रैवैला अर भांगतौ रैवैला । अेक दूजा माथै राज करण रा अर अेक दूजा नै गुलांम बणावण रा सुभाव रै कारण उणरी लड़ाइयां रौ कदैई अंत नीं आवैला । म्हांरै लोकां रौ पोखाळौ करचौ तौ वौ आपरा लोक नै ई कदैई सुधार नीं सकैला । म्हांरै साथै करचोड़ौ छळ उणनै ताजिंदगी फोड़ा घालैला ।

जमराज खुसी में उछळता कह्यौ—म्हारी बेटी कांई सुथराई सूं सगळी बातां सुभट बताई के म्हैं चावूं तौ ई सावळ बखांण नीं कर सकूं । म्हनै खुदनै अैड़ौ लखायौ के म्हैं पैली वार अै बातां सुणी हूं ।

पछै वै राजकंवर रै सांम्ही देखनै कह्यौ—आपरौ दियोड़ौ ओळबौ म्हैं पाछौ हाथौहाथ आपनै ई सूंपूं के थें मिनख लोग ई मौत रौ मापौ, मौत रौ सनेसौ अर मौत रौ वगत आपरै हाथां ई नस्ट करचौ तौ अबै उणरौ फळ चाखता दौरा क्यूं व्हौ ? अबै म्हैं इण बात रौ जबाब तलब करणी चावूं के थें म्हारा कांम में बिना पूछ्यां क्यूं पंचायती करी। अर हाल पंचायती करता ई जावौ। थें म्रतलोक में जावौ तौ म्हारी तरफ सूं लोगां नै साफ के दीजौ के माहौमाह मिनखां रै हाथां मरचोड़ा आदमियां रौ म्हारै अठै कीं हवालौ नीं है। करमां रौ लेखौ जोखौ ई सगळौ गब्दोळा में पड़ग्यौ है।

राजकंवर अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै कह्यौ—म्हैं आयौ तौ सांम्ही ओळबौ देवण सारू हौ, पण उलटौ ओळबा में झिलग्यौ। अबै आप फरमावौ ज्यूं करूं। कीकर ई करनै जलम री गळाई मौत री जुगत पाछी उणी भांत बैठ जावै तौ पछै म्रतलोक रै आणंद रौ पार ई नीं। अर आपनै ई सुख अर आरांम मिळै। धरमराज म्हांरी गलतियां बगसौ अर मौत री जुगत सावळ बिठावौ।

धरमराज कह्यौ—लारली गलतियां नै तौ फेर माफ कर सकूं, पण आइंदा मौत रा बारा में मिनख कीं पंचायती करी तौ पछै म्हारै जैड़ौ भूंडौ नीं है। थें सावळ नेक रास्ता माथै चालौ तौ तीनूं लोकां रौ सुधारौ व्है सकै। ईड अर लड़ाई में तौ सगळी बातां छाजै। म्है दोनूं लोकां में रात-दिन मिनख अर म्रतलोक रा बारा में भूंडायां फैलाता रैवां, जिणसूं म्हांरै अठा रौ वासी मिनखां सूं किणी भांत री परीत नीं राखै।

जद इज आपरी बातां सुणनै बेटी इणरौ म्हनै म्यांनौ पूछ्यौ। अबै उणरै ई आछी तरै समझ में आयगी व्हैला।

बेटी मुळकनै कह्यौ — म्हारी समझ में तौ फेर घणी घणी बातां आई, आप किण किण रौ म्यांनौ बतावौला।

राजकंवर कह्यौ—म्हैं जिण लालसा सूं अठै आयौ, वा पूरण व्ही। म्हारै खपतां म्हैं मिनखां नै पूरा समझावूंला के वै मारण रा कांम में किणी भांत री पंचायती नीं करै।

धरमराज बीच में ई आखता पड़नै कैवण लागा — जे आपरी आ बात म्रतलोक रा मिनख सावळ समझग्या तौ मौत री जुगती आपै ई बैठ जावैला। म्हारौ नांव लेयनै मिनखां नै समझावण री कोसिस करज्यौ के वै सगळा मिनखां नै बिरौबर समझै। मिनख ई मिनख माथै राज करण री अर वांनै गुलांम बणावण री चेस्टा करी तौ वै कदैई सुखी नीं व्है सकैला। जठा लग मिनख सगळा जीवां नै आपरै सरतै नीं जांणै तठा लग वौ मारण रा कांम में पूरी पूरी पंचायती करैला अर जद तक मारण रा कांम में उणरी पंचायती रैवैला जित्तै मौत री जुगत कदैई सावळ नीं बैठ सकैला। मौत री जुगत बैठावणी फगत थां मिनखां रै ई हाथ है।

राजकंवर कह्यौ — अेक कांम तौ आप मिनख रै परबारौ ई कर सकौ। जलम री गळाई जे मिनख नै मौत रौ सनेसौ पैला मिळ जावै तौ उणरौ मरणौ अणचींत्यौ नीं व्है।

धरमराज री बेटी कह्यौ—राजकंवर ! दुनियां में घणकरी बातां तौ अैड़ी व्है के वांनै जांणणा सूं सुख उपजै अर घण-

करी बातां अैड़ी व्है के वांनै जांणणा सूं भयंकर दुख उपजै। तद समझदार मिनख नै चाहीजै के वौ जांणण वाली बातां नै ई जांणै अर नीं जांणण वाळी बातां सपना में ई नीं जांणै। मौत रौ सनेसौ पैला मिळियां तौ थां मिनखां रौ जीवणौ ई हरांम व्है जावैला। धरमराज सूं आ ई वीणती करौ के वै मौत नै हमेसां अजांण ई राखै।

धरमराज घणा लाड सूं कह्यौ — बेटी ! जे थारी अकल म्हारा में व्हैती तौ म्हैं मिनखां री अकल कदैई ठांणै कर देतौ।

राजकंवर कीं अटकतां अटकतां कह्यौ — बींदणी री ल्हास नै म्हैं जाब्ता सूं राखण वास्तै कह्यौ, पाछौ उठै गियां म्हैं कांईं जबाब देवूंला ! म्रतलोक में कोई इण बात माथै विस्वास नीं करैला के धरमराज रै पाखती गियां ई आ बात नीं बणी !

धरमराज कह्यौ — अठै जीव नीं आतौ तौ सगळी बात म्हारा हाथ में ही। अठै पांच सातेक जमदूत विस्णु भगवांन रा खास जासूस है। सगळी बातां रा समंचार वांनै जायनै हाथौहाथ पुगावै। अठा रा गब्दोळा सूं विस्णु भगवांन नींतर ई पूरा नाराज है। जे आ बात ठा पड़गी तौ म्हनै अणूंतौ लतेड़ैला। बींदणी रा जीव रै बदळै कोई राजी खुसी सूं आपरौ जीव सूंपै तौ म्हैं छांनै ओलै आ बात कर सकूं।

राजकंवर कह्यौ — इण में इत्ती सोचण जैड़ी कांईं बात, म्हैं राजी खुसी सूं म्हारौ जीव दै सकूं। आप कीकर ई करनै बींदणी रौ जीव तुरत पाछौ भेजावौ तौ म्हारौ अठै

आवणौ सारथक व्है ।

धरमराज री बेटी मुळकनै कह्यौ — फगत इण बात सूं ई आपरौ अठै आवणौ सारथक नीं व्है !

पछै वा धरमराज रै सांम्ही देखनै कह्यौ — बाभौसा, आप म्हनै केई वार फरमायौ के म्हैं म्हारी खुसी सूं म्हारौ वर चुणूं । अैड़ौ वर कठै हेरती फिरूंला । आप म्हांनै आसीर-वाद दौ ।

धरमराज रौ मूंडौ काळौमिट्ट पड़ग्यौ । कह्यौ — बेटी, जोग वर में तौ की खांमी कोनीं, पण म्हैं अठै बात बात में पजूं, वगत माथै म्हारी कुण मदत करैला । म्हनै इण बात री पूरी चिंता है ।

बेटी कह्यौ — याद करतां ई म्हैं आपरै पाखती हाजर व्है जवूंला । आप इण बाबत किणी बात री चिंता मत करौ ।

धरमराज गळगळा कंठ सूं कह्यौ — बेटी, कदैई अैड़ी नीं व्है के थूं ई म्रतलोक में गियां मिनखां जैड़ी नुगरी व्है जावै ।

बेटी अपूठी फिरनै होळै सूं जबाव दियौ — म्रतलोक रा मिनख ई सगळा किसा अेक सरीखा व्है !

पछै धरमराज मतलब री अेक खास बात करी । कह्यौ: म्हारै अेकाअेक बेटी है । इणरा दायजा में जमलोक री सगळी संपत्त देवूं तौ ई थोड़ी । पण इणरै उपरांत म्हैं दायजा में अेक जीव देवणी चावूं । आप फरमावौ तौ देवलोक सूं आपरी मां रौ जीव पाछौ मंगवायनै आपनै सूंप दूं । म्रतलोक में जातां ई आपरी मां जीवती व्है जावैला ।

राजकंवर कह्यौ — अेक जीव ई सूंपणौ है तौ पछै म्हनै कुमारी री बींदणी वाळौ जीव ई सूंपौ । म्हैं उणरा घर में रातवासौ लियौ अर वाचा देयनै आयौ हूं ।

धरमराज खुसी में उछळता कह्यौ — जे म्रतलोक रै मिनखां री सुमत आप जैड़ी व्हैती तौ क्यूं तीनूं लोकां में कळेस अर संताप उपजतौ ! म्हे खुसी खुसी म्हांरा दोनूं ई लोक मिनख नै सूंप देता, पण मिनख तौ आपरै नुगरापणा री कीं पाछ ई नीं राखी । आप म्रतलोक में पाछा जाय उणनै सुमत दिरावौ तौ वात दूजी । सावळ पाधरा मन सूं कांम करै तौ म्हांनै मिनख री समझ अर उणरै ग्यांन रौ पूरौ भरोसौ है ।

आठवौ राजकंवर

तपसी रा आस्रम सूं वहीर होयनै आठवौ राजकंवर लांणी कूंट सांम्ही वहीर व्हियौ तौ उणनै मां री याद रै सागै दो बातां ई याद आयगी। मां आठूं बेटा नै नित रात रा नसीयत री बातां बतावती ही। छठा राजकंवर रीं गळाई इणनै ई साधू रा भेख री मरजादा निभावण वाळा भांड री अेक बात फेर याद आई। आ बात तद सूं ई उणरा काळजा माथै चित्रांम री भांत कुरचोड़ी ही। वा दूजोड़ी बात यूं ही—सेठ रै अठै साधू रौ भेख लायां पछै वौ भांड अेक राजा रा दरबार में पूगौ। वौ भांड सगळा मुलकां में चावौ हौ। साधू रा भेख वाळी वा बात ई राजा रै कांनां पूगगी ही। भांड व्हैतां थकां ई वौ राजा आपरा मन में उणरौ आदर करतौ। राजा री देखा-देखीं सगळा राज-दरबारी ई उणरौ अणूंतौ कायदौ राखता। भांड मुभराज करण सारू दरबार में हाजर व्हियौ उण वगत डाक-णियां अर जोगणियां री चरचा चालती ही। इण चरचा रै विचाळै ई भांड हाजर व्हियौ तौ सगळा ई घणा राजी व्हिया। अेक मंत्री राजा नै अरदास करी के आपरौ हुकम व्है जावै तौ इण भांड सूं डाकण रौ स्वांग निजरां देख सकां। अैड़ौ मौकौ फेर कद आवैला।

दूजा दरबारी ई इण बात री ताईद करी। सगळा दर-बारियां री आ मरजी देखी तौ राजा भांड नै आदेस करचौ के वौ कालै डाकण रौ स्वांग लावै।

भांड डरतां डरतां कह्यौ — अंदाता रौ हुकम सपना में ई नीं टाळूं, पण गरीब भांड री अेक अरदास है, उण माथै राज ध्यांन सूं विचार करै। स्वांग तौ म्हैं दुनियां री हर चीज रौ ला सकूं। भाटौ बणनै मारग माथै पड़ जावूं तौ कोई मारगू इण बात री सनागत नीं कर सकै के औ भाटौ है के मिनख। आपरी दया सूं म्हांरा बडेरां नै औ सिवजी रौ वरदांन है। आप फरमावौ तौ म्हैं डाकण रौ ई स्वांग ला सकूं, पण पछै देखणियां नै औ स्वांग घणौ मूंघौ पड़ जावैला। स्वांग रै सागै म्हैं डाकणियां वाळा चाळा नीं पोखूं जित्तै स्वांग री रंगत पूरी नीं बणै। डाकण रा स्वांग में किणी मिनख री आंतड़ियां चीर उणरा लोई सूं खप्पर भरनै नीं पीवूं जित्तै स्वांग अधूरौ रैवै। म्हैं अधूरौ स्वांग नीं लाया करूं। स्वांग रै पैला अर पछै तौ म्हैं फगत रावळौ भांड हूं पण स्वांग रै बिचाळै म्हैं अंगै ई आपरौ चेतौ बिसर जावूं। उण वगत भेख रै मिस म्हैं असली री जूंण में पूग जावूं। दूजी तीजी बातां रौ म्हनै कीं ध्यांन नीं रैवै। आपरा हुकम सूं म्हैं हंसतौ हंसतौ सूळी चढ़ जावूं, पण अंदाता म्हनै आप डाकण रा स्वांग वास्तै आदेस मत करौ।

राजाजी तौ ई उणरी बात नै सावळ को समझ सक्या नीं। राजा होवण वास्तै मोटी बुद्धि जरूरी है। वै रोब सूं पूछ्यौ — क्यूं? थूं डाकण रौ स्वांग क्यूं नीं ला सकै?

भांड कह्यौ — अंदाता, म्हैं साफ अरज करी तौ ई आपरै जची कोनीं। डाकण रौ स्वांग देखण वाळां मांय सूं उण वगत कोई म्हारै धकै आयग्यौ तौ उणरा लोई सूं डाकण रौ खप्पर भरीजैला अर उणरी छाती माथै गोडौ देयनै वा उणी

ठोड़ गट गट वौ खप्पर पूरौ पीवैला । रांम जांणै उण वगत कुण सांम्ही आवै । म्हनै स्वांग रै बिचाळै अंदाता रौ ई ध्यांन नीं रैवैला । डाकण रै कांई गनौ ? इणी खातर आपरै पगां पड़ू के डाकण रा स्वांग वास्तै गरीब भांड नै माफी बगसौ तौ सावळ । हूं तौ म्हैं आप लोगां रौ कमीण भांड पण म्हारा रिजक री मरजादा सूं म्हैं कोई ऊंची मरजादा नीं गिणूं । अबै ज्यूं अंदाता री मरजी व्है हुकम फरमावै । म्हैं तौ फगत आपरी पगरखियां रौ चाकर हूं ।

दरबारी कह्यौ — अंदाता, अै तौ रिजक री अटकळ-बाजियां हैं । भांड इण भांत री थोथी भोपाडफरियां नीं करै तौ वौ भांड ई कांई । पछै औ तौ मुलकां चावौ भांड है । बांणिया रै अठै साधू रा भेख वाळी बात भरै पड़गी तौ अबै सगळै ई उणी ठग-विद्या सूं बरतणी चावै । राजावां रा दरबार में इणरौ घणौ सौभाग नीं सजियौ दीसै । ज्यूं थारी मरजी व्है ज्यूं करजै । इणी वात माथै थनै कालै डाकण रौ स्वांग लाणौ ई पड़ैला । देखां कीकर काळजौ फोड़नै खप्पर भरै । इणनै इण बात री सोजी होवणी चाहीजै के मिनखां रा काळजा आटा रा बणियोड़ा नीं व्है ।

दरबारियां रै देखादेख राजाजी ई कह्यौ — हां, थनै कालै रौ कालै डाकण रौ स्वांग लाणौ पडैला । उण वगत म्हैं धकै आय जावूं तौ थूं म्हारौ ई काळजौ चीर न्हाकजै । थनै सौ ई गुना माफ है । बोल, पछै कांई चावै ।

भांड कह्यौ — आप जैड़ा भूपतियां रै सांम्ही कमीण-कारुवां रौ कांई तौ चावणौ अर कांई नीं चावणौ । म्हैं तौ अरज

करी ही के आप हुकम फरमावौ तौ म्हैं गाल बजावतौ बजा-वतौ सूळी माथै चढ़ण सारू त्यार हूं । अबारूं आप नीं मांनौ जकौ तौ म्हैं ई कांई करूं, पण कालै थकै आयोड़ा रौ काळजौ चीरीजग्यौ तौ सौ ई गुना माफ है । पछै म्हामें चूक मत काढ़जौ ।

दीवांण कह्यौ—तौ इण बात वास्तै कांई राजाजी सूं तांबा-पत्तर लिखावैला ? बापजी आपरा स्री मुख सूं फरमाय दियौ के थनै कालै रा स्वांग वास्तै सौ ई गुना माफ है, पछै फालतू भांड वाळी भिकाल क्यूं करै ! डाकण रौ स्वांग नीं लाय जांणतौ व्हे तौ बात दूजी है ।

इण पछै भांड रै कीं कैवणा वास्तै बात बची ई कोनीं । वौ खाकां अर गाल बजायनै कह्यौ—ज्यूं बड़भागियां री इंछा, रावळौ भांड तौ बोटी बोटी छूनौ तौ ई त्यार है ।

बात रै हवा सूं ई तेज पग व्है । दरबार में बात संपूरण व्हियां पैली ई सगळा नगर में ठा पड़गी के कालै भांड डांकण रौ स्वांग लावैला । स्वांग रै बिचाळै आपरा तीखा नखां सूं किणी मिनख रौ काळजौ चिरनै वौ खप्पर भरैला । पछै उठै ऊभौ ई सगळा दरबारियां रै सांम्ही पूरौ रौ पूरौ खप्पर अेक ई घूंट में पी जावैला । नगरवासियां मांय सूं राज-दरबारी डाकण रै भख सारू उण आदमी नै छांटैला । सौ इण खातर नगर मांय सूं तौ अेक चिड़ी रौ जायौ ई उठै नीं पूगौ । फगत राज घराणां अर दरबारियां रै घर वाळां सिवाय कोई दूजौ मिनख भांड रौ स्वांग देखण सारू उठै नीं आयौ ।

रांणियां, राजकंवरियां, डावड़ियां अर लुगायां झिरोखां में बैठी बाट जोवती ही अर दरबार में बैठा सगळा दरबारी भांड री उडीक में उतावळा व्हियोड़ा चारूमेर निजर घुमावता हा के इत्ता में हाथ भर लांबी जीभ लटकायां अेक डाकण फूंफां फूंफां करती दरबार में आई। जिण स्वांग री उडीक में सगळा बैठा हा, वै डाकण नै देखतां ई स्वांग री सगळी बात भूलग्या अर मतै मतै मन पड़ै उठीनै ई दौड़ण लागा। दरबार में खळवल माची तौ वा माची के बात छोड़ौ। आ तौ कोई साचैली डाकण ई आयगी। स्वांग रै बिचाळै नांमी मौकौ जोयौ। हाथ भर लांबी जीभ सूं टपाक टपाक लोई झरै। लट्टियां बिखरियोड़ी। नख अैड़ा लांबा अर तीखा के भाटा नै जड़ देती रौ चीर न्हाकै, कुबदी भांड कठैई साचैली डाकण नै ई तौ सिखायनै नीं मैल दी। देखतां देखतां राजदरबार साव सूनौ व्हैगौ। राजाजी तौ सबसूं आगै न्हाटा। दो तीन वळा आखड़ आखडनै पड़्या तौ ई वै लारै मुड़नै नीं जोयौ के डाकण कित्तीक आंतरै है। पड़तां ई झपकै ऊठनै दौड़ण री करता। ऊमर में पैली वार वांरै दौड़ण रौ कांम पड़्यौ हौ। दौड़णा री आ कीमत तौ वै आज ई जांणी। अबै नित हमेस सवार-सिंझ्या दौड़ण री रफत करैला। किणी वगत कांई माथै आय पड़ै, इणरी किणनै ठा पड़ै। सगळी रांणियां नै ई दौड़णौ सिखावैला।

चिड़कलियां रौ ढूल गोफण सूं छूटयोड़ौ कोपरियौ पड़तां ई जिण भांत अेक छिण में कांनी कांनी उड जावै, उणी भांत सगळा दरबारी तौ बख लागौ उठीनै दड़बड़ दड़बड़ न्हाय छूटा, पण राजाजी रा साळा सूं दौड़णी नीं आयौ। वौ दारू में चूंच

व्हियोड़ौ उणी ठौड़ जमियौ रह्यौ । लोगां नै दौड़तां देख अेकर दौड़ण रौ ई मतौ करचौ जित्तै डाकण माथै उणरी निजर पड़गी । वौ तौ जांणै है जठै ई चिपग्यौ । फांफ रा फटकारां सूं पांन हिलै ज्यूं वौ थर थर धूजण लागौ । डाकण री जीभ देखनै उणरी ई जीभ निकळगी । डाकण तौ खावूं खावूं करती राजाजी रा साळा रै सांम्ही ई दौड़ी । कोई बरजणियौ के पकड़-णियौ आडौ नीं आयौ । वा तौ सीधी उणरी छाती माथै चढ़ती इज निगै आई । तीखा नखां सूं जरड़ देती रौ उणरौ काळजौ चीर न्हाकियौ । धकळ धकळ लोई छूटण लागौ । उणरौ खप्पर तौ हांकरतां भरग्यौ । खप्पर भरीजियौ जित्तै वा दो तीन वार लपरका लिया । उणरौ सगळौ मूंडौ ई लोई सूं भरीजग्यौ । वा हा हा करनै जोर सूं हंसी । पण उणरी हंसी देखणियौ उठै कोई नीं हौ । पछै लोई सूं भरचौ खप्पर ई गट गट पीगी । खप्पर पीयनै धमाधम नाचण लागी । लौ रौ चूंड़ौ अर लौ री नेवरियां खणाखण बाजण लागी ।

निरी ताळ नाच्यां पछै वा डाकण ढबी । चारूंमेर निजर घुमायनै देख्यौ । कोई व्है तौ दीसै ! पछै डाकण रौ स्वांग उतारनै भांड गाल बजावतां कह्यौ — अंदाता, औ तौ म्हैं भांड हूं । आप सगळा बडभागियां रै कैणा सूं ई डाकण रौ स्वांग लायौ अर देखण वास्तै अेक ई नीं ढबियौ ! जिणरौ तौ म्हैं ई कांई करूं । म्हारा स्वांग में कीं खांमी व्है तौ बतावौ । पिरथीपाळ, अबै रावळा भांड नै राजी होय बगसीस दिरावौ ।

डाकण रौ स्वांग उतरतां ई दरबार में तौ मार कूकारोळौ मचग्यौ । चारूंमेर पाछी हाकादड़बड़ अर खळवळ

होवण लागी । दीवांण हाकौ करनै कह्यौ — चंडाळ फेर बगसीस मांगै । पकड़ौ, पकड़ौ, कठैई न्हाट नीं जावै ।

हाकौ सुणतां ई अेक री ठोड़ पच्चास आदमी छूटा । भांड नै राहड़ियां सूं बांध काठौ जरू कर दियौ । राजाजी रौ साळौ तौ इण लोक रौ भरपूर आणंद लेयनै परलोक री सोय करी । उठा रा आणंद रौ ई साव लेवणौ जरूरी हौ ।

रांणीजी भाई रौ मरणौ सुणियौ तौ चंडी रौ विकराळ रूप धारयां दरबार में दौड़ता आया । लोगां जांण्यौ के भांड भळै कोई दूजौ स्वांग लायौ दीसै । पण भांड तौ काठौ बंधियोड़ौ हौ । अै तौ रांणीजी है ! भाई रै पाखती बैठनै अरड़ां अरड़ां रोवण ढूका । भांड रै सांम्ही देखनै किड़किड़ियां चाबतां कह्यौ — इण राकस रै लोई रा खप्पर भरनै कुत्तां नै नीं पावूं जित्तै म्हैं पांणी ई नीं पीवूंला ।

पाछौ दरबार जमग्यौ । भाई री ल्हास नै रांणीजी रै मैलां पुगवाई । सगळा मंत्री अर दीवांण कह्यौ — अंदाता, जुलम व्हैगौ । पण जोर कांई करां । अबै तौ इण दुस्टी रा लोई सूं खप्पर भरनै हिड़किया कुत्ता नै पावां तौ इणरी बगसीस आधी-दूधी चूकै । अंदाता, जल्दी हुकम फरमावौ ।

भांड कह्यौ — म्हारा लोई सूं खप्पर भरण वास्तै अंदाता रै हुकम री कीं जरूरत कोनीं, म्हैं म्हारा मन सूं खुसी खुसी औ कांम कर सकूं । पण इण बात माथै तौ अंदाता री ठौड़ खुद भगवांन रौ हुकम व्है तौ ई म्हैं मांनण वास्तै त्यार कोनीं । अर यूं राज रा हाथ लांबा है, म्हारै सगळा घरवाळां रा माथा कलम करवाय सकै ! कालै रा बचनां नै इत्ता जल्दी

भूलग्या । म्हैं घड़ी घड़ी हाथ जोड़नै अरज करी ही के अंदाता डाकण रा स्वांग सारू माफी बगसावौ । आप तौ म्हनै सौ ई गुना माफ करचौ हौ । म्हैं सुभट अरज करदी ही के उण वगत खुद अंदाता ई धकै चढ़ग्या तौ डाकण किणी भांत रौ गनौ नीं पाळैला । तद आप सगळा ई म्हारी बात नै मजाक में उड़ाय दी । म्हारी साची वीणती नै रिजक री अटकळ अर थोथी भोपाडफरी बताई । पछै म्हैं कांई जिद्द करतौ । म्हैं आप लोगां नै पैला ई साफ नीं कै दियौ के म्हैं रिजक री मरजादा सूं ऊंची मरजादा किणी री नीं गिणूं । जद देस रौ धणी ई बचनां री मरजादा खुटावै तौ पछै दूजौ कुण उणनै निभा सकै । इण पछै ई अंदाता बगसोस रै बदळै म्हनै मारण रौ हुकम फरमावौ तौ रावळी मरजी । धणी रौ धणी कुण ?

राजाजी कीं जबाब नीं दियौ । बोला बोला बैठा रह्या । अर उठीनै मैलां रै मांय रांणीजी हठ झेल्यां बैठा के भांड रै पछै वांरा भाई नै दाग दिरीजैला ! राजाजी वास्तै म्हारा भाई सूं ई वत्तौ भांड कीकर व्हैगौ !

पण राजाजी नीं तौ रांणी रै सवाल रौ सुभट जबाब दे सक्या अर नीं भांड री बात रौ ई साफ पडूत्तर दे सक्या । कांई करै अर कांई नीं करै, वांरै कीं समझ बैठी नीं । रांणी री बात नीं मांनै तौ आफत, बचनां री मरजादा नीं निभावै तौ आफत । राजा रा जीव नै कित्ती आफतां व्है !

राहड़ियां में जरू व्हियोड़ौ भांड कह्यौ—अंदाता, कांई हुकम फरमावै ?

पण अंदाता रौ तौ जांणै मगज ई ठस व्हैगौ हौ । वै

तौ कीं जबाब नीं दियौ । कठपूतळी री गळाई घड़ी घड़ी मंत्रियां रौ मूंडौ जोवता ।

के इत्ता में राजाजी रै मूंडै लाग्यौ अेक नाई बोल्यौ— अंदाता, म्हनै हुकम दिरावौ तौ अेक बात बतावूं ! बचन री मरजादा ई निभ जासी अर रांणीजी री बात ई निभ जासी।

राजाजी खुसी में उछळता बोल्या — आ कीकर ? आ कीकर ?

खवासजी गडकां सूं कैवण लागा — इण भांड नै रिजक री मरजादा रौ इत्तौ घमंड है तौ पछै आप इणनै आज रौ आज सती रौ स्वांग लावण रौ हुकम फरमावौ । डाकण रा स्वांग में खलकां रै लोई सूं खप्पर भरणा में इणरा घर रौ कांई जावै ! पण सती रा स्वांग में औ अैड़ी ई मरजादा निभावै तौ जांणूं । सती रौ स्वांग लायां पछै दोनूं स्वांगां री बगसीस भेळी ई मिळ जासी ।

खवास री बात सुणनै सगळा ई दरबारियां रा मूंडा पळक पळक करण लागा, पण राजाजी रै बात सावळ समझ में नीं आई। तद दीवांण वांनै सावळ बात समझाई । समझ में आतां ई राजाजी अणूंता राजी व्हिया । खुसी में उछळतां कह्यौ— नाईड़ौ तौ म्हारी लाज जबरी बचाई !

पछै वै भांड रै सांम्ही देखनै कह्यौ— अबै थूं सती रा स्वांग वास्तै नट नीं सकैला । नटै तौ पछै जांणै जैड़ी करूंला । बोल अबै तौ थनै कीं उजर नीं । सती रा स्वांग पछै म्हैं थनै दोनां री भेळी ई बगसीस देवूंला । थूं डर मत !

भांड कह्यौ—अंदात, डर तौ चोरी अर जारी रौ लाग्या

करै । इण में डरण री किसी बात ? सती रा स्वांग पछै म्हैं फगत आप सूं इण बगसीस री आस करूं के म्हारी भस्मी नै किणी रै हाथ म्हारै घरै ठांणै करवाय दीजौ अर म्हारा टाबरां नै म्हारी तरफ सूं औ समचौ पुगाय दिराजौ के रिजक री मरजादा सबसूं ऊंची मरजादा है । वै इणी भांत इणरौ निभाव करै !

आठवा राजकंवर नै आपरी मां रा वै बोल आछी तरै याद हा । इत्ती बात कह्यां पछै वा कैवती—म्हारा लाडला बेटां, आगै बात सुणनै थें डरजौ मती । बात रौ खास सार तौ इण में इज है । पछै सिंझ्या रा वौ भांड सती रौ स्वांग लायौ । नगर रौ सगळौ मांनखौ उणरा स्वांग नै जोवण सारू आयौ । देखतां देखतां चन्नण री चिता सजी । सती माता निसंक भाव सूं चिता माथै बैठी । उणरै सत रा जोर सूं मतै ई चिता में अगन देवता चेतन व्हिया । सती रौ स्वांग पूरौ व्हियौ । वौ भांड साधू रा भेख री मरजादा निभाई, ओड्यां रै मूंडै पगां पड़ियोड़ी माया नै ठुकराई । राजा रा दरबार में डाकण रा स्वांग री मरजादा निभाई अर पछै सती रा स्वांग री मरजादा निभावण वास्तै चिता में बळग्यौ । अर बळियां पछै ई राजाजी कना सूं फगत इण बात री बगसीस मांगी के वै उणरी भस्मी नै घरै पुगाय देवै । अर बेटां नै उणरी तरफ सूं आ सीख देवै के वै इणी भांत रिजक री मरजादा निभावै । सती रा स्वांग में बळियां पछै राजाजी नाई नै ऊंचौ ओहदौ दियौ । उणनै मोत्यां सूं भरनै सोना रौ अेक थाळ बगसीस में दियौ । राजा राजी व्हियौ के साळा री

मौत रौ बदळौ ई लिरोजगौ अर बचनां री मरजादा ई निभगी। रांणी ई अणूंती राजी व्ही के उणरा भाई रौ बदळौ ई लिरीजगौ अर राजाजी नै आपरै बचनां सूं ई नीं डिगणौ पड़्यौ।

मारग चालतां राजकंवर नै मां री वांणी जांणै सुभट सुणीजी — बेटा, मरजादा रौ घमंड दूजी बात है अर मरजादा रौ साचौ निभाव दूजी बात। थें सती रा स्वांग रै मिस भांड नै मारण वाळा राजा री गळाई मरजादा रौ कूड़ौ निभाव मत करज्यौ। भांड वाळी मरजादा नै कदै ई मत बिसराज्यौ। फगत सती रा स्वांग री मरजादा नै निभावण वास्तै उण भांड नै बळणौ पड़्यौ तौ सोचलौ के मिनख जमारा री मरजादा नै निभावणौ कित्तौ दौरौ है। म्हारी नसीयतां रा बोल थांनै सगळी ऊमर याद नीं रैवै तौ कीं बात नीं, पण थें उण भांड नै ताजिंदगी आपरौ गरू मांनजौ। इण बात नै नीं भूल्या तौ समझलौ के थांरौ मिनख जमारौ सुफळ व्हियौ।

राजकंवर मारग चालतौ चालतौ ई मन में बड़बड़ायौ— मां, म्हे नीं तौ थारी नसीयतां नै भूलां अर नीं उण भांड नै गरू मांनणौ ई भूलां। थूं ई बता थारी नसीयतां नै म्है कीकर भूल सकां। जे वांनै भूलग्या तौ भांड रौ गरूपणौ पैला भूलीजैला।

चालतां चालतां मारग माथै अेक लांठौ सरवर आयौ। राजकंवर पांणी पीवण सारू पाळ माथै चढ़्यौ। पांणी रौ सरूप देखतां ई राजकंवर रौ मन हरयौ व्हैगौ। दुनियां में सगळी माया पांणी री तौ है। के इत्ता में पाळ सूं उतरतां राजकंवर नै बड़ला री अेक खोखाल में चीं चीं री दरदनाक

आवाज सुणोजो । आ तौ मरणा रै पैली री आवाज है । राजकंवर आवाज री सोय करतौ उण बड़ला सांम्ही भरणाटै उड्यौ ।

उण बड़ला री खोखाल में अेक म्याळमिन्नौ अेक कमेड़ी नै मूंडा में लियां रोसतौ हौ । कमेड़ी चीं चीं करती ही । किणी मिनख नै आपरै सांम्ही दौड़तौ देख्यौ तौ म्याळमिन्नौ खोखाल सूं बारै निकळनै दौड़्यौ । कमेड़ी पांखां फड़फड़ावती फेर वत्ती चीं चीं करण लागी । राजकंवर हळफळायौ बड़ला रै पाखती पूगौ । धूजता हाथां सूं कमेड़ी नै बारै काढ़ी । खोखाल में ठौड़ ठौड़ पांखां बिखरियोड़ी ही । कमेड़ी री घांटी माथै, पंजा माथै अर पांखां रै हेटै ठौड़ ठौड़ दांत अर पंजा मंडियोड़ा हा। कमेड़ी टुकर टुकर राजकंवर रै सांम्ही भाळियौ । हाल तांई उणरी धूजणी नीं मिटी ही ।

राजकंवर उण कमेड़ी नै साथै लियां जंगळ में जड़ी-बूंटियां हेरतौ रह्यौ, उणनै चुग्गौ-पांणी करावतौ रह्यौ । आखै दिन हथाळियां में बिठांणियोड़ी राखतौ । रात रा छाती रै चेप, उणनै अणूंता जाब्ता सूं राखतौ। भोळी कमेड़ी बोलती नीं कोई चालती, फगत चिरमी जैड़ी छोटी आंख्यां सूं राजकंवर रै मूंडा सांम्ही जोवती रैवती । कमेड़ी री पाटापीड़ अर उणरै चुग्गा-पांणी वास्तै राजकंवर कीं पाछ नीं राखी । खुद तकलीफ पाय लेतौ पण कमेड़ी नै किणी भांत री अैल नीं आवण देतौ । वा ज्यूं ज्यूं ठीक व्हैती राजकंवर रौ मन अणूंतौ राजी व्हैतौ । पूरा इक्कीस दिनां पछै कमेड़ी पूरी सावळ व्ही । झड़ियोड़ी पांखां री ठौड़ उणरै नवी पांखां आयी । राजकंवर मन में इत्तौ राजी

व्हियौ जांणै उणनै ई नवौ जमारौ मिळियौ । कमेड़ी री पांखां माथै हाथ पंपोळनै कह्यौ — रूपाळी कमेड़ी ! थूं साजी होयनै म्हारी लाज बचायली । म्हारी पाटापीड़ सूं ठीक नीं व्हैती तौ सगळी ऊमर म्हारौ मन कुंद रैवतौ । म्हैं थारौ औ औसांण जीवूं जित्तै नीं पांतरूं । तकदीरां सूं ई मिनख रै अैड़ा मौका सजिया करै ।

राजकंवर रौ औ कैणौ व्हियौ अर वा कमेड़ी ठमक ठमक तीन वळा उणरै च्यारूं कांनी परकमा दी । राजकंवर उणरौ ठुमका सूं चालणौ निरखतौ रह्यौ । घांटी माथै काळौ चकरियौ, काळी टूंच, गोळ सफीट माथौ, काळी आंख्यां, छोटा अर फबता पंजा अर बादळ-वरणी कंवळी पांखां । तीजी परकमा देवतां ई वा कमेड़ी अेक परी रौ रूप धारण कर लियौ अर हाथ जोड़्यां राजकंवर रै सांम्ही ऊभनै मुळकण लागी । जांणै बीजळी मुळकी । परी रौ रूप अर वेस देखनै राजकंवर रै तौ इचरज रौ कोई पार ई नीं रह्यौ । भोळी कमेड़ी अणचींती आ कांई, माया रची ! माया रा जोर सूं परी बणगी तौ कांई, कमेड़ी वाळी भोळप तौ सागै री सागै उणियारा माथै झळकै । राजकंवर री आंख्यां रै सांम्ही जांणै रूप रौ समंदर हिलोळां मारण लागौ ।

राजकंवर नै इण भांत इचरज सूं जोवतां देख परी थोड़ी सी मुळकी, जांणै दूध रौ सरवर मुळकियौ । बोली — म्हैं इंदर लोक री परी हूं । म्हैं अेकर परियां रै भूलरा रै सागै म्रत-लोक में विचरण सारू आई । म्हारी दूजी साथणियां नै तौ औ लोक सुहायौ कोनीं, इण सूं वै दूजी वार आवाण री हर नीं

करी, पण म्हैं तौ उण दिन पछै नित आपरा लोक में विचरण करण सारू आवूं । इंदर भगवांन मया देदै तौ म्हैं हमेसां रै वास्तै अठै ई बस जावूं । म्हैं अेकर अठै नीं आवूं तौ पछै सगळै दिन चैन नीं पड़ै । आज इण सरवर रौ पांणी पीवण वास्तै पाळ री ढाळ में ठुमक ठुमक चालती ही के म्याळमिन्नी लारा सूं भच देणी री पकड़ली । म्हैं म्रतलोक में कमेड़ी रौ रूप धरनै आवूं, जिणसूं म्हनै कोई पिछांण नीं सकै । आप नीं आवता तौ मरणा में कीं कसर बाकी नीं ही । घणा ई चीं चीं करचा पण वौ म्याळमिन्नौ तौ म्हारी चीं चीं नै सुणी ई नीं । म्हारी जांग में तौ वौ साव बोळौ व्हैला । घाव सावळ नीं व्हिया जित्तै म्हैं पाछौ म्हारौ रूप धारण नीं कर सकती । आप म्हारै वास्तै कांई कांई फोड़ा भुगतिया उणनै दरसावण वास्तै म्हारा लोक में वैड़ी कीं भासा ई कोनीं । नीं तौ म्हांरा लोक में कीं दुख, संताप, रोग अर विपदा उपजै अर नीं म्हैं अेक दूजा रै कांम आवां । इण खातर भलाई, सेवा-बंदगी अर मदत जैड़ी वातां दरसावण वास्तै म्हांरी बोली में ओपता सबद ई कोनीं । भलांई वौ म्याळमिन्नौ म्हनै रोसजौ अर भलांई आपरै आवण रौ संजोग सधजौ । मिनका रा मूंडा सूं छूटचां पछै ई बचणा री आस नीं ही । आपरै हाथां रौ परस पातां ई मन में जचगी के अबै मौत ई म्हारौ कीं नीं बिगाड़ सकै । पाटा-पीड़ रा इण लारला पखवाड़ा में म्हैं जित्ती बातां समझी हूं, उत्ती म्हैं म्हारी सगळी ऊमर में ई नीं समझी । आपरी सेवा नै देख केई वार मन में आ जची के पाछौ परी रौ रूप धारण ई नीं करूं ।

सारी ऊमर कमेड़ी बणनै ई आपरै हाथां में बिताय दूं। पण आपरी अनोखी बातां सुणियां पछै म्हारा सूं ढबीजियौ कोनीं, म्हनै असली रूप धारण करणौ ई पड़्यौ। म्हांरा लोक में नीं तौ कोई मरै अर नीं कोई बूढ़ौ व्है। आप म्हनै नवौ जलम दियौ तौ ऊमर में पैली वार आज ठा पड़ी के नवा जलम रौ आणंद कांई व्हिया करै! म्हारी समझ में नीं बैठै के म्हैं आपरौ औ औसांण कीकर चुकावूं। कदैई औ चुकीज सकैला के नीं।

राजकंवर मुळकनै कह्यौ — म्हैं तौ पैला ई म्हारी भोळी कमेड़ी नै अरज करदी ही के उणरौ औसांण म्हैं खुद कीकर उतार सकूंला। म्हांरी मां तौ म्हांनै हमेसां आ ई सीख दीवी के दुख अर विखा में किणी री मदत करण वाळा रौ कीं औसांग नीं व्हिया करै, सांम्ही जिणनै मदत दी जावै उणरौ औसांण व्हिया करै के वौ मदत करण रौ वैड़ौ मौकौ दियौ।

परी खिल खिल हंसी, जांणै दूध रा सरवर में उफाण आयौ। बोली — आपरी तौ सगळी बातां ई अनोखी, सुण सुण नै अचुंभौ करण लाग जावूं तौ बावळी व्हियां सरै। आप म्हारी पांखां नै पंपोळता, म्हारा पंजा नै सहळावतां सहळावतां जद आपरा सीना माथै चेपनै रात रा सूवता तौ म्हैं रात भर पिछतावौ करती रैवती के इंदर लोक में सगळी जूंण अैळी गमाई। थोड़ौ सौ खुड़कौ व्हैतां ई आपरी आंख खुल जाती, कठैई म्हैं अठी - उठी उड तौ नीं गी। म्हारी टूंच माथै आंगळी फेरयां पछै आप पाछा नेगम सूय जाता। अर म्हैं जागती ई रैवती।

राजकंवर कह्यौ — इंदर लोक में कदास फाल्तू री बातां अणूंती व्हिया करै ! इण नाकुछ गांगरत नै छोड़ौ अर कीं दूजी चरचा करौ । म्हारी बात मांनौ तौ अेक बात कैवूं ।

परी आखती पड़नै पूछ्यौ — बोलौ, बोलौ, कांई ?

राजकंवर कैवण लागौ — थें म्हांरा लोक में नित विच-रण करण सारू आवौ, इणरै साटै म्हनै ई अेकर थांरौ इंदर लोक तौ बतावौ ।

परी अभरोसा रा भाव सूं पूछ्यौ — कांई साचांणी आप म्हांरा लोक में चालण वास्तै त्यार हौ ! पछै तौ चाहीजै ई कांई ! इंदर भगवांन इण बात वास्तै म्हारै माथै बेहद राजी व्हैला । केई बरसां सूं वांरी अणूंती लाळसा है के कोई म्रत-लोक रौ वासी अठै आवै ! म्हारै माथै आपरौ औ दूजौ औसांण व्हैला । आपनै लै जायां इंदर लोक में म्हारी मांनता सब परियां सूं सवाई व्है जावैला ।

राजकंवर मुळकनै कह्यौ—पण आप माथै औ दूजौ औसांण करणौ कीकर आवै ? म्हैं तौ पांच हाथ ऊंचौ कूदतां ई पाछौ जमीं माथै पड़ जावूं ।

परी कह्यौ — आपरौ हाथ झालियां म्हैं ठेट इंदर लोक तक आपनै लै चालूंला । आंख्यां में अेक खास मंजन सारयां पछै नीं तौ आपनै किणी भांत रौ डर लागैला अर नीं किणी भांत री कोई दूजी तकलीफ ई व्हैला । उण मंजन सूं आपनै रात रा ई दिन रै उनमांन दीखैला ।

आठवौ राजकंवर सगळा भाइयां सूं थोड़ौ घणौ अचपळौ हौ । कह्यौ — तौ पछै इण सुभ कांम वास्तै किणी जोसी कना

सूं मौरत निकाळणौ पड़ैला कांई ? आपरी बातां सुणियां पछै म्हारा सूं तौ अेक पलक ई अठै ढबणी नीं आवै ।

राजकंवर री आंख्यां में मंजन सारयां पछै परी उणरौ हाथ झालनै ऊंची उडी उण वगत रात दो अेक घड़ी ढळी ही ।

थोड़ौ सौ ऊंचौ उडियां पछै राजकंवर हंसनै कह्यौ — उण म्याळमिन्ना रौ भौ भौ ई भलौ व्है के उणरै कारण औ अमोलक संजोग सजियौ । उण वगत तौ अैड़ी भळकी आई के उणरी टांग पकड़नै गिड़ा माथै पिछांट न्हाकूं । पण अबै सोचूं के जे वौ अकरम कर देतौ तौ म्हारौ वौ पाप समंदरां रा सगळा पांणी सूं धोवतौ तौ ई नीं धुपतौ । मिनख नै आंचा-आंच में कीं कांम नीं करणौ चाहीजै ।

आ बात करयां पछै राजकंवर आपरी दुनियां नै निरखण सारू नीचै भाळियौ तौ वा अंधारा रा खोळा में कुड़ियोड़ी सूती ही । थोड़ी ताळ पछै वौ फेर नीचै देख्यौ तौ अेकदम झिझ-कनै इचरज सूं पूछयौ — औ कांई ! आभा सूं तूटनै कठैई औ चांद तौ नीचै नीं खिरग्यौ । अर खिरतां ई औ इत्तौ मोटौ कीकर व्हैगौ ।

परी खिल खिल हंसी । हंसती हंसती ई बोली —म्हनै तौ आपरी अकल खिरियोड़ी दीसै । खुद री दुनियां नै ई नीं ओळखौ ! चांद री गळाई चिमकती आ रावळी दुनियां है ! इत्तौ ऊंचौ आयां पछै आ इण भांत ई दीख्या करै । चांद नै देखणौ चावौ तौ ऊंचौ देखौ ।

परी रै कैतां ई राजकंवर ऊंचौ देख्यौ — अेक लांठा गोळ बादळा री गळाई चांद दीखतौ हौ । उण में उजास अर

चिमक रौ लवलेस ई नीं हौ। मांय तीन चारेक काळी काळी टेकरियां ज्यूं कीं दीखती ही। तारां नै जोवण सारू वौ चारूंमेर घांटी घुमाई — रूई रा धोळा फूंबदा ज्यूं ठौड़ ठौड़ बिखरि-योड़ा लखाया। वां में ई खिवण अर चमक री जात नीं ही।

राजकंवर अभरोसा रा भाव सूं पूछ्यौ — औ कोई दूजौ चांद तौ नीं है ! अैड़ौ कांई ? अै तारा ई कोई दूजा गिगन रा दीसै। नीं तौ खिवै अर नीं चिमकै !

परी फेर हंसी। कह्यौ — आकास में चांद तौ फगत औ अेक इज है। तारा ई वै सागै है। अठै आयां अै इणी भांत रा दीसै। अठा सूं इंदरलोक घणौ आंतरै कोनीं। दस वार पलकां झपै उण सूं ई पैला पूग जावांला। अबै उजास रौ भळभळातौ समंदर आवैला। अठा सूं ई म्हारा लोक री सींव सरू व्है। अेकर तौ आपरी आंख्यां अणूंती चूंधीजैला। पछै थोड़ी ताळ में आपै ई हेवा व्है जावैला। म्हांरा लोक में अंधारौ देखण रा तौ आपनै पूरा भटका ई आवैला।

अणछक राजकंवर नै अैड़ौ लखायौ के जांणै अेकण सागै हजार सूरजां रौ उजास छौळां भरतौ सांम्ही उडतौ आवै। अेकर तौ उणनै उण भळकता चिळका आगै सूजणौ ई मुळगौ बंद व्हैगौ। पण होळै होळै उणरी आंख्यां सूं उजास री किरणां फूटण लागी। अर वौ उण उजास रा समंदर नै आंख्यां सूं पीवण लागौ।

के इत्ता में परी कह्यौ — आपनै थोड़ी ताळ बारै ढाबनै म्हैं पैला इंदर भगवांन नै आपरै आवण री बधाई देवण सारू जावूंला। जित्तै आप अणगिण परियां रा रूप नै निरखता रैजौ। म्हनै बताजौ के आपनै सबसूं रूपाळी परी किसी लागी।

देखूं आपरी पारख कैड़ीक है !

राजकंवर कह्यौ — आपनै औ वेम कीकर व्हियौ के म्हैं रूप रौ पारखी हूं ! रूप नै निरखण वास्तै तौ म्हैं निपट आंधौ अर अबूझ हूं । म्हांरी मां तौ म्हांनै फगत मन री पारख करणी ई बताई । रूप री पारख करणी जरूरी व्हैती तौ वा म्हांनै अवस सिखावती । वा सिखावण री जरूरत नीं समझी तौ म्हैं अबै सीखणी ई नीं चावूं । आप ई म्हनै बताय देजौ के सबसूं रूपाळी परी किसी है । म्हैं तौ आप कैवौला जकी ई बात मांन लेवूंला ।

परी हंसनै जवाब दियौ — म्हैं तौ कैवूं के म्हैं ई सब परियां सूं रूपाळी हूं, तौ आप मांनौ ?

राजकंवर कह्यौ — क्यूं नीं मांनूं ! इण में नीं मांनण जिसी कांई बात ?

इंदरलोक री धरती माथै पग धरतां ई राजकंवर नै अैड़ौ लखायौ के उण में हजार गुणा वत्तौ बळ आयग्यौ । पण वौ भार में फूल सूं ई हळकौ व्हैगौ । उणनै आपै ई परियां री भांत उडणौ आयग्यौ । वा भोळी कमेड़ी इंदर भगवांन नै बधाई देवण सारू गी जित्तै वौ बगीचा में अणगिण परियां रै साथै ऊभौ रह्यौ । फूलां माथै फूंदियां उडै ज्यूं सगळी परियां अठी-उठी उडती ही, पण जद वांनै इण बात री भणक पड़ी के म्रतलोक रौ कोई मानवी जीवतौ अठै आयौ है तौ वै डरनै सगळी री सगळी बगीचा सूं देखतां देखतां तुरत लोप व्हैगी । अेक ई परी लारै नीं ढबी ।

इंदरलोक री धूळ ई सोना चांदी सूं ई सवाई चिमकती

ही । कांकरां री गळाई हीरा, मोती रळियोड़ा पड़्या हा । सोना रा रूंख, सोना रा फूल अर हीरा-मोत्यां रा झूमका । सरब पंछी सोना रा । झरणा, नदियां, सरवर, समंदर सगळा ई दूध अर इमरत रा । इमरत री ई बिरखा बरसै । म्रतलोक में जैड़ौ सुणता वैड़ौ ई इंदरलोक रौ थाट हौ ।

के इत्ता में भोळी कमेड़ी रै साथै खुद इंदर भगवांन दौड़ता दीस्या । अणूंती अंतावळ रै कारण वांरी नग जड़ियोड़ी सोना री अेक पगरखी लारै छूटगी तौ ई वै परवा नीं करी । पग में अेक पगरखी पैर्‌यां वै हळफळाया राजकंवर रै सांम्ही आयनै ढबिया । बिना किणी आव-आदर अर कुसळ-खेम रै वै आंमनौ जतावता, आतां ई अरळ-विरळ बोलण लागा—जुगां र पछै थें आज म्हांरी साळ-संभाळ करण वास्तै आया । म्हनै सपना में ई अैड़ी आस नीं ही के थें म्हारै साथै इण भांत रौ विस्वासघात करौला । आपरै कैणा मुजब ई तौ विस्णु भगवांन इण इंदरलोक री रचना करी । उण दिन तौ थें मिनख लोग इत्ता रोया कळपिया के इण लोक रै बिना अेक पलक वास्तै ई थांरी दुनियां रौ कांम नीं चालै । परलोक रौ भरम बतायां बिना लोग धीजै ई कोनीं । अर रचना व्हियां पछै थें इत्ता जुगां रै उपरांत इण लोक नै चितार्‌यौ ! के तौ अेक पलक वास्तै ई कांम नीं चालतौ हौ अर के जुगां तक म्हांरी पूछ ई नीं करी ।

इंदर भगवांन जांण्यौ के वांरी गळाई राजकंवर ई सगळा म्रतलोक रौ राजा है । इण खातर म्रतलोक री सगळी बातां रौ जिम्मौ आंरौ इज है । वै आपरा बाळां नै लारै फट-

कारता फेर धकै कैंवण लागा — खुद तौ मौत रौ वरदान लेयनै म्हांनै अमरता रौ सराप सूंपग्या । मौत सूं सिरै चीज तीनूं लोकां में ई कीं कोनीं । आप तौ म्रतलोक रा सगळा मिनख मरणा रौ आणंद लेवौ अर म्है तौ अमरता री इण लाय में सिळगां । लाळसा तौ अस्टपौर थें अमरता री करौ पण म्हांरा दुख में हाथ बंटावण सारू आज दिन ई कोई आयौ ? फगत थांरै कैणा सूं ई म्है अमरता री इण अधम अर हीण बात नै कबूल करी, पण थें तौ उणरै नैड़ाकर ई नीं निकळिया । अठै हीरा, मोती, सोना, चांदी रौ दाळीदर गळै घालनै थें भाटा, कांकरा अर धूळ जैड़ी अमोलक चीजां में मछरां करौ । म्हनै भरमावण वास्तै बुढ़ापा नै थें मिनख जांणै जित्तौ भांडचौ अर खुद बुढ़ापा रौ आणंद भोगौ । थें मिनख लोग आपस में ई अेक दूजा रै सागै छळ करयौ अर म्हांरै साथै ई छळ करचौ । थें अेक मोती सूं दो चिड़ियां रौ निसांणौ सांधियौ अर दोनां नै ई ढायली ।

इंदर भगवांन रौ औ अणचींत्यौ ओळबौ सुणनै राजकंवर हाक्यौ-बाक्यौ व्हैगौ । उणसूं पाछौ अेकाअेक जबाब देवणौ ई नीं आयौ । सेबट नीठ हीमत करनै पूछचौ—कांई आपरौ औ इंदरलोक मिनख री इंछा अर मिनख रा कैणा मुजब रचीजियौ ?

इंदर भगवांन रीस में पग पटकता बोल्या — छळी तौ म्हैं ई घणौ हूं, पण थां मिनखां रा छळ नै कुण पूग सकै ! म्हांनै इत्ता जुगां तक फंसाया राखनै अबै अबूज टाबर री गळाई पूछौ के औ इंदरलोक मिनख री मंसा परवांण रचीजियौ कांई ? रीस तौ अैड़ी आवै म्हारा वजर सूं दुनियां

रैं सगळा मिनखां री घांटियां कलम कर न्हाकूं । धोखा री कोई हद व्है ! कपट री कोई माठ व्है ! भला आदमियां म्हांरी हालत माथै थोड़ौ घणौ तौ विचार करचौ व्हैतौ के जुगां तक कोई नाच गांणा में कीकर मगन रै सकै ! अठै कोई नवौ जलम व्है नीं अर लाखूं बरसां में ई कोई मरै खूटै नीं, पछै कीकर इण लोक में बसणी आवै ! म्है होयनै अठै हजारूं बरस काट लिया, थें मिनख लोग अठै अेक वरस ई रैयनै तौ बतावौ । बिना दुख रै कोई सुख रौ साव कीकर ल सकै ! बिना तोटा रै माया रौ औ अखूट भंडार कांई कांम रौ ! बिना विखा अर बिना फोड़ां रै औ नाच गांणा कीकर आछा लागै ! बिना बुढ़ापा रै इण अखूट जवांनी रौ कांई मोल ! अठा रा रूप सूं म्हांनै अपचौ व्हैगौ, फूटी आंख्यां ई देख्यौ नीं सुहावै । थांरी मंसा परवांण म्हांनै सब कुछ देयनै जबरदस्त दुखी कर दिया अर थांरा खुद रा म्रतलोक में माहौ-माह मिनखां सूं सब कुछ खोसनै, म्हांरा लोक रौ भरम बतायनै वांनै अणूंता दुखी कर दिया । थां मिनखां जैड़ौ विस्वास-घाती अर जाळसाज फेर दूजौ कुण व्हैला ? थांरी इज बोली में थांनै सावळ समझावूं तौ कैणौ पड़ैला के सांप नै मारचा रौ पाप लाग सकै पण थां मिनखां नै मारणा रौ कीं पाप नीं लागै । म्हांरै साथै तौ छळ करचौ जकौ करचौ ई पण माहौ-माह ई नीं चूक्या !

पछै इंदर भगवांन गळगळा कंठ सूं कह्यौ — म्है इण लोक रा आदमी तौ जीवता जीवता ई काया व्हैगा, अेकर थांरा लोक सूं मौत नै तगड़ अठा रौ मारग बतावौ तौ म्हांरौ कीं

कल्यांण व्है । माळा तौ रात दिन अमरता री अर इंदर-लोक में बसणा री फेरौ पण साची बात तौ आ है के थें अमरता सूं पल्लौ ई भेटणी नीं चावौ । थें अैड़ा भोळा कोनीं जकौ अमरता रा इण नरक नै भोगौ । म्हैं आपरै पगां पड़ूं म्हनै अेकर मौत रौ आणंद बगसावौ, म्हैं जीवणा रै आगै काठौ आंती आयग्यौ हूं । अठा रा बाकी लोगां रै लारै धूड़ बाळौ, पण म्हनै कीकर ई मरण री अटकळ बतावौ तौ इण नरक सूं म्हारौ छुटकारौ व्है । म्हैं अठा री परियां सूं, अठा रा नाच गांणा सूं, अठा रा हीरा-मोत्यां सूं, अठा रा सुख सूं, अठा री अमरता सूं अर अठा री अखूट जवांनी सूं ठेट चोटी तांई धापग्यौ हूं, म्हनै इण नरकवाड़ा सूं उबारौ । अठा रौ राज-काज आज सूं ई आप संभाळौ अर म्हनै म्रतलोक में भेज दौ । म्हैं तौ उठा रा राज री ई चावना नीं करूं । म्हनै म्रतलोक रौ माछर ई बणायनै भेज दौ । म्हैं आपरौ कदैई गुण नीं भूलूं । कीं न कीं निपटारौ करयां बिना म्हैं अठा सूं आपनै पाछा भवै ई नीं जावण दूं । जुगां रै उपरांत नीठ बखड़ी में आया हौ ।

आ कैयनै इंदर भगवांन साचांणी ई राजकंवर रा पग पकड़ लिया । राजकंवर तौ इण झमेला में भूंडौ पज्यौ । माडांणी पग छुडायनै इंदर भगवांन नै आपरै जोड़ै बिठांणिया । अणूंता आदर रा भाव सूं कैवण लागौ — आपरौ तौ औ बड़ापणौ है के म्हांरा म्रतलोक में बसण री आप मंसा दरसावौ । म्हां म्रतलोक रा मिनखां वास्तै आप देवता हौ । म्है आपरी पूजा करां । भगतां रै आगै निवणौ फगत भगवांन

नै ई छाजै । आपरौ म्हांरा लोक में बसणौ व्है तौ पछै चाहीजै ई कांई ! म्हैं घणी उमंग अर अणूंता कोड सूं अठै आयौ हौ, पण अठा री रंगत देखनै म्हारौ तौ आतां ई मन बुझग्यौ । म्है म्रतलोक रा वासी आपरी निजर में कित्ता ई अधम अर हीण व्है सकां पण आपरा लोक में म्है पूरौ अेक दिन ई सुख सूं नीं बिता सकां । आपरा लोक री तौ फगत चावना ई फूठरी लागै । म्हनै अचुंभौ व्है के आप लोग अठै कीकर जुगां तक बिना उलटफेर रै बोला बोला जीवता रैगा । म्हनै दीसै के आप लोगां रा मन में बळ कोनीं, हाथां में करार कोनीं । आपरौ लोक छोड़नै किणी दूजा लोक में गियां कीं बात नीं बणैला । आप जठै बसौ उणी लोक रौ सुधारौ करौ । हाथ पग हिलावौ, डील रै कीं पसीनौ अणावौ । थें चावौ तौ अै नाच गांणा बंद नीं व्है सकै ? आरांम सूं पड़्या पड़्या भोगण रौ सुभाव छोड़ौ अर हाथां निपजावौ । पछै थें देखौ के हाथां निपजायोड़ा नै भोगणौ कित्ता आणंद री बात है !

इंदर भगवांन माथा नै खुजळावता कह्यौ—आपरी बातां सूं नवौ जोस बधै, मन में कीं करण री हूंस ई तड़फा तोड़ै, पण कठैई म्हांरै साथै आपरौ औ कोई नवौ छळ तौ नीं है । मिनखां री किणी बात माथै म्हनै कीं भरोसौ नीं व्है ।

राजकंवर मुळकनै जबाब दियौ—आपनै आपरै खुद माथै ई भरोसौ कोनीं, इणरौ तौ कोई कांई कर सकै ! आप खुद छळ री निजर सूं मिनख नै देखौ तौ आपनै वांरै मांय खुद रौ छळ ई निगै आवै । जिण दिन आपरा मन सूं आपरौ छळ अळगौ व्है जावैला, उण दिन आपनै किणी में किणी भांत

रौ छळ सोव्योड़ौ ई नीं लावैला। आपरा इंदर लोक में दुख फगत इणी बात रौ है के आप सगळा पड़्यौ भोगौ । औ सुभाव राखियां तौ थें कठै ई सुखी नीं व्है सकौला । थें बिना कीं करयां थांरा लोक में तब्दीली चावौ आ कीकर व्है सकै ! पैला थें लोक बदळौ — पछै देखौ के थांरौ लोक मतै ई बदळ जावैला । जे थां लोगां नै खुसी होवण री थोड़ी घणी चावना है तौ आज सूं इण बात रौ प्रण करलौ के हाथां कमायां बिना थें किणी चीज रौ भोग नीं करौला । जुगां पैला मिनख थांरै साथै छळ करय्यौ तौ फगत रात दिन रोवणा सूं ई कीं गरज नीं सरै । लारला छळ नै भूल जावौ अर आपरै जोग नवा मारग बणावौ, नवी जुगतियां रचौ अर नवा करतब करौ । पछै देखौ के थांरौ लोक कालै रौ कालै कीं दूजौ ई व्है जावैला । अठा सूं भागण री बात सपना में ई मत लावौ । म्हांमें दोसण काढ़णा सूं पैला म्हनै इण बात रौ जबाब दौ के आपरा लोक में उलटफेर करण वास्तै थें कांई कांम करचा ?

इंदर भगवांन मोळा पड़नै जबाब दियौ — सिवाय सुख भोगण रै म्हे अठै कांम तौ कीं नीं करां ।

राजकंवर कह्यौ — थांरै दुखी होवण रौ कारण फगत औ इज है । मिनखां साथै व्हियोड़ी पुरांणी बातां नै भूल जावौ अर हाथां में नवा नवा कांम करण रौ करार बधावौ ! फगत अेक बात रौ पूंछड़ौ पकड़नै थें जुग रा जुग बिताय दिया, बड़ा इचरज री बात है । अैदी अर अघोरी तौ थें इंदर लोक रा वासी ई कम नीं हौ !

इंदर भगवांन नै राजकंवर री बातां सूं खासौ भलौ धीजौ

व्हियौ । तौ ई सावचेती बरतता उणनै पूछ्यौ — जे आपरै कैणा मुजब कांम करयां पछै म्है सुखी नीं व्हिया तौ म्है म्रतलोक में आ जावांला अर आप सगळां नै अठै म्हांरा लोक में आणौ पड़ैला, पैला म्हनै इण बात रौ विस्वास दिरावौ । केई जुगां पछै तौ देठाळौ दियौ अर पाछा जुगां तांई नीं आवौ तौ म्हांरौ कांई दीन व्है ।

राजकंवर कह्यौ — आप जैड़ा निबळा अर अपंग लोगां रौ जकौ दीन व्हैणौ चाहीजै वौ ई दीन व्हैला । थें म्हांरौ उडी-कणौ छोड़ खुद म्रतलोक में आवण री अर आपरी नवी मंसावां मुजब जीवण बितावण री मन में हूंस राखौ अर उण मुजब कांम में जूंझ पड़ौ तौ सगळी बातां सिरै व्हैला ।

अबकी वा भोळी कमेड़ी खिल खिल हंसी । कह्यौ — कोरी मन री मंसा अर खाली हूंस सूं ई कीं नीं व्है । केई बातां रौ संजोग जरूरी है । जे म्हैं के कोई दूजी परी आपनै पाछा म्रतलोक में नीं पुगावां तौ आपरी मंसा अर हूंस कांई कांम आवै ?

राजकंवर मुळकनै कह्यौ — आ ई बात आपरी आंख्यां सूं देख लीजौ के म्हारी मंसा अर म्हारी हूंस कांई कांम आवै अर कांई कांम नीं आवै !

इंदर भगवांन कह्यौ — आ ई कदै व्है । जुगां रै पछै आप म्हनै नवी सुमत दी, नवी बातां बताई । सुणनै म्हारा मन में घणौ थावस बंधियौ । आपरी बातां सुणनै जुगां रै उपरांत आज पैली वार म्हारा मन री दाझ बुझी । म्हैं अणूंता आदर अर सनमांन रै सागै आपनै म्रतलोक पुगावूंला । पछै

वै भोळी कमेड़ी रै सांम्ही देखनै कह्यौ — आपनै अठै लायनै थूं जकौ म्हारौ कल्यांण करयौ इण बदळै थारी इंछा व्है सौ मांग। म्हैं आज हजारूं बरसां पछै पैली वार राजी व्हियौ हूं।

परी नीची धूण करनै होळै सूं बोली — दुनियां में केई बातां अैड़ी व्है के मांगणौ कैणा सूं ई सोरै सास मांगीजै कोनीं। आप इण लोक रा देवता हौ। म्हारा मन री इंछा नै मतै ई समझ जावौ। मांगणा वास्तै कांई मूंडा सूं बोलणौ जरूरी है?

इंदर भगवांन कह्यौ — बावळी, इत्ती बात समझण रौ म्हारौ बूतौ व्हैतौ तौ म्हैं खुद जुगां तक इण भांत दुख में क्यूं कळपतौ। व्है जकी बात म्हनै बोलनै जता। म्हारी बातां जोग ई म्हामें तौ अकल कोनीं, पछै म्हैं थारा मन री बात बिना कह्यां कीकर समझ सकूं।

भोळी कमेड़ी अपूठी फिरनै चालती चालती ई होळै सूं कह्यौ — राजकंवर ने हठ करनै म्हैं ई तो अठै लाई अर म्हैं ई आपनै पाछा म्रतलोक में पुगावूंला। आप सूं फगत औ छोटौ सौ वर मांगूं के म्हनै म्रतलोक में ई रैवण री मया बगसावौ। अबै म्हैं अठै अेक पलक ई नीं रैवणी चावूं।

इंदर भगवांन अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै कह्यौ — ज्यूं थारी मरजी! पण म्हनै ई कोई मांगण सूं म्रतलोक में रैवण रौ वरदांन देवण वाळौ व्हैतौ तौ आज म्हारै सुख रौ पार नीं हौ।

गिरस्ती रौ आस्रम

तपसी सूं सीख अर आदेस लियां पछै आठूं राजकंवर तौ न्यारी न्यारी दिसावां में अणूंता कोड अर हरख सूं वहीर व्हैगा पण खुद आदेस देवणिया तपसी रौ जीव घणा घणा जंजाळां में पजग्यौ । आपरी परतख दीठ रै सांम्ही वौ सांचाणी ई वांनै सांप्रत जावतां देख्या तौ उणरौ मन नंदी रा भंवारा री गळाई गणण गणण घूमतौ चकरी चढ़ग्यौ । उणरी आंख्यां सांम्ही डोलर हींडा रै उनमांन धरती हींडण लागी । ऊभौ रैवणौ दूभर व्हैगौ । जटा में आंगळियां घालनै हेटै बैठग्यौ । सूरज तर तर तवा री गळाई काळौ-मिट्ट पड़तौ गियौ । देखतां देखतां सूरज रौ सगळौ उजास काळा अंधारा रौ जांमौ पैर लियौ । तिंवाळौ खायनै तपसी नीचै गुड़ग्यौ । तपसी रै गुड़तां ई उणरी सगळी माया ई लोप व्हैगी । ठीक उणी वगत आठूं भाई मुड़नै लारै जोयौ तौ नीं वांनै तपसी ई नीगै आयौ अर नीं उणरी कीं माया ई निजर आई । वांरै समझ नीं बैठी के अचांणचक औ कांई अणचींत्यौ चाळौ व्हियौ । भगवांन रै लगैटगै पूगणिया तपसी बिना कदैई अै बातां बण आवै ? देखतां देखतां सगळा जंगळ में माया रची अर देखतां देखतां पाछी लोप करदी । निमौ है तपसी नै अर तपसी री करामातां नै ! सगळा भाई आदर सूं उणनै सीस निंवायौ । उण वगत वौ मुंडत ऊंची पाळी रै ओलै बेचेतै व्हियां पड़्यौ हौ । तपसी नै लखायौ के जांणै कोई सांमळां री लगां देयनै उणरा माथा री नसां ऊंची लेवै ।

जांणै कोई तीखी गेंतियां सूं धमाधम उणरा माथै नै खोदै। अणछक माथा में जोर सूं धमाकौ सुणीजियौ — कदास कोई सुरंग छूटी दीसै। माथौ जांणै किळी किळी होयनै बिखरग्यौ।

दो घड़ी रै उपरांत पाछौ चेतौ बावड़ियौ। जांणै किळी किळी व्हियोड़ौ माथौ मतै ई चिपग्यौ व्है। थोड़ी सी पलकां उघाड़ी। सूरज तपसी री इण हालत माथै हंसतौ सौ लखायौ। मन ई मन कीं गिरणावतौ तपसी बैठौ व्हियौ। थोड़ी ताळ बैठौ बैठौ ई चारूंमेर घांटी घुमाई। आपरी मजबूत जंगी जड़ियां रै आपै विकराळ बड़लौ ऊभौ हौ। झूमती साखां, राता भड़ोलिया अर अणगिण लीला पांनड़ा। केई आंधियां माथाकर निकळगी। पण बड़लौ तौ भाखर ज्यूं पग रोप्यां नेगम ऊभौ। धरती में ऊंडी जमियोड़ी जड़ियां रै आपै। जड़ियां खोळी पड़चां के जड़ियां नै वाढ़चां अेक पलक ई बड़लौ आपा माथै नीं ऊभ सकै। तपसी बारै बरस तापनै फगत आकासां ऊंचौ चढ़ण रा जतन करचा पण जड़ां धरती में नीं जमी। झोला रा फटकारा बिना ई आपरा भार सूं ई नीचै गुड़ग्यौ। बारै बरसां रौ तापणौ इण विध निरफळ कीकर व्हियौ! तप अकारथ व्हियौ सौ व्हियौ पण बारै बरस अैळा गया, जका पाछा कीकर बावड़ै?

कड़ियां माथै हाथ देयनै तपसी ऊभौ व्हियौ। उणरौ डील थर थर धूजतौ हौ। मरचोड़ी हाडकियां माथै मीट न्हाकतां ई वांनै जीवती करण वाळा तपसी रौ औ कांई ढाळौ व्हियौ? जीवतां थकां आज तौ जांणै उणरौ सत ई निकळग्यौ व्है! भरम रा गाढ़ री सेवट आ इज गत व्है। कोई अेक दो

दिन के पांच दस पखवाड़ां तक नीं, पूरा बारै बरसां तांई वौ तप करचौ । निरणौ, तिरसौ रैयनै बारै बरसां तांई मूंन अवचळ समाध राखी । माथै उदई रौ ढेपौ खिड़कीजग्यौ तौ ई उणनै चेतौ नीं रह्यौ । अेक पलक झपै इत्ती ताळ में बारै बरस बीतग्या । पण अबै तौ अेक पल ई बितावणौ ई बारै बरसां जित्तौ व्हैगौ ।

राजकंवरां रौ आचरण अर सुभाव देखनै तपसी तौ भंवर रा आंटा में झिलग्यौ । कांई तपसी रै तप रौ फळ आं राज-कंवरां रै हाथ आयग्यौ । बारै बरसां रै तप रै पछै ई रीस अर मद माथै वौ काबू नीं पा सक्यौ अर अै आठूं रा आठूं भाई राजकंवर होयनै ई रीस अर मद रै नैड़ाकर ई नीं निक-ळिया । रीस अर मद तौ राज-घरांणा रा लोई में ई घुळ-योड़ा रैवै, आंरै बिना तौ वै सास ई नीं लै सकै, उण घरांणा में पळियोडा अै कंवर तौ जांणै इत्याद गुणां रा पर-तख पूतळा इज । आं में नीं है जका सगळा औगण अर आं में है जका सरब गुण ।

बारै बरसां री मूंन समाध में तपसी रै औगणां नै आपरै बधणा सारू पूरी छूट मिळगी । अर तपसी री अजांण में जांणै वै तौ आपरी छोळां माथै आयग्या । पछै इण तप अर इण समाध री सारथकता ! कांई आं थोड़ी घणी नाकुछ करामातां अर आं अजोगता हुनरां वास्तै मिनख जमारा रा अै बारै बरस अैळा गमाया ! बारै बरसां में मिनख चावै तौ गिगन रौ अेक अेक तारौ बीण सकै ! मन में भरम अर विस्वास हौ जित्तै तौ अणहोणी करामातां ई पूरौ साथ दियौ,

पण विस्वास रै हिलतां ई वै सगळी करामातां धूड़ भेळी व्हैगी । आंख खुलतां ई जिण भांत सपनौ लोप व्है उणी भांत विस्वास री आंख झपतां ई सगळी करामातां लोप व्हैगी । बारै बरसां री अमोलक घड़ियां अैळी गमायनै करामातां रौ नाकुछ छळ थोड़ी ताळ वास्तै हाथ लागौ अर थोड़ी ताळ ई में हाथ सूं छूटग्यौ । आं आठ राजकंवरां रा आचरण सूं तपसी रै भरम रौ जाळौ कटग्यौ । राजकंवर साथै रह्या जित्तै तौ तपसी नै आं बातां रौ फेर ई घणौ चेतौ नीं व्हियौ, पण वांरै अळगा व्हैतां जांणै मूंन समाध रै ओला री थोब-लियां ई अळगी व्हैगी अर अधर छायोड़ौ ओलौ हांकरतां हेटै आय पड़्यौ । तपसी तौ भूंडौ भरम-जाळ में फंस्यौ ।

चेतौ बावड़तां ई अेकर तौ तपसी रौ मन व्हियौ के लारै दौड़नै वां सगळा ई राजकंवरां नै पाछा बुलाय लेवै, पण उण वगत दौड़ण रौ काया में सत ई नीं हौ । वौ दौड़नै वांनै कैवणी चावतौ के वांरी संगत बिना वौ अेक छिण वास्तै ई अेकलौ नीं रै सकै । किणी भांत रा कोई दूजा डर रै कारण नीं, उणनै तौ फगत खुद आपरौ ई डर अणूंतौ लागै । वौ खुद ई खुद सूं डरण लागौ । उणनै आपरै माथै ई रत्ती भर भरोसौ नीं रह्यौ । उणनै अैड़ौ लखायौ जांणै वौ खुद आपरा हाथां सूं आपनै ई मार न्हाकैला ।

वौ तांगियां खावतौ बड़ला री छींयां हेटै आयौ । माथै भांत भांत रा पंछी मीठी किलोळां करता हा । तपसी नै वै किलोळां अणूंती अळखावणी लागी । जांणै कांई सोचनै वौ बड़ला माथै दनादन कोपरिया वगावण लागौ । सगळा

पंछियां नै उडायां पछै ई उणरा मन में नेहचौ नीं व्हियौ। बांदरा री गळाई बड़ला माथै चढ़नै सगळा पंछियां रा आळा खोस खोसनै नीचै वगाय दिया। माथै अेक ई आळौ नीं रैवण दियौ। आळां रै पड़णा सूं ईंडा मतै ई फूटग्या जकौ तौ फूटग्या, पण पछै साबत बच्योड़ां नै ई वौ साबत नीं रैवण दिया। भाटा अर ढगळां सूं तपसी सगळा ईंडां नै फोड़ न्हाकिया। पंछियां रा सगळा बिचियां नै मार न्हाकिया। बड़ला सूं उडियां पछै आपरै आळा अर बिचियां री आ हालत देखनै पंछी चारूंमेर उडता कुरळावण लागा तौ तपसो ताळियां बजाय अर हा हा करनै वांनै अळगा तग्गड़ दिया। अेक ई ईंडौ-बिचियौ साबत नीं रह्यौ अर अेक ई पंछी री आवाज नीं सुणणा में आई तद तपसी रा मन में कीं सांयत वापरी।

आपरी ई निजर सूं हरिया व्हिया रूंखड़ा तपसी नै देखियोड़ा ई नीं सुहावता। वौ मन में घणी वार सोचतौ के उणरी निजर में थोड़ी ताळ वास्तै ई लाय लगावण री करामात आय जावै तौ वौ सगळा जंगळ नै ई बाळ न्हाकै। हरियाळी रौ अेक पांन ई हरियौ नीं रैवण दै। अैड़ी निजर हाथ नीं आवणा सूं वौ मन में घणौ ई कळपतौ। जचती जणा ई वौ खमखरियां खायनै रूंखड़ा अर वांटकां रा पांन सूंतण लाग जावतौ, पण यूं सूंतणा सूं जंगळ री हरियाळी कद निठै?

नाडी माथै संपाड़ौ करण सारू के पांणी पीवण सारू जावतौ तौ वौ भाटां सूं मींडका नै मारतौ। किणी दूजा जीव जिनावर के पंछी नै पांणी को पीवण देतौ नीं। कदैई कदैई

सगळै दिन ई नाडी माथै बैठौ रैंवतौ, किणी पंछी जिनावर नै पांणी नीं पीवण देतौ ।

खिरगोसिया अर हिरणां नै मारण सारू वौ घणौ ई वांरै लारै दौड़तौ पण वै उणरी बखड़ी में नीं आवता जकौ नीं इज आवता । वौ वांरै माथै घणौ ई किड़कड़ियां चाबतौ, पण जोर कांई करै । उठा सूं हारचौ थाक्यौ वौ फेर सीधौ नाडी माथै आवतौ अर अणगिण मींडकां नै चिगद न्हाकतौ ।

हरदम सूतां बैठतां वौ हिरण अर खिरगोसियां नै मारण री अटकळां विचारतौ । सेवट खपतां खपतां वौ आपरै मतै ई तीर-कबांण बणाया अर थोड़ा दिनां में वौ अैड़ौ पारंगत व्हैगौ के किणी दौड़ता जिनावर री तीर रै समचै ई ढिगली कर देवतौ । वांनै मारियां पछै ई तपसी नै नहचौ नीं व्हैतौ । मरियोड़ा जिनावरां री टांगां पकड़ पकड़नै वांनै पिछांटतौ, पछै अगदौ-वगदौ, किटकलियां अर लकड़ियां भेळी करनै वांनै दळूं-भतौ । वांरी सिळगती देह सूं चरड़ चरड़ री आवाजां आवती तौ उणरौ मन अणूंतौ राजी व्हैतौ । सगळै दिन वौ तपसी तीर-कबांण लियां जिनावरां नै मारण सारू भंवतौ फिरतौ । निसांणा में तौ अैड़ौ प्रवीण व्हियौ के कैड़ा ई उडता पंखेरूं नै ढाय लेतौ । वौ मन में पिछतावौ करतौ के जीवण रा बारै बरस यूं ई तप में बिरथा गंवाया । आज दिन तांई तौ मार मारनै पंछी जिनावरां रा भाखर खिड़क देतौ ।

तपसी नै रात रा सावळ नींद ई नीं आवती । घड़ी दो घड़ी नीठ आंख्यां भपती । सपना रै मांय ई वौ जिना-वरां नै मारतौ । अेकर उणनै सपनौ आयौ के उणरी निजर

रा जोर सूं सगळी दुनियां में लाय लागगी है। धपळ धपळ सगळी धरती सिळगै । ठेट आभा तांईं झाळां पूगी । काळा पड़ पड़नै सगळा तारा गिगन सूं खिरग्या । चांद ई तूट तूटनै तड़ाक तड़ाक जमीं माथै आय पड़ियौ । तिड़क तिड़कनै आभौ ई हेटै आय पड़ियौ । तपसी खुद ई झाळां री दाझ सूं दुख पावै, पण तौ ई जोर जोर सूं हंसतौ रह्यौ । तीनूं लोकां में हाय-त्राय मचगी । देवता सगळा ई उणरै पगां पड़िया तौ ई वौ लाय बुझावण वास्तै राजी नीं व्हियौ । सेवट अणूंतो बळत रै कारण तपसी खुद न्हाटण री चेस्टा करी । सरवर समंदरां न्हाटतौ फिरियौ तौ ई उणरै कठैई ठौड़ हाथ नीं आई। समंदर ई धपळ धपळ सिळगता हा । भाखरां री गुफावां में लुकण रा जतन करिया तौ ई अकारथ । सगळा भाखर झाळां चढ़ियोड़ा हा । अबै करै तौ कांईं करै । तपसी खुद उण लाय में दाझण लागौ । बळत रै कारण जोर जोर सूं डाढ़ियौ । झिझकनै बैठौ व्हियौ । अेक पलक में सगळी लाय बुझगी । फगत सूरज री किरणां उणरा उघाड़ा डील रौ परस करती ही ।

तपसी नै इण बात रौ पिछतावौ व्हियौ के सगळी दुनियां लाय में सिळगती क्यूं बची । सूरज नै भसम करण सारू वौ आंख्यां फाड़ फाड़नै निरी ताळ उणरै सांम्ही भाळतौ रह्यौ। निजर सूं भसम नीं व्हैतां देखियौ तौ पछै सूरज रै निसांणौ ताक ताकनै पैला तौ घणा ई भाटा वगाया पछै सणण सणण अणगिण तीर छोडिया । पण सूरज रै तौ कठैई कीं खंडत नीं व्ही। सेवट जूंझळ खायनै वौ रूंखड़ां रा गोड वींधणा

चालू करचा जकौ खासी ताळ तांई बींधतौ ई रह्यौ । पछै धंदूणा खायनै पंछी जिनावरां रै माथै किड़कनै पड़चौ जकौ दटाक दटाक घणां री ढिगलियां करदी । बारै बरसां री विरथा समाध में कैड़ा अमोलक दिन गमाया । जीवण रौ खास आणंद तौ जीवां नैं मारणा में इज है । तपसी नै अबै मिनख जमारा रौ धूंम मारग मिळियौ, इत्ता बरस तौ फालतू ऊजड़ भटकतौ फिरचौ । तपसी रै संतोख अर हरख दोनां रौ पार नीं हौ ।

तपसी मन में आ सोचनै घणौ ई हंसियौ के बापड़ा आठूं रा आठूं राजकंवर हाल भरम-जाळ में अळूझियोड़ा है । बरस रै पैला ई पाछा आय जावै तौ वांनै जीवण रौ सांतरौ अर सिरै मारग बतावूं । उण वगत म्हारै कांई ऊंधी जची जकौ वांनै कावळ आदेसां में अळूझाय दिया । म्हारै कंणा मुजब बापड़ा कैड़ा कैड़ा फोड़ा भुगतैला । पण कोई बात नीं । बारै मईनां तांई ऊजड़ दौड़चां पछै इण धूंम मारग माथै चालणा रौ वांनै अणूंतौ आणंद आवैला । म्हारै साथै भिळ जावै तौ हांकरतां दुनियां रौ खातमौ करदूं, वेगी ई आपरै ठांणै लगाय दूं । माथा में कैड़ी फालतू धत झिली जकौ लारला अै अमोलक बरस भगती अर समाध रा झबळकुंड में घोळ दिया । म्हारै जैड़ौ ई मूरख इण दुनियां में फेर कोई व्है । पण सुमत आई जद ई आछी ! कदास औ बारै बरसां री मूंन समाध रौ इज परताप है ! जद तौ वा तपस्या अैळी नीं गी ।

इण भांत तपसी रा अमोलक दिन बीतता हा के बिचाळै अेक अणचींत्यौ रांफौ पजग्यौ । समाध वाळा बड़ला सूं थोड़ौ

सौ आंतरै बगदा अर किटकिलियां रै मांय तपसी अेक मोर नै पांखां सूधौ दळूंजतौ हो के दो लुगायां उण सांम्ही आवती दीसी। तपसी रा आस्रम में पैली वार लुगायां रौ आवणौ व्हियौ हौ। तपसी तौ लारला बरसां सूं भूल इज गियौ के इण दुनियां में लुगायां ई बसिया करै। सीधी आपरै सांम्ही यूं लुगायां नै निसंक आवती देखी तौ वौ हाब-गाब व्हैगौ। बेरा में थरकीजतां मन बैठै ज्यूं उणरौ मन बैठण लागौ। के अणछक उणरा मन में जची के अै लुगायां मोरिया नै इण विध दळूंजतां देख मन में कांई ख्याल करैला! कैड़ौ अंवळौ जोग सजियौ! आ सोचतां ई वौ सांम्ही चलायनै हचां हचां वांरै कांनी वहीर व्हियौ। पाखती आयनै चिड़तौ थकौ बोल्यौ: म्हारा इण आस्रम में लुगायां री छींयां रौ ई निखेद है, पछै थें परतख अठै क्यूं आई? किणनै पूछनै आई?

अेक जणी जबाब दियौ—आई तौ म्है म्हांरा कांम सूं म्हांरै मतै ई हां! आपनै कीं जांणकारी व्है तौ म्हांनै सोय बतावौ। बारै बरसां री मूंन समाध सूं ऊठणिया तपसी रौ इण बड़ला हेटै आस्रम हौ, वै किण दिस सांम्ही रमग्या, म्हांनै वांरा बावड़ बतावौ। म्है घणी अळगी भांय सूं वांरा दरसणां वास्तै आई हां।

तपसी गतरासा में पड़ग्यौ। उणरा हाथ में तीर कबांण हौ। उजाड़ डील जंगळिया री गळाई दीखतौ हौ। थोड़ी भांय आंतरै ई मोरियौ झाळां में सिकतौ हौ। इण वात नै छिपा-वणी ई कीकर आवै। जे वौ इण वगत बड़ला हेटै माळा फेरतौ लाधतौ तौ कैड़ौ नांमी कांम जमतौ। इण वगत ई

उणनै औ ऊंधौ कांम करणौ हौ अर अबूझ लुगायां नै इण वगत ई दरसणां वास्तै आवणौ हौ। जे इण हित्यारा सिकारी सूं डर परी नै अै पाछी दौड़गी तौ कुण आंनै आडौ फिरनै सावळ समझावैला।

वौ डरतां डरतां पूछ्यौ—पण उण तपसी सूं थांनै कांम कांई व्है सकै, म्हारै तौ कीं समझ में नीं आई।

अेक लुगाई तौ जांणै काठी मूंन धारयां ऊभी ही। वा तौ बोली नीं कोई चाली। पैला वाळी लुगाई ई जबाब दियौ: उण तपसी रै पाखती म्हांनै आठ राजकंवरां रा खास बावड़ व्हिया, म्हांनै वांरा सूं कांम है। चलायनै इण कांम वास्तै ई म्है अठै आई। बड़लौ तौ लोगां निसांण-पतांण बताया जकौ सागै ई निजर आवै, पण तपसीजी जंगळ में घूमण सारू गिया व्है तौ आप म्हांनै वा ई बतायदौ, वै आवै जित्तै वांनै अठै ऊभी ई उडीकां।

तपसी रा हाथ में तीर कबांण हौ। भूंडै ढाळै जटा बिखरियोड़ी। खत में रेत अर परसेवौ झिलियोड़ौ। सांवळौ डील। उघाड़ौ। अबै इण तीर कबांण नै लुकावै तौ ई कठै लुकावै! थोड़ौ सौ मोळौ पड़नै बोल्यौ—जे म्हैं कैवूं के वौ तपसी म्हैं इज हूं तौ थें इण बात माथै भरोसौ करौ।

अबकी दूजोड़ी लुगाई बोली—भरोसौ क्यूं नीं करां। रमता जोगी मन करै ज्यूं भेख बदळता रैवै।

आ बात सुणतां ई तपसी नै अेक अटकल सूझी। बोल्यौ—बात तौ आपरी साव साची है। दरसणां वास्तै आवण वाळा लोग भगती में रांझा घणा पटकै इण खातर वांरा डर सूं

जंगळिया रौ भेख धारचां रैवूं । किणी नै म्हारौ पतौ पड़ण नीं दूं । म्हनै मिनखां रौ आवणौ जावणौ घणौ सुहावै कोनीं । आपरी बात दूजी है । रांम जांणै कित्ती भांय सूं चलायनै अठै आया हौ ! आप सूं तौ चोज कीकर राखणौ आवै । अचुंभा री बात देखौ के अेक सिकरौ मोरिया नै रोस न्हाकियौ । म्हैं घणी ई पाटा - पीड़ करी पण उणनै बचा नीं सक्यौ । उणरी दाह क्रिया करतौ हौ के इण बिचाळै आप आयग्या । फरमावौ वां राज-कंवरां सूं आपरै कांई कांम है ? वांनै तौ अठा सूं गियां आज पूरौ अेक पखवाड़ौ व्हियौ । पूरौ बरस व्हैतां ई वै अेकर अठै आवैला ।

पैला तौ तपसी लुगाअां नै देखतां ई अणूंतौ डरचौ । पण होळै होळै बात - चीत करणा सूं उणनै डर जैड़ी बात तौ कीं नीं लखाई । सास्तर रा सास्तर लुगायां री ताड़णा सूं भरचा पड़चा है, अैड़ी तौ आं में कीं खांमी अर कीं भूंडायां निजर नीं आवै । आंरी संगत सूं तौ सांम्ही मन हरखै ! इणी खातर आंरौ इत्तौ निखेद बतावणौ जरूरी व्हियौ दीसै ।

तपसी रा मन में अचांणचक अेक बावळी सी बात आई : अै दोनूं लुगायां बरसां तांई अठै यूं ई ऊभी रैवै अर म्हैं इणी ठौड़ ऊभौ आंनै निरखतौ रैवूं तौ कैड़ौ आणंद बणै ! पण आ बात ई कोई व्हैणी है ! भगवांन रौ वासौ लुगायां नै छोड कठैई दूजी ठौड़ नीं व्है ! अर जे लुगायां में भगवांन नीं है तौ पछै आ बात ऊठी जठा सूं ई भूठी ।

तपसी रा मूंडा सूं आ बात सुणतां ई के राजकंवर अठै पाछा पूरौ बरस बीत्यां आवैला — वा दूजोड़ी लुगाई तौ ऊंडौ

निस्कारौ न्हाकनै बोली — म्हारै वास्तै तौ अबै अेक घड़ी काटणी ई दूभर व्हैगी, पूरौ बरस कद आवै । अबै तौ आपघात करनै मर जाऊं तौ सांयत मिळै ।

आ बात कैयनै वा जमीं माथै हेटै बैठगी अर डुस्किया भर भरनै रोवण लागी । साथै वाळी लुगाई उणनै समझावण री घणी ई चेस्टा करी तौ ई उणरौ रोवणौ नीं ढबियौ ।

आपरा हाथ सूं नित हमेस अणूंता पंछी जिनावर मारण वाळा तपसी नै उण लुगाई रै खुद रै ई हाथां आपघात करनै मरजावण री बात घणी आहंजी लागी । आ फालतू क्यूं मरणी चावै ? मरणौ कोई आछौ कांम थोड़ौ ई है । मरणा में ई कीं सार व्है तौ कुदरत इत्ता जीवां नै विरथा ई जलम देवै । वौ थोड़ौ सौ पाखती आयनै कैवण लागौ — बरस बीततां कांई जुग लागै । मरण जैडी कांई बात है । भगवांन रा नांव माथै म्हारा आस्रम में अै मरणा - वरणा री बातां मत करौ । म्हनै व्है जकी बात बतावौ तौ कीं जुगत ई विचारां ।

पछै थोड़ौ सौ मुळकनै यूं ई बात नै संवारतां कैवण लागौ — बाज के सिकरा अठै म्हारा आस्रम रै पाखती भोळा पंछियां नै नीं मारै अर केई हिंसक जिनावर खिरगोस अर हिरणां नै नीं मारै, इण खातर अस्टपौर म्हारै कनै औ तीर कबांण राखूं । अेकर जीव निकळियां पछै आगला जलम में ई पाछौ जीव मिळणौ किसी सारै री बात है । किणी ई जीव री हिफाजत करणौ मिनख रौ औ सबसूं मोटौ करतब है ।

आ बात कैयनै तपसी मन में विचार करण लागौ के

झूठ सूं मोठौ अर सिरै चोज इण दुनियां में दूजौ कीं नीं है । झूठ नीं व्है तौ आ दुनियां रैवण जोग ई नीं बण सकै । झूठ तौ दुनियां रौ खास सिणगार । इत्ता बरस वौ किण जंजाळ री सोय में हकनाक गमाया अर खुद भगवांन रै आवण रौ अठै निखेद करचौ ! आज तौ भगवांन आपै ई चलायनै आस्रम में आया । भरम मिटियौ जकौ ई सावळ । वौ थोड़ौ भगवांन रै फेर पाखती आयनै कैवण लागौ—थें मन में सोचता व्हौला के अठै किण तपसी रा आस्रम में आयनै फंसग्या ! औ तौ तीर कबांण सूं भोळा पंछी जिनावरां री रिछ्या करै । बिना जांणिया किणी रै मन री बात रौ पतौ ई नीं लगा सकै । वौ तपसी तौ निजर फेंकतां ई मरियोड़ा पंछी जिनावरां नै पाछा जीवाड़ देतौ । तीनूं लोकां री उणनै अेक ठौड़ बैठां ई ठा पड़ती । वौ तपसी कठै अर औ जंगळियौ कठै ! पण म्हैं जांण करनै म्हारी खुसी सूं वै सगळी करामातां छोड़ी हूं । म्हनै वांमें कीं अणूंतौ सार लखायौ नीं । म्हारौ जीव तौ वां छळछंदां सूं घणौ कळपतौ । वां करामातां नै छोडियां म्हनै पूरी सांयत मिळी । साचौ तपसी वौ इज है जकौ घणौ ऊंचौ नीं लखावै । उण में अर दूजा मिनखां में घणौ फरक नीं व्हैणौ चाहीजै । म्हैं तौ इत्ता बरसां रा तप में फगत आ इज बात सीखी हूं । थें म्हनै निसंक थांरै पेटा रौ भेद बतावौ । बणती बात म्हैं अवस थांरी विपदां मेटूंला । आपघात सूं मोटौ पाप इण दुनियां में नीं है । अैड़ी बात तौ मूंडा सूं परगट ई नीं करणी चाहीजै ।

आपघात करण वाळी लुगाई तौ कीं बोली नीं कोई

चाली । वा साथ वाळी लुगाई कैवण लागी — अै आठूं राजकंवर आपरा सावका बेटा है । भोळप गिणौ के अबूझपणौ गिणौ कीकर ई रांणीजी रा मन में कुमत सांचरी के वां दूध रा पूतळां नै देस निकाळौ दिरवाय दियौ । कुमत तौ कुमत इज है, इणरी कांई माठ, रांणीजी छळ सूं अेक डावड़ी नै मरदांनौ भेख करवायनै वांनै मारण रौ ई प्रपंच रचियौ पण खुद भगवांन जिणरै विळू व्है उणरौ कुण कांई बिगाड़ सकै ! उण डावड़ी रौ आज दिन तांई कीं पतौ नीं । राजकंवरां रै कीं व्है जातौ तौ पछै सिवाय आपघात रै कीं दूजौ मारग नीं हौ

तपसो बीच में ई बोल्यौ — म्हनै आं सगळी बातां री पूरी जांणकारी है । वै आठूं राजकंवर ई म्हारी समाध तुड़वाई । उण वगत तौ म्हैं खुद दूजौ भगवांन हौ । बारै बरसां री समाध सूं आंख खुलतां ई म्हारी दीठ रा जोर सूं सगळा सूखा ब्रच्छ हरिया व्हैगा, मरियोड़ा पंछी जिनावरां री हाड़क्यिां निजर पड़तां ई पाछौ आपरौ जीव धारण कर लियौ । देखतां देखतां केई अजगर केई सांप, केई सूवा, तीतर, कबूड़ा, कागला, गिरजड़ा, चीता, सूअर, सिंघ, स्याळ, छाळी नारिया, वळद, गायां अर घोड़ा इत्याद भांत भांत रै जिनावरां रौ मेळौ मचग्यौ । हाथी म्हनै सूंड सूं प्रणांम करण लागा, नवौ जीव बावड़ियां सिंघ म्हारै पगां में लुटिया, सरप अर अजगर म्हारै माथै छतरियां तांणी । म्हारी दीठ रा इण अजब नजारा सूं सगळा ई राजकंवर चकन-बकन व्हैगा । देखतां देखतां गिगन में बादळा उमड़-घुमड़ चढ़ आया । पळापळ करती बीजळियां

चमकण लागी । मोरिया छतरियां तांण ताणनै नाचण ढूका । कोयलां कुहकण लागी । आभा सूं इमरत पांणी बरसियौ । अर म्हैं अंगड़ाई मोड़नै ऊभौ व्हियौ । आठूं ई राजकंवर म्हारै सांम्ही आदर भाव सूं हाथ जोड़्यां ऊभा हा । म्हैं वांनै देखतां ई बिना कह्यां सगळी बात समझ्ग्यौ । वा डावड़ी तौ आपरी करणी रौ हाथौहाथ फल पाय लियौ । धोखा सूं बिस रा लाडू खायनै आपरै ठांणै लागी । तौ ई साळस राजकंवर उणनै सनमांन रै सागै दाग दियौ । उणरी आतमा रा कल्यांण वास्तै जाचना करी । पण म्हनै रांणी री करतूतां अर राजा रा अबूझपणा माथै अणूंती चंडाळी छूटी । म्हैं राजकंवरां नै पूछ्यौ के वै मंसा परगट करै तौ म्हैं अठा सूं निजर फेंकनै वां दोनां नै भसम कर दूं । पण राजकंवर म्हनै इण बात सारू घणा ई पालिया । वै म्हनै कह्यौ के माईतां रै मरण सूं पैला तौ वांरौ खुद रौ मरण व्हे । माईतां रौ आदेस ई वांरै वास्तै सुख है ।

तपसी नै उण वगत आपरी दीठ रौ नजारौ देखनै जित्तौ हरख नीं व्हियौ, उणसूं सौ गुणा वत्तौ हरख उणरै आज उण नजारा रै पाछौ दरसावतां व्हियौ । वौ अणूंतौ उमायौ होयनै आपरौ बखांण करण लागौ । पण राजकंवरां री बात सुणनै रांणी वत्ती रोवण लागी ।

रांणी रौ रोवणौ सुणनै तपसी चळ-विचळ व्हैगौ । आपरौ बखांण छोडनै वौ राजकंवरां रा आचरण नै बिड़दावतौ कैवण लागौ — अैड़ा साळस अर समझणा वेटा तीनूं लोकां में ई विरळा लाधै । बारै बरसां री समाध में जकी बात म्हारै हाथ नीं लागी, वा वै राज घरांणा में जळम लेयनै कीकर सीख्या,

म्हारै हाल तांई समझ में नीं आई। वांरा गुण देखनै म्हैं म्हारा मन में वांनै म्हारा गुरू थरपिया । वांरा सुभाव सूं म्हैं घणी ई बातां सीखी । सगळी करामातां रौ त्याग म्हैं वांरै कारण ई करचौ हूं ।

तपसी री बातां सुण सुणनै रांणी तौ फेर वत्ती रोवण लागी । वा साथ वाळी लुगाई कैवण लागी—औ सगळौ रोवणौ ई तौ राजकंवर रै गुणां लारै है । जे वै कुमां-णस व्हैता तौ सगळा दुख ई मिट जाता । वांरै राज सूं बारै जातां ई जकौ उदंगळ मचियौ के कुण ई उण माथै काबू नीं पा सकियौ । राजकंवर वहीर व्हैतां नगरवासियां नै समझाया तौ उण वगत तौ वै समझग्या, तुरत वांरौ कैणौ मांनग्या । पण दूजै दिन ई नगरवासियां अर राज री सगळी रैयत रै मांय जांणै कांई भैरूं परगटिया के वे तौ सगळा राज नैं ई माथै उंचाय लियौ । छिड़ियोड़ा काळिदर बस में रैवै तौ वा रैयत बस में आवै । सेवट राजाजी नै रांणी रै सगळा कपट-जाळ रौ साचौ उकरास लाधग्यौ हौ, पण वै तौ वांरा रूप आगै कीं बोल ई नीं सक्या । रांणीजी आपरी कूख रै जायां वास्तै राज री हिफाजत करणी चावता हा, पण वां आठूं राजकंवरां रै गियां पछै सगळा राज रै जावणा में ई कीं कसर बाकी नीं री । रैयत तौ उछाळौ करचौ जकौ किणी रै कैणा सूं नीं मांनी । राजाजी तौ चितबंगियां व्हैगा । रांणीजी री अकल ई ठांणै आयगी । वै आपरी करतूतां रौ घणौ ई पिछ-तावौ करचौ । सेवट रांणीजी ई अेक उपाव सोचियौ । वै हाथ जोड़नै सगळी रैयत सूं माफी मांगी । खुद अेक डावड़ी नै साथै

लेय सगळा राजकंवरां नै पाछा मनायनै लावण रौ जिम्मौ लियौ। राजकंवरां नै आपरै हाथां दुख दियौ जकौ वै खुद ई बदळा में दुख पावैला। फगत अेक डावड़ी रै साथै पाळा जावैला। साथै खावण-पीवण रौ कीं सराजांम नीं राखैला अर राज-कंवरां नै कीकर ई मनायनै लावैला। रैयत इण बात वास्तै मांनगी। राजाजी घणौ ई कह्यौ तौ ई वै खाली हाथ म्हारै साथै पाळा ई वहीर व्हिया। सेवट हेरतां हेरतां आपरै आस्रम रा म्हांनै पुख्ता बावड़ व्हिया तौ म्है दोनूं जणियां अणूंता कोड सूं अठै आई, पण अठा रा समंचार सुणतां ई रांणीजी रौ तौ काळजौ ई बैठग्यौ। राजकंवरां नै साथ लियां बिना वै राज में पग ई देवणौ नीं चावै। अबै करां तौ कांई करां।

तपसी कह्यौ — आठूं ई राजकंवर न्यारी न्यारी आठ दिसावां में गिया है। बरस रै पैला वांरौ पतौ लगावणौ ई दूभर है। म्हैं हाथां करनै करामातां रौ त्याग कर दियौ, नींतर म्हारै वास्तै वांनै अेक ई पलक में अठै बुलावणौ कीं मुस्किल कांम नीं हौ। पण अबै चावूं तौ ई म्हैं उग बात नै पाछी हासल नीं कर सकूं। म्हैं आपनै पैला ई कह्यौ के बरस बीततां किसा जुग लागै। वै पाछा आवै जित्तै आप दोनूं इण आस्रम में बिराजौ। आपरौ ई घर है। राज-मैलां में तौ सगळी ऊमर ई बीती अर बीतैला, पण जंगळ री टापरियां रै रैवास रौ साव ई तौ थोड़ौ लेयनै तूमार जोवौ के रैयत आपरा दिन कीकर तोड़्या करै।

अबकी रांणीजी बोल्या — म्हारा बेटां नै साथै लियां बिना तौ म्हैं मरयां ई पाछी नीं जावूं। वांरै सागै बारै मईना तांई

म्हैं ई देस निकाळौ भुगतूंला ! देस निकाळा रै साथै जे आपरी संगत रौ संजोग सज जावै तौ पछै पूछणौ ई कांई !

रांणी रा मूंडा सूं उठै रैवण री बात सुण्यां पछै तौ जांणै तपसो री खुसी रौ कोई पार ई नीं हौ । वौ मन में सोचण लागौ के उणरी तपस्या अर बारै बरसां री समाध रौ साचौ फळ औ इज मिळचौ । तपस्या निरफळ तौ नीं गी । पण हरख रै सागै सागै वौ मन में कीं डरण ई लागौ । लुगायां री संगत रौ उणरा जीवण में औ पैलौ ई मौकौ हौ । वौ तौ खुद अेक तपसी नै काठ रा मजूस रै मांय नंदी में बेवतौ मिळियौ हौ । उण दिन सूं वौ तपसी ई उणनै पाळ पोसनै मोटौ करचौ । भगती, धरम, आतमा, कल्यांण अर भगवांन री बातां बताई । थोड़ा दिनां में ई वौ तौ आं बातां में पारंगत व्हैगौ । आपरा चेला री प्रवीणता देखनै तपसी नै अणूंतौ मोद व्हियौ । वौ खुसी सूं समाध में आपरौ खोळियौ छोड दियौ । उण दिन सूं तपसी इण आस्रम में अेकलौ ई रैवण लागौ । अर बरसां लग अेकलौ ई रह्यौ ! अेक दिन समाध में बैठौ जकौ बारै बरसां तांई बैठौ ई रह्यौ ! राजकंवर आयनै उणरी समाध नीं तोड़ता तौ वौ नीं जांणे कित्ता बरसां तांई बैठौ रैवतौ, इणरी कीं जाच नीं । पण वांरै आणा सूं उणरी आतमा रौ साचेलौ कल्यांण व्हियौ । दूजा घणा ई उणनै आळ-जंजाळ आवता, पण लुगायां तौ वौ सपनां में ई नीं देखी । वौ सोचण लागौ के दुनियां कैड़ी मूढ़ अर बावळी है जकौ लुगायां नै छोड भगवांन री कांमना करै ! बापड़ा भगवांन री कांई जिनात के वौ लुगायां

री होड कर सकै ।

तपसी डरतौ डरतौ वांरा उणियारा जोवण सारू आपरी मीट नै पितळाई । उणरौ अंतस बरफ री गळाई पिघळण लागौ । उणनै लखायौ के उणरौ सगळौ डील पिघळनै धूळ में रळ जावैला । नीठ हीमत करनै वौ बोल्यौ — चालौ आस्रम में चालां ।

तीनूं जणा आस्रम में आया । तपसी रा मन री अजीब ई हालत ही । कदेई उणनै लखावतौ के वौ वेगवांन नंदी रै मांय गुड़कतौ जावै । कदेई लखावतौ के बादळां रै भेळौ घुळनै वौ खुद धरती माथै पांणी री छांटां बणनै बरसै, कदेई लखावतौ के वौ लाय री झाळां बणनै सिळगै । जे थोड़ी ताळ अळगौ नीं व्हियौ तौ वौ जांणै किणी भाव जीवतौ ई नीं रै सकैला । तुरत अेक उपाव काढ़्यौ । होळै सूं बोल्यौ — म्हारै नितनेम री वगत टळै, म्हैं अबारूं नंदी माथै संपाड़ौ करनै पाछौ आवूं ।

वौ तौ पडूत्तर सुण्यां बिना ई उठा सूं अणछक वहीर व्हैगौ । चेताचूक व्हियोड़ौ खाथौ खाथौ हालतौ ई गियौ, हालतौ ई गियौ । खासी भांय आयां पछै उणनै ध्यांन बंधियौ के वौ तौ नंदी रै साव उलटी बाजू आयग्यौ । अबै ! तौ ई वौ पाछौ नीं मुड़्यौ । अणूंतौ गोतौ खायनै वौ नंदी माथै पूगौ । नंदी आपरी मस्ताई में गैगाट करती बैवती ही । तपसी ढावा माथै जायनै चमगूंगौ व्है ज्यूं बैठग्यौ । सूनी आंख्यां सूं बैवती नंदी नै देखतौ रह्यौ । नंदी बैवती ठमै तौ उणरा अंतस री भावनावां रौ वेग ई बैवतौ ठमै । समंदर में पूग्यां पछै नंदी

रै वेग री तौ माठ आय जावै, पण तपसी री भावनावां रै वेग री माठ कठै ? तपसी नै रांणी बिचै डावड़ी रौ उणियारौ घणौ लुभावणौ लागौ। उणरा मन में भरम उपजियौ के समाध रै बिचाळै अेक अैड़ौ ई उणियारौ झबाझब करतौ हौ। तपसी नै नंदी रै मांय डावड़ी जैड़ा अणगिण उणियारा बैवता निगै आया। जठीनै निजर करतौ उठीनै ई वै उणियारा हंसता मुळकता निगै आवता। बांटका रा पांन पांन में, धूळ रा कण कण में उणनै डावड़ी रौ उणियारौ दीखण लागौ। सरू-पोत में उणनै दो दो जोड़ै उणियारा दीखता हा, पण होळै होळै अेक उणियारौ लोप व्हैगौ। वौ इण नजारा सूं कायौ होयनै आंख्यां मींची तौ ई डावड़ी रौ उणियारौ दीखतौ बंद नीं व्हियौ। इण माया-जाळ रौ तपसी नै अेक खास आणंद लखायौ जकौ आज पैली कदैई नीं व्हियौ। आणंद रै साथै अेक खास किसम री पीड़ रौ दरद ई उणरा काळजा में सालियौ। उण आणंद में अेक दरद हौ अर उण दरद में अेक आणंद हौ। दरद अर आणंद रौ अैड़ौ मेळ तौ वौ कदैई अनुभव नीं करचौ।

आपरी इण हालत माथै तपसी नै अणूंती जूंझळ छूटी। वौ खमखरी खायनै अणछक नंदी में धेंग देदी। पांणी में चिमकी मारनै आंख्यां मींची तौ ई उणियारौ लोप नीं व्हियौ। अेक ई उणियारा रा अनेक रूप। नंदी रै सांम्ही-पांणी तपसी तिरतौ ई गियौ, तिरतौ ई गियौ। आज उणरा मन में रांम जांणै कांई हूंस ही जकौ ढाळ में तिरण सारू तौ उणरौ मन ई नीं करचौ। थाकनै अधमरियौ व्हियां पछै वौ ढावा माथै

आयौ । डावड़ी रै उणियारा रा अणगिण रूप उणरै सांम्ही देखनै खिल खिल हंसै । तपसी आंख्यां मींचनै कांनां में आंगळियां घाली तौ ई उणियारा सुभट दीखता हा अर वांरौ हंसणौ सुभट सुणीजतौ हौ । तपसी आभा में ऊंचौ भाळियौ— सूरज री ठौड़ उण डावड़ी रौ उणियारौ चिमकतौ हौ । आभा आभा में सगळै वै इज उणियारा ।

तपसी मन में पक्की ठांणली के आं दोनूं लुगायां नै आस्रम सूं बारै काढ़ियां बिना उणनै किणी बात री चैन नीं पड़ैला । जावूं अबारूं तगड़नै बारै करूं । आ सोचनै वौ पाछौ आस्रम सांम्ही खाथौ खाथौ वहीर व्हियौ ।

दोनूं जणियां कुटिया रै बारै ऊभी तपसी नै उडीकती ही । वै इत्ती ताळ में फूस वाईदौ काढ़नै आस्रम री रंगत ई बदळ दी । तपसी नै दूजा मारग सूं आवतां देख्यौ तौ दोनूं जणियां विचार करचौ के तपसी गिया तौ दूजै मारग हा पण आया दूजा मारग सूं । पाखती आतां ई डावड़ी मुळकनै पूछचौ—आप गिया तौ इण दिस में हा, पण आया साव उलटी दिसा सूं, आ बात कीकर व्ही । हाल तक आप केई करामातां जांणौ !

डावड़ी रा मूंडा सूं बात सुणतां ई तपसी तौ आपरी बची-खुची सुध-बुध ई पांतरग्यौ । वौ तौ उणरी बात रौ कीं जबाव नीं दियौ । उणरी मुळक तौ उणनै सूरज रा उजास सूं ई सवाई निगै आई । कठै तौ वौ वां दोनूं जणियां नै आस्रम सूं माडांणी बारै काढ़ण सारू आयौ हौ, पण आतां ई वौ साव ऊंधी ई बात करग्यौ । कह्यौ—अेक बरस इण

जंगळ में काढ़णौ आपरै वास्तै दूभर व्है जावैला, आप फर-मावौ तौ म्हैं सोय करनै राजकंवरां नै सोध लावूं ।

रांणी कह्यौ — नीं, नीं आपनै फोड़ा भुगतण री कीं जरूरत कोनीं । म्हांरौ तौ इण आस्रम में पूरौ मन रमग्यौ । जे राजकंवर अणचींत्या पैला ई आय जावै तौ ई बरस बीत्यां रै उपरांत ई म्है म्हांरा राज में जावण रौ मतौ करचौ । आपरै गियां पछै म्हांरा राज रौ अेक राईकौ अठाकर नीसरियौ । म्हैं इणरै साथै राजाजी नै पूरा विगतवार समंचार भेज दिया । आठूं बेटां रै साथै बरस रै पछै ई आवण रौ कैवाड़ियौ । आप म्हांरी चिंता अंगै ई मत करौ । इण आस्रम में तौ म्हांनै राजमैलां सूं ई वत्तौ आणंद लखायौ । राजाजी अर बेटां रौ बिछोव अवस खटकै, पण इणरौ तौ कोई उपाव ई नीं । हाथां कांम बिगाड़ियौ, फळ तौ म्हनै ई भोगणौ पड़सी । आप जैड़ा तपसी री सेवा रौ मोकौ म्हांनै फेर कद बण आवैला । सगळी ऊमर दूजा कनां सूं सेवा करवाई, अबै सेवा करण रौ सौभाग नीठ हाथ आयौ अर वौ ई आप टाळणी चावौ । आपरा तप में बाधा पूगती व्है तौ बात दूजी ।

तपसी री सगळी जूंझळ अर रीस तौ जांणै बरफ रा भाखर हेटै दबगी । वौ डाफाचूक व्हियोड़ौ अठी-उठी देखतौ होळै सूं बोल्यौ — आप म्हारी बात सावळ समझिया कोनीं । म्हनै तौ अठै कीं बाधा कोनीं, पण आप लोगां री बात दूजी है ।

अबकी डावड़ी फेर मुळकनै कह्यौ — आपरा आस्रम में लुगायां नै देख लोग कांईं कांईं भरम धरै, कदास आपनै इण बात

रौ डर लागौ दीसै । पण आप जैड़ा तपसी नै आं छोटी मोटी बातां माथै ध्यांन ई नीं देवणौ चाहीजै । भाटा री पूतळी सूं किणी बात रौ डर व्है तौ आप सूं म्हांनै डर व्है । म्हांरै वास्तै तौ आप किणी बात रौ ख्याल मत करौ ।

तपसी तौ आज कावळ पजियौ । बारै बरसां री वा मूंन समाध कित्ती सोरी ही । बिना खायां-पीयां अर नितनेम करचां ई वै बारै बरस तौ घड़ी पलकां रै उनमांन बीतग्या । पण आज रौ औ अेक अेक पल जुग जुग जित्तौ लांठौ व्हैगौ । इणी खातर सगळा रिसी मुनी लुगायां सूं डरतां वांरौ सास्तरां में इत्तौ निखेद करचौ, तपसी रै आ बात आछी तरै समझ में बैठगी । तपसी रा मन में फेर अेक उपाव सूझ्यौ । वौ कीकर ई मिस करनै वांरां सूं अळगौ न्हाटणी चावतौ हौ । कह्यौ — आप जद अठै ठैरण रौ ई पुख्ता विचार कर लियौ तद कुटिया तौ रैवण जोग बणाणी पड़सी । म्हैं जंगळ सूं लांबी वळियां, खींपड़ौ अर आकतड़ियां भेळी करनै लावूं । जित्तै आप निसंक अठै बिराजज्यौ ।

आ कैयनै वौ तौ पडूत्तर सुणियां बिना ई उठा सूं वहीर व्हैगौ । रांणीजी लारा सूं हेलौ पाड़नै कह्यौ — आप म्हांरै वास्तै फालतू फोड़ा भुगतौ ! कुटिया तौ नांमी ठावकी है ।

पण तपसी तौ वांरी बात सुणी अणसुणी करदी । वौ तौ तर तर घणौ खाथौ चालण ढूकौ । डावड़ी तपसी री बात खासी भली समझगी तौ ई दरसाई कोनीं ।

तपसी री तौ फेर वा इज नंदी वाळी गत व्ही । उठा

सूं तौ मिस करनै अळगौ आयग्यौ पण अळगौ आयां पछै ई झख कठै ? खुदौखुद आप सूं तौ वौ अळगौ नीं जा सकै ! आप सूं दौड़नै अळगौ व्हियां बिना उणरा जीव नै भवै ई सांयत नीं मिळै । अळगौ आतां ई आपरा मिस नै तौ वौ मुळगौ ई पांतरग्यौ । अेकलौ ई मन में बड़बड़ायौ — जे उण उणियारा नै पावण सारू बारा बरस री ठौड़ हजार बरस ई तप करणौ पड़ै तौ करूंला ! निरणौ - तिरसौ रैणौ पड़ै तौ रैवूंला । समाध लेणी पड़ै तौ ई लेवूंला !

तपसी अठी - उठी यूं ई जंगळ में भंवतौ फिरचौ । अेका-अेक उणरा मन में जची के पैला वाळी करामातां सूं इण डावड़ी नै खांधा माथै बिठायनै तारां बिचाळै जायनै बस जावूं तौ पछै किणी बात रौ डर कोनीं । वौ उण उणियारा नै पाछौ देखण सारू आस्रम कांनी वहीर व्हियौ । भरम रा अणगिण उणियारां सूं उणरा मन में संतोख नीं व्हियौ ।

तपसी नै खाली हाथां आयौ देख डावड़ी पूछचौ — आप तौ कुटिया नै सावळ छावण वास्तै खींपड़ौ, आकतड़ियां अर वळियां लावण नै गिया हा, पण पाछा साव खाली हाथ ई कीकर पधारचा ?

आ बात तौ तपसी रै चेता सूं ई उतरगी ही । थोड़ौ मोळौ पड़नै जवाब दियौ — हां, म्हैं गियौ इणी कांम वास्तै हौ, पण पछै जरूरत नीं समझी । आपरा आराम सारू क्यूं घड़ी घड़ी हरिया रूंख, बांटकां नै संतावणौ ।

तपसी नै पक्कौ विस्वास व्हैगौ — भगवांन रौ वासौ फगत दोय चीजां में है — अेक तौ लुगायां में अर दूजौ झूठ में ।

अैड़ी सुथरी अर सांयत री ठौड़ छोड़नै भगवांन दूजी ठौड़ बसण रौ कीकर मन कर सकै ।

तपसी पाखती गियां पछै घणी ई चेस्टा करी पण डावड़ी रा उणियारा सांम्ही वौ देख ई नीं सक्यौ । देखणौ तौ अळगौ, वांरै पाखती ऊभणौ ई दूभर व्हैगौ । अबकी मिस रा ख्याल सूं नीं, साचा भाव सूं वौ कह्यौ — म्हैं बावळा री गळाई दूजी-तीजी बातां रौ तौ फालतू सोच करूं, पण सोच करण वाळी बात रौ हाल ध्यांन ई नीं कर्‌यौ । आपरा भोजन सारू कंद-मूळ अर फळ-फूलां रौ कीं बंदोबस्त ई नीं कर्‌यौ । म्हैं अबारूं छाब भरनै पाछौ आवूं, आप किणी बात रौ डर मती करज्यौ ।

तपसी आयौ ज्यूं ई पाछौ वळग्यौ । पण इण बात रौ बिलकुल ई पांतरौ नीं पड़्यौ । सुथराई सूं छाब बणाई । अणूंता कोड सूं कंद-मूळ अर फळ-फूल तोड़नै भेळा कर्‌या । फळ तोड़ती वगत विचार कर्‌यौ के हड़ुमांनजी री गळाई, हथाळी माथै भाखर रौ भाखर उंचायनै लेय जावूं तौ कैड़ौक उम्दा कांम बणै । वो अणूंतौ कोडायौ होयमै भांपळियां भरतौ फळ तौ घणा ई तोड़िया पण खुद खायौ अेक ई नीं । भाखर री ठौड़ हथाळी माथै छाब धरनै जद वौ आस्रम सांम्ही पाछौ वहीर व्हियौ तौ वौ फूल री जात हळकौ व्हैगौ हौ । खुद नै कड़का करती भूख लागी तौ ई वौ आपरौ मन नीं विटळायौ । वौ मन में सोच्यौ के वांरै बिना परपूठ अेकलौ खावणौ आछौ कांम नीं । मारग में अेक ठौड़ उणनै पांच सात सूवटा जमीं माथै बैठा निगै आया तौ वांरै सांम्ही खासा फळ वगाय

दिया । मन में बड़बड़ायौ—थांरै पांती रा फळ म्हैं छाब भरनै लै जावूं, म्हैं थांनै कीं नीं दियौ । थांरा हक रा फळ है, धाप धापनै खावौ । आस्रम पूगौ जित्तै वौ इण भांत आधी छाब खाली करदी । आज वौ अणूंतौ राजी हौ । चीलां अर गिरजड़ा भूखा व्हैता तौ आपरा डील रौ मांस चुगाय देतौ ।

तपसी नै इण बात रौ अणूंतौ इचरज व्हियौ के अेका-अेक उणरा मन सूं जीवां नै मारण री भावना कीकर लोप व्हैगी । मारण री ठौड़ दया री भावना कठा सूं आयगी ?

वौ छाब लेयनै आस्रम पूगौ जित्तै उणरौ मन बादळां रै पांणी री गळाई निरमळ व्हैगौ हौ । हंसतौ थकौ बोल्यौ—अठै तपसी रा आस्रम में तौ आ ई सरबरा बण आवै ! आप ई कांई जांणौला के किणी तपसी रा आस्रम में वासौ लियौ तौ हौ !

रांणी आदर भाव सूं जबाब दियौ—कुदरत रा भंडार सूं अैड़ा अैड़ा इमरत फळ हाथ आय जावै तौ पछै चाहीजै ई कांई । म्हांरै खातर आपनै खासा फोड़ा भुगतणा पड़्या । आपरौ तौ औसांण कद उतरैला ।

तपसी मुळकनै कह्यौ—किण रौ औसांण किण माथै है, इणरौ लेखौ तौ जांणण वाळौ ई जांणै । आपनै अर म्हनै इण बात री कीं सावळ ठा कोनीं ।

तपसी घणौ ई हठ झेल्यौ पण दोनूं जणियां उणरै बिना अेकली फळ खावण वास्तै त्यार नीं व्ही । रांणी बोली—लुगायां रै धरम में इण बात रौ पूरौ निखेद है । वै आदमी

नै खवाड़ियां बिना मरै तौ ई कोई चीज मूंड़ा में नीं घालै। साथै खावणौ ई वांरा धरम में कोनीं। पण आप घणौ हठ झेलौ तौ पछै साथै खावण नै राजी व्है सकां, पण म्है अेकली तौ भवै ई नीं खावां। आप घड़ी घड़ी हठ करौ तौ औड़ौ देतां म्हनै ई सरम आवै।

सेवट तपसी नै मांनणौ पड़्यौ। तीनूं ई फळां रौ भेळा बैठनै सिरावण करचौ। चोखा अर पाका फळ किणी रै ई हाथ में आवता तौ अेक दूजा री मनवार करता।

के इत्ता में डावड़ी झिझकनै कह्यौ—देखौ कैड़ी विकराळ आंधी आवै।

तपसी अर रांणी दोनूं ई उठीनै भाळियौ। आथूण दिसा सूं काळी-बोळी आंधी अलंघां सूं उडियोड़ी आवती ही। तपसी अेकर डावड़ी रै मूंडा सांम्ही देखनै आंधी रै सांम्ही फेर देख्यौ। तद उणनै लखायौ के उणरा मन में उणसूं ई विकराळ आंधी मार घमरोळ मचाय राखी है, पण वा किणी रै ई निगै नीं आवै। उणरा काळजा में आंधी रा गोट माथै गोट ऊठण लागा। वौ फेर चितबंगियौ व्हैगौ। आंधी सांम्ही देखनै वौ अेक बावळी सी बात पूछी—कांई आ आंधी किणी रै रोक्यां रुक सकै।

डावड़ी जबाब दियौ—आप जैड़ा करामाती तपसी चावै तौ इणसूं ई विकराळ आंधी नै रोक सकै!

तपसी जोर सूं बोल्यौ—झूठी बात, साव झूठी बात! खुद भगवांन चावै तौ ई इण आंधी नै नीं रोक सकै, पछै बापड़ा तपसियां री जिनांत ई कांई! थें तौ इणनै रोकण री

बात करौ म्हैं तौ इण आंधी में खिरयोड़ा सूखा पांन री गळाई उड जावूं । भलां अैड़ी आंधियां रौ कुण सांमनौ कर सकै ।

पछै थोड़ी ताळ रुकनै कैवण लागौ — घणकरी आंधियां अदीठ व्हिया करै । वै आं दीखती आंधियां सूं हजार गुणा वत्ती विकराळ व्है ।

अबकी रांणीजी बोल्या — आप फरमावौ तौ व्हैला ई ! पण वैड़ी अदीठ आंधियां कदास तपसियां री निजर सूं ई दीख्या करै । म्है नाकुछ मिनख वां आंधियां नै नीं देख सकां ।

पछै तपसी सीत में बकै ज्यूं बकण लागौ — आज म्हांरा अंतस में वैड़ी ई अदीठ आंधी रा गोट ऊठै । थें सगळा ई आंधा हौ, थांनै म्हारा मन री वा अदीठ आंधी सूझै कोनीं कांई, सुझै कोनीं कांई !

आ कैयनै वौ बावळा री गळाई बड़बड़ाटा करतौ आंधी रै सांम्ही तांगियां खावतौ दौड़ण लागौ — दौड़तौ दौड़तौ आंधी में ई अदीठ व्हैगौ । सांय सांय करनै भंयकर खेंखाड़ कूकण लागौ । हाथ नै हाथ सूझणौ बंद व्हैगौ । डावड़ी अर रांणीजी दोनूं साव अड़ौअड़ ऊभा हा, पण अेक दूजा नै देख नीं सक्या । रांणीजी री बिखरती आवाज होळै सूं सुणीजी — तपसी रै कैणा मुजब केई आंधियां अदीठ व्है जकौ व्है इज है, पण इण आंधी री फेट में आवै जका ई अदीठ व्है जावै । म्हैं थनै नीं देख सकूं, थूं म्हनै नीं देख सकै ।

पछै थोड़ी ताळ रुकनै रांणीजी फेर कैवण लागा । अबकी वांरी बिखरियोड़ी आवाज में थोड़ी हंसी ई सुणीजी । डावड़ी

रा कानां में भणक पड़ी — कदास अै तपसीजो भगती में बावळा व्हैगा दीसै !

डावड़ी होळै सीक हुंकारौ भर्‌यौ — हां, बात तौ म्हनै कीं अैड़ी ई जचै।

पण डावड़ी रांणीजी री बात रौ फगत हुंकारौ ई भर्‌यौ हौ, मन में जांणती जकी साची बात परगट नीं करी। कदास वौ उणरौ हळाहळ वेम ई व्है सकै !

रांणीजी रा ख्याल सूं भगती में बावळौ व्हियोड़ौ तपसी सगळी आंधो नै आपरा डील माथै झेलो। आंधी रै पछै मूसळाधार बिरखा बरसी। रांणीजो अर डावड़ी तौ कुटिया में वड़गा। रांणीजी कह्यौ — तपसीजी रांम जांणै कठै बिरखा में भीजता व्हैला। नैड़ा दीखै तौ हेलौ ई मारां।

डावड़ी बोली — अैड़ा अघोरी तपस्वियां रौ आंधी अर मेह कीं बिगाड़ नीं सकै। आप किणी बात री चिंता मत करौ।

पछै डावड़ी हंसनै मसखरी रा भाव सूं फेर धकै कैवण लागी—तपसीजी रै इत्ता बरसां में ई लुगायां री संगत सूं कांम नीं पड़्यौ। अपां रै आतां ई आंरै तप री सगळी जड़ां खोळी पड़गी। औ बावळापणौ आंनै अपांरै दरसणा सूं ई उपजियौ। हाल तौ पूरौ दिन ई नीं व्हियौ, बरस कीकर बीतैला।

रांणीजी ई पाछी मसखरी करी। कह्यौ — चोर रा मन में चांदणौ व्है। कठैई थारौ मन तौ तपसीजी नै देख्यां खिळडिखळ नीं व्हैगौ। थारा मन रौ चोर थूं वांरै मांय क्यूं

सोधै ? तपसीजी माथै वेम करयां थनै पाप लागैला ।

डावड़ी कह्यौ -- अै तपसी लोग तीनूं लोकां री बात जांणै, घट घट रौ पतौ लगावै, वांरी होड तौ कुण करै ! पण अेक मिनख रै मन री बात चाहै वौ तपसी व्हौ, चाहै जोगी, चाहै वौ अेक धूरत ठगोरौ ई व्हौ, कैड़ी ई गैली गूंगी लुगाई सूं छांनी नीं रैवै, इण में कीं मीणमेख नीं ।

रांणीजी पाछौ कीं जबाब देवण वाळा हा के इत्ता में बिरखा में कूटीजियोड़ौ तपसी कुटिया रै मांय आयौ । उणरी जटा अर उणरा खत सूं टप टप पांणी झरतौ हौ । सगळा डील माथै छांटां रा मोती जड़ियोड़ा हा । वौ तौ आवतौ ई दाछंट बोल्यौ — आंधी नै देख्यां म्हनै लखायौ के म्हारा मन में आंधी रा अदीठ गोट ऊठै । इण बिरखा नै देख्यां म्हनै अैड़ौ लखावै के म्हारा अंतस में ई इणी भांत अदीठ बिरखा बरसै । मिनख रौ मन कुदरत री देखादेखी यूं क्यूं बदळिया करै, आप म्हनै इण बात रौ म्यांनौ बता सकौ कांई ?

रांणीजी जबाब दियौ — म्हांरी कांई हस्ती के म्है आपरी बातां रौ म्यांनौ बता सकां । तपसियां री माया अपरंपार व्है । कदास आ आंधी आपरा मन री अदीठ आंधी रौ ई रूप व्है अर औ मेह आपरा अंतस री बिरखा रौ रूप व्है । तपसियां री इण माया नै आप तपसी लोग ई जांणौ ।

इण बार तपसी कीं चिड़तौ थकौ बोल्यौ — थें गिरस्ती लोग इण बात नै क्यूं भूल जावौ के लाख तपसी, रिसी अर मुनि व्हैतां थकां ई म्है सगळा मिनख हां । मिनख रा गुण अवगुणां सूं म्है कदैई ऊंचा नीं उठ सकां ! थें म्हांनै कांई

समझ राख्या हौ ? थां लोगां री समझ म्हांरै तौ कीं समझ बैठी नीं ।

अबकी डावड़ी मैणी रा भाव सूं बोली — जद म्हां नाकुछ मिनखां री समझ आप जैड़ा तपसियां री समझ में नीं बैठै तौ पछै आपरी बातां म्हांरै कीकर समझ में आवै ! आप सावळ सुभट समझावौ तौ म्हां निरमतियां रै थोड़ी घणी समझ में बैठै !

तपसी तौ भूंडौ भंवर-जाळ में फंसियौ । आपरा मन री बात वौ खुद हाल तक सावळ नीं समझ्यौ तौ आंनै कीकर सुभट समझावै । वौ तौ फगत आ बात जांणै के आज उणरा मन री गत भूंडी बदळी, पण उणरौ म्यांनौ वौ कीकर समझावै । उणरा मूंडा सूं उणरी अजांण में फगत अै बोल निकळिया — म्हैं तपसी पछै हूं, पैला मिनख हूं, फगत नाकुछ कोरौ मिनख ! थें आ बात सावळ समझलौ तौ पछै सगळी बातां सुभट समझ में आय जावैला ।

बड़ला रा पांनड़ां माथै तड़ातड़ छांटां बाजती ही । तपसी कह्यौ — देखौ अै छांटां ई म्हारी बात रौ हुंकारौ भरै के म्हैं पैला मिनख हूं अर पछै तपसी ! म्हारै ई आ बात इत्ता बरसां पछै समझ में आई । म्हैं अबै अठै अेक पलक ई ऊभौ नीं रै सकूं । म्हारी नस नस में लाय सिळगै । म्हैं थोड़ी ताळ में ई भसम व्है जावूंला । सगळी रात बिरखा में भीज्यां बिनां म्हारी आ बळत मिटै नीं । आप अठै आरांम करौ अर म्हनै आखी रात बिरखा में भीजण दौ । नींतर म्हैं आपरै देखतां देखतां भसम व्है जावूंला ।

आ कैयनै तपसी तौ आंधी रै वेग कुटिया सूं पाछौ बारै निकळग्यौ । उणनै जावतां कोई नीं बरजियौ ।

खासी ताळ तांई कोई किणी सूं बात नीं करी । अचांणचक रांणीजी बोल्या — थूं मांनै तौ अेक बात कैवूं ।

डावड़ी कह्यौ — आपनै कैवण री जरूरत कोनीं । बिना कह्यां ई म्हैं आपरी बात मांनण नै त्यार हूं । आपरी मरजी री खास डावड़ी होयनै मूंडा सूं कैवाडूं तौ पछै सगळी बात ई खूटगी । आपरौ आदेस म्हारै सिर-आंख्यां माथै ।

रांणीजी पाछौ कीं जबाब नीं दियौ । बड़ला रा अणगिण पांनां माथै अणगिण छांटां तड़ातड़ करती नाचती ही । तपसी सगळी रात बारै ऊभौ उण मूसळाधार बिरखा में भीजतौ रह्यौ । पळापळ करती अर किड़कती बीजळियां नै देख वौ सोचतौ के म्हारा मन में ई इणी भांत बीजळियां पळापळ करै, अर इणी भांत बीजळियां किड़कै । गरजता बादळां री आवाजां सुणनै वौ बड़बड़ावतौ के उणरा अंतस में ई इणी भांत बादळा गरजै । बिरखा अर अंधारौ दोनूं ई होडाहोड बरसता हा । असूझता अंधारा रौ ध्यांन आतां ई वौ बड़बड़ावतौ के उणरा मन में इण सूं ई वत्तौ अंधारौ है ।

तपसी सगळी रात इण विध बड़बड़ाटा करतौ रह्यौ अर बिरखा में भीजतौ रह्यौ । आज री आ रात तौ उणनै समाध रा बारै बरसां सूं ई घणी वत्ती लखाई । तपसी नै तौ भलांई कीं लखायौ व्है, सूरज तौ आपरा वगत माथै ऊगौ इज । चारूं दिसावां में मधरौ उजास पाथरग्यौ । तपसी नै लखायौ के इणी भांत उणरा अंतस रौ अंधारौ ई लोप व्हैगौ । वौ

कुटिया में चालण सारू वहीर व्हियौ।

डावड़ी अर रांणीजी दोनूं बारै ऊभा तपसी नै उडीकता हा। पाखती आतां ई रांणीजी पूछ्यौ—आपरै कांई धत भिली जकौ सगळी रात बिरखा में भीजता रह्या। म्हनै आज सावळ ठा पड़ी के तपसी आधा बावळा व्हिया करै।

तपसी कह्यौ—म्हैं तौ बारै बरसां तांई बिरखा में भीज्यौ अर आपनै फगत अेक रात इज लखाई। पछै बावळौ म्हैं हूं के आप। बारै बरसां री उण तपस्या सूं आ तपस्या घणी दौरी लखाई।

रांणीजी मुळकनै कह्यौ—इण तपस्या रौ फळ भोगण वास्तै आपनै अेक तकलीफ तौ करणी ई पड़ैला।

तपसी अंतावळी दरसावतौ बीच में ई बोल्यौ—आप फरमावौ तौ सगळा आभा नै चांद, तारा अर सूरज समेत तोड़नै नीचै अपांरी धरती माथै लै आवूं।

रांणीजी मुळकता थका कैवण लागा—वौ तौ म्हनै आपरी करमातां माथै भरोसौ है। पण हाल इत्ती जबरदस्त करामात बतावण री जरूरत कोनीं। अेक छोटौ सौ कांम है। इण बड़ला री परळी बाजू आपनै अेक नवी कुटिया बणाणी पड़ैला। म्हारा राज में पूगां जित्तै धीजौ राखता तौ म्हैं आपरौ धूमधांम सूं ब्याव रचावती, पण अठै तौ तपसी रै जोग ई ब्याव बण आवैला। बांमण-पिरोहितां री ठौड़ म्हनै ई सगळा टोटका करणा पड़सी। इण डावड़ी रै ई लारला भौ री तपस्या करचोड़ी दीसै जकौ आपरै जैड़ा तपसी रौ इण भौ में जोग सजियौ। आपरै तप रौ तौ आपनै हाथौहाथ इणी

जलम में फळ मिळग्यौ ।

लजाळू डावड़ी लाज में दोवड़ी होयनै कुटिया रै मांय वड़गो । रांणीजी तपसी सूं वळै मसखरी करी। कह्यौ— आज रौ औ दिन तौ आपनै फेर बारै बरसां जित्तौ लखावैला ।

तपसी नवो कुटिया रौ सराजांम लावण सारू जंगळ में वहीर व्हियौ जणा उणनै अैड़ौ लखायौ के आज नवी दुनियां रौ निरमांण व्है है । तपसी नै सगळी कुदरत मगन अर हुळसती निगै आई ।

सिंझ्या रा नवी कुटिया संपूरण व्ही जद रांणीजी तपसी नै कह्यौ — इण कुटिया रै बिचाळै आभा रौ चांद अर चारूं-मेर गिगन रा तारा जड़नै बतावौ तौ आपरी करमात जांणूं ।

तपसी कह्यौ — आज तौ गिगन रा सगळा देवता आ हर करता व्हैला के इण कुटिया रौ घास - फूस गिगन में जड़ जावै तौ वांरी अणचींती लाळसा पूरीजै । बापड़ा चांद - तारां री कांई जिनात के इण कुटिया में सोभा देवै ।

चंवरी मांडनै रांणीजी आपरा हाथ सूं दोनां रौ हथळेवौ जुड़ायौ जद तपसी नै अैड़ौ लखायौ के जांणै तीनूं लोक उणरी मूठी में आयग्या व्है। उणरौ हरख वांणी रा आंखरां रै परै हौ।

सूरज री उगाळी तपसी कुटिया सूं बारै आयौ जणा उणनै इण भेद रौ सुभट उकरास लाधौ के औ सगळौ उजास उणरा अंतस री किरणा रौ इज है ! वौ आपरा मन में बड़बड़ायौ—कालै वाळी वा रात तौ बारै बरसां सूं ई लांठी लखाई, पण आज री रात तौ पलक झपै उण सूं ई पैला बीतगी ।

अर इणी भांत पलक झपै इण सूं ई पैला आखौ बरस बीतग्यौ । जांणै पांखां लगायनै अेक ई पलक में बरस उडनै अदीठ व्हैगौ व्है !

तपसी रा आस्रम में जळवा पूजण रौ मंगळीक दिन अर राजकंवरां रै आवण रौ संजोग अेकण सागै ई सजियौ । फगत अेक रात रौ अंधारौ बाकी हौ । रांणी वाळी कुटिया में ई सगळा जणा बैठा हा । जच्चा-रांणी रा खोळा में चांद सूरज रै उणियार दोनूं बाळ-गोपाळ हांचळ चूंघता हा । रांणीजी रा मन में आठूं बेटां सूं मिळण रौ कोड तौ अणूंतौ हौ, पण आ बैरण रात बीतै जद ! कांई ठा किण बेटा में कांई विखौ पड़्‌यौ व्हैला !

रांणीजी अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै बोल्या — आज म्हारै वास्तै तौ आ रात बारै बरसां सूं ई लांठी व्हैगी । कठैई अैड़ी नीं व्है के कालै सूरज भगवांन ऊगै ई नीं ।

तपसी रांणीजी नै थावस देवतां कह्यौ — आप किणी बात री चिंता मत करौ। म्हनै सुभट दीसै के सूरज भगवांन आठूं राजकंवरां नै आपरी किरणां माथै बिठाणनै लावैला ।

तपसी नै आ बात सुभट दीसी के नीं दीसी इणरौ साचौ भेद तौ वौ ई जांणै, पण जिण दिन आठूं राजकंवर न्यारी न्यारी आठ दिसावां में वहीर व्हिया हा, पूरा अेक बरस उपरांत वां इज दिसावां सूं ऊगता सूरज रै सागै पाछा उणी आस्रम में आवता दीस्या, जांणै आठूं भाई साचांणी सूरज री किरणां माथै बैठनै आया व्है !

वै गिया तौ फगत आठ जणा हा, पण पाछा आया

घणा । पैला राजकंवर रै साथै नागकिन्या अर भूवाजी हा । दूजा राजकंवर रै साथै राजा री बेटी अर सिंघ हौ । तीजा रै साथै राजा री बेटी, मच्छीमार अर जंगळियौ हौ । चौथा राजकंवर रै साथै देंत री बेटी अर कुमारी रै घर रा दोनूं ई डोकरा डोकरी हा । पांचवा राजकंवर रै साथै चांयलौ देंत, मूंडकी वाळी बैन अर उणरौ धणी अर राजा री बेटी ही । छठा राजकंवर रै साथै ठगां रै सिरदार री बेटी, खुद सिर-दार अर उणरी घरवाळी, उणरौ बेटौ, अेक सूवटौ, अेक हिरण, अेक कबूड़ौ, अेक खिरगोसियौ अर अेक मिनकी ही । सातवा राजकंवर रै साथै धरमराज री बेटी, अेक भेंसौ अर वा कुमारी-मां ही अर आठवा राजकंवर रै साथै इंदर-लोक री परी ही ।

वै सगळा जणा सांमला चौराया तक आवै उण पैला ई तपसी वांरै सांम्ही दौड़ियौ । आठूं राजकंवरां रै पछै सगळा ई तपसी रै पगां माथा निवायनै दंडोत करी । तपसी री आंख्यां अणूंता हरख रै कारण जळजळी व्हैगी । उणसूं सावळ बोलीजियौ ई नीं । गळगळा कंठ सूं पूछ्यौ—थें सगळा रह्या तौ सावळ !

राजकंवर कह्यौ—आपरी दया सूं म्हांनै किणी बात रा फोड़ा नीं पड़्या ।

पछै तपसी कैवण लागौ—थें गिया जद औ तपसी रौ आस्रम हौ, पण अबै गिरस्ती रौ आस्रम बणग्यौ । म्हैं थांनै आज भेद री बात बतावूं के गिरस्ती रौ आसण भगवांन सूं ई ऊंचौ व्है । म्हारा मन में बातां रा केई बादळा गरजै,

पूरा बरसियां ई वांनै सांयत मिळैला । थांरै गियां रै पंद्रै दिन पछै ई रांणीजी थांनै हेरता हेरता इण आस्रम में आया जकौ थांनै आखी रात सूं उडीकै ।

राजकंवर हरख अर इचरज सूं पूछ्यौ — कांई म्हारी मां अठै इण आस्रम में है ?

तपसी रै हुंकारौ भरतां ई सगळा अेकण सागै मां मां कैवता न्हाटा । मां मां री आवाजां सुणतां ई रांणीजी कुटिया सूं बारै निकळनै राजकंवरां सांम्ही दौड़िया । वांरी आंख्यां सूं हरख रा मोती ढळकण लागा । बेटां बेटां रै सिवाय वांरा गळगळा कंठ सूं दूजी कीं बात नीं निकळी ।

आठूं राजकंवर घड़ी घड़ी मां रै पगां माथा निवायनै बंदगी करी । कह्यौ — म्हांरै कारण आपनै किणी बात रौ संताप के कळेस व्हियौ व्है तौ माफी चावां !

मां बेटा अेक दूजा रै सांम्ही निरी ताळ देखनै छबरां छबरां रोया । वांणी रै निरजीव आखरां सूं पार नीं पड़ी तौ वांनै आंसुवां रै आखरां सूं बातां - विगतां करणी पड़ी ।

सगळां री ई आंख्यां जळजळी व्हैगी, पण वौ चांयलौ दैंत तौ भूं भूं करनै रोवण लागौ । पांचवौ राजकंवर घणौ ई समझायौ तौ ई वौ नीं ढबियौ । सगळां रा ई मन भाखरां रै उनमांन भारी व्हैगा । इण भार नै हळकौ करण री मंसा सूं तपसी रांणीजी रै सांम्ही देखनै कह्यौ — ठेट कुटिया रै मांय अणचींत्या रूप सूं राजकंवरां नै मिळावण री बात तै व्ही ही, पण आप सूं इत्ती ताळ वारतै ई ढबीजियौ कोनीं । सेवट बारै आयां ई आपनै नेहचौ व्हियौ ।

रांणीजी माडांणी मुळकण री चेस्टा करता थका जबाब दियौ — पैला कौल तौ आप तोड़ियौ । कुटिया में आयां पैली ई आप बात तौ सगळी बताय दी । मां मां री आवाजां सुणियां पछै म्हारा सूं नीं ढबणी आयौ ।

के इत्ता में कुटिया रै मांय दो पिचियां रौ कें कें करनै रोवणौ सुणीजियौ । रांणीजी हरख अर कोड रै सागै कैवण लागा — आ खुस खबरी तौ थांनै बताई कोनीं । तपसीजी रै बेळौ व्हियौ । आज जळवा पूजण रै मंगळीक दिन ई थांरै आवण रौ सुभ संजोग सज्यौ । जच्चा - रांणी नै गीत गावण वास्तै गीतेरणियां खासी भेळी व्हैगी ।

सिञ्झ्या रा तपसी रा आस्रम में पूरी हथाई मंडी । तपसी रा मूंडा सूं आस्रम री पूरी बातां सुणियां पछै आठूं ई राजकंवर आप आपरी बातां पूरण रूप सूं मांडनै बताई ! च्त्रिांमां री गळाई सगळा ई अेक दूजा री बातां सुणता रह्या । सगळी बातां सुणियां पछै ई सगळा निरी ताळ तांई अबोला रह्या । कुण ई किणी रै सांम्ही ई नीं जोयौ । अचां-णक वौ चांयलौ दंत टीलोड़ी री गळाई हंसतौ कैवण लागौ : पांचवा राजकंवर संकोच रै कारण आपनै आगली बात नीं बताई । वा म्हैं बताय दूं । इण मूंडकी वाळी बैन नै म्हैं अेक राजाजी रै दीवांण रा घर सूं उचकायनै लायौ हौ । चंवरी बैठी बींदणी नै उचकावण रै कारण पाछौ इणरौ ब्याव सागै वींद साथै ई व्हियौ ।

मूंडकी वाळी बैन रै धणी सांम्ही हाथ री सांनी करनै वौ धकै फेर कैवण लागौ — पण म्हारी आ बैन राजाजी री

बेटी री साथण व्हो । आ राजाजी री बेटी नै पांचवा राजकंवर री सगळी बातां सुणाई । बातां सुणतां ई वा तौ प्रण कर लियौ के ब्याव करूंला तौ राजकंवरजी रै ई साथै, नींतर ताजिंदगी कंवारी ई रैवूंला । सेवट राजकंवरी रौ प्रण भरै पड़्यौ । आपरा मूंडा सूं आपरी बड़ाई करतां राजकंवर नै संकौ आवै, इण खातर वै आगै री बात नै बीच में ई बोच न्हाकी । पण म्हैं तौ सगळी बातां जांणूं हूं ।

आ कैयनै वौ फेर आपरा मंया दांत काढ़नौ जोर जोर सूं हंसण लागौ । बातां छिड़गी तौ पछै छिड़ती ई गी । जांणै कांई सोचनै जच्चा रांणी चौथा राजकंवर रै सांम्ही देखनै पूछ्यौ—आपरी लाडली बेटी बिना उण देंत नै अेक पलक ई नीं आवड़तौ हौ, पछै वौ लारै कीकर रह्यौ, म्हारै आ बात समझ में नीं आई ।

जच्चा रांणी रै मूंडा सूं औ सवाल सुणतां ई चौथा राज-कंवर री आंख्यां में आंसू आयगा । वौ भारी गळा सूं कैवण लागौ—जळवा पूजण री खुसी रै कारण म्हैं आगै री बात कैवणी नीं चावतौ हौ । जिण बात रौ डर हौ सेवट वा इज बात व्ही । कांई बतावूं ! बतावणी नीं आवै ।

पछै वौ अटकतौ अटकतौ कैवण लागौ—साचांणी वौ देंत आपरी बेटी रौ अैड़ौ ब्याव रचायौ के कदास तीनूं लोकां में ई वैड़ौ ब्याव नीं व्हियौ व्हैला । सगळा जांनियां नै हीरा मोत्यां सूं सोना रौ अेक अेक कळस भरनै दियां पछै वौ सगळां नै ई आदर सूं आप आपरै ठिकांणै पुगाया । उण दिन उणरी खुसी रौ पार नीं हौ । छेहला जांनी नै पुगायनै आयौ जद

उणनै अेक भंवारा में होळै होळै किणी रै रोवणा रा डुस्किया सुणीजिया । वौ भरणाटै उठीनै ई दौड़्यौ । अेक लुगाई भंवारा में आंगणै पड़ी रोवणा रै साथै —— म्हारौ बेटौ, म्हारौ बेटौ, करनै वेलती ही । दैंत उणी घड़ी सगळी बात समझग्यौ । समझतां ई जोर सूं चिराळी करी । वौ अध-बावळौ सौ व्हैगौ । भूंडै ढाळै कूकण लागौ —— म्हारी बेटी रै ब्याव रौ सगळौ थाट अकारथ व्हैगौ । अबै म्हैं इणरा बेटा नै कठा सूं लावूं । नाळेर री काची गिरियां नै चाबै ज्यूं तौ इणरा बेटा नै सगळौ ई चाबग्यौ हौ । हाडकी रौ अेक तुस ई बारै व्हैतौ तौ म्हैं इमी रा कूंपला सूं उणनै जीवाड़ देतौ । पण वौ तौ पचनै म्हारा लोई में रळग्यौ । अबै इण मां नै उणरौ बेटौ कठा सूं लायनै दूं ।

के अणछक उण दैंत नै अेक उपाव सूझियौ । वौ इमी रौ कूंपलौ लेयनै म्हांरै पाखती आयौ । हंसतौ थकौ कैवण लागौ —— म्हारा मन में अबै कीं लाळसा बाकी नीं है । म्हारी बेटी रौ धूमधांम सूं ब्याव रचीजग्यौ । म्हारा जीवणा में अबै कीं सार नीं । इण मां रा आंसू म्हारा सूं देखणी नीं आवै । इणरै बेटा रौ अंस म्हारा लोई में रळियोड़ौ है । म्हारै माथै इमी रा छांटा पड़तां ई वौ बाळक जीवतौ व्है जावैला । थें वौ बाळक उण डुस्किया भरती मां नै सूंप दीजौ । म्हारा जीवण री इण सूं लांठी सारथकता फेर कांई व्है सकै !

आ कैयनै वौ खुसी में उछळतौ उण इमी रा कूंपला नै आपरै माथै ऊंधाय दियौ । अेकाअेक म्हांरी आंख्यां नै विस्वास नीं व्हियौ —— उण विकराळ दैंत री ठौड़ अेक जल-

मतौ बाळक कें कें करतौ रोवतौ सुणीजियौ । उण बाळक रै साथै थोड़ी ताळ म्है दोनूं ई रोया । पछै दैंत रा कैणा मुजब म्हैं डुस्किया भरती मां नै उणरौ बेटौ सूंप दियौ । मां रौ तौ रोवणौ ढबग्यौ पण म्हांरौ रोवणौ नीं ठमियौ । अर हाल तांई उणरी याद आतां ई आंख्यां में आंसू आय जावै । जे उण दैंत रै बिना मरियां कीकर ई मां नै आपरौ बेटौ मिळ जातौ तौ कैड़ौ उम्दा कांम बणतौ । पण दैंत तौ आगै सोचण रौ मौकौ ई नीं दियौ ।

राजकंवर री आ बात सुणनै सगळां री ई आंख्यां में आंसू छळक आया । चांयलौ दैंत आपरी कूंधां जैड़ी आंख्यां सूं आंसू पूंछतौ कैवण लागौ—इण में रोवणा री कांई बात ! अैड़ौ मरण रौ मौकौ आवै तौ म्हैं हंसतौ हंसतौ हजार वळा मर जावूं । आपरी देह सूं टाबर नै जलम देय वौ दैंत तौ हमेसां रै वास्तै अमर व्हैगौ । मरण रौ वैड़ौ सुक्यारथ मौकौ फेर कद कद हाथ आवै ! भगवांन करै अैड़ौ मौकौ म्हारा भाग में ई लिखियोड़ौ व्है !

ठगां रौ सिरदार कह्यौ—बात तौ साव साची है । उण बाळक रै नवा जलम री अपांनै खुसी मनावणी चाहीजै ।

आ कैयनै वौ आपरी चूंधी आंख्यां नै पूंछण लागौ । इण बार जमराज रौ भेंसौ आपरौ भोडक हिलावतौ बोल्यौ—म्हैं म्रतलोक रै अणगिण मिनखां रा प्रांण हरचा । म्हैं तौ सेवट इण कांम सूं काठौ आंती आयनै राजकंवर रै साथै अठै म्रतलोक में आयग्यौ । जे उण दैंत री गळाई म्हनै ई मरण रौ वैड़ौ मौकौ हाथ लाग जावै तौ पछै चाहीजै ई

कांई । अणगिण जीवां नैं मारण रौ पिरास्चित ई व्है जावै अर भैंसा री इण जूंण सूं पिंड ई छूट जावै । जमलोक में जुगां सूं काळ रौ कांम करतां करतां म्हनै म्हारा खुद रा जीवण सूं ओक्या बैठगी । उण देंत जैड़ी मौत रौ संजोग सज जावै तौ म्हैं लाख लाख जलम भरपाया !

जच्चा रांणी कह्यौ — इण नवा जलम रा बधावा रै बिचाळै म्हनै आं मरणा-वरणा री बातां रौ डर अणूंतौ लागै । म्हारौ जीव साव काचौ है, कोई दूजी बातां करौ ।

अबकी रांणीजी बोल्या — म्हारा बेटां नै पाछा मनावण सारू वांरी सोय में अठै आई ही । बरस रै लगैटगै वांरी बाट जोई । आज वांनै इण विध कुटम-कबीला रै साथै देख म्हारा हरख रौ कोई पार नीं है । म्हनै राज रौ अबै कीं लोभ नीं । पण राजाजी री खातिर जावणौ ई पड़सी । वै आज सूं आंख्यां फाड़ फाड़नै म्हांरी बाट जोवता व्हैला । म्हारी मंसा है के म्हांरा इण कुटम-कबीला रै साथै तपसीजी अर जच्चा रांणी ई चालै तौ पछै म्हारा मन में लारै कीं खुड़कौ नीं रैवै । म्हैं जांणूंला के आज रै दिन म्हारै आठ बेटां री ठौड़ दस बेटा है ।

तपसी कह्यौ — म्हनै अबै इण आस्रम सूं घणौ कीं मोह कोनीं । म्हैं खुद आप लोगां रौ साथ नीं छोडणो चावूं । आठूं राजकंवरां री बातां सुणियां पछै अर म्हारौ खुद रौ अनुभव जांणियां पछै म्हनै जकौ ग्यांन व्हियौ वौ म्हैं आप लोगां नै बतावणी चावूं । बिना बतायां म्हारौ उफांण सान्त नीं व्हैला । डावा हाथ सूं बड़ला री अेक झूमती साख नै झालियां

पछै तपसी कैवण लागौ — बाजणनै तौ म्हैं तपसो बाजूं, आप सगळा म्हनै गरू करनै आदरौ। पण म्हैं म्हारा खास गरू आं आठूं राजकंवरां नै मांनूं। आंरा आचरण अर सुभाव सूं म्हारी तौ काया ई पळटगी। पण म्हैं उण पलटियोड़ी काया रौ सावळ जाब्तौ नीं कर सक्यौ। आंरी संगत छूटतां ई म्हारी देह में सूं तौ अेक अैड़ौ कसाई चेतियौ के म्हैं तौ सुध-बुध ई पांतरग्यौ। इण आस्रम में म्हैं अणगिण जीव-जिनावरां नै मारचा — जकौ म्हैं आप सगळां नै विगतवार बताय चुक्यौ हूं। इकलापी मिनख री आ इज गत व्हिया करै। मिनख तौ संगत अर भेळप सूं सुधरै। अेकलौ आदमी तौ जिनावर सूं ई गियौ-बीतौ है। मांनौ तौ थांनै अेक अैड़ी भेद री बात बतावूं जकौ थें सगळा उणनै जांणौ तौ हौ, पण मांनौ कोनीं। गिरस्ती सूं ऊंचौ दुनियां में कीं तप नीं है, कोई इण सूं ऊंचौ आस्रम नीं है। अपांरै इण कुटुम-कबीला रौ दूजौ नांव ई भगवांन है। दुनियां में सबसूं ऊंचौ रिण म्हारी निजर में है तौ वौ फगत काया रौ रिण है। काया रौ रिण फगत काया सूं ई उतरै। आपरै माईतां सूं काया रौ रिण लेयनै वौ प्राणी किणी दूजी काया रा रूप में नीं उतरै तौ उणसूं वत्तौ पापी इण दुनियां में दूजौ कोई नीं। वौ कुटम-कबीला रा भगवांन रै सांम्ही हमेसां पापी रैवैला। सगळी दुनियां रा सास्तर अर धरम जिणनै भगवांन कैवै म्हैं उणनै कुटम रा नांव सूं ओळखूं। जकौ मिनख आपरा कुटम नै इतौ लांठौ करनै मांनै के उणरै ओलै दुनियां रा बाकी कुटम लोप व्है जावै — वौ निपट आंधौ है, पापी

है अर देंत है। अर जकौ मिनख आपरै कुटम रै जोड़ै दुनियां रा सगळा कुटंमां नै अेक सरीखा देखै वौ तपसी है । फगत आ निजर पावण वास्तै ई उणनै भगती अर तपस्या करणी है। इणरैं अलावा जकी तपस्या है वा पाखंड अर छळछंद है। इण कुटम-कबीला रै तप री छेहली माठ है—सगळी दुनियां नै ई आपरौ कुटम मांनणौ । आं राजकंवरां अर रांणीजी रा राज में जायनै अपांनै अेक अैड़ा राज री थापना करणी है जठै सगळा कुटंमां रौ अेक सरीखौ बधापौ व्है, कोई किणी रा कुटम नै हांण नीं पुगावै, कोई किणी रा कुटम माथै राज नीं करै । उण राज रौ वौ संदेस दुनियां रा घर घर में पूगै अर आखी दुनियां ई अेक घर बण जावै !

[इति आठ राजकंवर संपूरण । मिती जन्मास्टमी २०२१]